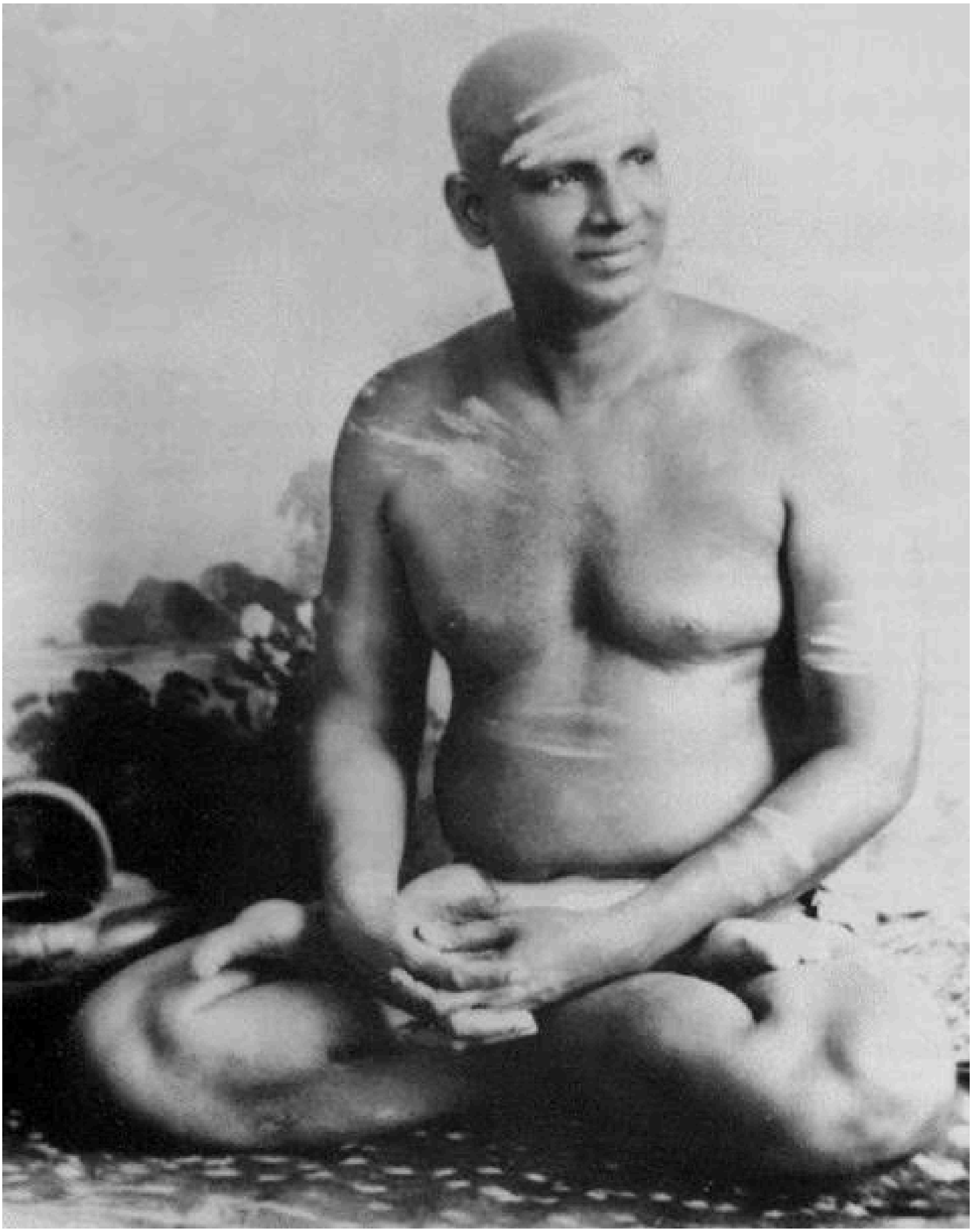
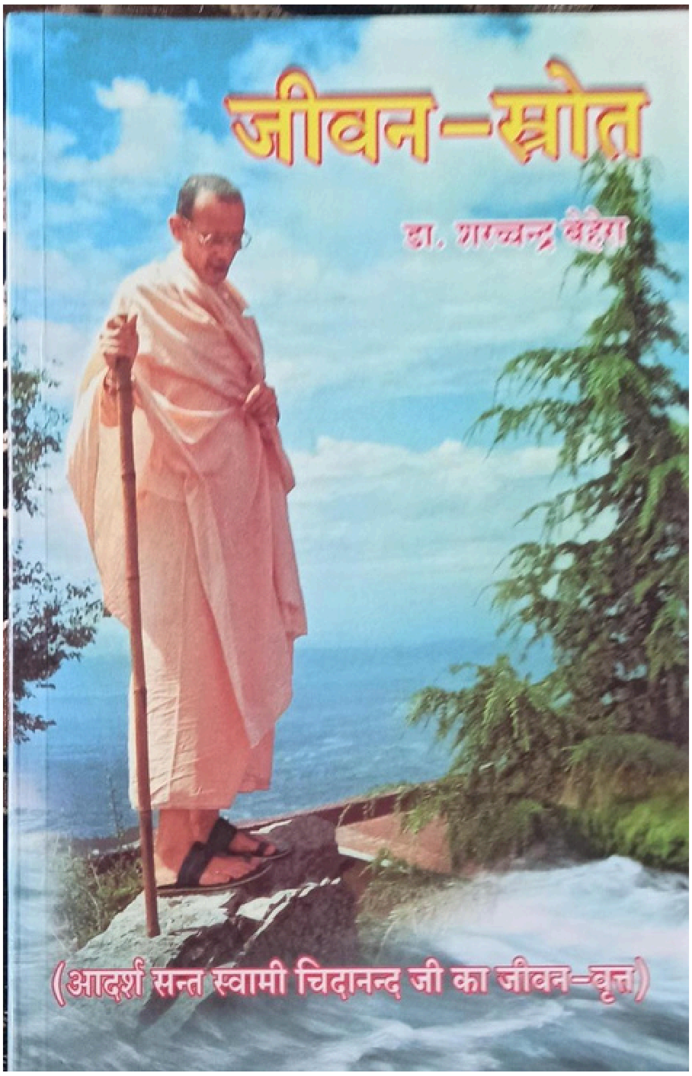




जीवन-स्रोत

आदर्श सन्त   स्वामी चिदानन्द के चवर्द जीवन-वृत्त

THE HOLY STREAM

का चिन्दी भाषान्तर

लेखक

डा. र्चच्चन्द्र बे िे,राएमए. . , पी-एि.डी.

अनुवादक

श्री स्वामी अपशणानन्द सरस्वती

(पूवाशश्रम-नाम श्री िमनलालर्माश, ररटायडश चरिंचसपल)

रकार्क

द चडवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय:चर्वानन्दनगर-२४९१९२

चजला : चटिरीगढ़वाल,उत्तराखण्ड(चिमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

रथम चिन्दीसिंस्करण-१९८४

चितीय चिन्दीसिंस्करण-२००७

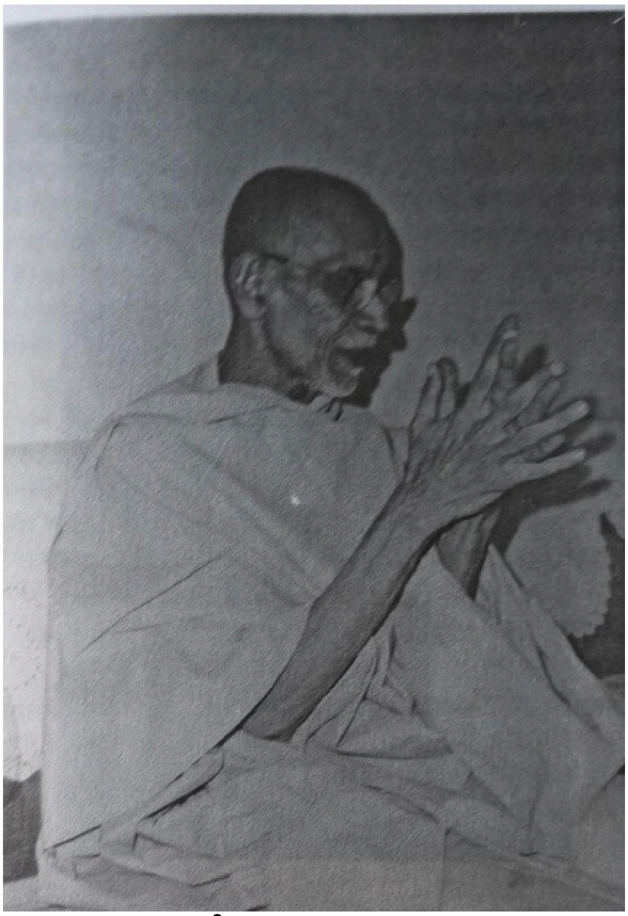
तृतीय चिन्दीसिंस्करण-२०१६

(५०० रचतयााँ)

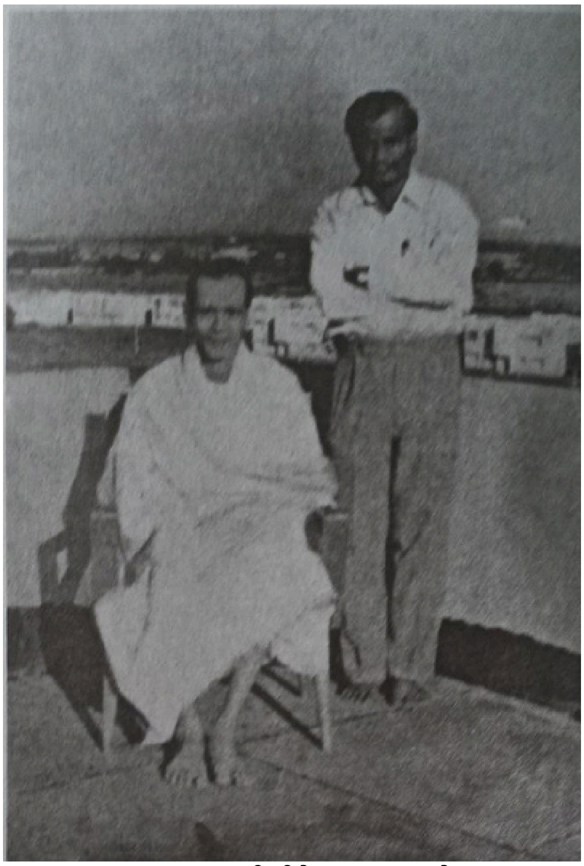
HO23

PRICE: 150/-

'द चडवाइन लाइफ सोसायटी , चर्वानन्दनगर'के चलए
स्वामी पद्मनाभानन्द िारा रकाचर्त तथाउन्र्ीकिे िरि'योग-वेदान्त फारेस्ट
एकाडेमी रेस, चर्वानन्दनगर-२४९१९१२,चटिरी-गढ़वाल,
उत्तराखण्ड' में मुचित ।
For online orders and Cataloguevisit:dlsbooks.org



परम पूज्य श्री स्वामी चिदानिंद जी मिाराज



परम पूज्य स्वामीजीके साथ लेखक

रकार्कीय

यि पुस्तक पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी मिाराज का जीवन-वृत्त िै। काल-चसकता पर पडे उनके िरण-चिह्न अचमट िैं। उनका जीवन लौचककता तथा अलौचककता दोनो िंका िी एक अद्भुत सिंगम िै। वि लौचकक िैं, क्ोचिंक वि लोक-चित में सतत रत िैं। वि अलौचकक िैं, क्ोचिंक वि अलौचकक चदव्यता के धनी िैं। उनका जीवन सद्गुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज की अनुकृचत िी िै। परम पूज्य सद्गुरुदेव ईश्वरोन्मुख उन्नत चर्र तथा धरती पर रखे हुए पैरो िंवाले भगवतुपुरुष थे। उनके चवषय में चदये गये इस वक्तव्य की जीवन्त व्याख्या िै पूज्य स्वामी चिदानन्द जी मिाराज का जीवन।

पूज्य स्वामी जी एक-साथ िी सब-कुछ िैं-भागवती िेतना में सिंस्थथत मिापुरुष, असाधारण चर्ष्य, मानवता के सेवक, सन्त-रेमी, आध्यास्कि सम्पदा के चवतरक तथा मिान् रबोधक। ऐसे मिापुरुष की जीवन-गाथा रस्तुत करके िम गौरवास्ति हुए िैं। कभी उन्ोिंने किा था- "इस जीवन का अस्वीकरण निी िंकरें, इसका रूपान्तरण करें।" आर्ा िै, इस जीवन-गाथा को पढ़ कर पाठक गण अपने जीवन का रूपान्तरण करने की रेरणा राप्त करेंगे तथा चदव्य जीवन के मागश के पचथक बनेंगे।

इस पुस्तक में वषश १९८१ तक की घटनाओ िंका चववरण रस्तुत चकया गया िै।

चर्वानन्दनगर
२९जुलाई २००७

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

डवषय-सूची

प्रथम अध्याय

सिंसूकृचत की गोदमें

"शुचीनाां श्रीमताां गेहे योगभ्रष्टोऽडिजायते।

-योगभ्रष्ट पुरुष रुद्ध आिरण वाले श्रीमान् पुरुषो िंके घर में जन्म लेता िै" (गीता : ६-४१)।

स्वामी चिदानन्द का जन्म तब मिास मिारान्त के अन्तगशत मिंगुलूरु में जागीरदारो िंके एक परम्पराचनष्ठ मिाराष्टरीय ब्राह्मण पररवार में हुआ। यि पररवार कुम्भकोणम् में आ बसा था। इसे चर्वाजी के चदनो िंमें जागीर राप्त हुई थी। इस पररवार को अाँगरेजो िंके र्ासन काल में भी र्ासकीय सिंरक्षण चनरन्तर राप्त िोता रिा। इस कुल के िी श्री गोचवन्द राव बीजापुरकर को चब्रचटर् राज्य की सेवाओ िंके चलए मिारानी चवक्टोररया से कोयम्बतूर चजले में मैलेरपालयम् की जागीर राप्त हुई थी। इनके पौत्र सस्खशल गोचवन्द राव तिंजावूरु के राजरासाद में सम्पकश-अचधकारी चनयुक्त हुए थे तथा उन्िें वृचत्तभोगी मिाराष्टरीय राजकुमारो िंकी सम्पचत्त का कायशभार चदया गया था। ज्ञानी बीजापुरकर के कुलक्रमागत इस समृद्ध तथा अचभजात पररवार ने अपनी कुलीनता तथा धमशपरायणता के चलए ख्याचत राप्त कर ली थी। गोचवन्द राव बीजापुरकर के भतीजे ज्ञानी नारायण राव भगवत्साक्षात्कार-राप्त मिात्मा के रूप में ज्ञात थे।

सस्खशल गोचवन्द राव एक उतूकृष्ट कोचट के दार्शचनक थे। वि असाधारण अन्तःरज्ञा से सम्पन्न थे। वि राय: लोगो िके भचवष्य के चवषय में अक्षरर्: सत्य भचवष्यवाणी कर उनें् आश्चयशिचकत कर देते थे। वि ओिसन्तुष्ट थे तथा आभ्यन्तररक चिन्तनमय कायशचनवृचत्तपरक चवचवक्त जीवन-यापन करते थे। वि चनधशनो ि तथा दीनो ि पर बहुत अनुकम्पा रदचर्शत करते थे। रचतचदन रथम कुछ भूखे लोगो िको भोजन कराये चबना वि स्वयिं भोजन निी िकरते थे। उनकी धमशपत्नी कावेरी बाई भी अध्याि में चवरे्ष उन्नत ओिा थी।ि वि तपस्स्वनी का-सा जीवन-यापन करती थी।ि अपने पचतदेव गोचवन्द राव के चनधन पर उन्ोंनें र्ोक निी िरकट चकया अथवा व्यविारानुरूप र्ोक मनाया। पचतदेव के मृतूयूपर। उनके जीवन में एकमात्र पररवतशन जो देखने को चमला वि यि था चक वि श्वेत वस्त्र धारण करने तथा अचतसिंयमी अन्तमुशखी जीवन-यापन करने लगी।ि रे्ष जीवनभर उन्ोंनें केवल दूध और फल पर चनवाशि चकया। उनके रचतवेर्ी उनकी धमशपरायणता तथा पचवत्रता के चलए उनका बहुत सम्मान करते थे। वि समय-समय पर भक्तो िको अपने घर पर आमस्ित करती और सत्सिंगो ि का सिंचालन करती थी।ि

कावेरी बाई के चपता वेंकट राव राजमिल में िसिारी के रूप में कायश करते थे। चकन्तु वि केवल पदनाम में िी िसिारी थे। सिंसाररक वस्तुओ िके रचत उनकी अनासस्क्त लोक-रचसद्ध थी। तथ्य की बात तो यि िै चक बहुत से लोग उनें् सन्त मानते थे। वि कृष्ण के परम भक्त थे। मैसूर में राजरासाद के सामने अवस्थथत अपने भवन में भगवान् श्रीकृष्ण की मूचतश-चजसे आज तक 'कट्टे मने' नाम से पुकारा जाता िै-रचतचष्ठत की थी। एक जन्म-जात कचव की तरि भगवान् की सुतुचत में भस्क्तपूणश स्तोत्र उनसे स्वतः िी सिज भाव से चनःसृत िोते थे। उनके िारा रचित धरीर में छोडे गये-सैकडो िस्तोत्र आज भी 'मध्व सम्प्रदाय' के अचधसिंख्यक ब्राह्मण पररवारो ि िारा गाये जाते िैं। यद्यचप राज्य के पदानुक्रम में वि उच्च पद पर आसीन थे, पर उनका जीवन 'कमल-पत्र पर जल की बूिंद' की परम्परागत भावना का एक आदर्श था। वि अपना घर भक्तो ि तथा सन्तो िके चलए सदा खुला रखते थे। उनके पूजा मिाकक्ष ने वास्तव में सावशजचनक मस्न्दर का रूप ले चलया था। इस पचवत्र देवालय में लोग बहुत बडी सिंख्या में देवता के दर्शनाथश आते रिते थे।[1] वेंकट राव एक भगवत्साक्षात्कार राप्त ओिा समझे जाते थे। वि कभी-कभी िेन्नै जाते और अपनी पुत्री कावेरी बाई के पास रिते। चपता-पुत्री का यि चमलन आध्यास्िक सत्सिंग का वातावरण उत्पन्न चकया करता था।

सस्खशल गोचवन्द राव तथा सौभाग्यर्ाचलनी कावेरी देवी के दो पुत्र-जी. कृष्ण राव तथा जी. श्रीचनवास राव-तथा एक पुत्री, गोपी बाई थी। जी. कृष्ण राव तथा जी. श्रीचनवास राव ने एक समृद्ध जमीदिार के रूप में उन्नचत की तथा तचमल नाडु के कोयम्बतूर चजले में अनेक ग्राम, मन्नागुशडी चजले के तिंजावूरु के पास चवसूतृत भूचम तथा िेन्नै नगर में इधर-उधर चबखरे हुए अनेक भवनो िको उत्तराचधकार में राप्त चकया। वे अपने चपता के साथ कोयम्बतूर में रिते थे जिााँ उनके चपता कायशचनवृत्त जीवन-यापन करते थे। चपता के चनधन के पश्चात् दोनो िभाई कोयम्बतूर छोड कर िेन्नै नगर में बस गये।

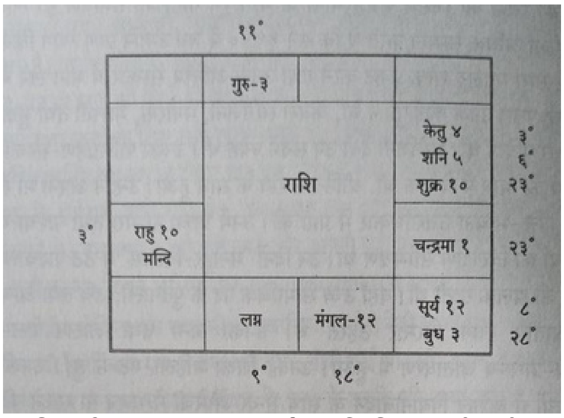
कचनष्ठ भ्राता जी. श्रीचनवास राव 'चकम्बली' नामक एक असम्बद्ध रूप से बनी पिीन कोठी में चनवास करते थे जो उस समय िेन्नै नगर के बाह्ििलि में पचश्चम की ओर अवस्थथत थी। इनका चववाि सन् १९१० में मिंगुलूरु के एक लब्धरचतष्ठ दम्पचत नेलीकाई वेंकट राव तथा सुन्दरम्मा

---

[1] अब भी लोग जन्माष्टमी के चदनपूजा करने के चलए विााँ जाते िैं।

की पुत्री सरोचजनी देवी से हुआ। इस चववाि से दो बहुत िी समृद्ध तथा रिीन पररवारो िंका सस्म्मलन िो गया। एन. वेंकट राव इतने अचधक लोकचरय थे चक वि मिंगुलूरु नगरपाचलका-सचमचत के चनरन्तर तीन सत्रो िंमें अध्यक्ष चनवाशचित िोते रिे। उन्ें अपने चपता गुणूडू राव से, जो उत्कृष्ट कोचट के व्यापारी थे, काफी की चवराल भूसम्पचत्त उत्तराचधकार में राप्त हुई थी। वि 'मनिोर- चवलास' नामक भव्य भवन में चनवास करते थे। उनका मिंगुलूरु के सामाचजक तथा सांस्कृचतक जीवन पर बहुत अचधक रभाव था। उनकी धमशपत्नी श्रीमती सुन्दरम्मा देवी एक बहुत िी धमशचनष्ठ तथा सुसिंस्कृत मचिला थी।ं उन्ोिंने 'देवरनामा' नामक राथशनाओ िंकी एक पुस्तक की रिना की चजसमें कन्नड भाषा के भस्क्तपूणश गीतो िंका समावेर् िै। लोग उनका इतना अचधक सम्मान करते थे चक सन् १९४० में जब उन्ोिंने राण त्याग चकया तो रायः सारा मिंगुलूरु र्ोक रकट करने तथा उनके अस्न्तम सिंस्कार में भाग लेने के चलए उमड पडा। उनके कोई पुत्र न था, केवल सरोचजनी, मनोरमा, मालती तथा मुक्ता नामक िार पुचत्रयााँ थी।ं सरोचजनी देवी उन सबमें ज्येष्ठ थी।ं उनका पाचणग्रिण-सिंस्कार बारि वषश की आयु में िैन्नै के जी. श्रीचनवास राव के साथ हुआ। उन्ोिंने अपनी मााँ से धाचमशक भस्क्त-भावना उत्तराचधकार में राप्त की। उनमें राच्य परम्परा तथा पाश्चात्य जीवनियाश का चवलक्षण सस्म्मश्रण था। उन चदनो िं'मनिोर-चवलास' में ठेठ पाश्चात्य रूप-रिंग की झलक रिती थी। विााँ उच्च सामाचजक पद के पुतशगाली, डि तथा अन्य यूरोप जातीय लोग चनरन्तर ठिरते थे। उनका जन्म तथा लालन-पालन पाश्चात्य-राधान्य वातावरण में हुआ। उनकी चर्क्षा मचिला-ग्ठ में हुई। उनकी उपलस्ब्धयो िंमें कुर्ल चपयानोवादन के साथ सुन्दर अाँगरेजी में भजन गा सकने की क्षमता की गणना की जाती थी। वि टेचनस खेलने में रवीण थी।ं

सरोचजनी देवी की पिली सन्तान पुत्री हुई चजसका नाम माता-चपता ने िेमलता रखा। िेमलता के जन्म के दो वषश पश्चात् सरोचजनी देवी ने भािपद के कृष्णपक्ष की िादर्ी चतचथ तदनुसार रचववार २४ चसतम्बर १९१६ पूवाशह्न के १०.३५ बजे 'मनिोर-चवलास' में एक चसद्ध, भावी स्वामी चिदानन्द को जन्म चदया। वैष्णव माता-चपता ने बच्चे का नाम श्रीधर रखा। बच्चे की स्नेिमयी फूफी गोपीबाई उन्ें 'चसद्ध' कि कर पुकारा करती थी िंजो चक श्रीधर का शुरुचतमधुर सिंचक्षप्त रूप िै। बालक की जन्मपत्री तैयार करने वाले ज्योचतषी ने चलखा चक बालक इस जन्म में चसस्द्ध को राप्त करेगा। इसकी पुचष्ट एक रख्यात योगी ज्योचतषी ने सन् १९४९ में यि घोषणा कर की : "चिदानन्द जी अपने गत जन्म में िी एक मिान् योगी तथा सन्त थे। यि उनका अस्न्तम जन्म िै।" बालक का जन्म वृचश्चक लग्न में हुआ। राहु तीसरे, गुरु छठे; र्ुक्र, र्चन तथा केतु नवें, िन्द्रमा दर्वें, बुध तथा सूयश ग्यारिवें तथा मिंगल बारिवें गृि में थे। केतु की नवें गृि में स्थथचत मोक्ष की सम्भावना रखती िै। र्चन तथा र्ुक्र का नवें गृि में िोना राजयोग तथा भस्क्तयोग के रचत गिरी अचभरुचि का द्योतक िै। सरोचजनी देवी ने बालक की जन्मपत्री एक रवीण ज्योचतषी की सिायता से तैयार करायी और उसे अपने िाथो िंसे देवनागरी चलचप में चलख कर सुरचक्षत रख चलया। श्रीधर की जन्मपत्री की सारणी चनम्न रकार िै :



जन्म के पाँँ विषश, सात मिा और आठ चदन तक केतु की मिादऱ्ा थी। श्रीधर का जन्म-नक्षत्र मघा का रथम िरण था तथा उनकी जन्म-राचर् चसंि थी। जन्मपत्री यि सूचित करती थी चक आने वाले चदनो िंमें उन्ें भव्य, असाधारण व्यस्क्तत्व राप्त िोगा।

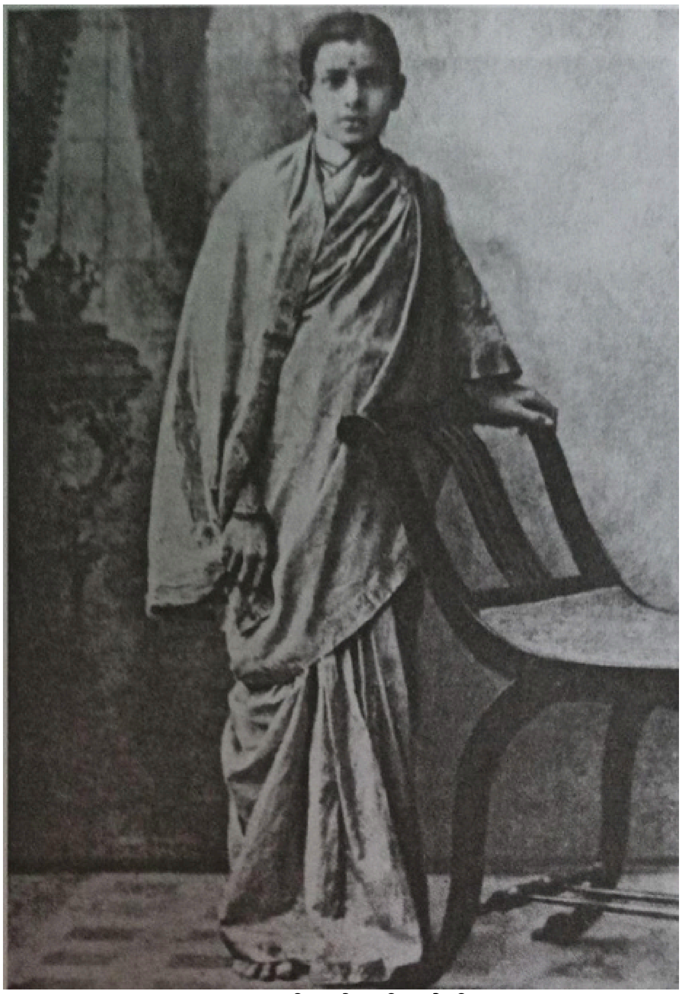
श्रीधर के जन्म के दो वषश पश्चात्, जब सरोचजनी देवी पुनः गभशवती थी,िं श्रीचनवास राव में अकस्मात् तीव्र वैराग्य-भाव चवकचसत हुआ और एक चदन वि िुपके से घर से लुप्त िो गये। वि रायूिर के समीप मिालय में स्थथत श्री राघवेन्द्र स्वामी के पचवत्र समाचध-मस्न्दर में पलायन कर गये जिाँँ वि चिरकाल तक अज्ञात रूप से रुके रि। श्री राघवेन्द्र स्वामी ने अपना नश्वर रीर पाँँ सौ वषश पूवश त्यागा था; चकनुतु रीर के बन्धनो िंसे मुक्त रिने की दऱ्ा में भी वि अपने भक्तो िंको आऱ्ीवाशद देते तथा उनका पथरदर्शन करते रिते िैं। एक चदन श्रीधर के ताऊ कृष्ण राव ने अन्तवाशणी सुनी : "मैं मिालय का स्वामी राघवेन्द्र तुमसे बोल रि हाँ। श्रीचनवास राव मेरे पास िैं। चिन्ता न करें। वि ऱ्ीघ्र िी तुम्हारे पास वापस लौट जायेंगे।" सभी लोगो िंके आश्चयश का चठकाना न रि जब कृष्ण राव की इस आश्चयशजनक अनुभूचत के तुरन्त बाद िी श्रीचनवास राव वास्तव में चकम्बली वापस आ गये। इस बार सरोचजनी देवी ने एक पुत्र को जन्म चदया। मिान् राघवेन्द्र स्वामी की कृपा की सूमृचत में बालक का नाम राघवेन्द्र रखा गया। तदनन्तर सरोचजनी देवी की दो और कन्याएँ हुईं चजनका वसुधा तथा वत्सला नामकरण चकया गया। ये सभी बचे्चे अपना अचधक समय मिंगुलूरु में अपने नाना के चनवास-थथान 'मनोिर-चवलास' में व्यतीत करते थे।

सरोचजनी देवी एक आदर्श गृिस्वाचमनी थी।िं उनकी चवमल ऱ्ुचिता तथा भस्क्त ने श्रीधर के हृदय पर अपनी छाप अंचकत की। वि रािीन काल की रानी मदालसा की भाँँचत िी अपने इस यस्वी चर्ु को रथम पाठ की चर्क्षा देने वाली माँँ थी।िं वि मीराबाई, रैदास, कबीरदास तथा नरसी मिेता के भजन गाया करती िंऔर चिमालय के सन्तो िंकी गाथाएँँ सुना कर अल्पवयस् बालक को आनस्न्दत चकया करती थी।िं रचतचदन सोने के समय श्रीधर अपनी माँँ से चलपट जाते तथा भजन अथवा किानी की माँँग करते। स्ेनिमयी माँँ कभी भी उन्ें चनरार् निीं िंकरती थी।िं वि अपने ऱ्ुरुचतमधुर स्वर में भस्क्तमय गीत गुनगुनाती और ऋचषयोंि–मुचनयो िंके आख्यान वणशन करती।िं इन भजनो िंतथा आख्यानो िंसे श्रीधर एक रकार से अनुराचणत से िो जाते। इस भाँँचत उनकी माता जी ने उनके व्यस्क्तत्व के घटन में जो गिरी छाप डाली उसे वि परवती काल में व्याख्यान देते समय कृतज्ञतापूवशक स्मरण करते करते िैं।2 इसे सिंचघनी वन्दना ने अपने लेख 'गुरु, आश्रम तथा ईसाईजन' में अंचकत चकया िै। इसमें उन्ोंनें वणशन चकया िै चक स्वामी जी जब पूना के 'क्राइस्ट रेम सेवाश्रम' में पधारे तो उन्ोंनें मीराबाई के उस गीत को चकस रकार स्मरण चकया चजससे उनकी

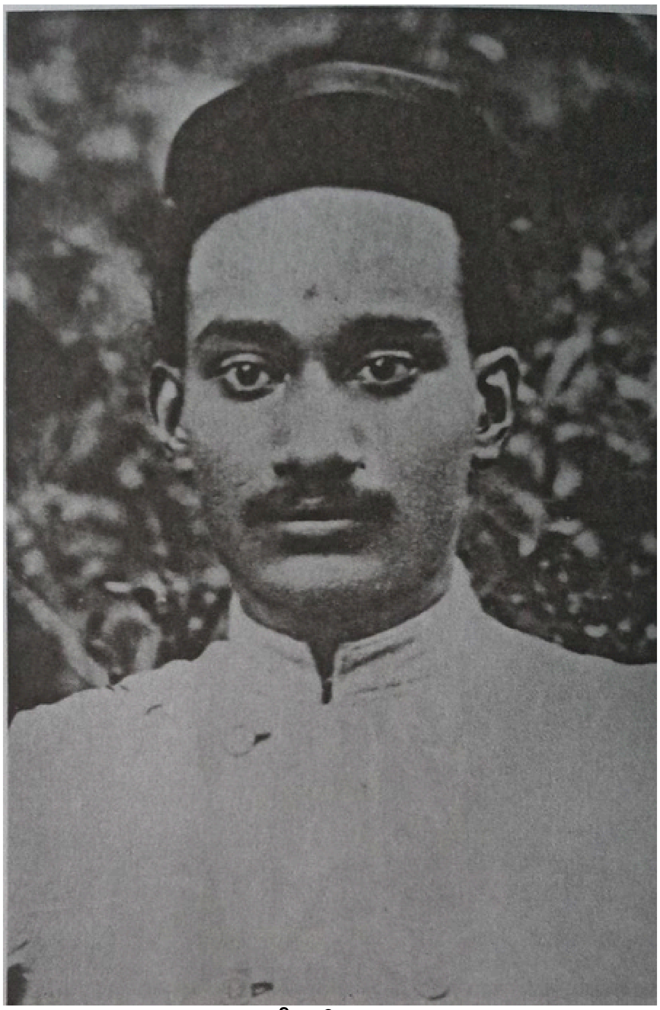
2

उ्दिरणाथश मचिला इण्टर कालेज उत्तरकाऱी में २ अकूतूबर, १९७७ को चदया गया भाषण।

माता ने उन्ें सुलाने के चलए एक बार गाया था। इस भजन में भावचवभोर िो नृत्य करते समय मीरा का भगवान् में चवलय का वणशन



माता श्री सरोजनी देवी



चपता श्री श्रीचनवास राव



माता श्री की गोद में



मनीेर चवलासमें

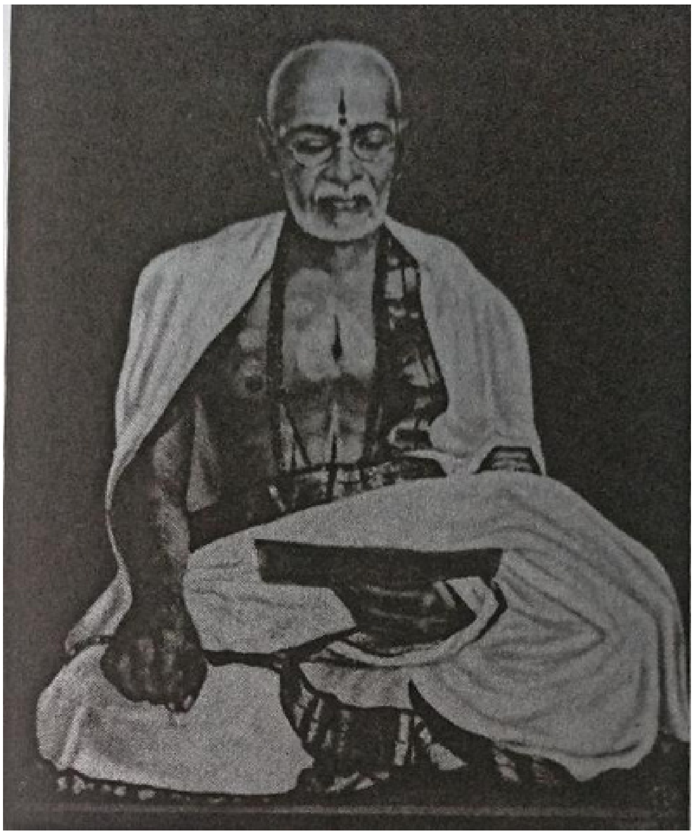
बायें से दाचिने खडे हुए-मौसीमालती , श्रीधर(स्वामीजी),नानाश्रीवेंकटराव,बडीबिन
ेमिलता और उसके आगे मौसी मुक्ताबायेंसेदायेंबैठेहुए-छोटेभाईश्रीराघवेन्द्र,नानीश्रीमतीसुन्दरम्मा
देवी, बिन वत्सला, मौसी मनोरमाऔरउसकेआगेबिनवसुधाबायेंसेदाचिनेखडेहुए-मौसीमालती,
श्रीधर (स्वामी जी), नाना श्री वेंकटराव,बडीबिनिेमलताऔरउसकेआगेमौसीमुक्ताबायेंसेदायें
बैठे हुए-छोटे भाई श्री राघवेन्द्र, नानीश्रीमतीसुन्दरम्मादेवी,बिनवत्सला,मौसीमनोरमाऔरउसकेआगे
बिन वसुधा

ैजिब मीरा अदृश्य ो गयी िंऔर उनकी साडी देव-चविग्र के साथ लटकी हुई चमली। स्वामीजीने बतलाया चक वि चकस रकार इस भगवान् में चवलय की किानी से रभाचवत हुए थे। ऐसीथीवि चर्क्षा चजसे माँ सरोचजनी ने अपने चरय पुत्र को रदान चकया और चजसे इन्ोनिें कभी चवसूमृतनिीं चकया। चनस्सने्दि यि ठीक िी किा गया ै चक 'पालना झुलाने वाला ाथ सिंसार पर र्ासनकरता ै।'

बाल्यकाल में श्रीधर के कचनष्ठ भ्राता राघवेन्द्र उनके क्रीडा-साथी तथा उनके मातामि के वृद्ध सिर अनन्ैतैया उनके सतत साथी थे। अनन्ैतैया एन. वेंकट राव के पररवार के साथ बहुत चदनिों तक रिे थे। उनके साथ रायः पररवार के एक सदस्य के रूप में व्यविार चकया जाता था। वि श्रीधर, राघवेन्द्र तथा पररवार के अन्य बालकिों की खेल के समय देख-रेख चकया करते थे। बालक अरब सागर से चमलने के अस्तम िरण में आनन्दपूवशक रविमान उचिग्न नेत्रवती सररता के तट पर रायः खेला करते थे। अरब सागर के चक्षचतज पर सूयाशस्त चदनभर की क्रीडा की समास्प्त

का सिंकेत था; चकनुतु बालक चफर भी रुके रिते। श्रान्त तथा क्लान्त वे अपने िाथ-पैर बालुका में गाड देते और किानी के चलए अनन्तैया को परेशान करते। इस वृद्ध पररिर ने जैचमचन भारत,
रामायण तथा भागवत मिापुराण से किाचनयो िंका अक्षय भण्डार सिंग्रि कर रखा था। वि उन्िें एक किानी सुना कर आह्लाचदत करने को सदा उद्यत रिते। ऐसे अवसरो िंपर श्रीधर उन वृद्ध सज्जन के ओष्ठो िंसे चनःसृत भस्क्त-धारा को छक कर पान करते हुए मौन तथा मुग्ध िो बैठे रिते। किानी समाप्त िोने तक अन्धकार सघन िो उठता। अब वृद्ध सज्जन रुक जाते और बालको िंसे रश्न
करते: "तुम चकसके समान बनोगे?" द्युचतमान् तथा गम्भीर दृचष्ट से आलोचकत मुखमण्डलयुक्त
श्रीधर चनरपवाद रूप से यि उत्तर देते: "मैं ऋचष बनूँगा।" इस पर वृद्ध सज्जन स्खलस्खला कर िँस पडते और मुख बना कर किते : "तू नुरी बनेगा।" कन्नड भाषा में 'नुरी' का अथश मच्छर
िै। भला वृद्ध सज्जन अनुमान भी कैसे कर सकते थे चक श्रीधर वास्तव में एक चसद्ध िैं और
असिंख्य चजज्ञासुओ िंका पथ-रदर्शन करने के चलए जन्म ग्रिण चकये िैं। जिाँ तक श्रीधर का सम्बन्ध
िै उनका अचभराय उनके कथन के अनुरूप िी था। कभी-कभी वि अपनी मौसी मालती बाई से
अपनी गोपनीय बात किते थे चक वि रिीन कालीन ऋचषयो िंकी भाँचत अरण्य तथा चनजशन कन्दराओ िंमें जा कर एकान्त में ध्यान करना िाते िैं। ऋचष बनने का चविार इतना रबल था चक
एक चदन वि वास्तव में कौपीन धारण कर तथा भस्म की भाँचत सारे रीर पर टैल्कम पाउडर
लगा कर व्याघ्र–मश पर पालथी मार कर बैठ गये और राथशनारील भाव से अपने नेत्र बन्द कर
भगवान् के आगमन की गम्भीरता से रतीक्षा करने लगे।

इसरकारबाल्यकाल व्यतीत िोता गया। एक बार दादी कावेरी बाई बहुत से नौकर–ाकरो िं केसाथउत्तरीभारतकेतीथशथथलो िंकी यात्रा पर गयी।िं अपनी तीथशयात्रा से वापस आने पर उन्िोंनें अपनेपुत्रिींतथापौत्रिींके समुमुख अपनी तीथशयात्रा के पावनकारी अनुभव को बडी िी भाव-रवणता से वणशन



हिसारी श्रीवेंकट राव



मनिोर चवलास

चकया। श्रीधर के चलए दादी का वृत्तान्त एकयात्रीजीवकारोमिांकिारीचववरणथा।स्वामीजीने
एवं चकाजी भेंटस्थान आश्रम में उल्लेख किया था चक विउनके
रिरिार की मचिमा का चनस्वन उनके कणशकुिरिंतकपहुाँिा।

श्रीधर तथा राघवेन्द्र कभी-कभी अपने चपता के पास िैन्नै की चकम्बली कोठी में रिा करते थे, जब उनके रमातामि'हिसारी'वेंकटरावअपनीपुत्रीकावेरीके साथकुछचदनरिनेके चलए विााँ आयाकरतेथे।एकबारइसरकारकेआगमनकेसमयकावेरीबाईनेश्रीधरको उन्ें नमस्कारकरनेके चलएकितथाउनके कानमेंसत्यभावसेयिफुसफुसायाचकउनके चपता (वेंकटराव)कोईसामान्यव्यस्क्तनिींिैं,वरन्एकमिान्भक्तिंचजन्ेंश्रीकृष्णके दर्शन का सौभाग्यराप्तिै ।3इनर्बािोंकोसुनकरश्रीधरपुलचकतिोउठे तथाउन्ोंनें अपने रमातामि के रूप में ऐसे भागवत पुरुष के पावनकारी दर्शन कर उद्दीप्त अनुभव चकया। उन्ोंनें मनिी-मन यि सिंकल्प चकया चक एक चदन वि भी अपने रमातामि के समान मिान् भक्त बनेंगे और भगवद्दर्शनकरेंगे।

श्रीधर के पावन यज्ञोपवीत-सिंस्कार का रुभ अवसर यथा-समय आ पहुाँिा। पररवार के लोगोंं ने मिांगचलक उपनयन-सिंस्कार अपने कुलदेवता भगवान् वेंकटेश्वर के पचवत्र धाम चतरुपचत में सम्पन्न करने का चनश्चय चकया। धमशचक्रया समाप्त िोने पर जब सब लौट रिे थे, एक दुकान में श्रीराम की

---

3 मृत्युयुकाल में भी हिसारी वेंकट राव भगवन्नाम जपते रिे थे। उनकी मृत्युयु चकसी रोग से निीं िुई। उन्ोंनें अपना भौचतक रीर भगवद्-स्मरण करते-करते त्याग चकया। भगवद्गीता (८-५) में किा गया िै : "और जो व्यस्क्त अन्त काल में मेरा िी स्मरण करता हुआ रीर को त्याग कर जाता िै, वि मेरे स्वरूप को राप्त िोता िै।"

मनोरम मूचतश पर श्रीधर आकचषशत हुए और अपने माता-चपता से उसे क्रय करने के चलए अनुनय चकया। यि चनवेदन सुन कर माता-चपता रसन्न हुए और उनके चलए वि श्री कोदण्ड राम की
रचतमा खरीद दी।

उसके पश्चात् श्री कोदण्ड राम को 'मनोिर-चवलास' के बालको िंके जीवन में रमुख थथान ग्रिण करना था। रचतमा को कुल-देवता के पाश्वश में थथाचपत कर चदया गया और सभी मित्त्वपूणश अवसरो िंपर उसकी वैचधक पूजा की जाती। श्रीधर अब आध्यास्कि अनुर्ासन के पालन तथा चवध्िाक पूजा में अत्यचधक सतकश पाये जाते। दैचनक सन्ध्या-वन्दन करने से पूवश वि कभी भी भोजन निी िंग्रिण करते थे जैसा चक पचवत्र यज्ञोपवीत-संस्कार के पश्चात् ब्राह्मणो िंके चलए चवधान िै। वि रचतचदन अपनी मौचसयो,ं भाई तथा बिनो िंके साथ श्री कोदण्ड राम के िरणो िंमें बैठ जाते और राथशनार्ील पूजा चनवेदन करते। यि उन सबके चलए एक मनोिर क्षण हुआ करता। श्रीधर के पूजा करते समय एक िमत्काररक वस्तुु देखने में आती। जब वि भगवान् को पुष्प अचपशत करते, उनके मस्तक पर सुगस्न्धत िन्दन तथा कुंकुम लगाते, नीराजन करते, तब रचतमा असाधारण रोज्ज्वल रभामण्डल से िमक-सी उठती तथा भगवनु्मुखमण्डल पर स्वचगशक मुस्कान छा जाती। चकर्ोर भक्त इसे रायः रचतचदन िी देख सकते थे और वे इस भगवतृ्कृपा के रकटीकरण से आनन्द से पुलचकत िो उठते। ऐसे भी चदन िोते जब मूचतश के ितुचदशक् रभा न भी दमकती। ऐसे समय उनके चवषाद की सीमा न रिती। वे उस स्वचगशक रकार् की झलक पाने के चलए रतीक्षा करते और आँख िुरा कर मूचतश की ओर देखते। तब श्रीधर आगे आते और सबसे किते, "आप लोगो िंने कोई अयोग्य कायश अवश्य चकया िै अथवा चकसी मित्त्वपूणश चवषय की उपेक्षा की िै चजससे भगवान् अरसन्न िैं। आइए, िम सब गम्भीर उत्सािा तथा रेम के साथ दण्डवत् रणाम तथा राथशना करें।" ऐसा कि कर वि भगवान् के समु्मुख करबद्ध िो अनुनय-चवनय करते और भगवान् से राथशना करते चक वि दया करके उनकी भूलो िंको क्षमा कर दें और अपने द्युचतमान् रूप में एक बार पुनः रकट िो।ं और देखें ! वि मूचतश पुनः उसी पुरानी द्युचत तथा कृपा से दमक उठती।'[4]

श्रीधर ने एक पुरानी धमश घडी के आधार से भगवान् कोदण्ड राम के चलए एक रथ तैयार चकया। वि श्री राम की मूचतश को इस रथ पर आम्रवाचटका में ले जाया करते थे। इस रकार की रथ-यात्रा के उत्सवो िंके अवसर पर यि चकर्ोर भक्त भाव-चवभोर िो उठता और कभी-कभी वि चिन्तनर्ील अवथथा में बैठ जाता और चनश्चयपूवशक घोषणा करता : "मैं योगी बनूूँगा।" घर में एक वृद्ध नौकर था चजसका नाम बालू था। उसे यि चनश्चय िो गया था चक श्रीधर योग-र्स्क्त से सम्पन्न िैं। वि श्रीधर के िाथो िंसे पचवत्र िरणामृत लेने के चलए उतु्सुकता से रतीक्षा चकया करता था। उसकी यि दृढ़ धारणा थी चक श्रीधर िारा चवतररत पचवत्र िरणामृत ने उसका चिरकाचलक उदर-रोग ठीक चकया था। इस भाँचत चकर्ोर श्रीधर के सन्तत्व के चवषय में पररवार के लोगो िंके अपने-अपने अनुभव थे।

श्रीधर अपनी आभ्यन्तर सत्ता में भावी चसद्ध का आकार ले िुके थे; चकनु्तु अपने दैनस्न्दन जीवन में वि एक सामान्य स्वथथ बालक की तरि व्यविार करते थे। चनदोष चक्रयािक पररिास

---

[4] इस मूचतश की पूजा अब भी श्रीमती मालती बाई गोचवन्द राव के चनवास-थथान 'जागीर घर,२१३,राजा स्टरीट, कोयम्बतूर' में की जाती िै। मालती बाई, चजन्ोनें उपयुशक्त घटना का चववरण लेखककोचदयिै, ने स्वयं स्वीकार चकया िै चक स्वामी चिदानन्द िारा र्ैर्वावथथा में पूचजत आिशवतार श्री कोदण्डराममें चनस्सने्दि सामथ्यं िै और जब भी उनके पररवार के लोग उनसे अपनी रक्षा की यािना करतेिैंतोवि उनकी चवपचत्त कम कर देते िैं।

करनाउन्ेंचरयथा।पिाचडयो िंतथा मीनारो िंपर आरिोण करने में वि आनस्न्दत िोते थे। वि चनभीकतैराकभीथे।उन्ोनें एक बार अपनी मौसी मालती बाई को डूबने से बिाया। वि सभी राचणयोंसेरेमकरतेऔर उनके साथ दयालुता से व्यविार करते थे। दर् वषश की अल्पायु में भी विअसाधारणचवनम्रभाव अचभव्यक्त करते थे। एक बार इनके मातामि तथा मातामिी दीघाशवकार् के चलए समस्त



श्री कोदण्ड रामस्वामीजीिारा बिपन में थथाचपत



श्री गोपाल कृष्ण (श्री वेंकट राव िारा रचतचष्ठत)

पररवारकोबेंगुलूरुलेगये।एकचदनसायिंकालजबपररवारकेसभीगुरुजन सैर के चलए गये हुए थे,श्रीधरनेसभीबच्चोंसेचविार-चवमर्शचकयाचकवेचकसरकाररचतचदन जानबूझ कर अथवा अनजानमेंभूलेंकरतेरिरतैंऔरउनसेयिस्वीकारकरायाचकउन्हें गुरुजनो िं से क्षमा-यािना करनीचाचिए। इसरकारइनसेउत्प्रेररतीकरउनसबनेस्नानचकया और गुरुजनो िं के वापस आनेपरभीगेवस्त्रधारणचकयेहुएिीउन्हेंदण्डवत्रणामचकया।यद्यचप गुरुजनो िंने इस रदर्शन

को यथावत् पसन्द निी िंचकया और उनें् चकिंचित् फटकारा भी; चकनुतु यि घटना श्रीधर अपने चविार तथा वाणी में उस समय जो धमश-परायणता रचतचबस्म्बत करते थे, उसको रकट करती िै।

बालक के रूप में श्रीधर को जीवन से से्नि था। वि चवनोद तथा चनदोष नटखटपन से पूणश थे। उनें् अपनी नकल करने की क्षमता का रदर्शन करना चरय था। चनस्सने्दि वि एक अचे्छे अचभनेता थे। मिंगुलूरु के उनके आवास-काल में एक ईसाई चवचधवक्ता, जो अव्यवसायी नाट्यकला के अचभनयो िंके रदर्शन का आयोजन चकया करते थे सदा िी बालक श्रीधर से अपने नाटको िंमें भाग लेने के चलए आग्रि चकया करते थे। इस भााँचत अपनी वय के सामान्य बालक की तरि उनें् जीवन, रकृचत तथा कला से से्नि था। इसके साथ िी उनमें ऊधमीपन से मेल खाने वाला गाम्भीयश, धमश तथा अधमश के रचत असाधारण सिंवेदनर्ीलता तथा तीव्र धाचमशक उत्सिा था जो उनें् सामान्य बालको िंसे अलग करता था। मान निी सुन्दरम्मा ने अपने दौचित्रो िंतथा दौचिचत्रयो िंको आध्यास्कि रचर्क्षण देने के चलए सभी सम्भव उपाय चकये। वि उनें् मिंगला देवी के मस्न्दर में ले जाया करती थी।िं ' निोर-चवलास' में एक चवर्ाल मिाकक्ष था जिााँ वि िररकथा तथा सत्सिंगो िंका आयोजन चकया करती।िं वि श्रीमद्भागवत सप्ति के चलए चवख्यात पस्ण्डतो िंको आमस्ति चकय, करती थी।िं श्रीधर इन सब रवृचत्तयो िंमें अपनी गिन रुचि के कारण चवर्ेष रख्यात थे इस रकार के िररकथा-सत्र-काल में एक चदन उन्ोनें एक पस्ण्डत से दो अथशगचभशत तथा सुरचसद्ध किाचनयााँ सुनी।िं उनमें से एक में उस मेढक की िेष्टा का वणशन िै जो मृतुयु वः मुख में जा पडा था। उसे जब एक सााँप चनगल रिा था, उसके ऊपर से एक व्याध-पतिंग उडा और मेढक ने उस नाजुक स्थथचत में िोते हुए भी उस बेिारे कीट को पकडने के चलए अपने र्रीर को एक झटका चदया। यि किानी सिंसार में बद्ध जीवो िंके स्वरूप को स्पष्ट करती िै। दूसरी किानी वणशन करती िै चक एक िााँदनी रात में जिंगल में चविरण करता हुआ एक व्यस्क्त चकस रकार कुएाँ में चगर पडा। जब वि चगरते हुए निी आधी दूर था, तब एक पौधे को पकडने में सफल िो गया जो कुएाँ की दीवाल के एक रन्ध्र में उग आया था। इस पौधे के िारो िंओर एक सपश कुण्डली मार कर बैठा था और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा था। अत्यचधक आतिंक से जब ऊपर की ओर दृचष्ट की तो उसने ऊपर भूचम-तल पर निी अपनी ओर देखते हुए व्याघ्र के मुख को देखा। उसने अपने से निी की ओर एक मकर को अपने जबडे खोले हुए इसकी रतीक्षा करते हुए पाया। इसी समब ऊपर के एक वृक्ष में लगे हुए मुधकोर् से मधु की कुछ बूाँदें टपकी।िं लटकते हुए व्यस्क्त ने अपना मुख चववृत चकया तथा मधु की कुछ बूाँदें पकडने के चलए अपनी चजह्वा बािर चनकाली। यि सिंसार की चवभीचषका तथा जीव की मिावथथा का एक अन्य रूपान्तर िै। इन दोनो िंचर्क्षारद किाचनयो िंने श्रीधर के मन पर अपनी चिरथथायी छाप डाली।

श्रीधर के 'मनिोर-चवलास' के आवास के चदन इन चवचवध रकार की अनुभूचतयो,िं कायों तथा चविारो िंसे समृभृत थे। यि चनश्चय िी सिंसूकृचत की वि गोद थी जिााँ उनमें सत्तारूढ़ आन्तररक व्यस्क्तत्व का पोषण हुआ तथा आने वाले चदनो िंमें दैवचनचदशष्ट रेखा के साथ-साथ बढ़ने के चलए उसे तैयार चकया गया। उतृकृष्ट चविार उनकी िेतना को सदा आच्छाचदत चकये रिते। श्रीधर में सत्तारूढ़ सन्तत्व ने पररवार िारा रदत्त उन सब भावोते्तेजक सिंस्कारो िंको अपनी सत्ता के अन्तरतम रदेर् में साँजोये रखा। इस भााँचत रारम्भ से िी पासा फेंक चदया गया। यद्यचप उनका भव्य भचवष्य, उस समय लोक-दृचष्ट से अचधकिंर् ओझल था; चकनुतु उनके हृदय के चनगूढ़ रदेर् में उसका रारस्म्भक रकटन िोने लग गया था। बीज का वपन चकया जा िुका था। उसके अिंकुररत, ऊाँिा तथा बलवान् िोने तथा सभी चदर्ाओ िंमें राजपथ पर अगण्य श्रान्त चपपासु आिाओ िंको फल तथा छाया रदान करने वाली अपनी रसरणर्ील र्ाखाओ िंको चवस्ताररत करने में समय की आवश्यकता थी।

डितीय अध्याय

ईश्वर की खोजमें

"यस्।ां जाग्रडतूिताडनसा डनशा पश्यतो मु ने ोः

- चजस नार्वान् क्षणभिंगुर सिांसाररक सुख में सब भूतराणी जागते िैं
वि तत्त्व को जानने वाले मुचन के चलए राचत्र िैं" (गीता : २-६९) ।

श्रीधर सात वषश की आयु में सेण्ट ऐन के चविार में रचवष्ट हुए। माँ सरोचजनी देवी ने, चजनें् इसी चविार में चर्क्षा राप्त हुई थी, इनकी चर्क्षा का उत्तरदाचयत्व अपने ऊपर चलया। वि इस ओर चवर्ेष रूप से सावधान थी िंचक उनका अ ाँगरेजी भाषा का आधार दृढ़ िो। यिााँ इस बात पर ध्यान देना रीक िोगा चक इस भावी स्वामी के रै्चक्षक जीवन के रारम्भ से अन्त तक की पढ़ाई-चलखाई ईसाई चर्क्षा से अनुराचणत रधानतः पाश्चात्य रिंग में रिंगे रै्चक्षक पररसर में हुई। अ ाँगरेजी की चर्क्षा न केवल इनके स्वभाव में आधुचनकता लायी वरन् इनको उदार दृचष्टकोण से भी सम्पन्न बना चदया।

एक वषश तक सेण्ट ऐन में रिने के पश्चात् वि रोज़ररयो माध्यचमक चवद्यालय में रचवष्ट हुए जिााँ उन्ोंनें तृतीय श्रेणी (आठवी िंकक्षा) तक अध्ययन चकया। उनके छात्र-जीवन की रारस्म्भक अवथथा से िी उनके सिपाठी उनके कुछ आध्यास्िक गुणो िंसे रभाचवत थे। रोज़ररयो सूकूल में इनके सिपाचठयो िंमें से देवीदास चगरधरलाल िन्द्राना थे जो आजकल मिंगुलूरु के एक रख्यात धनीमानी व्यवसायी िैं। वि श्रीधर के चवषय में इस रकार स्मरण करते िैं: "इस मिान् आिा के सम्बन्ध में मेरी सूमृचत यि िै चक वि अपने अध्ययन में सामान्य वगश से बहुत िी ऊाँ, रचतभार्ाली तथा मेघावी थे। उनका मुखमण्डल सदा िी कास्न्तमय तथा द्युचतमान रिता था। इसके साथ िी िम उनके जीवन के उषाकाल के उन चदनो िंमें भी उनें् सदा धमश तथा दर्शन के ग्रन्ो िंमें रुचि लेते

हुए पाते थे। वि कभी भी कोई समय व्यथश नष्ट निी िं करते थे। वि एक अतोषणीय पाठक थे। चनस्सने्दि, उनकी बैडचमण्टन जैसे खेलो िंमें रुचि थी। वि पैदल सैर करना पसन्द करते थे तथा
रकृचत और उसके सुरम्य सौन्दयश में आनन्द राप्त करते थे। यद्यचप वि सदा रफुल्ल रिते थे तथाचप
ऐसा रतीत िोता चक उनका मन किी िंअन्यत्र लगा हुआ िै। उनके इने-चगने चमत्र थे चजनें् वि अब
भी स्मरण करते िैं और उनें् स्मरण करने तथा उनसे चमलने को मित्त्व देते िैं। दैववर् उनका घर तथा मेरा घर एक राजपथ पर थे तथा परस्पर बहुत िी सचन्नकट थे। िम रचतचदन घर से चवद्यालय
एक साथ िी आया-जाया करते थे। इससे मुझे उनके चनकट सम्पकश में आने का लाभ हुआ।
कभी-कभी मुझे यो िंिी ऐसा चदखता चक वि एक चदन स्वामी बनेंगे। मुझे यि पता निी िंचक ऐसा
सोिने को मुझे चकसने रेररत चकया; चकन्तु यि चविार स्वतः रवचतशत था। कदाचित् इनके अचभजात पररवार के िोने के बावजूद भी उनें् सादा जीवन-यापन करते देख कर ऐसा लगा िो। उनकी
आवश्यकताएँ नूयूनतम थी िंतथा उनें् सादा जीवन पसन्द था। सम्भवतः इन सभी कारणो िंसे रभाचवत
िो कर िी मैंने ऐसा किा था चक वि एक चदन एक मिान् स्वामी बनेंगे। चकसी ने उनके साथ िो कैसा भी अन्याय चकया िो; चकन्तु वि चकसी के रचत भी चकसी समय कणशकटु र्ब्द का
रयोग निी िंकरते थे। जब कभी भी इस चवषय पर िािश िलती तो वि सदा िी अपने चमत्रो िंको
सन्मागश पर आगे बढ़ने तथा चवपथगामी न बनने के चलए रेररत चकया करते थे।"

यद्यचप श्रीधर का पालन-पोषण तथा चर्क्षा-दीक्षा पाश्चात्य रणाली से हुई; चकन्तु वि रिी
की िी सन्तान बने रिे। इनें् जो चर्क्षा राप्त हुई वि इनें् पाश्चात्य रिंग में न रँग सकी; क्ोचिंक
चजस पाररवाररक वातावरण में वि रि रिे थे वि चिन्दू-जगत् के रिीन नैचतक मूल्यो िंके सचलल से
स्नात था। इस भाँचत रिीन राच्य जगत् तथा आधुचनक पाश्चात्य जगत् के मध्य सिंयोजक का काम
करना उनकी चनयचत थी। बालक-रूप में उन्ोिंने सन्त-मििाओ िंकी जो गाथाएँ सुनी थी,िं वे उनके
चित्त में गिराई तक रवेर् कर गयी थी।िं उन्ोिंने िी इनकी आकिांक्षाओ िंको आकार रदान चकया।
परम सत्ता की मूचतश के रूप में पूजा को न केवल उनकी चनत्य ियाश में अचपतु उनकी सत्ता के
आभ्यन्तर रदेर् में सेिने का चिरथथायी थथान राप्त था। भगवान् राम उनके हृदय के चसिंिासन पर
पिले से िी रचतष्ठाचपत िो िुके थे। कोदण्ड राम की पचवत्र मूचतश, चजसे वि अपने उपनयन-सिंस्कार
के सूमृचत-चिह्न के रूप में चतरुपचत से लाये थे, 'मनोिर-चवलास' के पुण्य चनवास-थथान के उनके
जीवन में केन्द्र-चबन्दु का थथान ले िुकी थी।

इसी अवचध में एक चदन कुछ ऐसा घचटत हुआ चजसका श्रीधर के आध्यास्िक जीवन पर
रबल रभाव पडना था। उनें् एक ईर्-मानव के, एक ऐसे व्यस्क्त के सम्पकश में आने का सिंयोग
हुआ चजसका राम-नाम राण िी था तथा जो भारत के जन-जीवन पर अत्यचधक रभाव रखता था।
जब मििा गान्धी बिंगुलूरु में एक राथशना-सभा को सम्बोचधत कर रिे थे तब अष्टवषीय बालक
श्रीधर को अपने मातामि एन. वेंकट राव, जो सभाध्यक्ष की अध्यक्षता कर रिे थे, के साथ उनके
पास बैठने का पुण्य सद्भाग्य राप्त हुआ। बालक िोते हुए भी वि इस सत्य तथा अिििंसा के ईश्वर-
दूत के आध्यास्िक िुम्बकत्व से सम्मोचित िो गये। यि इनके जीवन का एक अचवस्मरणीय क्षण
बना रिा। बापू जी िी पररवार से बािर के रथम आध्यास्िक व्यस्क्त थे चजसने श्रीधर पर गिरा
आध्यास्िक रभाव डाला, ऐसी अन्त:रेरणा दी जो इस भावी स्वामी के चलए आजीवन सँजोये रखने
की चवचध बन गयी। िौबीस वषश के अनन्तर श्रीधर उनसे पुनः चमले। इस बार वि स्वामी चर्वानन्द
जी मिाराज के रचतचनचध के रूप में भिंगी बस्ती, चदल्ली गये। उस समय मििा जी ने
'भाग्यर्ाली पुरुष' कि कर उनका स्वागत चकया। आज भी वि गान्धी जी के साथ रथम चमलन
को अपने जीवन की सबसे मित्त्वपूणश घटना अनुभव करते िैं। उन्ोिंने कोदण्ड राम की मूचतश में

भगवान् के दर्शन चकये थे। अब उन्ोंनें एक ईर्-मानव के दर्शन चकये चजसका राण राम-नाम के साथ स्पस्न्दत िोता था।

उनके जीवन का आगामी रमुख अनुभव था परम चरय माता का चनधन। उनकी मृतुयु असामान्य पररस्थथचत में हुई। िैन्नै में 'चकम्बली' के अपने आवास-काल में वि एक चदन अपने पररवार के अन्य सदस्यो िंके साथ गाडी से समुि तट पर गयी ििाँ सैर करते समय पत्थर के एक टुकडे से उन्ें ठोकर लग गयी। उनके बायें पैर में कुछ पीडा िोने लगी और थोडी सूजन आ गयी। इसने कुछ िी घण्टो िंमें ऐसा गम्भीर रूप ले चलया चक चिचकत्सक को पाँव का अंगच्ेछेद करने का चनदेर् देना पडा। चकनुतु मृतुयु ने इसके चलए भी समय निीं चदया और ३ जून १९२६ को अट्ठाईस वषश की आयु में सरोचजनी देवी की संसार-यात्रा समाप्त िो गयी। परम चरय माँ की मृतुयु चकर्ोर श्रीधर के चलए संघातक अनुभव था। इस भूलोक में उनके चलए अपनी परम चरय माता से अचधक कुछ भी चरय न था जो माँ िोने के साथ–ी-साथ उनकी आचद गुरु भी थी।िं वि दर्वषीय सुकुमार िी थे जब मृतुयुदेव ने उनसे उनकी अतीव चरय वसुतु को छीन चलया। भीषण स्र्क से मृतुयु का अटल तथा अननुमेय स्वरूप उनकी समझ में आया। उन्ें संसार के दुःख का स्मरण हुआ। उन्ें भगवान् कोदण्ड राम की सूमृचत आयी। उन्ें मिाा गान्धी की राथशना-सभा की याद आयी और चजस समय वि अपनी माँ की क्षचत के चलए र्ोक कर रिे थे, उसी समय यि सत्य उन्ें स्पष्ट िो गया चक सांसाररक जीवन चमथ्या िै तथा सन्तजन मत्यश मानव के चलए उपलब्ध एकमात्र सन्मागश रदचर्शत करते िैं।

सरोचजनी देवी की मृतुयु से श्रीचनवास राव सांसाररक कतशव्यो िंतथा आनन्दो िंसे सवशथा उदासीन िो गये। वि अपने बच्चो िंको 'मनोिर-चवलास' के परम चवचर्ष्ट वगश के वातावरण से िैन्नै में 'चकम्बली' के कठोर एकाकीपन के वातावरण में वापस ले आये। इससे श्रीधर की चविार-चर्क्षा में अल्पकाचलक अन्तराल आया। चपता श्रीचनवास राव ने दोनो िंपुत्रो िंको सी. आर. सी. नामक पाठर्ाला में, जो पुरुषवाकम् मिल्ला में स्थथत थी, में रवेर् (दास्खल) करा चदया। वी. सुबै्बैया राइवेट टूयूटर रचतचदन श्रीधर राव और उनके अनुज एस. राघवेन्द्र राव-चजसे लाड से रघु पुकारा जाता था-तथा दो और अग्रजो िंफुफेरा भाई बाबू और मिेरा भाई छोटू को भी घर पर आ कर पढ़ाता था ताचक मिास सूकूल-चजसमें चर्क्षा माध्यम तचमल भाषा थी-में उन्ें रवेर् चदलाया जा सके। चकनुतु उनका पाठर्ाला जाना अल्पकाचलक िी रिा था। कारण चक एक चदन चपता श्रीचनवास राव बच्चो िंकी पाठर्ाला पुरुषवाकम् गये तो विाँ के अस्वच्छ-मचलन-गन्ेदे वातावरण से उन्ें ऐसी वीभत्सा (उत्पन्न) हुई चक उन्ोंनें अपने बच्चो िंको चर्क्षण के चलए विाँ उस र्ाला में न भेजने का तत्काल चनणशय ले चलया। यि क्रोधावेर् से उत्पन्न असामान्य चनणशय था। क्रोध र्ीघ्र िी र्ान्त िो गया और वि लौचकक कतशव्य के रचत उदासीनता की सामान्य मनोदर्ा में पुनः जा पडे। बच्चो िंकी चर्क्षा की कोई वैकस्ल्पक व्यवथथा निीं थी, इससे श्रीधर राव कुछ समय तक चवध्यनुरूप चर्क्षा के चबना िी रिे।

उस समय श्रीचनवास राव एक असाधारण स्थथचत से, अपनी वैयस्क्तक सुख-सुचवधाओ िंतथा ऐचिक दाचयत्वो िंके रचत भावर्ून्य अवथथा से गुजर रिे थे। वि पूजा में घण्टो िंचनमग्न रिा करते। वि विंर् परम्परा राप्त गुण तथा स्वभाव से अत्यचधक धाचमशक व्यस्क्त थे। वषों पूवश वि एकान्तवास तथा र्ास्न्त के चलए मिालय को पलायन कर गये थे, जो एक परम वन्दनीय चसद्ध मिाा श्री राघवेन्द्र स्वामी जी की समाचध के कारण जैसे 'चर्रडी' में सन्त श्री साई बाबा का समाचध थथान िै वैसे िी अचत रचसस्द्ध राप्त थथान िै तथा र्ान्त, एकान्त और पूजाचद धाचमशक कृत्योिं–अनुष्ठानो िंके चलए सवोचित सास्त्वक वातावरण िै। अब वि और भी अचधक अन्तमुशखी िो गये। सदा भगवन्नाम

गुनगुनाने में सिंलग्न रिते। न तो उन्ें वस्त्र की चिन्ता थी और न व्यविार की। उन्ोिनें दाढ़ी बढ़ा रखी थी। वि अपने कुल देवता वेंकटेश्वर तथा अपने इष्टदेव श्री राम की पूरा में तल्लीन रिते थे। वि बेला वाद्य पर लमे्बे समय तक भजन गाते और राचत्र में देर से सोते थे। वि बाह् रिी में इतना अचधक सावधान रिने लगे चक अपने वस्त्रो िंको चकसी को स्पर्श तक निी िंकरने देते थे। कभी-कभी वि श्रीधर को पूजा-कक्ष में रवेर् करने तथा अपनी ओर से वैसी पूजा करने के चलए किते थे। वि जानते थे चक श्रीधर का जन्म घरबार में आसक्त रिने के चलए निी िंहुआ िै। वि िी एकमात्र ऐसे व्यस्क्त थे, चजसने वषों पश्चात् जब श्रीधर ने बहुत िी समृद्ध सिांसाररक जीवन का त्याग चकया तो कोई आश्चयश तथा असन्तोष निी िंव्यक्त चकया। चपता तथा पुत्र में ऐसा सद्भाव था। ऐसा रतीत िोता िै चक चनष्ठावान् पुत्र ने राम-नाम को सूक्ष्म सिंस्कारो िंके रूप में अपने चपता से उत्तराचधकार में राप्त चकया था।

श्रीधर की चर्क्षा का अन्तराल अल्पकाचलक था। मातामि एन. वेंकट राव तथा मातामिी सुन्दरम्मा देवी को बच्चो िंकी चर्क्षा की ओर श्रीचनवास राव की उदासीनता पर चिन्ता हुई और वे बच्चो िंको एक बार पुन. मिंगुलूरु भेजने के चलए श्रीचनवास राव को सम्मत करने में सफल हुए। इस भााँचत श्रीधर ने रोज़ररयो में अपनी आद्य चविार-चर्क्षा पुनः रारम्भ कर दी जिााँ उन्ें अब पााँववी िं कक्षा में रवेर् चमला। यिााँ उन्ोिनें अनुभवी अध्यापको िंकी स्ेनिेर्ील देख-रेख में तृतीय वगश (अष्टम कक्षा) तक अध्ययन चकया। इन अध्यापको िंमें से अचधकिांर् ईसाई पादरी थे। इस समय श्रीधर को भगवान् की खोज िारा हृदय की सान्त्वना की तलार् की रबल अन्तश्चालना अनुभव िोने लगी। यिााँ रोज़ररयो माध्यचमक चवद्यालय में उन्ोिनें तृतीय वगश तक की अपनी चर्क्षा पूरी कर ली। इसके पश्चात् उन्ोिनें सेण्ट एलोचसयस मिाचवद्यालय के उच्च चवद्यालय चवभाग में रवेर् चलया जिााँ उन्ोिनें िितुथश (नवम कक्षा) तक अध्ययन चकया चजसमें सिंसृ्कत इनका एक वैकस्ल्पक चवषय था।

इसी समय इनके मातामि के चमत्र चवठ्ठल राव ने, चजन्ोिनें सरस्वती मुिणालय की थथापना की थी, एक उतृ्कष्ट पुस्तक 'भगवान् की खोज में' का चवमोिन चकया जो सन्त रामदास की रथम कृचत थी। पुस्तक भगवान् के उपिार के रूप में श्रीधर के िाथ लगी। चवठ्ठल राव ने पुस्तक की एक रचत अपने चमत्र एन. वेंकट राव को सम्मानाथश रेचषत की जो अपने-आप श्रीधर के िाथो िं तक पहुाँि गयी। इसका आवरण सुन्दर िरे रिंग का था। श्रीधर को अपनी स्वच्छ आलमारी में उसका रूप-रिंग बहुत रुचिकर लगता था। उन्ोिनें इसका पररर्ीलन इतनी बार चकया चक उनके मन में राय: समू्पणश पुस्तक आलोक-लेख की भााँचत अिंचकत िो गयी। इस पुस्तक के अध्ययन के समय यि केवल बारि वषश के चकर्ोर बालक थे। जब उन्ें 'भाव-समाचध', 'गुह् नेत्र' जैसे धाचमशक र्ब् चमलते तो वि र्ब्कोर् की सिायता लेते और तब उनके आर्य पर चविार करते। इन र्ब्ो िंमें से कुछ के चलए उनमें चवर्ेष रुचि उत्पन्न िो गयी। वि उनके गूढ़तम अथश की खोज का रयत्न करते। उनके चलए पुस्तक के रथम आकषशणो िंमें से एक उन तीथशथथलो िंका चववरण था चजनकी रामदास ने भगवान् की खोज में यात्राएाँ की थी।िं इस रकार, रारम्भ में यात्रा-चववरण के रूप में इस पुस्तक ने इनके चित्त को आकचषशत चकया। धीरे-धीरे उनके हृदय की तिी झिंकृत िो उठी। उन्ोिनें इस पुस्तक की आध्यास्िक धारा पर बहुत िी उत्साि तथा आनन्द की रचतचक्रया चदखलायी। चिमालय, गिंगा तथा ऋचषकेर् अब न केवल पररचित थथान थे, वरन् ये उनके मन में बार-बार माँडराने लगे थे। रामदास की आध्यास्िक आिकथा ने उन्ें कई चदनो िंतथा मिीनो िंतक आनन्दाचतरेक में रखा। जिााँ-किी िंभी वे जाते यि पुस्तक उनकी सिचर िोती। "िे राम! आप िी चपता, माता, भ्राता, चमत्र, गुरु, ज्ञान, यर्, धन तथा सवशस्व िैं। आप एकमात्र र्रण िैं। अपने दास को सदा के चलए अपने में, एकमात्र अपने में िी चवलीन कर लें।" सन्त रामदास के इस

रकार के भस्क्तपूणश भावोद्गार उनके हृदय को चदव्य रेमोन्माद से रभाररत करते थे। इनकी भगवान् तथा ईर्-मानव के रचत उत्कण्ठा चदन-रचत-चदन बढ़ती गयी।

श्रीधर को सन् १९३२ में मिंगुलूरु तथा अपने बालकपन के चमत्रो िंसे चवदायी लेनी पडी तथा नगर के बाह्र्ािि जो अब चर्नोयनगर के नाम से रचसद्ध िै, में 'चकम्बली' कोठी में अपने चपता के साथ रिने के चलए िेन्नै को रथथान करना पडा। यिााँ उन्ें सर एम. सी. टी. मुत्तैया िेचट्टयार उच्च चवद्यालय में रवेर् चमला जिााँ उन्ोनिें दो वषश तक अध्ययन कर एस. एस. एल. सी. पाठ्यक्रम समाप्त चकया। इस चवद्यालय में उनके सिपाचठयो िंमें श्री ए. रामदास, श्री वी. आर. क्रिवती, श्री एम. सुब्रह्मण्यम तथा कुछ अन्य लोग थे चजन्ोनिें भचवष्य में जीवन के चवचभन्न व्यवसायो िंमें रचतष्ठा राप्त की। तथाचप श्रीधर सवशथा चभन्न सााँिे में ढले थे। जन्म, चर्क्षा, लालन-पालन, िसियश तथा स्वभाव से वि आध्यास्कि जीवन की ओर िात् स्खिंिरे थे। उनके सिपाठी उन्ें अचधकिांर् समय मौन तथा अन्तमुशखी पाते। समय-समय पर के उनके सौम्य पररिास भी, जो उन्ें िास्य भाव में रखते, वास्तव में उनके सिपाचठयो िंकी इस भावना को कभी भी दूर निी िंकर पाये चक वि उनसे कुछ-कुछ चभन्न िैं। चनस्सन्ेदि वि एक रचतभार्ाली छात्र थे तथा अपने चवषयो िं पर सुगमता से अचधकार राप्त कर लेते थे। परन्तु वि कभी भी जीचवका की दौड में लगे रतीत निी िंिोते थे। उनकी समग्र सत्ता आध्यास्कि स्पन्दनो िंसे इतनी अचभभूत थी चक उनके अनेक चमत्रो िं को ऐसा रतीत िोता चक कक्षा में जो-कुछ िोता, उसकी ओर वि कभी भी बहुत उत्सुक अथवा सावधान निी िंरिते थे। रै्चक्षक उत्कषश की ओर उनकी उदासीनता के बावजूद भी उनका मन स्वभावतः एकाग्र िोने से वि पाठ्य-चवषयो िंको इतनी अल्पावचध में स्मरण कर सकते थे चक वि सदा िी मुत्तैया िेचट्टयार उच्च चवद्यालय के लब्ध-रचतष्ठ छात्रो िंमें से एक माने जाते थे। वि अपने अध्यापको िंसे केवल पुस्तको िंके पाठ सीखने के अचतररक्त अनेक अन्य बातें सीख रिे थे। उन्ोनिें अपने अध्यापको िंमें से कुछ के समचपशत जीवन तथा गौरवपूणश आिरण से िररत्र के चिरथथायी पाठ आिसात् चकये। उनमें से कुछ अध्यापक परम्पराचनष्ठ ब्राह्मण तथा श्री रामानुजािायश के वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी थे। रधानाध्यापक श्री चतरुवेंगलािायश, इचतिास के अध्यापक श्री सुन्दर राघवािायश, सिंस्कृत के अध्यापक श्री कृष्णमािायश तथा अाँगरेजी के अध्यापक श्री गोचवन्दािायश के भव्य तथा गौरवपूणश जीवन ने श्रीधर के हृदय पर अपना चिरथथायी रभाव छोडा िै। इन सबको स्वामी जी आज भी स्मरण करते िैं।

जब चक इनके सिपाठी इन्ें उदासीन तथा खोया-खोया रिने वाला साथी समझते, उस समय भी यि र्ास्न्तपूवशक उस ज्ञान की खोज में रिते चजसे एक बार जान लेने पर कुछ जानने को रे्ष निी िंरि जाता। अन्ततः चर्क्षा मात्र एक रचक्रया िै जो उस पूणशता को रकट करती िै जो व्यस्क्त के अन्दर पिले से िी चवद्यमान िै। श्रीधर र्ास्न्तपूवशक उस पूणशता को अचभव्यक्त करने का सिंघषश कर रिे थे चजससे उन्ोनिें अपनी अन्तदृशचष्ट से उस समय अपने में पिले से िी चवद्यमान अनुभव चकया था। अतः उनकी चर्क्षा चवद्यालय की िारदीवारी तक िी सीचमत निी िंथी। कुछ ऐसा था चजसमें वि सदा घर में, चवद्यालय में तथा जिााँ-किी िंभी िोते अपने को सिंलग्न रखते । श्रीधर के सिपाठी डा. रामदास उन्ें इस रकार स्मरण करते िैं: "एक सिाध्यायी के रूप में वि िम लोगो िंकी तरि िी जीवन के आनन्द से पूणश थे। उन्ें चक्रकेट में वैसी िी बहुत रुचि थी, जैसी चक मुझमें थी। िम दो रचतिन्द्वी चक्रकेट टीमो िंके स्खलाडी थे तथा रायः एक-दूसरे का सामना करने के चलए खडे चकये जाते थे। उनके माता-चपता चकम्बली िंनामक एक असम्बद्ध पुरानी िवेली में अचमिंचजकरै में रिते थे। यि थथान िेन्नै के दचक्षण पचश्चम बाह्र्ािि में था और अब यि मिानगरीय

र्नेनै का ििलिल-पूणश थथान िै। उनके पररवार के लोग उदार थे और िमें अपने बडे िाोते में चक्रकेट का मैि खेलने देते। मिराज स्वयिं घर की पाकर्ाला से िमें अल्पाार चदया करते थे।

"तथाचप, उनमें और िममें एक अन्तर था। वि मधुरभाषी तथा भि थे। वि असत्य-भाषण करने, झगडने तथा अपने अध्यापको िंसे र्रारत करने जैसे चवपथगमन में कभी भी चनरत निी िंिोते थे जैसा चक उस आयु के सामान्य छात्रो िंसे अपेक्षा की जाती िै। कभी-कभी वि िमसे अध्याि की िििाश चकया करते। िमारे चलए यि भाषा चवलक्षण थी और िममें से कुछ उन्ें सनकी समझने की भूल करते थे।" वषों बाद जब श्रीधर एक अत्यन्त पूचजत आध्यास्िक व्यस्क्त थे, चवश्वभर में सम्माचनत तथा अभ्याकािंचक्षत व्यस्क्त थे, वे अपने इस पुराने सिाध्यायी से उसी से्नि से चमले जैसा कोई चमलनसार व्यस्क्त अपने सस्न्मत्र के साथ रदचर्शत करता िै। चकनुतु डा. रामदास अपने पुराने चमत्र िारा उस समय चवकीणश की हुई िादीस्प्त से अचभभूत िो उठे। उन्ोनें एक क्षण में यि गम्भीरता से अनुभव चकया चक वि एक भगवत्साक्षात्कार-राप्त िाा के साचन्नध्य में िैं।

चनचवशकार तथा रर्ान्त रकृचत से सम्पन्न श्रीधर स्वभावत: िी घर में अग्रजो िंके भी रेरणा-स्रोत थे। स्वामी वेंकटेर्ानन्द के बो् िंमें, "श्रीधर चवद्यालय में छात्र तथा घर पर साधु थे। उनके ओष्ठो िंसे कभी एक कणशकटु ब्् अथवा अश्लील विन बािर न चनकलता। जब उनके ज्ेयेष्ठ फुफेरे भाई चकन्ी िंअसावधान क्षणो िंमें सदोष विनो िंका रयोग करते तो वि उन्ें बहुत िी चर्ष्ट ब्ो िंमें सुधार चदया करते थे। यि ठीक िी किा गया िै, रभात चदन का सूिक िै। अपनी चकर्ोरावथथा में भी दररिो िंके रचत उनकश। उदारता उनकी सवाशचधक सुचवज्ञात चवचर्ष्टता थी। मुतुतुमारी नामक एक वृद्धा चभखाररन थी चजसे श्रीधर रचतचदन भोजन कराया करते। उन्ें चनजी व्यय के चलए जो धन चदया जाता उससे वि औषचधयाँ खरीद कर रोचगयो िंतथा चनधशनो िंमें चवतररत करते थे। सेवा करने के चलए निी िंवरन् चनथस्वाथश सेवा के अनुपम आदर्श में चवकचसत िोने के चलए उनका जन्म हुआ था। लोग वीभत्स चतरस्करणीय परु की भाँचत कुष्ठरोचगयो िंसे दूर रिते िैं; चकनुतु कुचष्ठयो िंकी सेवा श्रीधर के चलए एक स्वैस्च्छक तथा नैसचगशक कायश था। वि उनके व्रणो िंकी मरिम-पट्टी करते, आक्रान्त भाग पर औषचध लगाते और खाने के चलए औषचध देते। इन उपेचक्षत तथा पररत्यक्त मानव-राचणयो िं के चलए उनमें असीम करुणा थी। जब इनके फुफेरे भाई वेंकट राव, जो इनसे छि वषश ज्ेयेष्ठ थे, ने चबना समझे िी इनसे पूछा चक वि चकर्ोरावथथा में कुचष्ठयो िंकी सेवा में क्ो िंइतनी भावरवणता से सिंलग्न िैं तो श्रीधर के पास अत्यन्त सरल चकनुतु चनरुत्तर बना देने वाला उत्तर था : "क्ोचिंक कुष्ठी भी आप और मेरे जैसे िी िैं।"

बाल्यकाल से िी वि सेवा, भस्क्त तथा ध्यान के अपूवश सिंघात थे। स्वामी रामदास की 'भगवान् की खोज में' नामक पुस्तक चजसका उल्ेलेख इससे पूवश चकया जा िुका िै, ने इन्ें भगवान् के चलए पागल-सा बना चदया। "िे राम ! रामदास को अपने चलए पागल बना दें। वि आपके अचतररक्त अन्य चकसी की िििाश न करे। आप ऐसे करुणामय िैं। आप ऐसे से्निमय िैं। िे रेम! िे करुणा! रामदास को पूणशतया अपना बना लें।" भगवत्साक्षात्कार-राप्त सन्त के ये विन उनके अन्दर गिराई से रवेर् कर गये थे और श्रीधर भगवान् की खोज में, परम सत्ता के स्वरूप की खोज में अिचनशर् सिंलग्न रिने लग गये।

इस अवथथा में उन्ें एक ऐसे मैत्रीपूणश पथरदर्शक की आवश्यकता थी चजससे वि अपने चविारो िंतथा भावनाओ िंमें भागीदार बना सकें। इसके चलए उनके फूफा श्री आर. कृष्ण राव िी उपयुक्त व्यस्क्त थे। वि श्रीचनवास राव के पररवार के एक सदस्य थे। उनकी एकमात्र बिन गोपी

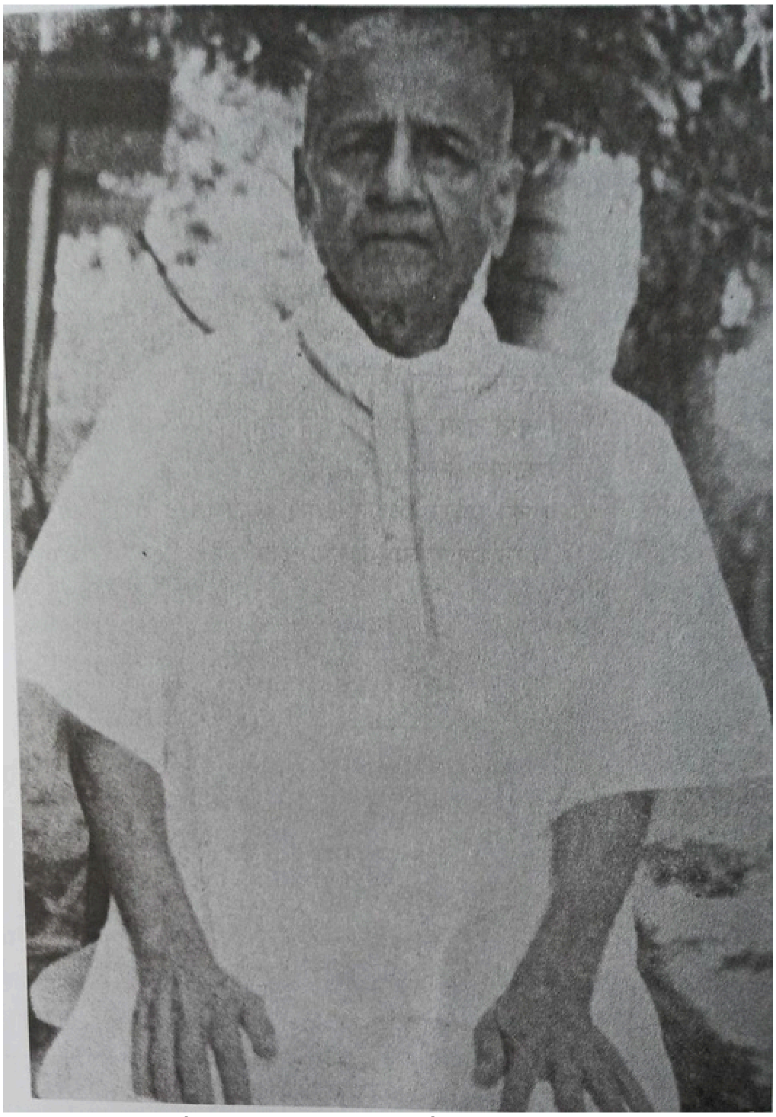
बाई उनसे िी चववाचित थी। वि अपने बाह् जीवन में गृिथ्थ तथा अपनी आन्तर सत्ता में सन्त थे।
वि भगवान् श्रीराम के परम भक्त थे। चकसी को यि भी पता निीं िै चक उन्ोंनें चकतने करोड राम का चदव्य नाम अपनी नोटबुको िंमें ििपिाप चलख डाला था और अपने-आपमें गुनगुनाते रिे। उन्ोंनें
अपने चकर्ोर भतीजे श्रीधर को भगवत्प्रास्प्त के चलए जपयोग की साधना अपनाने के चलए रेररत चकया। छप्पन वषीय इस भागवत पुरुष ने अपने व्यविार तथा उपदेर् से इस भगवान् के चकर्ोर
बालक पर रभाव डाला जो पिले से िी मिान् आध्यास्त्मक सिंस्कार बहुत िी स्वाभाचवक ढिंग से
रकट करता था। दोनो िंिी एक-दूसरे में आध्यास्त्मक रेरणा के रवाि को बढ़ाते थे। इन दोनो िंका
सस्म्मचलत जीवन मानो चवचधचवचित सत्सिंग था। ऐसे िी भाग्यर्ाली सिंग को उचद्दष्ट करके भगवान् ने
गीता में किा िै: **"डनरन्तर मेरे में मन लगाने वाले और मेरे में ही प्राणो िंको अपपण करने
वाले िक्तजन सदा आपस में मेरे प्रिाव को जानते हुए तथा मेरा गुण-कथन करते हुए ही
सनुतुष्ट होते हैं और मुझमें डनरन्तर रमण करते हैं।"** फूफा तथा भतीजे ने अपने अन्य पाररवाररक
दाचयत्वो िंतथा बन्धनो िंको चवसूमृत निीं िंचकया, चफर भी वे एक िी व्यवसाय में सिंलग्न भाइयो िंकी भााँचत एक साथ पूजा करते तथा चवचवध र्ास्त्रो िंतथा सन्त रामचलिंग स्वामी, तायुमानवर आचद सन्तो िं के रेरणादायी जीवनो िंको एक-दूसरे को पढ़ कर सुनाते। सायिंकाल से अधशराचत्र तक वे आध्यास्त्मक िािशओ िंमें सिंलग्न रिते तथा रिीन र्ास्त्रो िंमें अन्तचवशष्ट गम्भीर सत्यो िंकी थाि लेने का रयत्न करते।

इन बैठको िंके चदनो िंमें िी श्रीधर कृतसिंकल्प थे चक यचद चनचवशकल्प-समाचध की रास्प्त िी वि लक्ष्य िै जिााँ व्यस्क्त परम सत्ता का साक्षात् दर्शन करता िै तो यि उनकी एक दार्शचनक सिंकल्पना मात्र न रि कर एक जीवन्त अनुभव िोगा। अब वि एक ऐसे आध्यास्त्मक व्यस्क्त की खोज में थे चजसके चलए सवोत्कृष्ट आध्यास्त्मक िेतना एक यथाथशता रिी िो, जीवन का चनरन्तर अनुभूत तथ्य रिा िो। उन्ोंनें अपने आदर्श को दचक्षणेश्वर के ईर्मानव रामकृष्ण परमिंस में साकार पाया। उन्ोंनें मिेन्द्रनाथ गुप्त िारा स्मरणीय रूप से चलस्खत उत्कृष्ट तथा रोमािंिक पुस्तक 'श्री रामकृष्ण की वाताश' का अध्ययन चकया। आर. कृष्ण राव ने िी रामकृष्ण के चदव्य व्यस्क्तत्व का अपने चरय भतीजे से पररिय कराया था। चिर-काल से अनुभव की जा रिी आवश्यकता अब पूचतश की ओर बढ़ रिी थी। श्रीधर इस मिान् पुस्तक के अध्ययन तथा चिन्तन में चदन-रात लगे रिते। अन्त में उन्ें इसमें चकिंचित् भी सन्ेदि न रिा चक आध्यास्त्मक अनुभूचत की उत्कृष्टता एक यथाथशता िै चजसे परमिंस देव ने न केवल स्वयिं अनुभव चकया अचपतु चवश्व को चदखलाने के चलए उसे रदचर्शत भी चकया। 'श्री रामकृष्ण की वाताश' का अध्ययन श्रीधर के चलए केवल स्वाध्याय न रि कर सचवकल्प-समाचध-सा था। उन्ें यि पूणश चनश्चय िो गया था चक गदाधर चवष्णु ने अपने भक्तो िं को चदये हुए विन को पूरा करने के चलए स्वयिं िी दचक्षणेश्वर के सन्त के रूप में अवतार चलया िै। वि वाताश को आद्योपान्त इतनी बार पढ़ गये चक वि उन्ें रायः कण्ठथथ िो गयी। श्री रामकृष्ण देव के माता र्ारदामचण देवी के साथ असाधारण सम्बन्ध के अध्ययन से उनमें सामान्य रूप से स्त्री-जाचत के रचत एक मूलतः नवीन स्वरूप चवकचसत हुआ। वि रत्येक स्त्री में भगवती मााँ के रूप को देखते थे। नवयौवन काल में स्स्त्रयो िंके सम्बन्ध में उनके इतने श्रद्धामय तथा चनरपवाद रुद्ध चविार तथा व्यविार को देख कर उनके चमत्रो िंको आश्चयश िोता था। उनके चलए स्त्री भगवती माता की अचभव्यस्क्त थी, इतना िी निीं िंवि स्वयिं नारायण की अचलिंग अिा थी। वि रामकृष्ण की काली माता की पूजा से इतना अचधक रभाचवत थे चक एक समय वि अपने गृि-पररसर में भगवती माता का मस्न्दर चनमाशण कराना िािते थे। अपने नवयुवक भतीजे के अन्दर जो चनवृचत्त का पौधा रसु्फुचटत िो रिा था, उसे आर. कृष्ण राव ने िी उस समय सिीिा तथा पररपोषण चकया। उनके चलए श्रीधर को यि चनश्चय कराना सरल था चक चत्रकाल में एकमात्र भगवान् िी सत्य िै तथा अन्य सभी कुछ क्षणभिंगुर िै। अब केवल इस रकार के चविारो िंको चनरन्तर रोत्साचित कर तथा

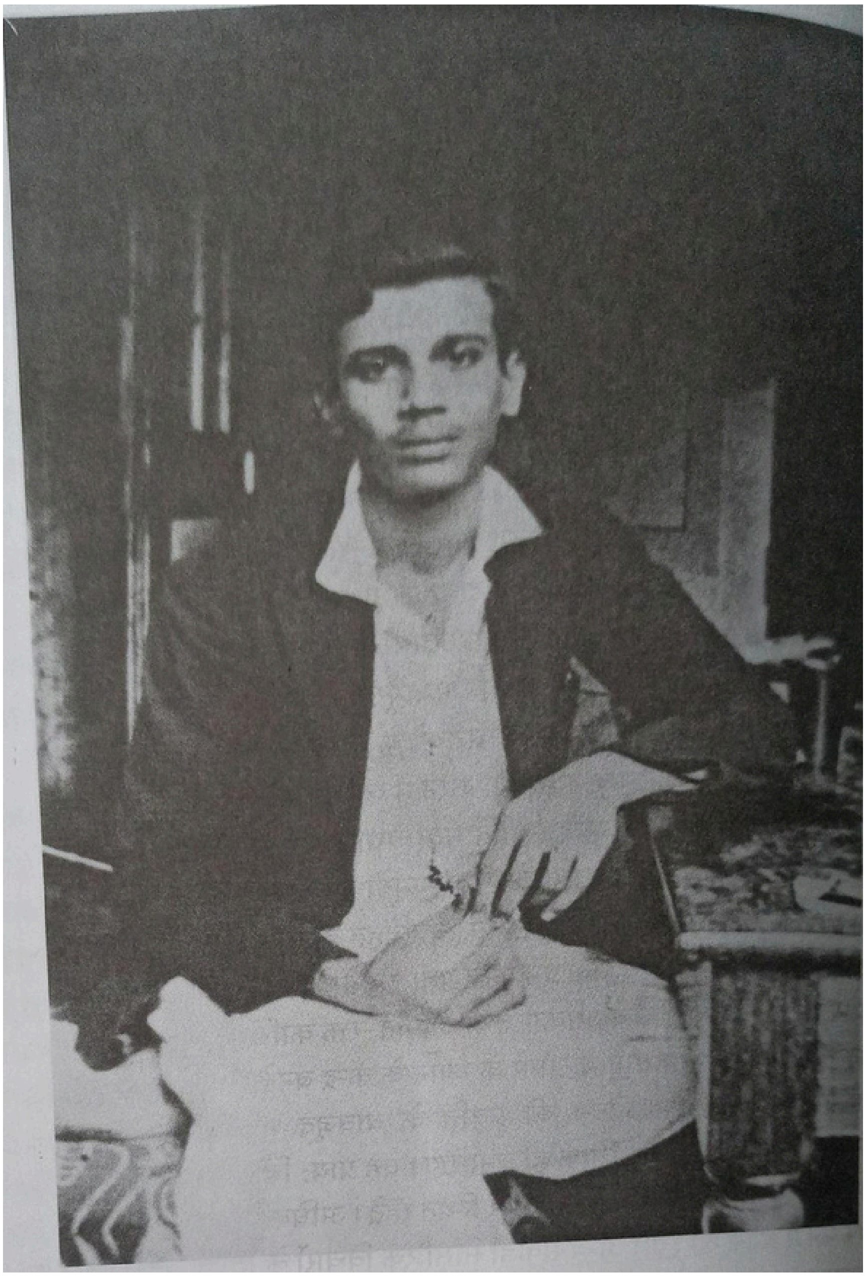
सभी सम्भाव्य बाह् चवक्षेपो िंको भीतर आने से रोक कर उसे एक धारा के रवाि के रूप में चनरापद बनाये रखना िी रेष रि था। श्रीधर में कृष्ण राव के रचत इतना सम्मान था चक चिर- काल पश्चात् सन् १९५० में जब वि रचसद्ध अस्खल भारत यात्रा-काल में स्वामी चर्वानन्द के साथ िे न्नै पहुँ तो उस समय यद्यचप वि उच्च आध्यास्कि उपलस्ब्धयाँ राप्त कर िुके थे और सिंन्यासी बन िुके थे, चफर भी वि पुष्प तथा फल ले कर कृष्ण राव को चमलने को ऐसे भागे जैसे चक चकसी सन्त से चमल रिे िो िं तथा अपने वृद्ध फूफा के िरणो िं में गम्भीर श्रद्धा तथा कृतज्ञता से साष्टािंग रणाम चकया।

अब चकम्बली में भगवान् श्री रामकृष्ण परमिंस देव श्रीधर के उपास्य थे। वि रामकृष्ण तथा र्ारदामचण के चित्र ले आये तथा सभी चवचित चवचध-चवधानो िंका पालन करते हुए परम्परागत रीचत से उनकी पूजा करने लगे। रत्येक रचववार को वि मैलापूर, िेन्नै के रामकृष्ण चमर्न में जाते तथा रामकृष्ण की सुतुचत में सिंस्कृत के मिंजुल स्तोत्र सुनाते। उन्ोनिं स्वामी चववेकानन्द के समूपूणश साचित्य में उनके ओजस्वी भाषणो िंको पढ़ा चजसने उन्ें अध्यिा की रबल चवद्युत्-धारा से रभाररत कर चदया। स्वामी चववेकानन्द का आधुचनक भारत का भावोत्तेजक आह्वान उनके चलए दैचनक गीता बन गया।

रामकृष्ण के उदार समिय-योग के साथ-साथ श्री िैतन्य मिारभु के स्वर-माधुयश ने अब श्रीधर को सम्मोचितचकयाजोचकस्वाभाचवकिीथा,क्ोिंचकइनके माता-चपतातथापूवशजसभीश्री मध्वािायश-सम्प्रदाय के अनुयायी रिे थे। मिान् वैष्णवािायश मध्व ने उडीपी में आठ मठ थथाचपत चकये थे। श्री मध्व के उत्तराचधकाररयों के एक आनुषिंचगक आम्नाय ने िोसपेट में उत्तराचध मठ की थथापना की थी। उत्तराचध मठ के धमाशध्यक्ष परम पावन श्री स्वामी सत्यध्यान तीथश श्रीचनवास राव के पररवार के गुरु थे। वि मिान् तपस्वी, ज्ञानी तथा चसद्ध थे। अपनी तपस्या तथा भगवती देवी की कृ पा से वि देवी के कुिं कु म को रसाद-रूप में चवतरणाथश िव्य-रूप में रकट कर चदया करते थे। जब वि राव जी के घर पधारे तो श्रीधर ने धमाशध्यक्ष के परम सन्तोषरद ढिंग से उनकी स्वयिं सेवा की और अपनी आध्यास्कि रगचत के चलए कुलगुरु का आर्ीवाशद राप्त चकया। स्वामी सत्यध्यान तीथश ने श्रीधर के र्रीर पर र्िंख तथा िक्र की मुिाएँ अिंचकत की।िं



श्री आर कृष्णराव फूफा जी



लोकातीत दृचष्ट -स्वामी जी

उनकीवैष्णव-कुल-परम्पराउन्र्ेंतिन्यगौडीयचमर्नलेगयी।विसप्तिामेंएकबारिनै्नै के गौडीयमठजातेऔरउनकीपूजा-पद्धचतकापालनकरते।विवैष्णवदेवगणिोंके धमाशि पुरुषिोंके रिणिोंमेंदीघशदण्डवत्रणामकरते।इसदण्डवत्-रणालीने,जोगौडीयचमर्नकी एकचवचर्ष्टतिौ,श्रीधरकिााचदशकअनुमोदनराप्तचकया।इससेउनें्व्यस्तके आध्यास्कि चवकासमेंचवनम्रतातथाअनिार्िंसाकीपरममित्तासमझमेंआयी।गुरुदेवचर्वानन्दइसरकार कीचवनम्रताकाअभ्यासपासकरतेथेतथाइसरकारकीनमस्कार-साधनाकोर्ािंके चमटाने कीउपयोगीचवचधकेरूपमेंरचदष्टकरतेथे।चवनम्रताआध्यास्किसाधककारथमगुणिै।उसे सदाइसचदव्यगुणकासम्पोषणकरनेके चलएउत्कस्ण्ठतरिनिााचिए।यीकारणिैचक दण्डवत्-रणाली-जैसी रतीयमानतः सामान्य-सी वसुतु श्रीधर जैसे वास्तचवक साधक में मित्त्वपूणश आध्यास्कि साधनामेंरूपान्तररतिोगयी।

इस रकार छोटी-बडी साधनाओ िंके िारा श्रीधर जब आध्यास्त्कि चर्क्षा में अनचभव्यक्त रूप से रवीणता की ओर बढ़ रिे थे, उसी समय सन् १९३४ में उन्ोनिें उच्च चवद्यालय की परीक्षा उत्तीणश की। तत्पश्चात् उन्ोनिें लोयोला मिाचवद्यालय में रवेर् चलया चजसमें इण्टरमीचडएट (कला) में

इचतिास तथा तकशर्ास्त्र और बाद में स्नातक (कला) में इचतिास तथा अथशर्ास्त्र उनके अचतररक्त चवषय थे। मिाचवद्यालय में आने के बाद वि स्वभाव से और भी अचधक अन्तमुशखी तथा चिन्तनर्ील

बन गये। वि रचतचदन दीघशकाल तक सन्त-सम्बन्धी पुस्तको िंके अध्ययन करने, सामान्य जीवन पर

चिन्तन करने तथा आध्यास्त्कि साधनाएँ करने में व्यस्त रिते। ऐसी धमाशचभमुखता िोते हुए भी,

उन्ोनिें अपना पाठ भली-भाँचत पढ़ा तथा इण्टर की परीक्षा गौरव के साथ उत्तीणश की। उनकी

अन्तमुशखी तथा अधश रिस्यमयी जीवनियाश ने उन्ें अपने कतशव्यो िंतथा दाचयत्वो िंसे अरभावनीय निीं िं

बनाया। वि बहुत िी समाजमूलक उत्सिा रदचर्शत करते थे तथा जीवन से अत्यचधक रेम करते

रतीत िोते थे। अपने सुन्दर कटे घने बालो,िं कौर्ेय वस्त्रो िंसे आवृत लम्बे आकार तथा आपीत- रक्त कास्न्त से आप्लाचवत मनोरम आकृचत से वि सदा समागमो िंमें लोगो िंके ध्यान के केन्द्र बनते।

इस भूषािारी रूप-रंग तथा आधुचनक र्ैचक्षक जीवन की रवृचत्त के बावजूद भी इनका जीवनचवषयक

दृचष्टकोण अत्यचधक आध्यास्त्कि िी बना रिा। वि रायः चिन्तनर्ील चदखायी पडते तथा कक्षा से

जिाँ वि बैठे िोते, बहुत दूर स्थथत रिते। अचधकांर् अन्य लोगो िंकी भाँचत उनके मन में धाचमशक चविार अन्य सैकडो िं सांसाररक चविारो िं के साथ केवल सभामिंकि के अवसर पर समय-समय उद्धृत करने के चलए िी निीं मँडराया करते थे। वे तो उनकी आिा के अत्यचधक चरय आिार थे। वे उन पर घण्टो िंचिन्तन करते और उनके अनुसार अपना जीवन चनदेचर्त करने के चलए नैचतक मान्यताओ िं के रूप में उन्ें अपनी सत्ता के अन्ततशम रकोष्ठ में साँजोये रखते। इनकी मूल चसद्धान्तो िंमें गम्भीर चनष्ठा तथा उन पर अटल बल स्वभावतः िी इनके चमत्रो िंके चलए कभी-कभी आश्चयशकर वस्तु बन के मध्य कुछ कृचत्रम दार्शचनक िाश सामान्य तरुणसुलभ जोर् से िल रिी थी, श्रीधर जाती। उदािरणतः एक चदन जब उनके चमत्रो िं अचभमुख हुए और पूछा, 'आपका' मैं तथा 'आप' बी िंसे क्ा तात्पयश िै? आपका तात्पयश र्रीर से िै

अथवा आिा से? ऊँचे स्वर से आ रिी आवाज तुरन्त र्ान्त पड गयी। जो छात्र आिंचर्क रूप से

आिसात् चकये हुए तथा दूसरो िंसे गृिीत दार्शचनक चविारो िंकी सोत्सािा िाश आध घण्टा अथवा

इससे अचधक समय से िला रिे थे, अब सिसा मौन तथा संकोचित िो गये; क्ोंचक उन्ें पता

निीं िंथा चक श्रीधर के सरल रश्न तथा र्ान्त चकन्तु गम्भीर आिरण के सामने कैसे आगे बढ़ें।

लोयोला मिाचवद्यालय का छात्र-जीवन उन्ें ईसाई धमश के घचनष्ट सम्पकश में लाया। पचवत्र

बाइचबल ने उन्ें अत्यचधक रभाचवत चकया। अन्य ईसाई लेखक टोमस ए. केस्म्पस कृत 'इचमटेर्न

आव् क्राइस्ट' ने उनके मन पर अचमट रभाव छोडा। कूरूस पर अचभनीत मिाबचलदान में उन्ें चनम्न

आिा के रचत मरने तथा र्ाश्वत जीवन के चलए जीने के सन्देर् की अचभव्यंजना चमली। असीसी के

सन्त फ्ांचिसस ने, जो भगवान् के सभी राचणयो िंके, चवर्ेषकर पचक्षयो िंतथा अबोध परुओ िंके रचत

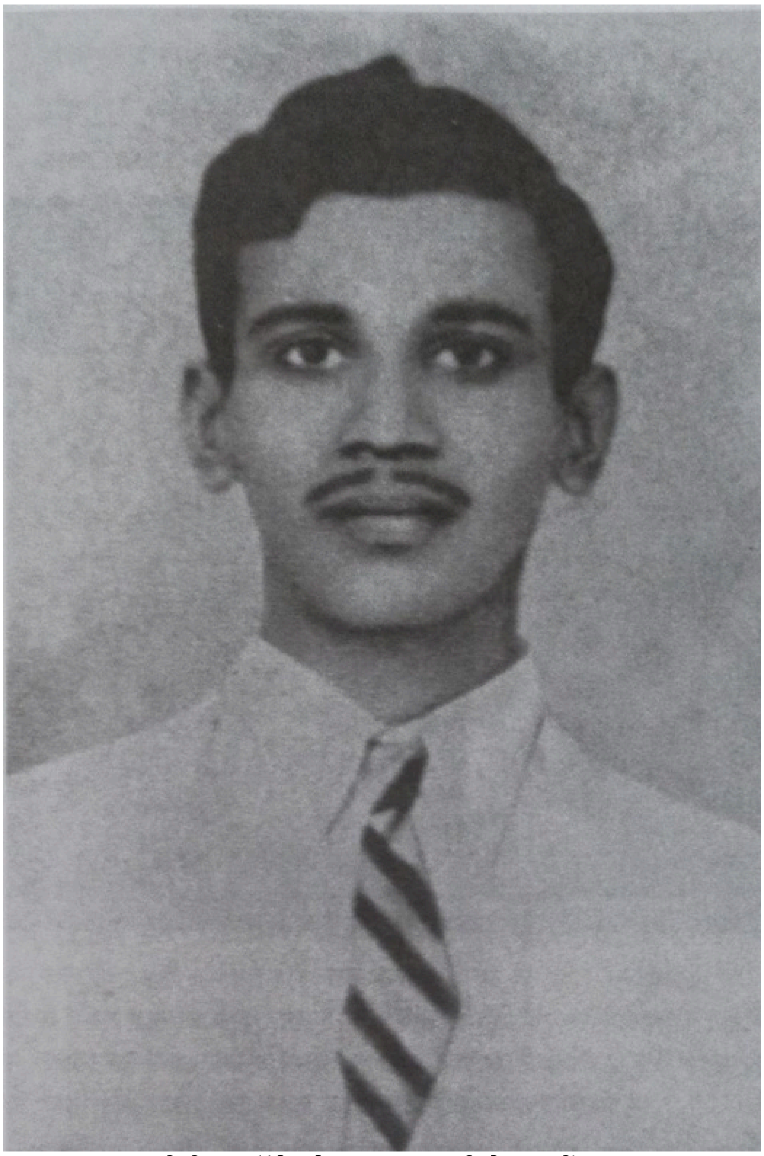
अपनी असीम करुणा के चलए चवख्यात थे, श्रीधर पर इतना स्र्क्तर्ाली रभाव डाला चक वि पचबत्र

सन्त की आिा के साथ एकत्व की अनुभूचत करने लगे। सन्त फ्ांचिसस की इस राथशना को उन्ोनिें

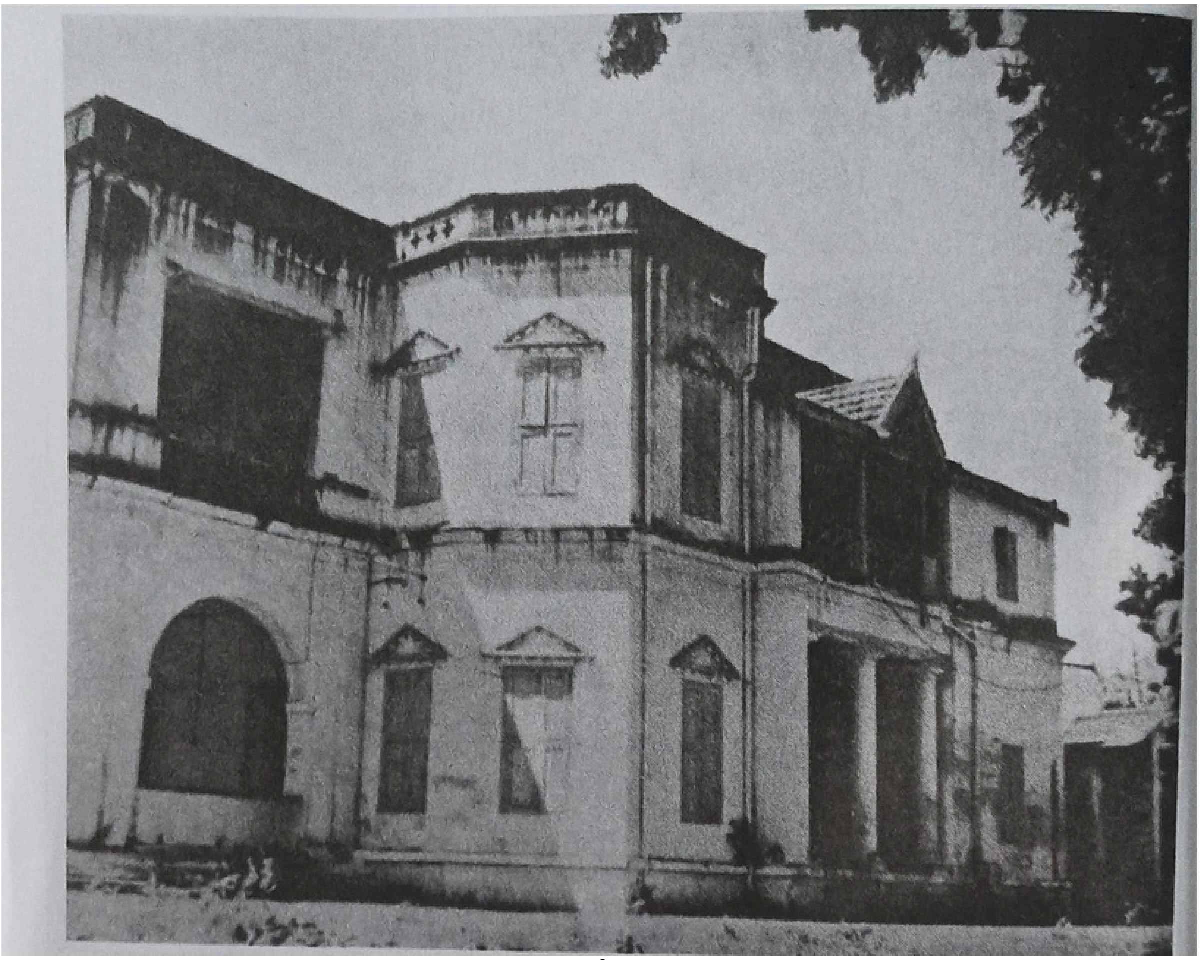
रायः गुरुमि के रूप में स्वीकार चकया :

बना डनज शान्तन्तदूत हे ईश!
जहाँ घृणा हो प्यार को बोऊँ;
डहांसास्थल पर क्षमा साँजोऊँ;

फूटपृथकता प्ेरेम से जोहाँ;
शक को अपनेपन में मोहाँ;
जहााँ डनराशा आशा ि‍र दूाँ;
तम में जगमग ज्योडत कर दूाँ;
हषप ि‍राँ मैं दुेःख डवषाद में, हे मेरे जगदीश ।
बना डनज शान्तन्तदूत हे ईश ।।
डदव्य आत्मन्। परम आत्मन् ! कर यह बुन्ति प्रदान।
तुडष्ट लेने से ज्यादा मैं, कराँ सान्त्वना दान ।
ज्ञानी समझा जाने से, अच्छा मैं समााँ ज्ञान।
प्यार डकये जाने से समहाँ, करना स्ेनेह महान्।
डनडहत सदा देने में पाना, क्षडमत से क्षमा प्रदान ।
क्ोडांक मरण में डिपी अमरता, यह है फ्ांाडसस का उद्गान!



लोयोला कॉलेजके   चवद्याथी के रूपमें



चकम्बली भवन

बादमें,उन्ोनिें इसका मूल्यिांकन कर इसे अपने गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द की उतृकृष्ट 'चवश्व-राथशना'के तुल्य माना।

लोयोला मिाचवद्यालय के अपने आवास-काल में श्रीधर ने अपनी र्ान्त, रफुल्ल तथा चवनोदर्ील मनोवृचत्त िारा चवचर्ष्टता राप्त की। उनका आध्यास्ि बोध चकसी अथथाई गुदगुदिाट अथवा क्षणभिंगुर उत्तेजना का पररणाम न था। उनकी दृढ़ चनष्ठा, उनके सामाचजक व्यस्क्तत्व को चबना चकसी रकार के असनुतुलन में डाले हुए उनकी सत्ता में सामिंजस्यपूणश ढिंग से सिंघचटत थी। आध्यास्ि उन्नचत में रवृत्त रिने पर उन्ोनिें अपनी र्ारीररक उन्नचत की उपेक्षा निी िकी। यि इस चवषय से पूणशतया अवगत थे चक स्वथथ मन के चलए स्वथथ र्रीर एक पूवाशपेक्षा ि। यिााँ यि जानना रुचिकर गिा चक इस अवचध में इस बाल-रौढ़ आध्यास्ि साधक में चकम्बली चक्रकेट क्लब नामक क्रीडा-सिंघ को सिंघचटत करने की अन्तश्चालना तथा क्षमता दोनो िी थी।ि क्लब का नामकरण िनैनै में पाररवाररक कोठी के िाते के नाम पर चकया गया। क्लब के सदस्य बहुत उत्सािी तथा चनयचमत

स्खलाडी थे। यि एक रोिक बात िै चक गृित्याग के पश्चात् भी, जब श्रीधर चर्वानन्द-आश्रम के अन्तेवासी साधक थे, तब भी वि चक्रकेट खेलना अनुचित निी िंसमझते थे। वि कुर्ल तैराक थे तथा 'मनोिर-चवलास' के ओिते में स्थथत तालाब में दूर तक तैरने में आनन्द लेते थे। वि चनश्चय िी सवाांगीण जीवन-यापन करते थे। एक ओर तो वि जिाँ अपराह्न में अचतसूपििा के साथ चक्रकेट खेलते, विी िंदूसरी ओर रात:काल को योगासनो िंमें लगाया करते थे।

र्ारीररक सिंवधशन तथा आध्यास्त्मक साधना के इस व्यापक कायशक्रम के साथ-साथ श्रीधर धाचमशक ओिरण-सम्बन्धी कुछ मूलभूत सद्गुणो िंके सम्पोषण में भी अध्यवसायी थे। इस भाँचत चवकचसत िो कर वि उदात्तता, रर्ास्न्त तथा औदायश के मूतशरूप बन गये। वि सदा िी चनधशनो,िं रुग्णो,िं चनराश्रयो,िं उपेचक्षतो िंतथा दचलतो िंकी सेवा करने के अवसर की ताक में रि करते थे।'[5] उनकी सेवा तथा सद्भाव के इस रेम में मूक पचक्षयो िंतथा परुओ िंका भी समावेर् था। इस कालावचध में वि मैलापूर के रामकृष्णा चमर्न की युवक-वाचिनी के एक सदस्य के रूप में चनथस्वाथश सेवा में अपने को सिंलग्न रखते। सभी िर तथा राणधाररयो िंके चलए रेम तथा उनकी सेवा उनका एक स्वाचभाक तथा अनवरत व्यसन था। जो सभी राचणयो िंमें एक िी आिा के दर्शन करता िै, उसमें 'मैं' तथा 'मेरा' की भावना निी िंरिती; अत: वि भगवान् के चवराट् स्वरूप में भगवान् के रूप में सभी राचणयो िंकी सेवा करता िै। कुष्ठरोचगयो िंतथा रोगग्रस्त राचणयो िंतथा भटकने वाले कुत्तो िंकी सेवा उनके दैचनक कायशक्रम का अिंग बन गयी । एक बार उन्ोिंने िैक रोग से पीचडत एक व्यस्क्त की दीघशकाल तक सेवा की चजसके कारण वि स्वयिं िैक से बीमार पड गये। इससे उन्ें न तो कोई पश्चात्ताप हुआ और न कोई भय िी। उन्ोिंने अकुण्ठित उत्साि से सेवा िालू रखी। रयोजन तथा उत्प्रेरणा पूणशतया चनथस्वाथश थे; अतः उनके चलए जो भी वैयस्क्तक कष्ट झेलने पडते, वे उनके समुत्साि को कभी भी अवमस्न्दत निी िंचकये। अब श्रीधर फादर डैचमयन की भाँचत समचपशत जीवन-यापन कर रिे थे। वि उन कुचष्ठयो िंको अपनी स्नेिर्ील, श्रद्धामयी सेवा अचपशत करते थे चजनसे सिंसार घृणा तथा त्रास से मुख मोड लेता िै। इनके गुरु चर्वानन्द के चवषय में एक बात थी चक इस रकार की दीघशकाचलक चनथस्वाथश सेवा ने, सिंन्यास-जीवन में रवेर् करने से बहुत पूवश िी उन्ें व्याविाररक वेदान्ती बना चदया।

एक ऐसा समय आया जब सद्भाव तथा सेवा का यि मिान् व्यसन भी मोक्ष की ज्वलन्त कामना की तुलना में बाह्य अिंग-सा रतीत िोने लगा। परब्रह्म के साक्षात्कार के चलए त्याग के मागश पर िलने तथा सभी दु:खो िंकी चनवृचत्त तथा परमानन्द की रास्प्त की अवथथा राप्त करने के चलए लोगो िंको रेररत करने वाले मिान् ऋचषयो िंका वज्रचनघोष आह्वान उनकी आिा में रचतध्वचनत िोने लगा चजसने अन्य सारी भावनाओ िंको अचभभूत कर चदया। उन्ें यि मालूम था चक अनासस्क्त का पोषण मिापुरुषो िंमें आसस्क्त से िोता िै। अतएव, वि अपनी चकर्ोर अवथथा से िी मनीषीजनो िंकी सिंगचत में अध्यवसायपूवशक लगे रिते थे। उन्ें यि मित् जनो िंकी सगचत रमातामि िसिारी वेंकट राव तथा फूफा आर. कृष्ण राव से -जो स्वयिं भगवत्साक्षात्कार से सम्पन्न मिान् भक्त थे-घर पर

---

[5] इन्ी िंचदनो िंउन्ोिंने दो िलचित्र- 'पडोसी' तथा 'अछूत कन्या' देखे चजन्ोिंने इन पर स्फूर्ताली रभाव डाला। 'पडोसी' का अचवस्मरणीय समापन-दृश्य चजसमें कुछ ग्रामीण लोगो िंने दो डूबे हुए र्व बािर चनकाले, चजनमें एक मुसलमान का था तथा दूसरा एक चिन्दू का। इसने उन्ें िचवत कर चदया। दूसरे चित्र 'अछूत कन्या' में एक स्त्री का िररत्र चचत्रित चकया गया था चजसने अपनी बाल्यावथथा के दो चमत्रो–एक असृपृश्य िररजन तथा दूसरा एक रूचढ़वादी ब्राह्मण के राणो िंकी रक्षा करने में अपने राण दे डाले। मुसलमान को अपना आिबन्धु समझने तथा िररजनो िंको अपने पररचित तथा सम्बन्धी के रूप में देखने के चलए, युवक श्रीधर को रोत्साचित करने में इन दोनो िंिलचित्रो िंकी बहुत बडी भूचमका रिी िै।

ी राप्त करने का सद्भाग्य चमला। बाल्यकाल में व्रजेश्वरी के मिान् चसद्ध स्वामी चनत्यानन्द के आकस्स्मक दर्शन मात्र से इनके सास्त्वक मन पर मिान् आध्यास्त्कि छाप पडी। भगवान् की खोज के सन् १९३२ से सन् १९४० तक के इन नौ मित्त्वपूणश वषों में श्रीधर की आध्यास्त्कि आकांक्षा चनरन्तर उत्थान की ओर थी। जब वि ◌े न्नै के मुतै्तैया ◌ि चट्टयार उच्च चवद्यालय में षोडर् वषीय एक
चकर्ोर छात्र थे, तभी से उन्ोनिें सुरचतचष्ठत चसद्धो,◌ं योचगयो,◌ं ज्ञाचनयो ◌ंतथा भक्तो ◌ंके साथ अपना
सम्पकश बनाये रखा। अल्मोडा के श्यामल-ताल के श्री स्वामी चवरजानन्द के मिास में आगमन का श्रीधर पर स्मरणीय रभाव पडा। श्रीधर के समुमुख चिमालय के यि मिान् सन्त उत्तराखण्ड के
ऋचषयो ◌ं के उन सभी आध्यास्त्कि गुणो ◌ं के सचे्चे मूतशरूप में चदखायी पडे चजनें् उन्ोनिें अपने बाल्यकाल के रारस्म्भक चदनो ◌ंमें अपनी माता से सुन रखा था। इस भेंट से उनमें चिमालय जाने की
उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई।

परवती सन् १९३२ में चकसी समय इन्ोनिें समिाार पत्रो ◌ंमें श्री पुरोचित स्वामी के ◌े न्नै
आगमन का समिाार पढ़ा। श्री पुरोचित स्वामी गैररक पररधानधारी चभकुषु न ◌ोते हुए भी एक
रिस्यवादी योगी थे। वि एक पररव्राजक तपस्वी तथा भगवान् दत्तात्रेय के उपासक थे। उनें् नादयोग
में मिान् चसस्द्धयााँ राप्त करने का श्रेय राप्त था। उन्ोनिें राच्य तथा पाश्चात्य जगत् के अनेक
रचतचष्ठत व्यस्क्तयो ◌ंपर अपना गम्भीर रभाव छोडा था। श्रीधर को इस लब्धरचतष्ठ व्यस्क्त के चवषय में
रकाचर्त कुछ लेखो ◌ंसे पिले ◌ी उनका पररिय चमल गया था। समिाार-पत्रो ◌ंसे यि जान कर चक
पुरोचित स्वामी मिास चवश्वचवद्यालय में भाषण देने वाले ◌ैं, वि तीव्र रत्यार्ाओ ◌ंके साथ विााँ चनयत
समय पर पहुाँ गिये और भाषण के अन्त तक तल्लीन मनोयोग से बैठे रि। वि भाषण से इतने
अनुराचणत हुए चक उन्ोनिें वि थथान जिााँ सन्त ठिरे हुए थे, खोज चनकाला और फल तथा पुष्प
की भेंट ले कर उनसे चमलने गये। पुरोचित स्वामी जी ने श्रीधर की उन्नत ◌ेतना को स्पष्ट रूप से
देख चलया और उन्ोनिें उनें् मूलभूत चसद्धान्तो ◌ंकी चर्क्षा देने तथा उससे उपलब्ध ◌ोने वाले अनुभवो ◌ं
को समझाने के चलए इनके साथ कुछ समय व्यतीत चकया । श्रीधर साधना की चवचवध अवथथाओ ◌ंमें
साधक के मन में उत्पन्न ◌ोने वाली वीणा, विंर्ी, चकिंचकचण तथा घण्टा जैसी अन्तध्वशचनयो ◌ं
(अनिदनाद) की पुरोचित स्वामी की व्याख्या से अत्यचधक रभाचवत हुए। उन्ोनिें चनवृचत्त-मागश का
अनुसरण करने का पिले से ◌ी चनणशय ले रखा था। पुरोचित स्वामी के आर्ीवाशद से उनका सिंकल्प
दृढ़ ◌ो गया। तदनन्तर ◌े न्नै में उनें् एक अन्य मिान् सन्त स्वामी गायत्र्यानन्द के दर्शन हुए तथा
चदव्यानुभूचत की खोज में अग्रसर ◌ोने के चलए उनसे आर्ीवाशद तथा रोत्सािन राप्त हुआ ।

वि सन् १९३६ में श्री रमण मिचषश से अरुणािलम् में उनके पचवत्र आश्रम में चमले। तीन
चदन तक श्री रमण के साचन्नध्य में रि कर इन्ोनिें इस मिान् आिा की मौन रूप में सौम्य कृपा
राप्त की। इसी वषश वि सामान्यतया मलयाला स्वामी के नाम से चवख्यात स्वामी असिंगानन्द चगरर से
चमले। मलयाला स्वामी ने श्रीधर को चतरुपचत के चनकट येरपेडु के व्यासाश्रम में दर्शन चदया था। इस
चमलन से श्रीधर पर अत्यचधक रभाव पडा जो उन चदनो ◌ंसिांसाररक सुख-सुचवधाओ ◌ंतथा ऐचिक
रचतफलो ◌ंसे उदासीन रि कर श्वेत वस्त्र में न्यूनाचधक सन्यासी जीवन-यापन कर रिे थे।

इसके पश्चात् वि श्री स्वामी राजेश्वरानन्द के सम्पकश में आये जो ◌े न्नै के रख्यात सन्त,
सस्च्चदानन्द-सिंघ के सिंथथापक तथा ◌मारे देर् के एक लब्ध-रचतष्ठ दार्शचनक डा. टी. एम. पी.
मिादेवन के आध्यास्त्कि उपदेर्क थे। सन्त ने श्रीधर के यर्स्कर भचवष्य को अपने मानसि–कुषुओ ◌ं
से देख चलया और उनें् आध्यास्त्कि चवकास की ओर रेररत चकया। श्रीधर के रामकृष्ण मठ में राय:
जाते रिने से वि रामकृष्ण चमर्न के श्री स्वामी अर्ेषानन्द के चनकट सम्पकश में आये। रामकृष्ण

चमर्न के इस लब्ध-रचतष्ठ सिंन्यासी ने अन्तज्ञाशन से यि अनुभव चकया चक श्रीधर एक चदन सन्त-जगत् में देदीप्यमान् मचण की भााँचत िमकेंगे। अतएव वि श्रीधर के आध्यास्कि चवकास में चवर्ेष रुचि लेते थे।

उन्ी िंचदनो िंएक अन्य रख्यात सन्त चजनसे श्रीधर चमले, श्री स्वामी आनन्दाश्रम थे, जो श्री स्वामी रामदास के घचनष्ठ साथी थे। अन्त में सन् १९४० में वि स्वयिं मिान् रामदास से चमले जो किांजनगढ़ के आनन्दाश्रम के सिंथथापक थे तथा चजनें उनके भक्त रेम से 'पापा' किा करते थे। इन्ी िंस्वामी रामदास की आिकथा ने श्रीधर को आध्यास्कि पथ पर िलने के चलए रथम रेररत चकया था। इसके श्रदे्धेय लेखक से इस अपरोक्ष सम्पकश ने इन पर अचवस्मरणीय रभाव डाला। चरय पापा चकर्ोर बालक में मोक्ष की ज्वलन्त कामना देख कर अत्यचधक रसन्न हुए। उन्ोिंने इनें सफल िोने का आर्ीवाशद चदया और स्नेि से इनकी पीठ थपथपायी। राम के इस सेवक के पचवत्र सिंस्पर्श से श्रीधर चदव्य िषाशचतरेक से आपूररत िो गये।

इन पूताि भागवतजनो िंके चनकट सम्पकश तथा इनके आर्ीवाशदो िंने इन पर अरचतरोध्य रभाव डाला तथा आगे के मिान् जीवन-लक्ष्य के चलए पाचथशव जीवन-वृचत्त के िुपिाप त्याग करने को इनें रेररत चकया। रोचगयो, िं चनधशनो िंतथा चनराचश्रतो िंकी सेवा ने इनके मन को पचवत्र बनाये रखा तथा इनके स्वाध्याय और ध्यान ने इनें धाचमशक उपासना के चलए तीव्र ग्रिणर्ील बना चदया था। अतः मिािाओ िंके उपदेर् तथा उत्प्रेरणाएँ इनके मन के अन्ततशम रदेर् में गिराई से रवेर् कर गये। वि अब उच्च आध्यास्कि धरातल पर पहुाँि गये थे। यद्यचप इनका पालन-पोषण रिुयश तथा समृस्द्ध के मध्य हुआ था तथाचप मिान् तपस्या का जीवन अपनाने में इन्ोिंने असाधारण आिचवश्वास तथा र्ास्न्त रदचर्शत चकये। इन्ोिंने जूता पिनना त्याग चदया, कौर्ेय वस्त्रो िंको फेंक चदया तथा सादी धोती और साधारण-सी कमीज पिन ली और उन सभी चवषयो िंसे तीव्र उदासीनता रखने लगे चजनके चलए युवक लालाचयत रिते तथा चजनमें आनन्द लेते िैं। चनवृचत्त की अचभवृचत्त अब उनके व्यस्क्तत्व में पूणशतया सचन्नचवष्ट थी। उनें ऐसा लगा चक वि सिंसाराचग्न में झुलस रिे िैं। गिंगा की र्ीतलता की ओर भागने के चलए उपयुक्त समय की उत्सुकता से रतीक्षा में थे। अब वि घर में िी अनचभव्यक्त रूप से िरम त्याग की तैयारी करते हुए एक योगी का जीवन-यापन कर रिे थे। सेवा, सत्सिंग तथा साधना- ये तीन कायश िी उनके दैचनक जीवन की चवर्ेषता थे। उन चदनो िंवि कोई भी ऐसा कायश निी िंकरते थे चजसमें आध्यास्किता का पुट न िो। उदािरणाथश लगभग उन्ी िं चदनो िंइन्ोिंने दो िलचित्र 'तुकाराम' तथा 'सन्त ज्ञानेश्वर' - देखे। मिाराष्टर के इन दो मिान् सन्तो िं के सेलूलायड जीवनो िंने उनें सम्मोचित कर चलया। वि इनसे रायः मोचित थे। इनें वे बार-बार देखने गये और रत्येक बार अपने पररवार के चकसी-न-चकसी व्यस्क्त को अपने साथ ले गये । उन्ोिंने तुकाराम के रायः सभी अभिंग कण्ठथथ कर चलये। इनें गम्भीर भाव से गुिंजायमान स्वर में गाते समय वि भावसमाचध में िले जाया करते थे। उन्ोिंने एक तमूबूरा खरीद चलया और उसकी सिंगचत में भस्क्तपूणश गीत गाने का अभ्यास चकया।

सन्त ज्ञानेश्वर के िलचित्र से वि चकतनी मात्रा में रभाचवत हुए थे, यि एक रसिंग के उदािरण िारा स्पष्ट चकया जा सकता िै। सिंन्यास-ग्रिण के अनेक वषश पश्चात् जब वि चदव्य जीवन सिंघ के अध्यक्ष भी बन िुके थे, अपने ४९ वें जन्म-चदवस के आगामी चदन अथाशत् २५ चसतम्बर १९६५ को सिंयोगवर् वि िररिार में थे। अकस्मात् उन्ोिंने दो कारें ऋचषकेर् के चर्वानन्दाश्रम भेज कर स्वामी कृष्णानन्द, स्वामी माधवानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी रेमानन्द तथा नरचसिंमिुलु सचित लगभग दर् आश्रमवाचसयो िंसे एक मिान् सन्त से चमलने के चलए िररिार आने का अनुरोध चकया।

वे सब मिािा से चमलने की उत्कण्ठापूणश रत्यारा् से िररिर आये। उनें् तब चवस्मय तथा सिंकिो हुआ जब स्वामी जी उनें् एक िलचित्र-भवन में ले गये और बताया चक उनकी इच्छा िै चक वे
सब सन्त ज्ञानेश्वर से विााँ चमलें। तभी वररष्ठ आश्रमवाचसयो िंको चनमिण के चकिंचित् चवनोदर्ील स्वरूप का पता िला, चकन्तुु स्वामी जी इस चवषय में पयाशप्त गम्भीर थे और उनें् बताया चक वि अपने राररम्भक जीवन में चकस रकार इस िलचित्र से अनुराचणत हुए थे। उन्ोनिें सिोा चक यिी सवोत्तम वैयस्क्तक भेंट िै जो वि अपने जन्म-चदवस पर उनें् अचपशत कर सकते िैं।

को मिािा सान्माी िकिं इस रकार की अनुभूचत की सूमृचत िै। उन पर भी 'श्रवणकुमार' तथा 'िररश्चन्द्र' नामक दो िलचित्रो िंका दूरगामी तथा स्मरणीय रभाव पडा था। इस भााँचत मोिनदास एक ऐसी रचक्रया में दीचक्षत हुए चजसकी अन्ततः िरम पररणचत उनके मिाापन में हुई। इसी भााँचत श्रीधर भी दो िलचित्रो िंको देख कर चदव्य रेमोन्माद से अचधभाररत िो गये तथा आध्यास्कि धीर पुरुषो िंके मागश का अनुसरण करने की उनकी सुलगती हुई कामना अन्त:रेरणा की रिण्ड ज्वाला में एकाएक बढ़ िली चजसने आगे िल कर उनें् अन्ततः कालातीत सत्ता में, चिदानन्द में रूपान्तररत कर चदया। कदाचित् अपने इस वैयस्क्तक अनुभव के कारण िी स्वामी चिदानन्द आध्यास्कि ज्ञान के रसार के चलए चित्रपट के माध्यम के उपयोग के पक्ष में िैं।

दो मिान् सन्तो िंके जीवनो िंको चित्रपट पर देख कर श्रीधर ने अपने को दुष्कर साधना में सिंलग्न कर चदया। वि चकम्बली कोठी के सबसे ऊपरी भाग पर िढ़ जाते तथा विााँ घण्टो िंध्यान में बैठे रिते। इसी समय िेन्नै के श्री पी. के. चवनायक मुदाचलयार िारा सम्पाचदत लोकचरय पचत्रका 'माई मैगजीन आव इस्ण्डया' में आध्यास्कि साधको िंके व्याविाररक मागशदर्शन के चलए चर्वानन्द शिंखलाबद्ध लेख चलख रिे थे। श्रीधर लोयोला मिाचवद्यालय के समीप की दुकानो िंसे यि पचत्रका खरीद लेते थे तथा गम्भीर ध्यान तथा उस पचत्रका में अिंचकत स्वामी चर्वानन्द के अचतसूपृिणीय उपदेर्ो िंके अभ्यास में सिंलग्न रिते। तत्काल िी उन्ोनिें स्वामी जी की पुस्तक Yoga by Japa (जप िारा योग) की एक रचत राप्त कर ली तथा रचतचदन घण्टो िंजप तथा ध्यान में चनमग्न िो कर मिायोगी के उपदेर्ो िंको अभ्यास में पररणत करते। बाद में गुरुदेव की दो मित्त्वपूणश पुस्तको िं अथाशत् Spiritual Lessons (आध्यास्त्वक, चर्क्षावली) तथा Mind, Its Mysteries and Control (मन : रिस्य और चनग्रि) से इनें् और अचधक रेरणा चमली।

स्वामी जी की व्याविाररक चर्क्षाओ िंने श्रीधर को ध्यान का उतृकृष्ट पथ रदान चकया तथा वि उच्चतर साधना-जगत् में र्ीघ्र िी पााँव जमाने लगे। अब इस चनरवद्य ब्रह्मिारी ने भगवत्प्रास्प्त के अचतसिंयमी तथा कठोर मागश के चलए अपना यौवन अचपशत कर चदया। इस पुण्यािा ने चजसका जीवन सदािार का आदर्श था, अब अन्य सभी चविार तथा कायश को छोड कर 'चकम्बली' के छज्जे पर गम्भीर साधना में अपने को तल्लीन कर चदया। ध्यान के रवेर्–िार िारा वि आध्यास्किता के उच्चतर क्षेत्र में चजतना अचधक रवेर् चकये, उतनी िी अचधक तीव्रता से उनें् यि अनुभव िोने लगा चक साधना में पूणशकाचलक तल्लीनता के चलए सिंन्यास परमावश्यक िै। यि चवलक्षण-सा लगेगा चक ईश्वरेच्छा की व्यवथथा से उनके नवयौवनकाल में भी उनके चववाि का रश्न कभी भी निी िंउठा। इस पूणश ब्रह्मिारी को अथथायी रूप से भी सिंसार-पार् में आबद्ध निी िंिोना था।

श्रीधर को अब कायशसिंकुल वातावरण से अरुचि िो गयी। वि अपनी मौसी मालती बाई से किते, "यचद ईश्वर को चवस्मरण करना िोती िै तो बेंगुलूरु िली जायें।" नगर के कोलािलपूणश वातावरण से उनें् घृणा िो गयी। वि चकसी आश्रम की नीरवता तथा एकान्त के चलए लालाचयत थे

चजससे चक वि अपने को एकमात्र आन्तर आध्यास्कि साधना में पूणशतया लगा सकें। वि एक गुरु के चलए भी तृचषत थे जो रुद्ध आध्यास्कि जगत् में इनका पथरदर्शन करे। चकनु्तु घर में चकसी को भी इनके मन के अपसरण का बोध न ि‍ो सका। इस रकार वि सन् १९३६ में जब इनकी
इण्टरमीचडएट की परीक्षा बहुत ि‍ी चनकट थी, एक चदन घर से अदृश्य ि‍ो गये चजससे इनके चमत्रो ि‍ं तथा सम्बस्न्धयो ि‍ंको बहुत चिन्ता हुई तथा उन्ें आघात पहुाँि‍ा। घर के वयोवृद्ध लोग उनके सरल तथा कठोर जीवन, भोजन तथा वस्त्र के रचत उनकी उदासीनता, भौचतक समृस्द्ध की उनकी उपेक्षा तथा स्वाभाचवक चवलगाव और चिन्तनर्ील मनोदर्ा से नूयूनाचधक रूप में अपना सामिंजस्य थथाचपत कर ि‍ुके थे; चकनु्तु चकसी को यि पूवाशनुमान न था चक इस नवयुवक में इतना र्ीघ्र पूणश त्यागमय जीवन में छलााँग लगाने के चलए सािस तथा दृढ़ता ि‍ै। वे बहुत ि‍ी उचिग्न हुए तथा जोरदार खोज आरम्भ हुई। उनके आद्य उत्प्रेरक आर. कृष्ण राव भी उनके पलायन की योजना के चवषय में सवशथा अनचभज्ञ थे। उन्ोिंने अपने पुत्र वेंकट राव तथा भतीजे गोचवन्द राव के साथ ि‍ुतुचदशक् पूछताछ की, चकनु्तु इस यर्स्वी कतशव्यपराङ्मुख व्यस्क्त का कि‍ीिं पता न ि‍ला।

श्रीधर को भगवान् रमण के रचत बडी श्रद्धा थी। वि मिचषश के पचवत्र ि‍रणो ि‍ंकी र्रण लेने के चलए लुकचछप कर पूजिाश अरुणािलम् पहुाँि‍ गये। उन चदनो ि‍ं मिचषश सदा अन्तमुशखी वृचत्त में रि‍े थे। वि अपनी अचनमेष दृचष्ट को अनन्त की ओर रख कर सदा गम्भीर तथा र्ान्त रि‍ते तथा अत्यावश्यक चवषयो ि‍ंपर आश्रम के सेवको ि‍ंसे केवल बहुत ि‍ी कम बि‍ ि‍ंमें बोलते थे। श्रीधर ने उनके पचवत्र साचन्नध्य में मौन आध्यास्कि सिंवाद में तीन चदन व्यतीत चकये। मिचषश ने अपने मौन िारा कुछ-कुछ यि सूचित कर चदया चक वि चनयचत िारा चनयत गुरु निीं ि‍ैं। ब्रह्माण्डीय योजना में गुरु तथा चर्ष्य का सम्बन्ध पूवश-चनधाशररत हुआ करता ि‍ै। श्रीधर ने मिचषश के साथ तीन चदन के मौन सिंवाद के पश्चात् उन्नत चकनु्तु जीवन-पोत के चजस लिंगर-थथल की खोज में थे, उसको राप्त चकये चबना ि‍ी अरुणािलमम् से रथथान चकया। वि वापस निीं ि‍ंलौटे।

वि अरुणािलम् से चतरुपचत के चनकट येरपेडु में व्यासाश्रम, मलयाला स्वामी के रमणीक आश्रम की ओर आगे बढ़े। यिी मलयाला स्वामी बाद में स्वामी असिंगानन्द चगरर के नाम से चवख्यात हुए। चकनु्तु थथान बहुत दूर था और इनके पास एक भी पैसा न था। तथाचप वि गन्तव्य तक पहुाँिने के चलए कृतसिंकल्प थे। इस रकार आने वाले अवश्यम्भावी सभी र्ारीररक कष्टो ि‍ंकी अविेलना कर रेल की पटरी के साथ-साथ वि ि‍लते रि‍े। एक घण्टा तक ि‍लने के पश्चात् इस वैभवर्ाली नवयुवक को एक थथान पर रुक कर एक चकसान से, जो कुएाँ से जल चनकाल रिा था, भोजन मााँगना पडा। चकसान ने इन्ें थोडी दचलया दी। श्रीधर उसे चनगल गये तथा चकसान को चभक्षादान के चलए धन्यवाद दे कर पुनः ि‍लना आरम्भ कर चदया। घण्टो ि‍ंतक ि‍लते रि‍ने के पश्चात् सभी उपलभ्य र्स्क्त के क्षीण ि‍ो जाने पर वि लडखडाते हुए एक रेलवे स्ेर्न पर पहुाँि‍े और प्लेटफामश पर पडे एक फलक के सिारे लेट गये। एक युवक स्ेर्न मास्टर ने उन्ें देख चलया और उनका पररिय जानना िािा। श्रीधर उस समय एक फकीर जैसे चदखायी पडते थे। उन्ोिंने जब स्ेर्न मास्टर को सिंजल तथा पररर्ुद्ध अाँगरेजी में उत्तर चदया तो वि आश्चयशचकत रि गया और उनमें अपनी अचभरुचि रदचर्शत की। श्रीधर की उपस्थथचत से उस पर कुछ चवलक्षण रभाव पडा और उसने युवक चजज्ञासु को कुछ आध्यास्कि िाश में उलझाया। उसको मिान् आश्चयश तथा सन्तोष हुआ जब श्रीधर ने उसकी सभी र्िंकाओ ि‍ंको चवदूररत कर चदया। स्ेर्न मास्टर ने उनकी आवश्यकताओ ि‍ंका पता लगाया और उनकी चतरुपचत की यात्रा की व्यवथथा कर दी। चकसी रकार से देवकृत व्यवथथा से चडब्बे में इनके पाश्वश में बैठने वाला यात्री मलयाला स्वामी का भक्त चनकला। श्रीधर का उद्देश्य सुन कर इस सज्जन ने सुबेदार षणु्मुखम् नामक मलयाला स्वामी के आश्रम के

एक अन्तेवासी के नाम एक पररिय-पत्र चलख चदया और इन्हें आश्वासन चदया चक इन्हें विााँ कोई कचठनाई निीं िोगी। उसने सि िी किा था; क्योंचक षणुमुखम् इन्हें मलयाला स्वामी के पास ले गये चजन्होंने इन्हें एक आश्रमवासी के रूप में विााँ रिने की अनुमचत दे दी। श्रीधर विााँ के सादगी
तथा तपस्या का जीवन-यापन करने में सुखी थे। आश्रम के अन्य सन्तों िी की भााँचत वि मध्याह्न में उदरभर भोजन और राचत्र में केवल कुछ िना, गुड तथा थोडे-से घी पर रिा करते थे। मलयाला स्वामी ने, जो चतरुवन्नामले में दीघशकाचलक तपस्या करके एक मिान् तपस्वी बन िुके थे, श्रीधर पर अपना रभाव डाला। वि अपना जाग्रतकाल चदव्य नाम के जप, गीता के स्वाध्याय, राथशना तथा मलयाला स्वामी के दर्शन में व्यतीत करते हुए कुछ सप्ताि विााँ रिे।

इस बीि उनके सम्बन्धी तथा चमत्र उनको खोज चनकालने की सभी आशा त्याग िुके थे। बडे िी िमत्काररक ढंग से श्रीचनवास राव के सेवकों में से चवश्वनाथ नामक एक सेवक को एक चदन ऐसा लगा चक वि श्रीधर का पता लगा सकता िै। चबना चकसी चनचश्चत चविार के चक वि व्यासाश्रम क्या करने जा रिा िै, अपनी अन्तःरेरणा से विााँ के चलए िल पडा और विााँ अपने चकशोर स्वामी को पा कर उसे मिान् आनन्द तथा आश्चयश हुआ। उसने श्रीधर के सम्मुख उनकी अनुपस्थथचत से घर में उत्पन्न दुःख तथा चिन्ता का वणशन चकया। उसने अपना यि संकल्प अचभव्यक्त चकया चक जब तक श्रीधर उसके साथ घर जाने को सिमत निीं िोते, वि अन्न-जल निीं ग्रिण करेगा। श्रीधर को चवशेषकर इस कारण झुकना पडा चक स्वयं मलयाला स्वामी ने उन्हें अपनी यथाचवचध चशक्षा कुछ और आगे तक िालू रखने को कि कर उन्हें इसी रकार का परामर्श चदया था। श्रीधर को यि स्पष्ट िो गया चक उनके घर तथा पररवार का त्याग करने का चनयत समय अभी तक निीं आया िै। उन्होंने चबना चकसी चनवेद अथवा चनराशा की भावना के भगवचदच्छा के सामने आत्मसमपशण कर चदया। उन्होंने मलयाला स्वामी से केवल यि राथशना की चक उन्हें कुछ और अचधक समय तक विााँ रिने की अनुमचत रदान की जाये चजससे वि स्वामी की, जो अभी तक श्वेत वस्त्र में थे, संन्यास-दीक्षा देख सकें। राथशना स्वीकार कर ली गयी। कुछ चदन पश्चात् वाराणसी के परम पावन श्री स्वामी शंकरानन्द चगरर मलयाला स्वामी को परम पावन संन्यासाश्रम में दीचक्षत करने के चलए व्यासाश्रम आये। वि मलयाला स्वामी के चवपुल पररजनों िे के साथ सस्म्मचलत हुए और कालिस्ती में भगवान् चशव को अपनी श्रद्धांजचल अचपशत करने के चलए विााँ गये। इस लघु तीथशयात्रा के पश्चात् मिान् गुरु शंकरानन्द चगरर व्यासाश्रम वापस आये और 'चवरजा िोम' नामक चवशेष िवन सम्पन्न करके मलयाला स्वामी को संन्यास-दीक्षा दी। मलयाला स्वामी ने अब नया नाम असंगानन्द चगरर धारण चकया। वि अपने गुरु के स्पर्श से तत्काल गम्भीर ध्यान में यथाथशतः चनमग्न िो गये। क्योंचक वि भागवत सत्ता में दीघश काल तक तल्लीन रिे, अतः श्रीधर ने इस मिान् सन्त को मौन रूप में अपनी श्रद्धांजचल अचपशत की और उनके पूवश-आदेशानुसार व्यासाश्रम से रथथान चकया।

वि रचतवाद अथवा वाद-चववाद की चकसी रकार की बडबडािट चबना वापस आ गये; क्योंचक उन्होंने अपनी गुप्त तथा गूढ़ चवचध से अन्तज्ञाशन िारा यि पूणश रूप से समझ चलया चक उन्हें चनयत समय के चलए धैयशपूवशक रतीक्षा करनी िाचिए। पररवार के लोग इससे अत्यचधक चिन्तारचित तथा आनस्न्दत हुए चक एक गम्भीर संकट टल गया, चकन्तु चकसी की समझ में यि आया निीं िै रतीत िोता चक यि तो केवल उपक्रम के रूप में था और श्रीधर के पूणश त्याग का समापक कायश एक चदन अवश्यम्भावी घटना का रूप ले कर रिेगा। वे उन्हें सभी रकार से शान्त करना िािते थे तथा उन्होंने उनसे अपने रपलायन का कारण बतलाने के चलए अनुनय-चवनय की। श्रीधर ने संन्यासी बनने की अपनी इच्छा रकट रूप से रथम बार ज्ञाचपत की चजससे चक वि दीघशकाचलक अजस्र साधना रारम्भ कर सकें। उनके फूफा तथा आध्यास्त्मक परामर्शदाता आर. कृष्ण राव ने उन्हें

लोयोला मिाचवद्यालय में अपना अध्ययन पूरा करने तथा अपनी उपाचध ग्रिण कर लेने के अनन्तर िी अपनी भावी कायशचवचध के चवषय में चनणशय लेने का परामर्श चदया। श्रीधर अपने फूफा की
इच्छाओ िंका सदा िी सम्मान करते थे। वि स्वाग्रि त्याग चदये चजससे उनके सम्बस्न्धयो िंने सुख की श्वास ली। उन्ें यि अनुभव निी िंहुआ चक श्रीधर जैसे कृतसिंकल्प व्यस्क्तयो िंके चकसी कायश के थथगन का अथश सिंकल्प का नूयूनीकरण निी िंहुआ करता।

अपनी बात के धनी, श्रीधर अब अपने अध्ययन में चनमग्न िो गये और यद्यचप तैयारी के
चलए अत्यल्प समय बि रिा था, चफर भी वि पाठ्य-चवषय पर अचधकार राप्त कर सके तथा
इण्टरमीचडएट परीक्षा चबना चकसी कचठनाई के उत्तीणश कर ली। चकनुतु अब यि पररवचतशत व्यस्क्त थे।
वि अिचनशर् आध्यास्कि चविारो िंसे आप्ताचवत रि अपना जीवन यापन करते थे। रमण मिचषश तथा
स्वामी असिंगानन्द चगरर (मलयाला स्वाभी जी) के सम्पकश ने उनके मानचसक धरातल तथा आिरण
पर अचमत चवाया। जब वि एक सिंन्यासी की तरि मुस्ण्डत चर्र तथा खादी टोपी पिने हुए तथा
रर्ान्त मनोदर्ा में अपने मिाचवद्यालय में वापस गये तो इनके भो िंने रथम यि समझा चक पररवार
में चकसी व्यस्क्त की मृतुयु का र्ोक िै, बना उन्ें वास्तचवक कारण जानने तथा यि अनुभव करने
में देर न लगी चक उसके बाद में एक असाधारण व्यस्क्त िै चजसकी समूपूणश सत्ता अब एक
रिस्यमयी चवभूचत की उनुमुख िै।

चनवृचत्त की रबल आन्तर धारा के िोते हुए भी उन्ोिंने अपने रै्चक्षक कायश को चित्ररूपरता
से सम्पन्न चकया। उन्ोिंने इस समय का उपयोग अपने अध्ययन के क्षेत्र को चवसूतृत करने में भी
चकया। धमशग्रन्ो िंतथा साधु पुरुषो िंिारा चलस्खत पुस्तको िंके आयन के अचतररक्त वि अपना पयाशप्त
समय अँगरेजी-साचित्य के अध्ययन में ते थे। वि अपने चमत्र श्री एन. सुब्रह्मण्यम् के साथ कभी-
कभी घण्टो िंतक इररयर तथा अन्य अँगरेजी लेखको िंपर िििश चकया करते थे। वि पलायनवादी निी िं
थे और न उन्ोिंने कभी अपने जीवन में पराजय िी स्वीकार की। उन्ोिंने अपनी िै. ए. की परीक्षा
अँगरेजी में सगौरव उत्तीणश की और समूपूणश मिास मिारान्त में सन् १९३८ में पिंमि थथान राप्त
चकया।

स्नातक बनने के पश्चात् उन्ें उच्चतर आध्यास्कि साधना के चलए पयाशप्त समय ग्राम हुआ।
उन्ोिंने न तो लौचकक जीवन-वृचत्त में और न भौचतक उन्नचत में कोई उतुसुकता रदचर्शत की। उन्ोिंने
अपने फूफा को बी. ए. की उपाचध राप्त कर लेने के पिाात् िो सिंन्यास के चवषय में सोिने का
विन चदया था। एक अन्य विनबद्धता भी इथे। उनकी मातामिी ने उनके जीचवत रिने तक पररवार
के सम्बन्ध का पररत्याग न करने का बादा उनसे ले चलया था। श्रीधर अपने जीवन में सदा िी
दूसरो िंका सवाशचधक ध्यान खते थे। वि अपनी मातामिी सुन्दरम्मा के चलए अपनी पुत्री सरोचजनी
(श्रीधर की माता) की दु:खद क्षचत की गम्भीरता से अवगत थे। वि 'मनोिर-चवलास' को सदा के
चलए अलचवदा कि कर उन्ें अन्य रिण्ड आघात निी िंपहुँिाना ििाते थे। अतएव वि मातामिी
सुन्दरम्मा के कारण घर में रिते रि; चकनुतु वि अपने को अलग रखते थे कार जीवन-यापन करते
थे। वि अपना कुछ समय चकर्ोर फुफेरे भाइयो िंतथा अल्पवयस्क चमत्रो िंको चदव्य जीवन की चर्क्षा
देने तथा उन्ें धमशचनष्ठा, आजशव, सत्यवाचदता तथा साचथयो िंकी सेवा में अवगुस्ण्ठत सूक्ष्म तत्त्वो िंको
समझाने में लगाते। एक ऐसे िी अल्पवयस्क साधक श्री वेंकोबा श्रीधर से अत्यचधक रभाचवत थे।
श्रीधर के सरल तथा सन्तसुलभ जीवन का उन पर ऐसा स्फूर्तदायी रभाव पडा चक उन्ोिंने श्रीधर
से मिदीक्षा देने की राथशना की। श्रीधर ने उन्ें चनरार् निी िंचकया। यद्यचप वि सिंन्यासी निी िंथे,
चफर भी उन्ोिंने न तो कातरता और न सिंकोचर्ीलता अनुभव की। वि जानते थे चक वि राम में

रि रि ि◌ै और यिी पयाशप्त था। तेईस वषीय गम्भीर तथा आिचवश्वासपूणश इस नवयुवक ने श्री वेंकोबा को मिान् राम तारकमि की दीक्षा दी। और उनकी आध्यास्िक उपलस्ब्ध ऐसी थी चक
दीक्षा ने चकर्ोर फुफेरे भाई में तत्काल और दूरगामी पररवतशन लाया।

यि स्मरणीय ि◌ै चक इन सभी आध्यास्िक तल्लीनताओ ि◌ंमें भी उन्िोनिें पररवार के अन्य
सदस्यो ि◌ंतथा साचथयो ि◌ंके रचत अपने कतशव्यो ि◌ंकी उपेक्षा निी ि◌ंकी। चितीय चवश्वयुद्ध चछड जाने के
कारण ि◌ेन्नै नगर सिंकट के रभाव में आ गया था। र्ासकीय सिंसुतुचत से ि◌ेन्नै नगर की जनता का
व्यापक चनष्कमण ि◌ो रिा था। समूपूणश 'चकम्बली' पररवार ि◌ेन्नै छोड कर कोयम्बतूर आ बसा और
चकम्बली कोठी अथथायी रूप से भाडे पर दे दी। इस समय श्रीधर अपने ताऊ जी. कृष्ण राव के
चदन-रचत-चदन के घरेलू कायों में चवर्ेष रूप से तथा कुछ मात्रा में जागीर के काम में भी
सियक थे। रोिक बात तो यि ि◌ै चक श्रीधर के चपता ने उनसे चकसी रकार का कायश कराने में
कभी भी रुचि रदचर्शत निी ि◌ंकी। वि जानते थे चक श्रीधर सत्त्विीन नीरस पाररवाररक दाचयत्वो ि◌ंके
चलए निी ि◌ंि◌ै। उनकी सिजानुभूत धारणा थी चक उनका पुत्र उन लोगो ि◌ंमें से निी ि◌ंि◌ै वरन् वि तो
उन्मुक्त गगन की मुक्त िािा ि◌ै; अत: उसे पाररवाररक धन्धोिं तथा दाचयत्वो ि◌ंमें बाँधने का रयास
करना चनरथशक ि◌ी ि◌ोगा। वि जानते थे चक श्रीधर भगवान् की मचिमा की घोषणा करने के चलए
चवस्तीणश जगत् में भाग जाने को अपने को पक्षी की भाँचत स्वति रखेंगे। अतएव उनके चपता
श्रीचनवास राव ने युवक साधक को कभी भी चकसी रकार के पाररवाररक दाचयत्व अथवा सामाचजक
कतशव्यो ि◌ंसे चनरुद्ध अनुभव निी ि◌ंि◌ोने चदया। परन्तु श्रीधर ने स्िेच्छा से ि◌ी पररवार की चवचवध रूपो ि◌ं
से सेवा की। उनकी आध्यास्िकता स्वाथशपरायण रकार की निी ि◌ंथी जो लोगो ि◌ंको अपने सम्बस्न्धयो ि◌ं
की आवश्यकताओ ि◌ंतथा रत्यार्ाओ ि◌ंके रचत अस्वाभाचवक और असिवेदनर्ील रूप से चनष्ठुर बना
देती ि◌ै। उदािरणाथश, इसी अवचध में इनके बिनोई डा. बी. एन. के. र्माश चकसी गम्भीर रोग से
दीघशकाल तक व्यागग्रस्त रिे। उस समय इन्िोनिें मातृ-सुलभ स्नेिचिल चिन्ता से सेवा-सुश्रूषा कर उन्िें
पुनः स्वथथ चकया; चकन्तु अपने पररवार के सदस्यो ि◌ंके रचत ऐसी सभी सिानुभूचतयो ि◌ंतथा सेवाओ ि◌ंके
मध्य भी उन्िोनिें कभी भी अपने को आसस्क्त की अवथथा में पडने निी ि◌ंचदया। उन्िोनिें जो कुछ भी
चकया, उसमें वि सवशथा चनथस्वाथश तथा चमथ्याचभमान-रचित, अतएव चनतान्त अदूचषत बने रिे। इस
रकार वि अथक साधना में आगे बढ़ते रिे। वि अपने चित्त को उलझाये चबना पररवार की
र्ारीररक सेवा करने के चलए अपने को पयाशप्त पररपक्व अनुभव करते थे तथा सभी बन्धनो ि◌ंको तोड
कर मुक्त ि◌ोने और अन्ततः सिंन्यास-जीवन ग्रिण करने के उपयुक्त अवसर की मन ि◌ी मन रतीक्षा
में थे।

वि सन् १९४० में किांजनगढ़ के स्वामी रामदास (पापा) से ि◌ेन्नै में चमले। उनकी चरय
मातामिी सुन्दरम्मा का चनधन उसी वषश हुआ। उन्िोनिें लौचकक चर्क्षा के पाठ्यक्रम के िारा उपाचध
राप्त कर ली थी और उसके िारा अपने फूफा आर. कृष्ण राव तथा अपनी मातामिी को चदये
हुए अपने विन को पूरा कर चलया था। उन्िोनिें स्िेच्छा से अपने को लोक-चलिाज के चजस बन्धन
के अधीन चकया था, वि अब चनरस्त ि◌ो गया और श्रीधर अन्य चकसी विनबद्धता से अपने को
आबद्ध निी ि◌ंचकये थे। इस समय स्वामी रामदास के साथ उनके चमलन का अवश्यम्भावी रभाव
पडा। सन् १९२८ में ि◌ी इन्िोनिें स्वामी रामदास के चवषय में सुना और तभी से वि इनके मिान्
रेरणा-स्रोत बने रिे। रामदास की रथम बार जानकारी राप्त करने की एक रोिक कथा ि◌ै। उनके
बाल्यकाल में अनेक अचधकारी तथा सज्जन एन. वेंकट राव के साथ टेचनस खेलने के चलए
'मनोिर-चवलास' आया करते थे। थथानीय नगरपाचलका के एक चनरीक्षक चनयचमत अभ्यागत थे। वि
कभी-कभी अपने अनुज के चवषय में िि◌ाश चकया करते थे जो सिंन्यासी का जीवन-यापन करने के

चलए अपने सिांसाररक जीवन को चतलिांजचल दे िुके थे। उस चनरीक्षक का अनुज अन्य कोई निी,ि श्रीधर के चरय 'पापा' स्वामी रामदास थे। इस भाँचत इस चमलन से चदव्य भावाचतरेक का रबल ज्वार-भाटा उमड पडा। सन्त को भी नवयुवक में ज्वलन्त कामना देख कर अत्यचधक रसन्नता हुई। रामदास ने भगवान् राम की कृपा का आह्वान कर उन्ें आर्ीवाशद चदया। श्रीधर को अब सन्त की िोकथा के र्ब्द स्मरण िो आये : "रामदास! त्याग के उन्नत चर्खर पर आरूढ़ िो जाओ और विाँ से अपने ितुचदशक् के समूपूणश दृश्य-रपंि के अचनत्य स्वरूप का अवलोकन करो। रत्ेयेक थथान पर तुम जन्म, वाद्धशक् तथा मृत्ुयु िी देखोगे। सभी चवनार् के एक िी पथ पर भागे जा रिे िैं।"
रामदास ने श्रीधर की पिले से िी उव बनी हुई मन-भूचम को अपने आर्ीवाशद की वृचष्ट से आप्लाचवत कर चदया। बीज के रस्फुुचटत िोने के चलए यिी पयाशप्त था।

रामदास के साथ इस चमलन के तुरन्त बाद िी भगवान् ने नवयुवक को एक लुभावना रस्ताव भेजा मानो चक वि उनके मन की परीक्षा लेने के चलए िो। वि राजकीय वायु-सेवा में बहुत िी मिोक सम्भावनाओ िंसे युक्त चवमान िालक के पद के चलए िुन चलये गये। उन चदनो िंपरररवार अपेक्षाकृत आचथशक कचठनाइयो िंसे गुजर रिा था। अतः रस्ताव को स्वीकार कर लेना श्रीधर के चलए सभी दृचष्टयो िंसे एक अचभनन्दनीय चनणशय िोता; चकन्ुतु वि तो पिले से िी एक ऐसे मागश पर रथथान कर िुके थे जो उन्ें ऐसी ऊँिाइयो िंपर ले जाने वाला था जिाँ कोई भी वायुयान कभी भी आरोिण निी िंकर सकता। इससे इनमें रलोभन की क्षचणक सु्फरणा भी निी िंउत्पन्न हुई। तथाचप उन्ें अपनी अस्वीकृचत के कुछ कारण रसु्तुत करने थे। अतएव रचर्क्षण के ियन-पत्र की राप्स्त की सूिना देते तथा उसके चलए अपना आभार रकट करते हुए उन्ोिंने चर्र्तापूवशक चनवेदन चकया चक िूँचक वि आचमष भोजन निी िंलेते और िूँचक इससे चविारणीय कायश के सामाचजक वातावरण में भद्दी स्थथचत उत्पन्न िो सकती िै, अतः वि रस्ताव को अस्वीकार करना अचधक पसन्द करते िैं। भला वि मिान आिा चजसने असिंख्य सच्ेचे चपपासुओ िंको उनकी मुस्क्त की यात्रा में उनके जीवन-पोत का पथ-रदर्शन करने के चलए जन्म चलया िो, एक वायु-सेना के यानि ालक के आडम्बरपूणश व्यस्क्तत्व में क्ोिंकर चसमट सकती थी।

रस्ताव को चर्ष्टतापूवशक अस्वीकार करने के उपरान्त श्रीधर अब सिंन्यास-ग्रिण करने के चलए कृतसिंकल्प थे। वि अपनी परीक्षा कठोरतापूवशक ले िुके थे और मठवासी जीवन के चलए तैयार िो िुके थे। उनका वैराग्य चविार पर आधाररत तथा दीघशकालीन ध्यान तथा आि-चनरीक्षण से पोचषत था। अतः स्वामी कृष्णानन्द के र्ब्दो िंमें "अब भारत की आिा के अन्तरतम रिस्य ने उन पर अपना आचधपत्य कर चलया।" चकन्ुतु इस क्षण भी श्रीधर में दूसरो िंके रचत चिन्ता अनुकरणीय थी। उन्ोिंने अपनी अनुजाओि -वसुधा तथा वत्सला-और छोटी मौसी मालती बाई को अपने पास बुलाया और उन्ें अपने सिंन्यास-ग्रिण की इच्छा सूचित की। वत्सला उस समय केवल सोलि वषश की बाचलका थी।ि श्रीधर ने हृदयस्पर्ी र्ब्दो िंमें उनसे किा चक उन सबकी तथा चवर्ेषकर वत्सला की देखभाल करना उनका दाचयत्व िै; चकन्ुतु भगवान् के चलए उनकी उत्कण्ठा ने सिंसाररक वातावरण में उन्ें दुःखी बना चदया िै। उन्ोिंने अपनी आचश्रत बिनो िंतथा मौसी में से रत्ेयेक से बडी िी गम्भीरतापूवशक पूछा चक वे सच्चाई से उन्ें बतायें चक क्ा वे चबना चकसी पश्चात्ताप तथा र्ोक के उन्ें िले जाने की अनुमचत देंगी। उन्ें मालूम था चक भगवान् उनकी ऐसी देख-रेख करेंगे जैसा कोई भाई अथवा भतीजा निी िंकर सकेगा। चकन्ुतु चनणशय उन्ें करना िै। उन्ोिंने स्पष्ट चकया चक यचद उनमें से एक की भी ऐसी इच्छा हुई तो वे सब जब तक अस्न्तम रूप से जीवन में रचतचष्ठत निी िोिो जाती तब तक वि घर पर िी बने रिेंगे। एक चसद्ध माया के साथ स्खलवाड कर रिा था। माया अत्यचधक बलवती िै; चकन्ुतु राम के सेवक के समक्ष वि चववर् िै। श्रीधर की

अभ्यथशना इतनी गम्भीर थी और ये अचभनव वयस्क लोग आध्यास्िकि सिंस्कारो िंसे इतने पूणश थे चक उनमें से रत्ेयेक ने उनें िले जाने के चलए पूणश तथा मुक्त अनुमचत दे दी। उन्ोनिें दृढ़ चवश्वास तथा गम्भीर भाव से अनुभव चकया चक जो भगवान् अजगरो िंको भोजन तथा आकाश्िरी चनस्सिाय पचक्षयो िंको दैचनक आिार रदान करता िै, वि विी भगवान् िै चजसने उनें लौचकक जीवन को
त्याग करने को अभी रेररत चकया। उन्ोनिें अनुभव चकया चक विी भगवान् उनकी आवश्यकता के
समय चनश्चय िी अपना त्राणदायक िाथ उन सबकी ओर बढ़ायेगा तथा उनकी साँभाल करेगा।
भारतवषश के चदव्य पररवारो िंकी जय िो जो ऐसे उदात्त भावो िंतथा उतृ्कष्ट आदर्ों को सम्पोचषत
करते िैं।

श्रीधर का मागश अब चनबाशध था। वि ऋचषकेर् के स्वामी चर्वानन्द के साथ पिले िी से
सम्पकश में थे और उनसे चनवृचत्त-मागश पर िलने के चलए चनभशयतापूवशक आगे बढ़ने का परामर्श राप्त
िी िुका था। उन्ोनिें अब देखा चक उनु्मुक्त स्वतिता का आनन्दपूणश चदवस आने िी वाला िै।
तथाचप उन्ोनिें चनणाशयक छलाँग लगाने से पूवश िार सन्तो िंको उनके आर्ीवाशद के चलए िार पत्र
चलखे। उन्ोनिें उल्लेख चकया चक वि जन्मजात ब्राह्मण िैं तथा गृि तथा पररवार का त्याग करने तथा
चनवृचत्त-मागश पर िलने का मित्त्वपूणश पग उठाना िािते िैं तथा इसके चलए उनके आर्ीवाशद की
यािना की। उन्ोनिें रमण मिचषश, स्वामी रामदास, स्वामी राजेश्वरानन्द तथा रामकृष्ण चमर्न के
स्वामी अर्ेषानन्द को एक िी र्ैली में पत्र चलखे। उन सभी लोगो िंने श्रीधर को अपने आर्ीवाशद
रेचषत चकये और उनें आगे बढ़ने के चलए रोत्साचित चकया। श्रीधर ने चर्रडी के साई बाबा के
आश्रम के व्यवथथापक को भी पत्र चलखा। उनें बाबा के आर्ीवाशद के रतीक-रूप में उनका रसाद
राप्त हुआ।

अब तो एक क्षण भी नष्ट करने को निी िंथा। **"न कमपणा न प्रजया धरन त्यागेनैके अमृतवमानशुः** न तो कमश से, न सन्तान से और न िी धन से करन एकमात्र त्याग से अमृतत्व
की रास्प्त िोती िै।" मिानारायणोपचनषद् (१२-१४) के दे ब्द उनके कानो िंमें गूाँज रिे थे। हृदय
में अचनवशिनीय आनन्द चलये हुए, गम्भीर मन से श्रीधर ने ६ मािश १९४३ को कोयम्बतूर के अपने
गृि से बचिगशमन चकया। वि एक मित्त्वपूणश चदवस था जब उन्ोनिें चजस सामाचजक तथा पाररवाररक
जीवन में सत्ताईस वषश पूवश वि उत्पन्न हुए थे, उसे अस्न्तम रूप से त्याग चदया। उनके चपता तथा
पररवार के अन्य व्यस्क्तयो िंके चलए अवश्यम्भावी घट िुका था और वे उसे स्वीकार कर िुके थे।
अन्ततः श्रीधर श्ेवेत वस्त्र में सदा सिंन्यासी िी तो थे। उनके चलए त्याग तो मात्र एक औपिाररक कायश
था। स्वामी वेंकटेर्ानन्द ने ठीक िी किा िै: "उनको अपने चलए ऐसा कोई राप्तव्य पदाथश न था
जो उनें पिले से िी राप्त न िो। उनें कभी भी चकसी वसुतु से आसस्क्त न थी चजसे उनें त्याग
करना िो। वि कभी गृिथथी निी िंथे चजससे उनें सिंन्यास लेना िो। वि कभी भी सिांसाररक व्यस्क्त
निी िंथे चजससे उनें सिंसार का त्याग करना िो। वि जन्म से िी यि सब-कुछ थे-सबसे अनासक्त
एक योगी, एक उतृ्कष्ट कोचट के सिंन्यासी, एक मिान् सन्त तथा इन सबसे अचधक।" अतः
जन्मजात चसद्ध ने अब लोक-सिंग्रि के चलए गृि-त्याग चकया।

कोयम्बतूर से वि भगवान् वेंकटेश्वर को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत करने के चलए चतरुपचत की
ओर अग्रसर हुए। यिााँ वि कुछ समय तक रिे तथा अपने र्रीर को चमटाने के चलए अपने को
परीक्षा तथा अनुर्ासन में डाला। उन्ोनिें एक ठेकेदार से दैचनक पाररश्रचमक के आधार पर उनें
र्ारीररक श्रम का कोई कायश देने के चलए चनवेदन चकया। उन्ोनिें अपने व्यस्क्तत्व से एक लब्धरचतष्ठ
ब्राह्मण-पररवार तथा लब्धरचतष्ठ र्ैचक्षक जीवन के मनोवैज्ञाचनक अवर्ेष को-यचद अब भी कुछ

अवरे्ष था–टाने के चलए विााँ एक श्रचमक के रूप में कायश चकया। उन्ोनें चनमाशण-थथल पर चवनम्रतापूवशक कठोर श्रम चकया। उन्ोनें कुछ चदनो िंतक पूणश सच्चाई से कायश चकया और तब अपने चनयोजक से जाने की अनुमचत मााँगी। ठेकेदार ने उन्ें उनका पाररश्रचमक चदया, चकन्तु उन्ोनें रेम
तथा कृतज्ञता के रतीक-रूप में केवल एक रुपया चलया और नम्रता के पोषण के चलए उत्कृष्ट अवसर रदान करने के चलए भगवान् के रचत अपनी कृतज्ञता के रूप में भगवान् वेंकटेश्वर के
रणो िंमें कुछ पुष्पो िंके साथ वि रुपया अचपशत करने िले गये। स्वामी चर्वानन्द ने भी अपनी
सिंन्यास-दीक्षा से पूवश घालज के डाकपाल के अधीन रसोइये का कायश करके इसी रकार के
अनुर्ासन को झेले थे। इस चवषय में चर्वानन्द तथा चिदानन्द एक िी सााँिे में ढले थे।

श्रीधर ने चतरुपचत से मिान् साई बाबा के समाचध-थथान चर्रडी की यात्रा की। चर्रडी
नाचसक के समीप एक छोटा-सा ग्राम िै। यिााँ श्रीधर १९४३ के पचित्र रामनवमी-चदवस, २० अरैल
तक पूरे एक मास तक रुके। विााँ उन्ोनें रामनवमी के अवसर पर मिोत्सव देखा चजसमें अगचणत
भक्तजन साई बाबा की पचवत्र समाचध का अचभषेक करने के चलए पन्दरि मील दूर से गोदावरी
नदी से पचवत्र िल ले कर आये। यिााँ श्रीधर सिस्रबुद्धे नामक एक आरक्षी अचधकारी से चमले जो
साई बाबा के सम्पकश से एक आध्यास्कि व्यस्क्त में बदल गया था और सामान्यतया दास गनु
मिाराज के नाम से चवख्यात था। साई बाबा के आश्रम के अपने आवास काल में वि स्वेच्छा से
कठोर श्रम करते, पुस्तकालय-मिाकक्ष की सफाई करते तथा अन्य रकार की स्वैस्च्छक सेवाएँ
अचपशत करते थे। व्यवथथापकगण िािते थे चक श्रीधर विााँ के थथायी आवासी बन जायें; चकन्तु वि
अपने गुरु की खोज में अब एक पररव्राजक थे। अतः रामनवमी के पश्चात् वे चर्रडी से रथथान कर
भगवान् कृष्ण के चनत्य लीला-थथल वृन्दावन की ओर िल पडे। यिााँ उन्ोनें वृन्दावन के विंर्ीधर
को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत की तथा थथानीय रामकृष्ण मठ में पन्दरि चदन रुके। वृन्दावन से
उन्ोनें स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज को एक पत्र चलख कर सूचित चकया चक वि अपना घर तथा
पररवार त्याग िुके िैं और एकान्त में साधना के चलए थथायी रूप से रिने के चलए एक उपयुक्त
थथान की खोज में िल पडे िैं। स्वामी जी ने उत्तर में चलखा चक वि अभी तरुण िी िैं; अत:
अभी उन्ें अपने सम्बस्न्धयो िंकी सेवा करते रिनी िाचिए, अध्यापन-कायश करना िाचिए तथा रोचगयो िं
की सेवा करनी िाचिए। इस उत्तर से उन्ें मिान् आश्चयश हुआ और इस परामर्श से आश्चयश इस
कारण हुआ चक स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज ने अपने पूवशगामी पत्रो िंमें उन्ें तत्काल सिंसार त्याग
करने के चलए बार-बार उपदेर् चदया था। यि वस्तुतः श्रीधर की अस्न्तम परीक्षा थी। माया के
अनेक रूप िो सकते िैं। उच्च कोचट के लोगो िंके चलए माया रतीयमानतः अचवजेय मानव-आदर्ों
का सूक्ष्म रूप धारण करती िै। गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द श्रीधर के सिंसार से वैराग्य तथा भगवान् में
अनुराग की गिराई की केवल परीक्षा लेने का रयास कर रिे थे। श्रीधर के उत्तर से यि स्पष्ट िो
गया चक वि माया से परे जा िुके िैं। उन्ोनें गुरुदेव को केवल यि सूचित करने को एक सिंचक्षप्त
पत्र चलखा चक अब घर रत्यावतशन की बात उनके चलए अव्यविायश िै तथा उन्ोनें पिले से िी
उनके िरण-कमलो िंमें र्रण लेने का चनणशय कर चलया िै। गुरुदेव इस पत्र से अत्यचधक सन्तुष्ट हुए
तथा अपना स्वीकृचत-सूिक पत्र भेज चदया।

श्रीधर ने वृन्दावन से अपने चनणाशयक तथा दृढ़ चनश्चय के चवषय में गुरुदेव को अपना
अस्न्तम चविार चलख भेजा। तत्पश्चात् उन्ोनें िररद्वार की यात्रा की जिााँ वि कनखल में रामकृष्ण
चमर्न में दर् चदन तक रुके। अब वि अपने गुरुदेव से चमलने तथा सदा-सवशदा के चलए उनके
रण-कमलो िंमें आत्मसमपशण करने को उत्सुक थे। उनकी भावनाओ िंने सन् १९४३ के बुद्ध-पूचणशमा-
चदवस को दृढ़ सिंकल्प के रूप में चनचश्चत आकार ले चलया। १९ मई का अतीव उष्ण चदवस था जब

अपराह्न के २ बजे उन्िोंने बस िारा ऋचषकेर् को रथथान चकया। यि चदवस श्रीधर के जीवन में, चदव्य जीवन सिंघ के इचतिास में तथा बीसवी िंर्ती के आध्यास्िक नवेतना के इचतिास में बहुत िी
मित्त्वपूणश चसद्ध हुआ। सादे मोटे खद्दर का कुरता तथा पायजामा पिने तथा िाथ में एक लाठी चलये हुए श्रीधर ने चर्वानन्दाश्रम में सादगी से रवेर् चकया। उस समय सायिंकाल के लगभग पााँि बजे थे। स्वामी चर्वानन्द जी ऊपर पिाडी पर भगवान् चवश्वनाथ के मस्न्दर में गये हुए थे। एक नेपाली भारवािक ने श्रीधर को स्वामी चर्वानन्द के पचवत्र आश्रम के चनकटवती रामाश्रम-पुस्तकालय के
चनकट रतीक्षा करने का परामर्श चदया। विााँ श्रीधर अपने िाथो िंमें चमश्री तथा गम्भीरतम भस्क्त से
चसक्त नेत्रो िंके साथ रतीक्षा करने लगे। सन्ध्या सघन िोती जा रिी थी। पचवत्र बुद्धपूचणशमा का पूणेन्दु
अभी-अभी उचदत हुआ था। गुरुदेव मस्न्दर से लम्बे डग भरते हुए पिाडी से नीिे आये। जब गिंगा
रास्न्तरद िस्न्द्रका में चझलचमला रिी थी, चदव्य जीवन सिंघ के भावी पूणेन्दु ने आनन्द-कुटीर की
ज्ञान-ज्योचत को रणाम चकया। श्रीधर ने अपने आध्यास्िक चपता का दर्शन चकया। उन्िोंने अपने मधुर तथा चवनम्र आिसमपशण के रतीक-रूप में चमश्री अचपशत करते हुए गुरुदेव के िरण-कमलो िंमें
साष्टािंग रणाम चकया। भूचम पर तीन बार साष्टािंग रणाम करने के अनन्तर उन्िोंने अत्यचधक
चवनम्रतापूवशक सूचित चकया चक वि िैदराबाद के श्रीधर राव िैं। गुरुदेव ने उनसे एक मराठी वाक् में
उनके स्वास्थ्य के चवषय में पूछा मानो वि उनसे चिरकाल से पररचित िो।िं उनके चलए श्रीधर
चकिंचित् भी अपररचित निी िंथे। वि जानते थे चक उनका उत्तराचधकारी आ गया िै। श्रीधर को भी
इस रकार का अनुभव हुआ। उनके चलए यि रुचिकर गृित्यागमन-सा था। गुरुदेव ने बडे िी अनौपिाररक ढिंग से उन्िें सायिंकालीन सत्सिंग में उपस्थथत िोने तथा आगामी चदवस के बडे रातः िी अपने कुटीर में उनसे चमलने के चलए किा।

इस भााँचत अन्त में श्रीधर को चर्वानन्द के िरण-कमलो िंमें अपना स्थथरक राप्त िो गया ।
गुरु भगवान् िैं। भगवान् गुरु िैं। भगवान् श्रीमद्भागवत में किते िैं: "वास्तव में आिायश को मुझे
(भगवान्) िी जानो। उनकी कभी भी अवज्ञा न करो और न उनको केवल मानव मान कर कम मित्त्व दो। गुरु में सभी देव समुपुटीकृत िैं।" अब श्रीधर अपने परम देव के, अपने गुरु के,
जगद्गुरु स्वामी चर्वानन्द के, भगवत्साक्षात्कार- राप्त एक मिान् आिा के सन्मुख थे। उन्िोंने भगवान् की खोज में सुदूर थथानो िंकी यात्राएाँ की थी िंऔर अब वि रचतज्ञात देर् के रवेर्-द्वार पर
पहुाँि गये।

तृतीयअध्याय

चर्ष्यत्व के बीस वषश

"योगे: कमपसु कौशलम्

-कमश करने का कौर्लीयोग ि" (गीता : २-५०)।

श्रीधर ने ऋचषकेर् की पावन भूचम में उस भाग्य-चनणाशयक चदवस को अपने को चजस असाधारण आध्यास्कि गुणो िंसे सम्पन्न व्यस्क्त की देख-रेख में अचपशत चकया, उसका जन्म मिास के चतरुनेल्वेचल चजले के पत्तमडै ग्राम में ८ चसतम्बर १८८७ को हुआ था। वि यर्स्वी सन्त रख्यात रैव आिायश अप्पय दीचक्षत की अठारिवी िंपीढ़ी में उत्पन्न हुए थे। कुपुपुस्वाचम, जैसा चक वि उन चदनो िंकिलाते थे, अपनी धमशपरायणता के चलए रख्यात दम्पचत वेंगु अय्यर तथा पावशती अम्माल की गोद में उत्पन्न हुए थे। कालक्रम से चवकास पा कर वि एक रचतभार्ाली युवक बने। चनधशनो िंतथा रोचगयो िंकी ओर स्वभावतः आकृष्ट िोने के कारण वि चिचकत्सीय चर्क्षा राप्त करने गये तथा एक डाक्टर की उपाचध राप्त की। दैवयोग से वि मलया गये जिााँ उन्ोनिें लगभग एक दर्क तक लोगो िं की सेवा की। भारत का यि नवयुवक डाक्टर चनधशन तथा धनवान्, पररषृकृत तथा चनरक्षर सभी से समान रूप से पररचित था। इसने एक भि समारी (दानर्ील) के रूप में र्ीघ्र ख्याचत अचजशत कर ली। उनके चलए कमश भगवदुपासना था। यद्यचप अपने सजातीयो िंका दुःख उन्ें चनरन्तर चक्रयार्ील बनाये रखता तथाचप उनका रारम्भ का उफान र्नैः -र्नैः र्ान्त िो िला और उनमें एक चविारर्ील, चिन्तनर्ील रकृचत का चवकास हुआ। वि धाचमशक साचित्य का बहुत अचधक पररर्ीलन करने लगे। धीरे-धीरे उनमें यि सत्य रकट हुआ चक रोगो,िं पीडाओ,िं मानचसक व्यथाओ िंतथा अशुरुओ िंसे युक्त इस सिंसार से परे चनःशे्रेयस, आनन्द तथा चिरन्तन र्ास्न्त की अवथथा ि और यि एक ऐसी वसुतु ि चजसे रत्येक व्यस्क्त राप्त कर सकता ि। अतएव एक समृद्ध जीवन-वृचत्त को चतलांजचल दे सन् १९२३ में वि एक चदन िुपिाप मलया से िल पडे और एक पथरदर्शक तथा तप करने के चलए उपयुक्त वातावरण की खोज में चिमालय आ गये। वि ऋचषकेर् में गिंगा जी के तट पर स्वामी चवश्वानन्द से चमले तथा उनसे पचवत्र दीक्षा देने की यािना की। इस भााँचत वि १ जून १९२४ को पचवत्र सिंन्यास-आश्रम में दीचक्षत हुए। स्वामी चर्वानन्द के नाम से चवशुरुत अब वि सन् १९२४ में ऋचषकेर् में थथायी रूप से रिने लगे। उन्ोनिें लगभग एक दर्क तक कठोर तपस्या,

योगाभ्यासतथा गिन ध्यान का अभ्यास चकया तथा भगवान् केआर्ीवाशद से ओिसाक्षात्कार राप्त कर एकजीवनुमुक्त के रूप में वि चवभाचसत हुए।



गुरुदेव का िरणअनुसरण करते हुए



परम पूज्य गुरुदेव के श्री िरणो िमें

चिमालय के इस अचितीय सन्त के चलए गुरुपन एक चवनार्कारी रोग था; चकनुतु सवशर्स्क्तमान्रभुकीआज्ञाकोचर्रोधायशकरउसनेअपनाध्यानलोक-सिंग्रिकीचदर्ामेंमोडा।
उसनेसन्१९३६मेंचदव्यजीवनसिंघकीथथापनाकीतथाभारतके कोने-कोनेतकबस्ल्कसमिूे
भूमण्डलमेंयोगतथावेदान्तके सन्देर्कारिरचकया।बिमानवकीसेवाकरनेतथाउसे
मिोचनिासेउद्बुद्धकरनेके चलएजीवन-यापनकरतेथे।सेवा,रेम,दान,पचवत्रता,ध्यान,
ओिसाक्षात्कार-येउनकीउपदेर्-मालाके आधारथे।रकाचर्तसाचित्य,व्यापकआध्यास्कि
यात्राओ,ि आध्यास्किसम्मेलनोंकेमाध्यमसेआध्यास्किज्ञानकेरसारतथाअस्न्तमचकनुतुगौण

नी ि चदव्य भगवन्नाम सिंकीतशन के रिर उनके चमर्न की आधारचर्लाएँ बने। सिंन्यासी तथा सिांसाररक दोनो िि समान रूप से सिस्रो िकी सिंख्या में उनके पास एकत्र िोने लगे। उन्नत साधक तथा ज्ञानवृद्ध योगी उनसे योग तथा वेदान्त का पाठ सीखने लगे और उनमें से कुछ तो आश्रमवासी के रूप में विी िरिने लग गये। वे सभी बहुत िी सचे्चे साधक थे। उनमें से कुछ बहुत िी उन्नत आिाएँ थी।ि उन्ोंनें अब गुरुदेव के रेम तथा उदारता के पचवत्र उद्देश्य के सम्पादन के एक उपकरण के रूप में अपने को समचपशत कर चदया। चकनु्तु आनन्द-कुटीर का यि सन्त अब भी एक ऐसे व्यस्क्त की रतीक्षा में था जो उसे सभी दुवशि उत्तरदाचयत्वो िके भार से मुक्त कर सके। वि अपने उस िुने हुए पुत्र की रतीक्षा कर रिा था चजसे वि भगवान् के चर्ुओ िकी सेवा के चलए अपनी आध्यास्कि चनचध िस्तान्तररत कर सके। चनदोष रु्चिता तथा अपराजेय दु:सािस वाले वि व्यस्क्त थे श्रीधर, एक जन्मजात सन्त। वि उसी सााँचे में ढले थे चजसमें उनके गुरुदेव। वि चनधशनो,ि रोचगयो ितथा पददचलतो िकी सेवा में सवाशचतर्ायी थे। उनकी उदार आस्स्तक् बुस्द्ध तथा सभी राचणयो ि के चलए सिंवेदनर्ील चिन्ता भी अनुपम थी। उनकी अनािर्ंसा तथा दूसरो िके चलिाज का भाव दूसरो िके चलए अनुकरणीय था। भस्क्त तथा ध्यान की साधना उनके चलए एक स्वाभाचवक, रुचिर वसु्तु थी; मोक्ष की स्वतः रसूत ज्वलन्त कामना की पररणाम थी। उन्ोंनें सिंन्यासी की मनोवृचत्त तथा रकृचत को ऐसे अपनाया जैसे मत्स्य जल को अपनाता िै। रमण, असिंगानन्द तथा रामदास जैसे सन्तो िके साथ उनका सम्पकश उनमें चदव्य िेतना की उन्नतावथथा के रूप में पिले से िी फलरद िोने लगा था। अब वि चर्वानन्द-ज्ञान की मूल्यवान् कचणकाओ िको स्वाचत नक्षत्र से रभाचवत रुस्क्तका की भााँचत अपने हृदय के अन्ततशम रकोष्ठ में सााँजोये हुए थे।

एक चदन गुरुदेव ने श्रीधर को अपने पाश्वश में बुलाया और किा, "मैं यि जान कर दु:स्खत िोता हाँ चक जब मैं अपने छात्रो िपर चनथस्वाथश सेवा िेतु अपने जीवन को िी अचपशत कर देने पर जोर देता हाँ तो वे अनेक बार मेरे भावो िको समझने में असफल रि जाते िैं। मेरा यि अथश कदाचप निी ििोता चक अपने अन्य कतशव्यो िके नाम में वे अपनी वैयस्क्तक साधना की अविेलना करें। रचतचदन रातःकाल तथा गोधूचल के समय चनचश्चत समय पर सुव्यवस्थथत साधना र्ेष चदन के सचक्रय कायश की चकसी भी तरि चवरोधी निी ििै। मैं चजस बात पर बल देता हाँ, वि यि िै चक अकताश, अभोक्ता अथवा ईश्वरापशण और चनचमत्तमात्र िोने भाव के अिंगीकरण से कायश भी आध्यास्कि साधना बन जाना िाचिए।" श्रीधर ने इन ज्ञानमय बर्ो िको ध्यानपूवशक सुना और तत्क्षण चर्वानन्द चमर्न में रवेर् ले चलया और इस उदात्त कायश के चलए अपनी समूपूणश सत्ता समचपशत कर दी। आध्यास्कि देवत्व उनके चविार की रकृचत में रवेर् कर गया और वि गुरुदेव के परम सन्तोषरद रूप में सचक्रय सेवा में कूद पडे।

प्रारन्तिक प्रडशक्षण

चर्वानन्दाश्रम उन रारस्म्भक चदनों में वसु्तुतः एक उटज िी था। उसके अचधष्ठाता सवोत्कृष्ट कोचट के एक रबुद्ध योगी थे। वि अपने साथ केवल आठ चर्ष्य रखते थे-स्वामी कृष्णानन्द जी, स्वामी चवर्ुद्धानन्द जी, चवशे्वेश्वर स्वामी जी, गोचवन्द स्वामी जी, पूणशबोध स्वामी जी, र्ाश्वत स्वामी जी, रामिन्द्र स्वामी जी तथा नारायण स्वामी जी। ये सभी बहुत उच्च कोचट के साधक थे। नवााँ रत्न, चजसे आगे िल कर िूडामचण बनना था, वि थे श्रीधर राव जो र्ीघ्र िी राव स्वामी जी के नाम से रख्यात िो गये। इस नये स्वामी के चलए कोई भी कायश चनकृष्ट न था। सभी कायश गुरुदेव के पचवत्र िरणों में समान रूप से समचपशत भगवदाराधना था। स्वामी कृष्णानन्द जी ने, जो सन् १९४२ से १९४४ तक चदव्य जीवन सिंघ के मिासचिव थे, इन्ें रथम पता चलखने तथा चवचभन्न थथानों

को भेजने के चलए माचसक पचत्रका 'चडवाइन लाइफ' के उते्क्षेप पर नामपत्र चिपकाने का कायश
सौपिा। राव स्वामी जी परम सच्चाई के साथ पते चलखते थे। तत्पश्चात् उन्ें पुस्तकालय की पुस्तको िं को व्यवस्थथत करने को कि राया। राव जी ने न केवल पुस्तको िंकी धूल झाडी और उन्ें सुरुचिपूणश तथा व्यवस्थथत ढिंग से खानो िंमें रखा अचपतु उन्ोिंने उन्ें आवरण से ढक भी चदया। इस कायश में उन्ोिंने बिी उत्सुा तथा चनष्कपटता चदखायी जैसे चक वि योग-साधना के चलए चदखलाते थे। बि फर्श पर झाडू लगाने, अचतचथयो िंतथा रोचगयो िंकी देखभाल करने, टिंकी को गिंगा से जल
ला कर भरने, फर्श पर दरी चबछाने, जिंगल से ईंधिन लाने, बरतन साफ करने तथा भोजनालय में काम करने, मस्न्दर में पूजा करने में सिभागी बनते तथा पत्र चलखते, पाण्डुचलचप टिंचकट करते तथा
सायिंकालीन तथा चवर्ेष धाचमशक पवो पर आयोचजत सत्सिंगो िंमें उन्नयनकारी रविन करते थे। इन सब
कायों को करते हुए वि सदा र्ान्त तथा आध्यास्िक सूफूचतश से पूणश रिते थे; क्ोिंचक कायश िी
पूजा करने की उनकी एक रणाली थी। गुरुदेव एक कठोर अचधकारी, एक स्ेिी चपता, एक
चिन्तातुर माता तथा इनके अचतररक्त अन्य और कुछ भी थे। उनके सिंसूकृत सिंकल्प से रवाचित िोने वाली चदव्य कृपा तथा सदयता राव स्वामी जी को अचनवशिनीय आनन्द से आपूररत कर देती। गुरुदेव
ने र्ीघ्र िी अनुभव चकया चक श्रीधर सामान्य व्यस्क्त निी िैिं जो चकसी रकार के कायश से अचभभूत िो िंअथवा बन्धन में आयें। उनकी उतृकृष्टतर चनयचत को जान कर गुरुदेव समय-समय पर उन्ें कुछ
चदनो िंके चलए समूपूणश कायश बन्द कर एकान्त में समय व्यतीत करने को कि करते थे। श्रीधर
तत्काल िुपिाप अन्तमुशखी अन्तरावलोकन के जीवन में िले जाते, वनो िंमें इधर-उधर चविरण
करते, एकान्त थथानो िंकी नीरवता तथा र्ास्न्त पान करते तथा चवश्व के स्वर से समस्वररत िोने का
रयास करते थे। जैसी और जब िोिं, वि सेवा अथवा साधना में चनमस्ज्जत िोने को स्वति थे।

रोगग्रस्ो ांकी सेवा

चर्वानन्दाश्रम में रवेर् करने के दर् चदन के भीतर िी थथानीय जनता श्रीधर को डा. राव जी के नाम से पुकारने लगी। चनश्चय िी वि उपाचधधारी चिचकत्सक निी िंथे; चकनु्तु कुचष्ठयो िंतथा चनधशनो िंकी चिरकालीन तथा समचपशत सेवा से ऐसा कायश उनका अवर स्वभाव बन गया था और वि रोचगयो िंकी पररियाश में बहुत िी कुर्ल िो गये थे। यचद उनके हृदय में सिंसार से सम्बस्न्धत कोई अनुराग था तो वि यिी था। उन्ें डाक्टर की पदवी ईश्वराचदष्ट पररस्थथचतयो िंमें राप्त हुई। एक बार जब वि भ्रमणाथश बिार गये तो मागश में उन्ें एक कुष्ठरोगी चमला। उन्ोिंने उसे उपिार के चलए आश्रम के औषधालय में आने के चलए कि। जब वि रोगी आश्रम में पहुँिा तो विाँ उपस्थथत राय: सभी लोगो िंने अपनी खीज व्यक्त की। चकनु्तु गुरुदेव ने डा. राव को न केवल उसका उपिार करने की अनुमचत दे दी, अचपतु नवयुवक ब्रह्मिारी के दयामय कायश से अचभव्यक्त उनकी आध्यास्िक रगचत की भूरर-भूरर रर्िंसा की। तदनन्तर श्रीधर आश्रम के चिचकत्सालय में कुष्ठरोग का चनयचमत रूप से उपिार करने लगे। गुरुदेव इस नवदीचक्षत चर्ष्य की इस असाधारण चनष्ठा को आनन्दपूवशक देखते थे। उन्ोिंने स्वयिं उन कुचष्ठयो िंको रत्येक मिा की अस्न्तम चतचथ को भोजन कराने की व्यवथथा कर दी। युवक ब्रह्मिारी तथा अनुभवी गुरु की सदा एक िी मनोवृचत्त थी। जो रोगी आश्रम के चवषम चिचकत्सा (एलोपैथी) औषधालय में आते उन्ें ऐसा अनुभव िोता चक डा. चर्वानन्द जी की भाँचत िी डा. राव जी भी रोगिरण की असाधारण र्स्क्त से सम्पन्न िैिा िैं। डा. राव जी ने चक्रयािक उपिार के चलए सतीर्िन्द्र दास गुप्ता की 'िोम ऐण्ड चवलेज डाक्टर' (Home and Village Doctor) तथा राखाल दास गुप्ता की औषध-र्ास्त्र (Materia Medica) जैसी पुस्तको िंपर पास्ण्डत्य राप्त कर चलया था। चकनु्तु वास्तचवक मित्त्वपूणश बात तो यि

थी चक वि उन बीमार रोचगयो िंके रचत अपना सच्चा रेम तथा चनष्कपट चिन्ता रकट करते थे जो अब सुसोपाचधक चवर्ेषज्ञ चिचकत्सको िंके परामर्श की अपेक्षा उनके आर्ीवाशद को पसन्द कर बडी सिंख्या में आने लगे थे। 'डाक्टर का समय उसका अपना समय निी िंिै' - इस चसद्धान्त-वाक् पर िलते हुए श्रीधर अपने भोजन तथा चवश्राम की उपेक्षा कर अपना समूपूणश समय रोचगयो िंके उपिार
में लगाते थे। कभी-कभी उनका रोगिर स्पर्श िमत्कार करता था। एक बार ग्रीष्म ऋतु की एक तमसावृत राचत्र में एक वृद्ध मचिला अपनी छोटी पुत्री के साथ उनके समुमुख उपस्थथत हुई। उसकी पुत्री को एक चवषैले वृचश्चक ने दिंर् चलया था। उन्ोंनिें उसे तुरन्त िी अपने कुटीर में बुलाया और अपनी िोरबत्ती के रकार् से उसको मागश चदखाया। उनके पास लगाने के चलए कोई औषचध न थी। उन्ोंनिें केवल अपने छोटे तौचलए को उसके आक्रान्त अिंग पर मला और इस बीि ओष्ठो िंसे भगवन्नाम उच्चारण करते रिे। लडकी तत्काल िी पीडामुक्त िो गयी। सिंवेदनर्ील डाक्टर िारा उत्पन्न रेम की स्र्क्त ऐसी थी चक चवष ने भी अपनी चवषाक्तता खो दी। उनकी करुणा सबको अपने में समाचवष्ट करने वाली तथा अक्षय थी। उन्ोंनिें इसे केवल मनुष्यो िंतक िी सीचमत निी िंरखा अचपतु परुुओ,िं पचक्षयो िंतथा कीटाणुओ िंतक उसे चवस्ताररत चकया था। एक चदन उन्ोंनिें आश्रम के कायाशलय के पास एक कुत्ेते को लेटा हुआ देखा। उसका र्रीर व्रणो िंतथा कृचमयो िंसे भरा हुआ था। यि स्पष्ट था चक वि कुछ समय से घोर व्यथा में था। राव स्वामी जी का कोमल हृदय इस करुणाजनक दृश्य से िचवत िो उठा। उन्ोंनिें कुछ औषचध स्खलायी, सूई लगायी तथा रभाचवत अिंगो की उचित रीचत से मरिम-पट्टी की और सारी राचत्र उसकी सेवा-सुशूरूषा करते हुए उसके चनकट सोये। आश्रमवाचसयो िंने जब रात:काल इसे देखा तो वे स्तब्ध रि गये। गुरुदेव ने किा चक राव स्वामी जी मानव निी िंवरन् करुणा के मूतश रूप िैं। इस करुणामय व्यस्क्त का ऐसा सद्भाव तथा ऐसी चनष्ठा थी चक उसने लगभग दो मिा तक अपने को उस कुत्ेते की देख-रेख में लगाये रखा और जब तक वि पूणश रूप से स्वथथ निी िंिो गया तब तक उसे उनुमुक्त निी िंचकया। गुरुदेव ने रिस्यमय ढिंग से अपना मत अचभव्यक्त चकया, "डा. राव तो डा. चर्वानन्द से भी आगे बढ़ गये िैं।" डाक्टरो िंके इस डाक्टर ने, जो चिचकत्सीय मिाचवद्यालय में रचर्क्षण राप्त चकये चबना िी औषचध-चवर्ेषज्ञ बन गया, ग्राम-ग्राम में चविरण चकया तथा पवशतीय रदेर् के जनसाधारण को चिचकत्सीय सिायता रदान की। उन चदनो िंचिचकत्सीय सुचवधा के अभाव में बहुसिंख्यक लोगो िंके राण िले जाते थे। ऐसे लोगो िंके चलए चर्वानन्दाश्रम का यि सिानुभूचतर्ील ब्रह्मिारी साक्षात् धिन्तरर के रूप में रकट हुआ। उन चदनो रिव स्वामी जी ने ऋचषकेर् तथा उसके आस-पास के थथानो िंमें रोचगयो िंके सेवा-काल में जो सदयता, समपशण, चवनम्रता तथा उदारता के उत्कृष्ट गुणो का रदर्शन
चकया, उसको पूणश रूप से रकट करने के चलए व्यस्क्त को स्वगशदूत की चजह्वा की आवश्यकता िोगी। लोग जब कभी भी उनका गुणानुवाद करते तो सरल स्वामी जी चवनम्रतापूवशक किते चक उन्ोंनिें अपने गुरुदेव के जीवन से कुछ छोटी-छोटी बातें सीखी िैं। तत्पश्चात् वि जब स्वामी चर्वानन्द गिंगा-तट पर स्वयिं साधना करते थे, उस समय की गुरुदेव की सेवाओ िंकी कथाओ िंसे, स्वगाशश्रम में गुरुदेव के रारस्म्भक जीवन से सिंकचलत तथ्यो िंसे उनका मनोरिंजन करते थे। गुरुदेव चकस रकार वयोवृद्ध मिात्माओ िंतथा रोचगयो िंके चलए गिंगा से जल ला कर, उनके कमरो िंमें झाडू
लगा कर, उनके वस्त्र धो कर तथा उनके र्ौिालय तक की सफाई करके उनकी सेवा करते थे, इसका वणशन वि बहुत िी भावपूणश ढिंग से करते थे।

दैडनक साधना

श्रीधर अपने जीवन के रारस्म्भक चदनो िंसे िी सत्य, चवश्व-रेम तथा र्ुचिता के चत्रयेक गुणों में रचतचष्ठत थे। पूणश ब्रह्मिारी िोने के कारण वि ओजस्-स्र्क्त से सदा कास्न्तमय रिते थे। इसके

अचतररक्त, जो भी िर तथा राणधारी थे, उनमें भगवान् की सवशव्यापकता के रचत अनुचक्रयारील िनें से वि सदा-सवशदा रभु की उपासना में संलग्न रिते थे। अतः इससे ऐसा रतीत िोता िै चक उनके चलए दैचनक साधना की चकसी अचतचनयमचनष्ठ समय-साररणी की आवश्यकता नीं िंथी। चकन्तु वि तोतापुरी की रचसद्ध अभ्युस्क्त को सदा स्मरण रखते थे चक पीतल के पात्र की िमक बनाये रखने के चलए उसे रचतचदन मलना िोता िै। गुरुदेव की भाँचत वि भी इस बात पर बल देते थे : "रीर सदा गदशभ और मन अस्न्तम चदवस तक मकशट बना रिता िै; अतएव आध्यास्त्कि िाबुक
तथा चतचतक्षा, तपस्या आचद की छडी को सदा तैयार रखना िाचिए।" इसी भाँचत गुरुदेव जो रायः तावनी चदया करते थे : "भले िी आप जीवन्मुक्त िो,िं परन्तु आपको सावधान रिना िाचिए।"
इस बात में भी वि उनके साथ एक मत थे। 'राव स्वामी जी एक जन्मजात चसद्ध िै' - ऐसा
गुरुदेव का चविार था। तथाचप वि अपने को सदा िी एक अनभ्यस्त, आध्यास्त्कि क्षेत्र में अभी- अभी रवेर् करने वाला व्यस्क्त िी मानते थे। अतएव वि समय-समय पर उपवास, आकस्स्मक अिा-दमन तथा चतचतक्षा का आश्रय चलया करते थे।

चतचतक्षा एक ऐसा गुण था चजसे श्रीधर ने आश्रम में आने से पूवश िी अध्यवसायपूवशक सम्पोचषत चकया था तथा चजससे वि रिुर मात्रा में सम्पन्न थे। तथाचप ऐसा कोई भी चदन न व्यतीत िोता जब वि अपने को चकसी-न-चकसी कठोर परीक्षा का चवषय न बनाते; क्ोचिंक चतचतक्षा संन्यासी की सच्ची सम्पचत्त िै। भगवान् गीता में साधक को रेररत करते िैं चक 'सुख तथा दुःख, रीत तथा उष्ण को समचित्तता से सिन करो; क्ोचिंक वे भी अचनत्य िैं।' राव स्वामी जी को एक ऐसे व्यस्क्त के, अपने गुरु चवानन्द के साचन्नध्य में रिने से अचतररक्त रेरणा राप्त थी जो अनुकरणीय जीवन्त चतचतक्षु थे। गुरुदेव अपनी आध्यास्त्कि साधना के रारस्म्भक चदनो िंमें िी अपने चतचतक्षा-गुण के चलए रख्यात थे। चवानन्द अपनी साधना में कोई अवरोध न आये, इसके चलए रचतचदन स्वल्प आिार के चलए अन्नक्षेत्र न जा कर, बासी रोटी के टुकडे संग्रि कर रखते और उस पर िी अपना चनवाशि करते तथा लगातार कई चदनो िंतक ध्यान करते रिते थे। इस भाँचत वि अपने पास कुछ सूखी िीमट रोचटयाँ रखने के अभ्यस्त थे और जब कभी भूख लगती तो उसे गंगाजल में चभगो कर खा लेते थे चजसका अथश यि हुआ चक वि एक चदन के भोजन पर एक सप्ताि तक चनवाशि करते थे। चतचतक्षा के इस गुण ने, चजसे गुरुदेव ने उस समय भी बडी सावधानीपूवशक बनाये रखा था, राव जी पर गम्भीर रभाव डाला चजन्ोंनें, जैसा चक िम 'आलोक-पुंज' (Light Fountain) से समझते िैं, गुरुदेव के आन्तर जीवन के पृष्ठो िंको पूणश मनोयोगपूवशक अध्ययन चकया था। गुरुदेव का जीवन कोई गुप्त चवषय नीं िंथा। वि सवशचवचदत था; चकन्तु श्रीधर की भाँचत सच्चे चववेक तथा समझ के स. थ उसका अध्ययन कर सकने वाले लोग बहुत िी कम थे और ऐसे लोगो िंकी संख्या तो और भी कम थी जो उसके अध्ययन से लाभ उठा सके। गुरुदेव के स्वगाशश्रम के रारस्म्भक जीवन से, जैसा चक उनके सेवको िंसे िमें ज्ञात हुआ िै, राव स्वामी जी इतना अनुराचणत हुए चक उन्ोंनें अपने रीर को, जो सुख-साधनो िंमें पला था, सच्ची चक्षा देने का चविार चकया। ऐसा सोि कर वि चर्र ऋतु की राचत्र में अपने कुटीर से बािर आ गये और उषा-काल आने तक आच्छादन-वस्त्र के चबना बैठे रिे। वि भी इस अवथथा में, जब चक तीक्ष्ण रीत वायु िचियो िंतक को कम्पायमान करती हुई उनके झुरीदार रीर से टकरा कर बि रिी थी, रान्त बने रिे। इस भाँचत उन्ोंनें तपस्या की ज्वाला को सुस्थथर तथा अचवरत बनाये रखा।

स्वामी जी आश्रम के अपने रारस्म्भक आवास-काल में एकान्त थथलो िं में जप तथा ध्यान में लगातार घण्टो िं तक चनमग्न रिते। वि गिंगा के दूसरे तट पर स्वगाशश्रम से लगभग सात मील दूर
तथा उतुतुिंग मचणकूट-पवशत के उस पार नीलकण्ठ मिादेव के मस्न्दर के दुष्कर आरिो पर रायः
लिे जाते और उसकी एकान्त र्ास्न्त में गम्भीर ध्यान में चनमग्न िो जाते और काल-रविा का
अचतक्रमण कर समाचध में िले जाते थे। वि कभी-कभी ब्रह्मपुरी को अपनी तपथथली के चलए
िुनते। उस थथान में एक गुिा िै चजसमें स्वामी रामतीथश कठोर तपस्या चकया करते थे। यि थथान
सुगम्य निी िं िै; क्ोचिंक सपों तथा चििंस्र परु्ओ िं से बाचधत िै। स्वामी जी इस रकार के पचवत्र चकनुतु दूर थथानो मिं, मानव-आवास से बहुत दूर अपनी उच्चतर साधना चकया करते थे। गुरुदेव की
अनुमचत से वि आन्तररक र्ास्न्त तथा नीरवता की खोज में फूलिट्टी अथवा गरुडिट्टी जाया करते
थे। वि जीवन-चनवाशि िेतु अपने साथ िव आिार ले जाते और विााँ कई चदनो िं तक चनरन्तर ध्यान
करते थे। एक चतचतकुषु साधु ने जो अपनी असाधारण कठोर तपस्या के चलए रख्यात थे तथा अपने र्रीर को आच्छाचदत करने के चलए केवल टाट के टुकडे पिनने के कारण 'टाटवाला' पदवी
राप्त चकये थे, बाद में बतलाया चक उन्ोिंने बहुधा स्वामी जी को कठोर कष्ट झेल कर तप तथा
ध्यान करते हुए देखा था। इस लेखक को स्वामी ध्यानानन्द जी से ज्ञात हुआ चक एक टाटवाले
तपस्वी ने, जो भूतनाथ-गुफा में लगभग तीस वषश तक रिे थे, एक बार स्वामी जी के कुछ भक्तो िं
को बतलाया चक स्वामी जी ब्रह्मिारी की अवथथा में र्ान्त ध्यान के चलए उस गुफा में आया करते
थे। उस तपस्वी ने यि स्वीकार चकया चक उन रारस्म्भक चदनो िं में भी इस युवक ब्रह्मिारी की
अनुकरणीय चवनम्रता, दयालुता तथा चनभशयता के कारण उनमें उसके चलए श्लाघा का गम्भीर भाव
था। इस भााँचत दीघाशवचध के गम्भीर ध्यान के अनन्तर आश्रमवासी साचथयो िं के साथ चनरन्तर कठोर
श्रम की अवचध आती रिती।

उन्ोिंने बडे िी सूक्ष्म ध्यान से अवलोकन चकया चक गुरुदेव चकस रकार लोक-सिंग्रि के चित में अपनी गचतकता का रबल रवृचत्तयो िं के बावजूद भी अपने अन्दर वैराग्य की अचग्नचर्खा को अचवरत जलाये हुए अन्तर में सदा चवरक्त सिंन्यासी थे। उन्ोिंने देखा चक गुरुदेव उन सबके मध्य र्रीर से सदा उपस्थथत रिते हुए भी समय-समय पर पूणश आभ्यन्तरता की ऐसी अवथथा में िले जाते थे चक व्यस्क्त को यि दावा करना कचठन िो जाता चक वि विााँ वास्तव में उपस्थथत थे। यि चनश्चय िी र्ास्त्रो िं में वचणशत चवलक्षण 'चनष्प्रपिंिावथथा' थी। उन्ोिंने यि भी देखा चक गुरुदेव निितीत, अचतवणाशश्रमी तथा वणशिीन स्फचटक िोते हुए भी अपने बहुमुखी व्यस्क्तत्व से बहुत िी सुयोग्य बीस युवक सिंन्याचसयो िं को रभाररत तथा आबद्ध रखते थे। गुरुदेव जब अपने कुटीर से बािर चनकलते तो वि रेररत करते, मागशदर्शन करते तथा कायश करते हुए गुरुगोचवन्दचसिंि बन जाते और जब अपने कुटीर में िोते तो वि अपनी 'सिजावथथा' में तल्लीन गुरु नानक का रूप ले लेते थे।

यि पाठ राव स्वामी जी ने अपने गुरुदेव के जीवन से सीखा। गुरुदेव की भााँचत िी वि रातः से राचत्र िोने तक रवृचत्तयो िं में अचवरत सिंलग्न रिने के बावजूद 'र्ान्त समाचित चित्त' पर चजसमें व्यस्क्त भागवत सत्ता के साथ सिंलाप करता िै, सदा अपना वैसा अचधकार रखते थे जैसा चक आज भी रखते िैं। इनके घचनष्ठ चमत्र तथा एक परमोच्च कोचट के उन्नत ज्ञानयोगी स्वामी कृष्णानन्द जी इनकी इस अवथथा को पिचान सके चजसमें राम के अचतररक्त अन्य कुछ न था- 'सवां राममयिं जगत्' -इस अनुभूचत से िी राव स्वामी जी की सभी रवृचत्तयााँ अनुराचणत िोती थी िं और वि चवनम्रता के साक्षात् अवतार िी रतीत िोते थे। वि सदा-सवशदा सबके साथ अब तृण-पत्र की भााँचत चवनम्र, रर्ान्त तथा अनािंिंसी-सा रिते। स्वामी कृष्णानन्द जी जैसे व्यस्क्त िी अपने उन्नत योग के धरातल से अपने वररष्ठ गुरुभाई की उन्नत आध्यास्िक स्थथचत का सम्यक् मूल्यािंकन

कर सके और उनमें से अनेक लोगो िंने, युवक राव स्वामी जी उस समय आध्यास्किता के चजस
असाधारण चर्खर पर पहुाँ िुके थे, उसे बतलाया। गुरुदेव के चलए अपने इस सवाशचधक चरय चर्ष्य
की अचितीय उन्नतावथथा का मापना चनस्सन्देि सरल था। उन्ोनिें बहुत र्ीघ्र िी घोचषत चकया: "राव
स्वामी जी को सभी कायों से मुक्त कर देना िाचिए; चकनुतु मैं िािता हाँ चक वि मिासचिव के मिान् पद को साँभाल लें।
ऐसे मिान् सन्त को अपना मिासचिव बनाना स्वयिं सिंथथा के चलए परम
गौरव का चवषय िै।"

सांन्यास-दीक्षा

इस अवथथा में यि स्मरणीय िै चक स्वामी जी अभी तक गैररक पररधान निी िं धारण चकये थे। तथाचप बडे-बडे मिािा इनका सम्मान करते थे। वे इनके िरणो िंमें सिज िी नतमस्तक िोते थे। रोचगयो िंकी चनष्काम सेवा िारा इन्ोनिें अडोस-पडोस के लोगो िंका रेम, श्लाघा तथा कृतज्ञता अचजशत कर ली थी और अब इन्ोनिें अपने आध्यास्कि उत्सिा तथा ज्ञान के िारा ऋचषकेर् के मिािाओ िंका सम्मान राप्त कर चलया। चकनुतु इन सबके िोते हुए भी स्वामी जी बडी चवनम्रतापूवशक किाकरते थे चक वि अभी केसररया पररधान धारण करने योग्य निी िंिैं। चफर भी गुरुदेव ने श्रीधर परस्वामी चिदानन्द-आनन्द तथा रबोध में सदा सिंस्थथत- इस उपयुक्त नाम के साथ मिान् त्याग
काचिह्न इन्ें रदान करने की आनन्दरद रेरणा अनुभव की। गुरुदेव सदा गाया करते थे :

"डचदानन्द डचदानन्द डचदानन्दहाँ।
हर हाल में अलमस् सन्तिदानन्दहाँ।"

वि चिदानन्द के साथ अपने को अचभन्न समझते थे और तदनुसार िी उन्ोनिें अपने परम
चरय चर्ष्य का नामकरण चकया। इस नवयुवक सिंन्यासी के चलए, चजसने ऐसा लगता िै चक बहुत समय पूवश िी यि
अवथथा राप्त कर ली थी, यि नवीन सिंन्यासी नामपट्ट एक चवचधवत् स्वीकृचत
मात्र थी। इस भााँचत परम पचवत्र गुरुपूचणशमा- चदवस-१० जुलाई १९४९ - को जो चदव्य जीवन सिंघ
तथा चवश्व के चतचथपत्र में एक सवाशचधक मित्त्वपूणश चदवस था, एक बहुत िी मित्त्व के धाचमशक
सिंस्कार में श्रीधर ने, इि तथा अमुत्र लोको िंके सुखो िंका न्यास कर सरस्वती-परम्परा के पचवत्र
सिंन्यासाश्रम में रवेर् चकया। जब श्रीधर ने चवरजा िोम चकया और यज्ञाचग्न में अपने पूवाशश्रम की
आहुचत डाली तथा स्वामी चिदानन्द सरस्वती नया नाम धारण कर ब्रह्मचवद्या-गुरुओ िंकी शिंखला में
अपने को सिंयुक्त चकया तो स्वयिं यि (सिंन्यास) आश्रम उन्ें अपने में सस्म्मचलत करके मचिमास्न्वत
िो गया।

जीवन्मुक्त आत्मा

आवश्यकता की मााँग के अनुसार तीव्र रवृचत्तयों के बावजूद अब से आगे स्वामी जी के
जीवन का सुदृढ़ आधार अचवस्च्छन्न ध्यान था। अपने उपलब्ध रत्येक अवसर का लाभ उठा कर वि
चनजशन थथानोिं में िले जाते तथा आन्तररक मौन तथा समाचध में चनमग्न रिते। ऐसे िी एक अवसर
पर मध्याह्नोपरान्त चकसी समय आश्रम से रथथान चकया और लक्ष्मण-कुण्ड लगभग ३-३० बजे
पहुाँिे। वि विााँ अपनी िेतना को रोक कर सिज स्वाभाचवक रूप से गम्भीर ध्यान में चनमग्न िो
गये। बहुत र्ीघ्र िी उन्ोनिें अपने को अचतिेतनावथथा में उन्नीत हुआ अनुभव चकया जिााँ मन
पूणशतया चवनष्ट िो जाता िै। वि सायिंकाल को बहुत चवलम्ब से, लगभग ९ बजे राचत्र में अपनी

सामान्य भौचतक िेतना में वापस आये। उस समय चनचवड अन्धकार था; चकन्तु स्वामी जी अलौचकक
आनन्द से इतना अचधक आपूररत थे चक वि भयावि राचत्र भी उन पर कुछ रभाव न डाल सकी
और वि लगभग अधशराचत्र को िी दबे पाँव आश्रम वापस आये।

स्वामी चिदानन्द आश्रम में गुप्त चनचध के रूप में और अचधक समय तक न रि सके।
उनके चदव्य जीवन की सुरचभ ने उनके वातावरण को सुवाचसत कर चदया तथा वि सवशत्र फैल गयी।
इसके पश्चात् चजस चकसी ने भी इन्िें देखा, उसने इनके रीर के िेतुचदशक् कुछ असाधारण
ुम्बिकीय तथा द्युचतमान् पाया। चनश्चय िी यि मिान् घटना स्वयिं गुरुदेव को, जो एक बहुत िी
उच्च कोचट के भगवत्साक्षात्कार-राप्त सन्त थे, स्पष्ट ज्ञात थी। स्वामी चवानन्द ने चनस्सिंकोि घोचषत
चकया चक 'स्वामी चिदानन्द का वतशमान जीवन उनका अस्न्तम जन्म िै।' उन्िोंने अपने चर्ष्यों िेसे
किा: "चिदानन्द एक सन्त िैं। आपको उनकी पूजा करनी िाचिए। वि आपके गुरु िैं।" गुरुदेव
के रमुख चर्ष्यों िेको भी स्वामी चिदानन्द की मुक्त स्थथचत को जानने में अचधक समय निीं िेलगा।
उदािरणाथश : गुरुदेव के वररष्ठ चर्ष्य तथा चदव्य जीवन सिंघ के रथम मिासचिव स्वामी परमानन्द
जी ने स्वामी चिदानन्द जी में जो उनके मुक्तिाा सन्त का स्वरूप देखा, उसका सुन्दर चित्र रस्तुत
कर उन्िोंने इस तथ्य को आश्रमवाचसयों िेको भली रकार समझाया। आइए, िम इस मिान् साधक
के बी् िेको सुनें, "मैंने उन्िें चबस्ल्लयों,िें कुत्तों िेतथा बन्दरों िेको खाना स्खलाते तथा उनकी सेवा
करते देखा िै। आश्रम जब आचथशक सिंकट में िै, उस समय वि मूल्यवान् सूइयाँ लगा कर एक
रुग् कुत्ते के उपिार में रुिर धन व्यय कर रिे िैं। जब सैकडों िेपत्र उत्तर की रतीक्षा कर रिे
िैं, वि थथानीय बालक तथा बाचलकाओं िेको उपदेर् दे रिे िैं और उन्िें चमष्टान्न, चबस्कुट तथा फल
दे कर तुष्ट कर रिे िोंगे। जब उन्िें अपने चनजी कायश में िाथ लगाने का समय न िोगा, वि एक
रोगी को सन्तुष्ट करने अथवा एक कीडे अथवा मनोिर पुष्प की ररिंसा में घण्टों िेव्यय कर
देंगे।... मैं अनुभव करता हाँ चक यचद मेरे पास स्वामी चिदानन्द जी के ज्ञान, क्षमता तथा गुरुदेव
के िरण-कमलों िेमें भस्क्त का सिस्रािंर् भी िोता तो गुरुदेव के चनकट सम्पकश में जो इतने चदन
मैंने व्यतीत चकये, उससे मैं रख्यात त्रोटकािायश की स्थथचत राप्त कर चलया िोता।" गुरुदेव के एक
अन्य ज्ञानवृद्ध चर्ष्य स्वामी िररिरणानन्द जी ने भी उनका ध्यान इसी चवषय की ओर आकृष्ट
चकया-"स्वामी चिदानन्द जी चबस्ल्लयों िेतथा बन्दरों िेतक की अन्त्येचष्ट करते िैं, मि पढ़ते तथा
कीतशन करते िैं। यि चनष्काम सेवा िै। यि उत्कृष्ट चवश्व-रेम िै। चिदानन्द जी इस भावना से पूणश
िैं चक जो भी उनके सम्पकश में आता िै, वि नारायण िै।" श्री नारायण स्वामी जी ने चिदानन्द जी
की उपलस्ब्धयों िेका समािार रस्तुत चकया और किा : "सिंक्षेप में किें तो वि अनेक कलाओं िेमें
चनपुण िैं। वि आदर्श साधक, आदर्श चर्ष्य तथा रोचगयों िेतथा चनधशनों िेके सच्चे चमत्र िैं। वि एक
दार्शचनक िैं, राजयोगी िैं तथा एक सन्त िैं।" गुरुदेव के समय में आश्रम के रख्यात पुरावृत्त
लेखक स्वामी वेंकटेर्ानन्द जी ने सन् १९५४ में बधाई देते हुए स्वामी चिदानन्द जी को चनम्निंचकत
बी् िेमें सम्बोचधत चकया: "वि देर् धन्य िै चजसने आप जैसे एक मिापुरुष को जन्म चदया। वे
लोग धन्य िैं चजन्िें आपके सत्सिंग का, भले िी एक क्षण के चलए, सुख भोगने का सद्भाग्य राप्त
िै। वि युग धन्य िै चजसमें आपने इस धराधाम पर अवतररत िोने का समय िुना िै।"

स्वामी जी के जीवन का रभामण्डल, मिान् गुरुदेव के रकट रख्यापन तथा अगण्य
मिमााओं िेके साक्ष्य-ये सब दृढ़तापूवशक इस चनष्कषश पर पहुँिाते िैं चक इस पाचथशव जगत् में उनका
वतशमान रवास एक जीवनुमुक्त आिा का िै। उन्िोंने ठीक चकस चदन परम आि-साक्षात्कार राप्त
चकया, यि चवषय चनस्सन्देि सदा एक रिस्य िी बना रिेगा। इस पुस्तक का लेखक इस चवषय की

जानकारी राप्त करने के चलए स्वामी जी के पास गया; चकनुतु स्वामी जी ने स्पष्ट किा : "यि
गुरुदेव तथा मेरे मध्य एक रिस्य िै। मैं इस रिस्योद्घाटन के चलए राचधकृत निी िहाँ।" वास्तव में, जब गुरुदेव चर्वानन्द से इस चवषय का रश्न चकया गया तो उन्िोंने भी इस रकार का उत्तर चदया था और आगे किा था चक इस चवषय में कुछ किने के चलए शुरुचतयो िंने चनषेध चकया िै। स्वामी
चिदानन्द जी के चवषय में तो यि बात चवर्षेकर िै चक उनसे उनकी चकसी भी मिान् उपलस्ब्ध का मित्त्व चदलाना रायः असम्भव िी िै। जब भी उनसे अपना मत रसुतुत करने के चलए आग्रि
चकया जाता िै तो चवषय की चदर्ा मोड कर इसे वि चकसी-न-चकसी की रर्िंसा की भरमार करने
के अवसर के रूप में बदल देते िैं और स्वयिं को कुर्लतापूवशक केन्द्र-चबन्दु से िटा लेते िैं। एक
रादेचर्क चदव्य जीवन समेमेलन में चकसी भक्त ने सचे्चे तथा गम्भीर उत्सुिा से इनसे रश्न चकया, "मैं चकसी साक्षात्कार-राप्त आिा से दीक्षा लेना चािता हाँ। भगवन्! क्ा आप भगवत्साक्षात्कार- राप्त आिा िैं।" स्वामी जी ने उत्तर चदया : "मैं तो गुरुदेव का एक सेवक और भगवान् का एक
अयोग्य दास मात्र हाँ। मुझे मालूम निी िंचक मैं भगवत्साक्षात्कार-राप्त आिा हाँ अथवा निी।िं यि तो
केवल भगवान् िी जानते िैं।" केनोपचनषद् ने यि सुस्पष्ट किा िै चक भगवत्साक्षात्कार-राप्त ऋचष में
चकिंचिन्मात्र भी अचभमान निी िंरिता चक वि घोचषत करे चक उसने भगवान् का साक्षात्कार कर चलया िै। शुरुचतयो कि रकार् में स्वामी जी के उपयुशक्त र्ब् उन्िें न केवल एक उत्कृष्ट आध्यास्त्मक उपलस्ब्धयो िंसे सम्पन्न व्यस्क्त अचपतु एक ऐसा व्यस्क्त भी सूचित करते िैं चजसने भगवान् तथा गुरुदेव के िरणो िं में अपनी आिा-सचित अपना सवशस्व पूणशतया अचपशत कर चदया िै।

स्वामी जी ने उन चदनो िंआश्रम-जीवन से थथायी रूप से अलग िो कर सवशर्स्क्तमान् रभु
के िाथो िंमें सब-कुछ छोड, सब चिन्ताओ िंसे मुक्त िो कर एकान्तवासी का, एक पररव्राजक
सिंन्यासी का जीवन व्यतीत करने का चनश्चय कर चलया था। उनके ये आन्तररक चविार छोटे-बडे
सैकडो िंअवसरो िंपर व्यक्त हुए थे। उन्िोंने परवती काल के अपने एक पत्र में अपनी मनोदर्ा का
वणशन इस रकार चकया : "मेरी समू्पूणश सत्ता एकान्त तथा एकाकी चिन्तन तथा अन्तमुशखी जीवन की
ओर अत्यन्त आकृष्ट थी। सन् ५६ से िी मैं उस मागश की ओर रेररत िोता जा रिा था।" उनके
जीवन का सूक्ष्म चवश्लेषण, उनके व्यस्क्तत्व में कुछ लक्षणो िंका सुस्पष्ट रूप से चवकास उनके
गुरुदेव तथा साथी साधको िंके कथन तथा अनेक भक्तो िंका साक्ष्य-ये सभी इस चनष्कषश पर ले जाते
िैं चक सन् १९५४ में जब उनका उनतालीसवाँ जन्मचदवस मनाया गया, उस समय यि एक पूणश
सुप्रचतष्ठित ज्ञानी, सवोत्कृष्ट आध्यास्त्मक उपलस्ब्धयो िंसे सम्पन्न रबुद्ध आिा थे। अतएव, इसमें कोई
आश्चयश निी िंचक गुरुदेव चर्वानन्द ने स्वयिं घोचषत चकया चक स्वामी चिदानन्द अध्यािा-ज्ञान-ज्योचत
तथा ब्रह्मसूत्र और गीता के मूतशरूप िैं। वि अपने हृदय से उपचनषदो िंकी व्याख्या रसुतुत करते िैं।
उन्िोंने सबको रकट चकया चक 'स्वामी चिदानन्द का वतशमान जीवन उनका अस्न्तम जन्म िै।'
उन्िोंने तो यिाँ तक किा: "मैं भी उन्िें अपने गुरु के रूप में सम्मान देता हाँ।"

सांस्था की सेवा

स्वामी जी ने अपने चर्ष्यत्व की दीघाशवचधभर एक मिान् सूत्र का अनुसरणचकयाै-
"गुरु-वाक् वेद-वाक् िै।" वि सदा िी मिाभाव रचित 'विंर्ी' तथा गुरुदेव 'विंर्ीवादक'रिे।
उनके अपने जीवन में कोई स्पृिा न थी, कोई सिंथथा थथाचपत करने का उनमें सत्सिंकल्पभीन
था। चर्वानन्दाश्रम से उनका सम्बन्ध पूणशतया आध्यास्त्मक था। सिंथथाचनक चवकास कीउनमेंकोई
कामना न थी। यि सब-कुछ भगवचदच्छा थी जो चदव्य जीवन सिंघ का आश्चयशजनक रूपसेबहुमुखी

तथा व्यापक चवकास हुआ। आश्रम की उनकी सेवा अपने गुरु की अिशना मात्र थी। सन् १९४३ में
जब यि आश्रम मैं सस्म्मचलत हुए तो यि उन रचतचष्ठत साधको िमें रमुख अचभनेता थे चजन्ोनिें अपने अथक रयास तथा भारतवषशभर में गुरुदेव के चविारो िके रक्ेषेपण िारा उनकी सिंथथा की ध्वजा को
ऊपर उठाया। स्वयिं गुरुदेव अपने इस नवराप्त चर्ष्य की आश्चयशजनक क्षमता को र्ीघ्र िी जान गये थे। आश्रमवासी भी तत्काल िी पूणश रूप से समझ गये चक स्वामी चिदानन्द जी गुरुदेव की िी रायः
रचतकृचत िैं। पााँचविें दर्क में िी गुरुदेव ने युवक ब्रह्मिारी श्रीधर राव की ओर चनदेर् करते हुए
अपने एक वृद्ध सज्जन भक्त मेजर जेनरल ए. एन. र्माश से किा था, "मेरा उत्तराचधकारी आ
गया िै।" युवक ब्रह्मिारी अपनी ओर से गुरुदेव के आह्वान के रचत पूणशतया रचतचक्रयार्ील थे।
सूक्ष्म चनरीक्षण, आन्तररक चवचनमय तथा बारम्बार के ध्यान ने उन्ें गुरुदेव के चविारो िं तथा आन्तररक आकािंक्षाओ कि रचत आश्चयशजनक रूप से अचतसिंवेदनर्ील तथा जागरूक बना चदया था।
इनकी 'लाइट फाउण्ेटेन' (Light Fountain-आलोक-पुिंज) -अपने गुरुदेव की जीवनी-सम्बन्धी
कृचत चजसका सभी चजज्ञासु पाठक एक अचितीय आध्यास्त्मक रलेख के रूप में सदा परर्ीलन
करेंगे-उस गम्भीर मूल्यािंकन का रोमािंिक साक्ष्य देता िै। यि जीवनिररत-सम्बन्धी रिना पास्ण्डत्यपूणश
ैं तथा र्ैली की राजिंलता, र्ुरुचत-मधुर र्ब्-योजना तथा अपने रचतपाद्य चवषय के गम्भीर ज्ञान के
कारण अपनी चवचर्ष्टता रखती िै। इसके रस्ुतुचतकरण का पूणशतया चवनीत भाव पाठक को इसके
पृष्ठो िमें सदा िी चर्वानन्द के दर्शन कराता िै, लेखक का निी।ि स्वयिं गुरुदेव इस पुस्तक में
अन्तचवशष्ट आध्यास्त्मक उत्साि तथा ज्ञान से इतना अचधक रभाचवत हुए चक उन्ोनिें किा: "चर्वानन्द
मिरयाण कर जायेंगे, चकनु्तु 'लाइट फाउण्ेटेन' (आलोक-पुिंज) चटका रिेगा।" सन् १९४४ में
पुस्तक का उन्मीलन करते समय स्वामी जी ने कृतक नाम 'चरज्म' (Prism क्रकि) के अन्तगशत
कतृशत्व को गुप्त रखना पसन्द चकया। चिदानन्द वास्तव में पचवत्र 'चरज्म' (क्रकि) िैं चजसके
माध्यम से गुरुदेव ने जगत् के चित के चलए अपने बहुमुखी व्यस्क्तत्व को रकट करना पसन्द
चकया।

अतः आश्रम के सभी लोग चिदानन्द को सभी चवषयिों में गुरुदेव का रचतचनचध समझने लग गये। वीसभीचवर्ेषसमारोिोंमेंमुख्यवक्तािोतेथे।आश्रममेंरचतचष्ठतअभ्यागतोंतथा चजज्ञासुओं के समक्ष वि गुरुदेव के आदर्ों के उपयुक्त व्याख्याता थे। वि इस रक्रम में सदा िी नवागत को गम्भीर रिस्य का, ऋचषयों के कुछ गूढ़ ज्ञान का चदग्दर्शन कराते। गुरुदेव ने अपना मत व्यक्त करते हुए किा था चक 'चिदानन्द जी ने अपने सभी भावपूणश रविनों में चकसी बौस्द्धक पद्धचत से मूल-पाठ को िाथ में न ले कर उपचनषद् के गूढ़ ज्ञान को रस्ुतुत चकया िै।' कभी-कभी वि अपने को अरकट रख कर 'चडवाइन लाइफ' माचसक पचत्रका के पृष्ठों को समृद्ध बनाते थे।उनके छद्मनाम'कौचर्क'सेरकाचर्त'स्वामीचर्वानन्दवतशमानपररेक्ष्यमें-एकअध्ययन', 'मिज्जन' जैसे भावोद्दीपक लेख अध्यिा के मौचलक चवषय थे। उन चदनों में चदये गये उनके बोधरद अचधकािंर् भाषणों को स्वामी वेंकटेर्ानन्द जी ने सिंकचलत चकया जो बाद में 'योग पर आरण्य-चवद्यापीठ में भाषण' र्ीषशक से रकाचर्त हुए। स्वयिं गुरुदेव उन भाषणों से इतना अचधक रभाचवत हुए चक इस पुस्तक के रथम सिंस्करण के उपोद्घात में इस रिना का उल्लेख करते हुए चलखा "एक मिान् सन्त तथा आध्यास्त्मक मागशदर्शक स्वामी चिदानन्द के अत्यन्त रेरणारद भाषणों का रोमािंिक ग्रन्। इन भाषणों में जीवन के सभी चवषय समाचवष्ट िैं और मुझे इसमें चकिंचित् भी सन्ेदि निीं िै चक इस ग्रन् का रकार्न िमारे रािीन धमश, सिंस्कृचत तथा जीवनचवधा के पररक्षण के उद्देश्य की पूचतश करेगा।"

स्वामी जी ने योग-वेदान्त-अरण्य-चवश्वचवद्यालय (अब चवद्यापीठ) के माध्यम से, जिााँ गुरुदेव ने इन्ं राजयोग का राध्यापक चनयुक्त चकया था, अपने को अध्यिा-ज्ञान के रसार के चलए,
योगरा्स्त्र के गूढ़ अथश तथा व्याविाररक उपयोग के चलए समचपशत कर चदया। अनेक ज्ञानवृद्ध चर्ष्यों िं
ने इस सिंथथा की सफलता के चलए अपना योगदान चदया, चकनु्तु स्वामी चिदानन्द तथा स्वामी
कृष्णानन्द चवश्वचवद्यालय के मागशदर्शक रकार् थे। चिदानन्द नेी िुतगाचमनी तथा वैभवरा्चलनी गिंगा के बालुकामय तट पर जाने वाली पिाडी की ढाल पर वृक्षीन क्ेषेत्र में स्थथत इस चवश्वचवद्यालय को एक अचितीय आध्यास्कि चर्क्षण-सिंथथान समझते थे। गुरुदेव ने इन्ं राजयोग के राध्यापक िोने के साथ-साथ इसका रथम कुलपचत चनयुक्त चकया। चिदानन्द के पास्ण्डत्यपूणश भाषण सुनने के चलए
छात्रो िंको सदा रतीक्षा नेी िंकरनी िोती थी। चिदानन्द का जीवन िी उनके चलए सवोतूकृष्ट पाठ था।
वसुतुतः योग का एक चविारर्ील छात्र दूर से िी उनके जीवन का अवलोकन करके नैचतक अनुर्ासन, मनोजय तथा अचतैतन्यावथथा की अनुभूचत के चवषय में बहुत अचधक सीख सकता िै।
स्वामी जी सिस्रो िंलोगो िंकी सभा की अध्यक्षता करते समय भी अपने मुखमण्डल से चदव्य आभा
चवचकरण करते हुए रत्यािरण कर रायः गम्भीर ध्यानावथथा में जा पहुाँिते िैं। सचक्रय सेवा में सिंलग्न रिते समय भी वि सदा पर-वैराग्य तथा उग्नामस्क्त में रचतचष्ठत रिते िैं।

राजयोग पर उनके भाषण अपरोक्षानुभूचत पर आधाररत थे और इसचलए अत्यचधक रभावर्ाली
थे। इसी भााँचत वेदान्त के राध्यापक स्वामी कृष्णानन्द अपने छात्रो िंके मस्स्तष्क में उपचनषद् की
चविारधारा उत्पन्न करने वाली एक रभावर्ाली र्स्क्त थे। वि स्वयिं ज्ञानयोग के साधनितुष्टय के
चनदर्शन थे। इन दोनो िंआध्यास्कि धीर पुरुषो िंके चवषय में गुरुदेव ने एक बार किा था, "जरा
उस ज्ञान को देखें चजससे चिदानन्द जी तथा कृष्णानन्द जी सम्पन्न िैं। राजा तथा राष्टरपचत इनके
रिणो िंमें नतमस्तक िोगिें। सिंसार उनकी िरण रज को सम्मान देगा। आप सबको उनकी िरण-रज
लेनी िाचिए और उसे बहुत िी श्रद्धा तथा भस्क्त के साथ अपने मस्तक पर धारण करना िाचिए।
चकतनी अल्पवयस् में उन्ोनिें सिंसार का त्याग चकया िै! उनमें ज्ञान की उत्कण्ठा की गिराई चकतनी
गिी! उनमें वैराग्य की तीव्रता चकतनी िोगी! सिंसारभर के लोग दर्शन तथा योग के मूल चसद्धान्तो िं
को सीखने के चलए चिदानन्द जी तथा कृष्णानन्द जी जैसे व्यस्क्तयो िंके िरणो िंमें पडेंगे। वे सचे्चे
सम्राट् िैं।"

योग के एक अन्य धृचतमान् योगी स्वामी िररर्णानन्द जी अपने वैयस्क्तक उदािरण तथा चनदेर्-दोनो िंिी रकार से भस्क्तयोग की पद्धचत की चर्क्षा देते थे। अचितीय िठयोगी स्वामी चवषु्णुदेवानन्द जी िठयोग का रचर्क्षण देते थे। अन्य अनेक व्यस्क्त थे जो इस काम में सिभागी बने। इनमें स्वामी चिन्मयानन्द जी, स्वामी वेंकटेर्ानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी तथा स्वामी र्ाश्वतानन्द जी उले्लेखनीय िैं। इन सभी लोगो िं ने चवद्यापीठ की अमूल्य सेवाएाँ की।िं स्वामी रिरर्णानन्द जी ने एक बार अतीत के उन सुखमय चदनो िंको स्मरण करते हुए किा था चक सन् १९४५ से १९५७ के बारि वषश चफर कभी नेी िंचदखायी पडेंगे। ये वे मित्त्वपूणश चदन थे जब चर्वानन्दाश्रम का योग-साधना-कुटीर समचपशत साधको िंसे भरपूर था-कमरा निं. १ तथा २ में स्वामी चिदानन्द, कमरा निं. ३ में स्वामी कृष्णानन्द, कमरा निं. ४ में स्वामी िररओमानन्द, कमरा निं. ५ में स्वामी र्ाश्वतानन्द, इसी भााँचत नामो िंकी एक लम्बी सूिी िै। चिदानन्द सन्त-चविानो िंकी इस असाधारण टोली के अग्रणी थे।

उन्ोनिें रारम्भ में पतिंजचल के योगसूत्रो िंका पाठ्यक्रम रसुतुत चकया। उन भाषणो िंमें से कुछ भाषण उनकी पुस्तक 'योग' में समाचवष्ट चकये गये और बाद में समूपूणश रविनो िंमें से अचधकािंर्

'पाथ टू ब्ल्ेलेसेडनेस' (Path To Blessedness - मिान् जीवन की पथ-रदचर्शका) नामक
पुस्तक के रूप में रकाचर्त हुए। उन ब्रह्मिाररयो िंका चनश्चय िी परम सद्भाग्य था चजन्ोंनें उनके रविनो िंको एकान्तर चदवस को ब्राह्ममुहतश-वगश में एक वषश से अचधक समय तक सुना।

कायाशलय, कक्षा तथा पडोस के सब कायश जैसे चक उनके चलए पयाशप्त न िो,िं उनके कन्धो िं पर और अचधक कतशव्यो िंका ढेर लगा चदया गया। एक चदन राचत्र को लगभग १० बजे सिंयोग से जब वि गिंगा के तट पर इधर-उधर घूम रिे थे, उन्ोंनें गुरुदेव को अपने कुटीर से बािर आते देखा। गुरुदेव नारायण स्वामी जी के पास गये जो उस समय कुछ वस्त्र धो रिे थे। उन्ोंनें किा- "िम केवल एक िी माचसक पचत्रका रकाचर्त करते िैं। एक साप्ताचिक अथवा एक दैचनक पचत्रका भी आरम्भ करें।" कोषाध्यक्ष स्वामी जी ने किा: "डाक-र्ुल्क पर बहुत अचधक व्यय पडेगा।" गुरुदेव का सरल-सा उत्तर था : "भगवान देंगे। इसे अभी आरम्भ करें।" ऐसा कि कर उन्ोंनें चिदानन्द जी तथा अन्य स.धो िंको अकमशण्य साधको िंपर आरु तथा तात्क्षचणक चक्रया करने वाले दैचनक, साप्ताचिक तथा माचसक अन्तःक्षेप चर्वानन्द- रयोगर्ाला में तैयार करने के कायश में लग जाने का आदेर् चदया। इस भााँचत एक दैचनक पचत्रका (बुलेचटन) रारम्भ की गयी जो अनुचलचपत्र (डूयूस्प्लकेटर) में मुचित िोती थी। 'ज्ञानसूयश-माला', 'केन-माला', 'योग-वेदान्त फारेस्ट यूनीवचसशटी', 'चवज़डम लाइट', 'िेल्थ एण्ड लााँग लाइफ', 'ब्रिंिगजट', 'चडवाइन लाइफ', 'योग-वेदान्त' तथा 'आरोग्य जीवन' नामक पचत्रका-समूि अरण्य चवश्वचवद्यालय की चनिाई से रकट िोने वाले आध्यास्त्मक सुफुचलिंग थे।

स्वामी चिदानन्द जी इन सभी नानाचवध कार्यों के मध्य में भी सनातन सत्यो िंमें नूतनता लाने तथा उन्ें अनूठे तथा रोचक रूपो िंमें रक्षेचपत करने को सदा उतुसुक रिते थे चजससे चक साधारण लोग समिय-योग के मागश की ओर आकृष्ट िो सकें। उदािरणाथश, उन्ोंनें एक आध्यास्त्मक सिंग्रिालय थथाचपत करने का चविार व्यक्त चकया चजससे चक योग के सवाशचधक मित्त्वपूणश चवषयो िंको चवचवध रतीको,िं पुस्तको िंतथा चित्रो िंिारा रोचक ढिंग से रक्षेचपत चकया जाय और उन्ें रचर्क्षत पथ-रदर्शक चजज्ञासु अभ्यागतो िंको मिाकक्ष में चदखलाये। वि िािते थे चक सिंग्रिालय का चनरीक्षण साधना का एक सिंचक्षप्त पाठ्यक्रम बन सके। योग से अपररचित लोगो िंके लाभाथश सिंग्रिालय को आकार देने के चलए स्वामी जी ने स्वयिं सोत्साि आवश्यक सामग्री सिंग्रि की तथा उसे सुरुचिपूणश ढिंग से सजाया। इसमें राजयोग, िठयोग, कुण्डचलनीयोग, जपयोग तथा लययोग के जचटल पाठो िं को चित्रात्मक रचतरूपो िंकी सिायता से स्पष्ट चकया गया था। इस भााँचत सन् १९४७ में योग-सिंग्रिालय का जन्म हुआ। यि चवचर्ष्ट आध्यास्त्मक भोजन रथम भजन िाल में सााँजोया गया और बाद में एक अन्य मिाकक्ष में थथानान्तररत कर चदया गया जो योग-सिंग्रिालय-मिाकक्ष के नाम से चवख्यात हुआ। यि चर्क्षा के साथ-साथ आनन्द का स्रोत था।

सन् १९४७ के चदसम्बर मिा में स्वामी जी मलेररया से बीमार िो गये। गुरुदेव ने इन्ें स्वामी चवशे्वेश्वरानन्द जी के साथ एक धमशचनष्ठ चिचकत्सक श्री बी. ए. वैद्य की देख-रेख में पूणश उपिार तथा चवश्राम के चलए नागपुर भेज चदया। उनका धनतोन्री में अपना चिचकत्सालय था तथा वि नागपुर के मेयो चिचकत्सालय में एक अवैतचनक चिचकत्सक थे। स्वामी जी ने यिी िंपर चिचकत्सालय के रेचडयो में गान्धी जी की ित्या का उिेगकारी समािार सुना । यद्यचप वि विााँ एक रोगी थे, तथाचप उनसे उस मिान् आत्मा के चनधन पर एक राथशना-सभा का सिंिालन करने तथा अपनी सिंवेदना रकट करने के चलए अनुरोध चकया गया।

स्वामी जी स्वास्थ्य-लाभ के पश्चात् आश्रम वापस आ गये। उस समय स्वामी चनजबोध जी, जो सन् १९४४ से चदव्य जीवन सिंघ के मिासचिव रिे थे, इस बोचझल कायश से अवकार् ग्रिण करना िािते थे। गुरुदेव ने अब चिदानन्द से इस पद का भार लेने के चलए किा चजसे स्वामी जी
को पन्दरि वषश की दीघाशवचध, १९६३ तक साँभालना पडा।

जो भी िो, स्वामी जी साधको िंकी अथक टोली के अनचभचषक्त अग्रणी थे िी। अब गुरुदेव ने इसको चवचधवत् मान्यता दे दी। चकन्तु इस मान्यता का अथश इनके दैचनक कतशव्यो िंमें और अचधक वृस्द्ध भी थी। इनका मानचसक सन्तुलन चनश्चय िी चवलक्षण था। तभी वि इतने अचधक वषों तक रचतचदन इतने अचधक कायों की ओर ध्यान दे सके। यद्यचप वि एक अन्ताराष्टरीय सिंथथा के मिासचिव के रचतचष्ठत पद पर थे, चकन्तु वि कभी भी क्षणमात्र को न तो उल्लचसत हुए और न दूसरो िंके कायश में िस्तक्षेप िी चकये। वि जो वस्त्र धारण करते थे वि घुटनो िंसे नीि तक नीि िं पहुाँिता था। गुरुदेव ने एक बार चवनोद में इनसे किा : "ओ जी! आप चदव्य जीवन सिंघ के मिासचिव िैं। आप सुन्दर लम्बे वस्त्र क्यो िंनिी िंधारण करते?" स्वामी जी ने चवनम्रतापूवशक उत्तर चदया चक पिाचडयो िंपर िपल गचत से िलने के चलए मैं छोटी तौचलयो िंको पिनना अचधक पसन्द करता हाँ। वस्तुतः स्वामी जी अपने स्वास्थ्य की सवशथा उपेक्षा कर कायश-बाहुल्य में इतना तल्लीन रिते थे चक ऐसे व्यस्त समयो िंमें गुरुदेव सूिना लगवा चदया करते थे : "रत्येक दर्शक स्वामी चिदानन्द से रातः ९ तथा १० बजे के मध्य केवल पााँि चमनट तक चमल सकता िै।"

उनतालीसवााँ जन्मडदवस

गुरुदेव अपने परम चरय चर्ष्य का जन्मचदवस रचतवषश मनाना आरम्भ कर चदये; चकन्तु वि स्वामी जी के वास्तचवक जन्मचदवस २४ चसतम्बर को न मना कर २४ जून को मनाते थे। क्योंचक आश्रमवासी उनका जन्मचदवस रचतवषश ८ चसतम्बर को मनाते थे, अतः उसके कुछ िी चदनो िंपश्चात् चिदानन्द का जन्मचदवस मना कर वि उसके मित्त्व को कम निी िंकरना िािते थे। अतएव उन्ोनिें अनेक वषों तक चिदानन्द जयन्ती जून मिा में मनायी। गुरुदेव के आदेर् से स्वामी चिदानन्द का उनतालीसवााँ जन्मचदवस चवर्ेष रूप से भव्य उत्सवोचित आमोद-रमोद तथा अत्यचधक गौरवपूवशक मनाया गया। इस अवसर पर गुरुदेव ने घोषणा की : "स्वामी चिदानन्द जी का जन्म-चदवस मनाना वास्तव में भगवदाराधन िै।" उन्ोनिें स्वामी जी के पराचवद्या के ज्ञान की उपलस्ब्ध को मान्यता दी तथा उन्ें 'अध्यिा-ज्ञान-ज्योचत' की पचवत्र उपाचध से सम्माचनत चकया। भक्तो िंतथा चजज्ञासुओ िंने स्वामी जी का मूचतशमान् भगवान् के रूप में अचभनन्दन चकया। अपने अचभनन्दन के उत्तर में उन्ोनिें किा चक वि उनकी सभी सकामनाओ िंतथा चविारो िंको चवनम्रतापूवशक स्वीकार करते िैं। उसके पश्चात् उन्ोनिें इस बात पर बल चदया चक यि सब गुरु-कृपा िी िै। उन्ोनिें अपनी तुलना एक मूचतशकला-कृचत से की और किा चक यचद मूचतश में किी िंपर कुछ भी सौन्दयश िै तो उसका श्रेय मूचतशकार को िी जाना िाचिए। उन्ोनिें उपसिंिार करते हुए किा : "स्वामी चिदानन्द के चदव्य यिकार स्वामी चर्वानन्द िैं।" यि जानना रोिक िोगा चक इस पचवत्र अवसर पर स्वामी चिदानन्द के गुरुभाइयो िंने रेम तथा श्रद्धापूवशक उनके िरणो िंका दुग्ध तथा गिंगाजल से अचभषेक कर, पुष्प अपशण कर कपूशर से नीराजन कर उनकी पादपूजा की मानो चक वे गुरुदेव के िी पावन िरण िो।िं

एकान्तजीवन

इसके बाद से चिदानन्द पूणश एकान्त तथा एकमात्र ध्यान का जीवन-यापन करने को लालाचयत रिते थे। गुरुदेव उनकी मनोदर्ा को समझ गये तथा उन्ोंनें उनें् बदरीनारायण के चवचवक्त थथान में जाने के चलए परामर्श चदया चजससे वि विाँ चबना चकसी भी चित्तचवक्ेषेप के सवोच्च कोचट की साधना िालू रख सकें। इस भाँचत स्वामी जी ने अकूतूबर १९५६ के रारम्भ के दर् चदनो ि तक बदरीनाथ धाम के परम पचवत्र थथान में रगाढ़ ध्यान में अपने को सिंलग्न रखा। ऐसा कि जाता ैं चिक इस थथान में नर-नारायण चिरन्तन तप कर रिे ैं। उन्ोंनें अपनी तपश्चयाश को समूपूणश मानव-जाचत के कल्याण के चलए समचपशत कर चदया।

एकान्त तथा आभ्यन्तर ध्यान की अल्पावचध के बाद िी सचक्रय सेवा की अवचध आयी। स्वामी जी गुरुदेव की आज्ञा के पालनाथश चिमालय के चर्खर से त्वररत गचत से निी आ गये। गुरुदेव ने कोलकाता में १९ अकूतूबर से २२ अकूतूबर तक के चलए चनयत 'आठवें अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मेलन' की अध्यक्षता करने के चलए उनें् रचतचनयुक्त करने का चनश्चय चकया था। निी आते समय मागश में उनें् मूसलाधार वषाश का सामना करना पडा। पुल टूट गये थे तथा सडकें सिंकटपूणश थी।ि रत्येक रचतकूलता तथा असुचवधा का सामना करते हुए तथा वषाश-जल से पूणशतया सराबोर उन्ोंनें अपनी स्थथर गचत को बनाये रखा और गुरुदेव के पास ठीक उस चदन वापस आ गये चजस चदन के चलए उन्ोंनें गुरुदेव को विन चदया था।'[6]

स्वामी जी समे्मेलन की, चजसका चवचधवत् उद्घाटन डा. काचलदास ने चकया था, अध्यक्षता करने के चलए ठीक समय से कोलकाता पहुाँ गये। िाल में राप्त अपने आध्यास्कि ओज की पूणश स्क्त का रयोग करके उन्ोंनें जनसमिू पर अचमट रभाव छोडा। स्वामी जी ने पाटन में 'नवें अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मेलन' की अध्यक्षता करने के चलए गुजरात को रथथान चकया। कोलकाता की भाँचत यिाँ भी उन्ोंनें अपनी असाधारण सौजन्यता तथा आध्यास्कि स्क्त से श्रोताओ ि को अचभभूत कर चलया।

इस अल्पकाचलक सूफूचतशकारी तथा सचक्रय सेवा के अनन्तर स्वामी जी की आन्तर सत्ता एक बार पुनः मौन तथा एकान्तवास की ओर रभावर्ाली रूप से आकृष्ट हुई। उन्ोंनें गुरुदेव से चिमालय में चकसी उतुतुिंग चनजशन रै्ल पर िले जाने तथा रभु के साथ आनन्दमय अवथथा में पूणशत: चनमग्न रिने की अनुमचत माँगी, चकनुतु वि आश्रम के अत्यावश्यक कायों से अपने को मुक्त न कर सके और दीघशकाचलक तपश्चयाश की योजना ले कर बदरीनाथ धाम की चितीय यात्रा सन् १९५८ के ग्रीष्मकाल में िी कर पाये। इस बार वि पैदल गये और पिाचडयो िपर अत्यचधक र्ारीररक आयास से आरोिण चकया। राचत्र को वि मेषपालो िकी झोपचडयो िमें आश्रय लेते तथा भेडो िसे पररवृत्त उनके पुआल-चनचमशत चबछौनो िपर र्यन चकया करते थे। यात्रा की इन समस्त कचठनाइयो िके मध्य भी उन्ोंनें असाधारण र्ास्न्त तथा आनन्द का बोध अनुभव चकया। मागश में वि एक थथान पर एक चर्वालय में रुके जिाँ चर्वचलिंग चिम से आच्छाचदत था। उस रर्ान्त तथा चवरल चर्खर पर रभु के अचतररक्त अन्य कोई न था। वि उस एकान्त के परमानन्द में अपने को चजज्ञासु के रचत उद्घाचटत कर रिे थे। स्वामी चववेकानन्द ने भी अमरनाथ में अपने पररव्राजक-काल में इसी रकार की अनुभूचत की थी। बदरीनाथ पहुाँ कर उन्ोंनें अलकनन्दा में स्नान चकया तथा सुदीघशकाल तक आनन्दमय अवथथा में अपने को योग में दृढ़तापूवशक स्थथत रखा।

---

[6] इसी यात्रा में स्वामीजी सवोदय के रख्यात नेता श्री जयरकार्नारायणसे चमले थे। वि भी बदरी-धाम की अपने निी के यात्रा-काल में इसी रकार की कचठनाई झेल रिे थे।

पडिमी गोलाधपमें

यि पुनः भगवचदच्छा िी जो लोकसिंग्रिाथश उन्ें निी लायी जब चक वि चनचवशकल्प-समाचध में
थथायी रूप से रवेर् कर जाने तथा अपने भौचतक रीर को त्याग देने के चलए उत्कस्ण्ठत थे। गुरुदेव चवानन्द के सत्सिंकल्प के माध्यम से अचभव्यक्त भगवचदच्छा मानव-जाचत के आध्यास्कि उत्थान के चलए उन्ें पाचथशव धरातल पर निी लायी। स्वामी जी भगवान् के आदेर् के पालनाथश चदसम्बर १९५८ में चिमालय की चवरल ऊँचाई से निी उतरे तथा गुरुदेव से चमले। गुरुदेव उन्ें
चवरल चदव्य रभा से दीस्प्तमान देख कर अत्यचधक रसन्न हुए। उनकी इच्छा थी चक ऐसी देदीप्यमान
आिा पाश्चात्य जगत् के साधको िंको रबुद्ध करने के चलए उनके धमशदूत के रूप में आगे जाये जब
चक स्वामी जी एक बार पुनः आन्तर ध्यान में चनमग्न िोने के चलए उत्तरकारी् जाने को लालाचयत िो
रिे थे, परन्तु अमरीका के भक्तो िंके साग्रि अनुरोध पर गुरुदेव ने स्वामी जी को नयी दुचनया
(अमरीका) के लोगो िंके चलए योग तथा वेदान्त का सन्देर् ले कर विाँ जाने के चलए किा। और
इस भाँचत अपने गुरुदेव की इच्छाओ िं के पालन के चलए उन्ोिंने चिमालय के रर्ान्त तथा रुद्ध चनवास थथान से अमरीका के िलिलपूणश, अर्ान्त राजधानीय नगरो िंकी ओर रथथान चकया। पाश्चात्य
गोलाधश में स्वामी जी की यात्राएँ मध्य यूरोप से इिंग्लैंड तक, उत्तरी अमरीका से दचक्षणी अमरीका
तक चवसृतृत थी।िं जिाँ-किी िंभी वि गये, उनका आगमन एक बहुत िी अचितीय तथा मिांगचलक घटना के रूप में घोचषत चकया गया। उन्ोिंने नवम्बर १९५९ से चदसम्बर १९६१ तक पाश्चात्य गोलाधश की यात्रा की तथा अपने चजज्ञासु श्रोताओ िंके चित्त पर गम्भीर रभाव छोडा। अमरीकावाचसयो िंने भारत से आने वाले सवाशचधक उन्नत योगी, बौस्द्धक तथा आध्यास्कि उपलस्ब्धयो िंसे अत्यचधक सम्पन्न
तथा पाश्चात्य मस्स्तष्क का वास्तव में गम्भीर रूपान्तरण सम्पन्न करने में सक्षम व्यस्क्त के रूप में
उनका स्वागत चकया। चजन अगचणत घरो,िं सिंथथाओ िंतथा नगरो िंमें वि गये, विाँ उन्ोिंने चदव्य
जीवन का सन्देर् पहुँचाया तथा रुरू से अन्त तक भारतीय सिंन्यासी की वृचत्त को रयत्नपूवशक बनाये
रखा। चजसे भौचतकवादी पचश्चम के अनेक थथानो िंकी आध्यास्कि चवजय किा जा सकता िै, उसे
राप्त कर वि जनवरी १९६२ में अपूवश सफलता के साथ भारत वापस आये और गुरुदेव को अपनी
श्रद्धािंजचल अचपशत करने तुरन्त िी वेगपूवशत िल पडे।

अल्पकाडलक अज्ञात सांचार

स्वामी जी को दो वषश तक पाश्चात्य जगत् के कायश-समाकुल वातावरण में, पूणश चवकचसत
कटु रूप की राजचसक गचतर्ीलता में रिना पडा था। उनके िी बर्ो िंमें: "भीडभाड, कोलािल
तथा बैिनी में रिने तथा लगातार वाताशलाप करते रिने के पश्चात् मैं यिाँ र्ास्न्त की लालसा से
आया।" नयी दुचनया अमरीका से वापस आने के तुरन्त बाद िी उन्ोिंने अपने अन्तर में वन तथा
अरण्यो िंके आह्वान की, आन्तररक नीरवता तथा चवश्रास्न्त की लालसा की तीव्र वाणी सुनी। अतएव
उन्ोिंने आश्रम-जीवन से दूर रि कर एकाकी पररवाज्रक-जीवन-यापन करने की अनुमचत रदान
करने के चलए गुरुदेव से उत्कट अनुरोध चकया। वि एकमात्र पूणश एकान्तवास के चलए लालाचयत थे।
वि चकसी अज्ञात थथान में भगवान् में तल्लीन रि कर पूणशतः अपररचित रूप से अपना नश्वर रीर
त्याग देना िािते थे। अपनी अनुमचत देना गुरुदेव के चलए सिज न था। यद्यचप गुरुदेव अपने चरय
चर्ष्य को पचश्चम में दो वषश की दीघाशवचध तक अचवरत तथा क्लास्न्तकर यात्रा के बाद इतना र्ीघ्र
पररव्राजक का क्लेर्कर जीवन अपनाने की अनुमचत देना निी िंिािते थे तथाचप स्वामी जी का

अनुरोध इतना गम्भीर तथा अवधूत-जीवन के चलए उनका वतशमान राग इतना रबल था चक उन्ोनिें उसे अस्वीकार करना निी ििााा।

स्वामी जी ने अरैल १९६२ में दचक्षण भारत की तीथशयात्रा के चलए आश्रम से रथथान चकया। उन्ोनिें स्वयिं बतलाया था चक इस यात्रा का उदेदेश्य अपने सूक्ष्म मन पर पडे हुए पाश्चात्य रिंग से राँगे वातावरण के यस्त्किंचित् रभाव का रक्षालन करना था। वि चनस्सन्ेदि सवशधा पचवत्र तथा चनष्कलिंक थे, चकनुतु जैसा चक वि पिले बल दे कर किा करते थे चक आन्तर रिौ की कोई सीमा रेखा निी ििै। भौचतकता-रधान वातावरण वाले पाश्चात्य देरो िमें दीघाशवचध तक चनवास करने के पश्चात् उनके अनजाने में उनके मस्स्तष्क को जो रजोगुण के कण मात्र ने भी आक्रान्त चकया िो, उससे उसे रुद्ध करने के चलए उन्ोनिें स्ेवेच्छा से तप की इस अवचध को झेला। उन्ोनिें उच्चतर मयाशदा के अनुपालन तथा मन की आितुचष्ट के चवरुद्ध सतकशता के रूप में कचठनाइयो िंका जीवन वरण चकया और अपने को तप की अचग्न परीक्षा में डाला। यिााँ वि स्वामी कृष्णानन्द के बिो िमें "पचवत्र भारतवषश की आदर्श सिंन्यासी-परम्परा में एक ििंसिंर्ज के रूप में उभर कर बािर आये।"

स्वामी जी ने सभी लोगो िंसे दूर रिने तथा चबना चकसी की जानकारी के रच्छन्न रूप में देवालयो िंसे चवचवक्त थथानो िमें चविरण करने का चनश्चय कर चलया था, चकनुतु ठीक उसी समय डा. बी. जी. अध्वयुश ने साग्रि अनुरोध चकया चक वि चदव्य जीवन सिंघ की राजकोट राखा में उनकी व्यवथथा में भगवद्गीता पर श्ेरेणीबद्ध रविन करने की कृपा करें। स्वामी जी ने इस अचभजात आिा का अनुरोध कभी भी अस्वीकार निी िंचकया था। उन्ोनिें गुरुदेव को चलखे हुए अपने अनुरोध पत्र को चदखाया। गुरुदेव ने भी अपनी ओर से आग्रि चकया चक वि डा. अध्वयुश को चनरार् न करें। इन पररस्स्थचतयो िमें अपनी योजना के अनुसार अज्ञात सिंसार में छलााँग न लगा कर उन्ोनिें गुजरात की ओर रथथान चकया। गुजरात के तीन सप्तािा के अपने आवास-काल में उन्ोनिें राजकोट तथा वीरनगर में श्ेरेणीबद्ध भाषण चदया। अपने एक पुराने वायदे को पूरा करने के चलए वि वीरनगर से मुम्बई गये। जब वि कैलीफोचनशया में थे तब उन्ोनिें मुम्बई के एक उत्कट भक्त को एक बार उसके यिााँ ठिरने का विन चदया था। उस पुराने वायदे के अनुसार वि उस भक्त के पास दो-तीन चदन ठिरे।

तदनन्तर वि 'गेट वे आफ इस्ण्डया' (भारत का रवेर्-द्वार) से एक एकाकी तीथशयात्री के रूप में चनकल पडे। अब वि एक सवशथा अपररचित पररव्राजक सिंन्यासी थे। आश्रम में कोई भी व्यस्क्त यि निी िंजानता था चक वि किााँ गये। देर् के चकसी भक्त को उनके पते-चठकाने के चवषय में कोई जानकारी न थी। स्वचगशक आनन्द से देदीप्यमान तथा सदा चदव्य िेतना में चनमस्ज्जत वि पुण्यमयी भारत भूचम में स्वच्छन्द तथा अकुषुब्ध भ्रमण करते थे। जो कुछ भी दैचनक चभक्षा के रूप में राप्त िो जाता, उससे िी सनुतुष्ट रि कर वि परम सादगी तथा स्ैवैस्च्छक कचठनाई का जीवन-यापन करते तथा िािो िल रि िो िंअथवा चवश्राम कर रि िो,िं सदा अन्तरथथ आनन्द की अवथथा में सिंस्थथत रिते थे। यचद स्वामी जी ने स्वयिं कृपा न की िोती तो कदाचित् उनका अज्ञात सिंसार सवशथा अज्ञात िी रि जाता। लेखक के इस चवनम्र राथशनामय आग्रि पर चक उनके यात्रा-वृत्तान्त की जानकारी पररव्राजक जीवन के अचभलाषी सभी चजज्ञासुओ िंके चलए लाभकारी िोगी, उन्ोनिें लेखक को अपनी यात्रा के रमुख भाग को कृपापूवशक सिंक्ेषेप में बतलाया। चनस्सन्ेदि उस भाग्य-चनणाशयक वषश में स्वामी जी के सभी अनुभवो िंके सम्बन्ध में चवस्तारपूवशक जानना अथवा वणशन करना सम्भव न िोगा। उसका केवल थथूल सामान्य चित्र िी अिंचकत चकया जा सकता िै।

स्वामी जी ने सवशरथम कुछ चदन मिाराष्टर राज्य में व्यतीत चकये और तत्पश्चात् वि बेंगुलूरु गये। कणाशटक राज्य में वि पचवत्र मस्न्दरो िंमें गये तथा विााँ उन्ोनिें उन पचवत्र थथानो िंमें ओिशवतार के रूप में रकट सवशर्स्क्तमान् रभु से राथशनाएाँ की।िं मैसूर तथा मरकारा से िो कर उन्ोनिें भगवती मााँ िामुण्डेश्वरी को अपनी श्रद्धांजचल अचपशत की और तब वि अपने चरय गुरुभाई स्वामी कृष्णानन्द के जन्म-थथान पुतूतूर पहुाँिे। तत्पश्चात् वि अपने जन्म-थथान मिंगुलूरु सम्भवतः माता सरोचजनी की पावन सूमृचत में श्रद्धांजचल अचपशत करने गये। तत्पश्चात् उन्ोनिें वेदान्त-दर्शन के िैतवाद के रचतपादक मध्वािायश के जन्म-थथान मिाचवष्णु-क्ेषेत्र उचडपी को थथानान्तर चकया। उचडपी पुरन्दरदास के जन्म-थथान के रूप में भी रख्यात िै। पुरन्दरदास रचसद्ध दास-परम्परा के रवतशक थे चजसमें जीविा परमिाा का चनत्य दास माना जाता िै। भगवान् कृष्ण को अपनी राथशना चनवेदन कर तथा मध्वािायश और भक्त पुरन्दरदास के पुण्यकायों को स्मरण कर उन्ें यिााँ आनन्दमय अनुभव हुआ। उचडपी से वि रख्यात देवीक्ेषेत्र कोलूलूर गये विााँ भगवती लक्ष्मी माता की मूकास्म्बका के रूप में पूजा की जाती िै। कल्याणी मााँ अन्नपूणेश्वरी मूक भक्तो िंतक की कामना पूणश करने के चलए रख्यात िैं और इस स्थथचत में वि मूकास्म्बका नाम से ज्ञात िैं। स्वामी जी मानव-जाचत के सभी अभावग्रस्तो,िं रोचगयो िंतथा पररत्यक्त लोगो िंकी समृस्द्ध तथा उत्थान िेतु राथशना करने के चलए यिााँ कुछ समय रुके और तत्पश्चात् कािंजनगढ़ की ओर आगे बढ़े। यिााँ आनन्दाश्रम में उन्ोनिें अपने चरय पापा परम पावन श्री स्वामी रामदास के पावन िरणो िंमें श्रद्धामय रणाम चकया चजनकी पुस्तक 'भगवान् की खोज में' ने उनमें जीवन के उषाकाल से िी आध्यास्मिकता का बीज वपन चकया था। उन्ोनिें विााँ श्रदे्धेय पापा की रमुख चष्र्या मिाभाग माता कृष्णाबाई के भी दर्शन चकये। कािंजनगढ़ से वि कणूणूर गये और तत्पश्चात् एक बार पुनः उचडपी वापस आ गये। सिंयोगवर् एक साधु ने उन्ें टििान चलया और उन्ें अपने आश्रम में आने के चलए चववर् चकया। स्वामी जी विााँ से िेन्नै गये और चफर विााँ से भगवान् वेंकटेश्वर के पचवत्र धाम चतरुपचत गये। भगवान् चतरुपचत बाला जी को राथशना चनवेदन कर उन्ोनिें श्री रमण मिचषश की तपोभूचम अरुणािलम् की यात्रा की। यिााँ स्वामी जी ने भगवान् रमण को उनके पचवत्र समाचध-मस्न्दर में अपनी श्रद्धांजचल अचपशत की तथा कुछ समय के चलए आन्तर नीरवता में रवेर् कर गये।

स्वामी जी की पचवत्र तीथशयात्रा का एक अन्य मित्त्वपूणश पक्ष भी था। उन्ोनिें अपने पररव्राजक जीवन-काल में चनधशनो िंतथा रोचगयो िंकी सिायता करने का कोई भी अवसर अपने िाथ से जाने निी िंचदया। बस से यात्रा करते समय उन्ोनिें चतरुकोयलूर के चनकट एक वृद्धा मचिला को देखा जो चनस्सिाय तथा अन्धी थी। वि तुरन्त बस से निी उतर आये तथा उन्ोनिें उसकी कचठनाई के सम्बन्ध में उससे पूछताछ की। वि एक रोमन कैथोचलक पुजारी तथा पुचलस के कुछ कमशिाररयो िं से चमले और उस थथान से जाने से पूवश उस बेिारी मचिला के चलए आवश्यक सिायता का चनचश्चत रबन्ध कर चदया।7 वि जब इस रकार सेवा कायों में सिंलग्न िोते तो चकसी भी व्यस्क्त के चलए यि अनुमान करना कचठन िोता चक वि चिमालय के एक पररव्राजक स्वामी िैं। अनुकम्पा के इस रकार के कायश उनके व्यस्क्तत्व के सद्गुणो िंका एक सवाशचधक देदीप्यमान चिह्न रिा िै। िािे वि नयी दुचनया अमरीका में िो िंअथवा चर्वानन्दाश्रम के काम में सिंलग्न िो,िं अथवा दूर दचक्षण में एकाकी तीथशयात्री के रूप में अज्ञात रूप से भ्रमण कर रिे िो,िं उन्ोनिें चनधशनो िंतथा रोचगयो िंमें अन्तस्थथत स्थथत भगवान् की सेवा करने के चकसी भी अवसर की उपेक्षा निी िंकी।

---

7 इसमें कोई सने्दि निी िंचक यात्राकाल में दयालुता के इस रकार के कायश असिंखे्येय िोगें, चकनु्तुउनकायों की जानकारी एकत्र करना असम्भव िी िै। इसका एकमात्र कारण यि िै चक अज्ञात सिंरि िोनेके कारणवे घटनाएाँ मुस्लि से िी चकसी अन्य को ज्ञात िोगिी। इस छोटी-सी घटना की जानकारी भी केवलइसचलए राप्त िो सकी चक सिंयोगवर् श्री राघवेन्द्र राव इससे अवगत थे।

अब िम तीथशयात्रा के वृत्तान्त पर वापस आते िैं। स्वामी जी अब चितूतूर चजले के चतरुत्तचण थथान पर रख्यात सुब्रह्मण्य-क्षेत्र गये जो काचतशकेय की पूजा से सम्बस्न्धत छि धाचमशक मिाकेन्द्रो िंमें से एक िै। यिााँ उन्ोंनें रमणीय पिाडी के चनभृत थथान में भगवान् काचतशकेय को अपनी राथशना चनवेचदत कर चिदम्बरम् की यात्रा की जो िेन्नै से एक सौ पिास मील तथा दचक्षण आरकाट चजले के समुितट से सात मील दूर िै। चिदम्बरम् में भगवान् नटराज की पूजा करने के पश्चात् उन्ोंनें श्री मुर्नम् में वरि अवतार के दुलशभ मस्न्दर का दर्शन चकया। तत्पश्चात् उन्ोंनें कुम्भकोणम् की यात्रा की जो अपने बहुसिंख्यक रिीन मस्न्दरो िंके चलए रख्यात िै। यि दचक्षणी रेलवे के मुख्य रेल मागश पर एक रेलवे स्ेटर्न िै तथा तिंजावूरु चजले में कावेरी नदी के तट पर स्थथत िै। कुम्भकोणम् में उन्ोंनें सारिंगपाचण-मस्न्दर, रामस्वामी-मस्न्दर तथा कुम्भेश्वर मस्न्दर में भगवान् की पूजा की। वि कुम्भकोणम् के चनकट स्वामीमलय में स्वामीनाथ के नाम से अचभचित भगवान् काचतशकेय को समचपशत रख्यात मस्न्दर में भी गये। मवूर में आर. एस. मर्णश नामक एक उत्कट तचमल भक्त िारा कोलकाता के चनकट दचक्षणेश्वर की भवताररणी देवी के मस्न्दर के नमूने पर चनचमशत एक चवर्ेष असावशजचनक मस्न्दर में काली देवी के दर्शन कर वि सुखी हुए। तत्पश्चात् स्वामी जी वडलूर गये जिााँ वि सन्त रामचलिंग स्वामी के रचसद्ध समाचध-मस्न्दर में राथशना तथा ध्यान में लीन िो दीघश काल कर बैठे रिे।8

वडलूर से वि िेंगलपट के कािंजीवरम् (कािंिी) गये। विााँ उन्ोंनें भगवान् वरदराज को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत की तथा श्री र्िंकरािायश का रचसद्ध मठ भी देखा। तत्पश्चात् िेन्नै तथा कोयम्बतूर में अल्पकाचलक आवास के अनन्तर वि पलचन के उन्नत पवशत पर स्थथत अतीव रख्यात काचतशकेय क्षेत्र गये तथा विााँ पर उन्ोंनें दण्डपाचण के नाम से रचसद्ध भगवान् काचतशकेय को अपनी राथशना चनवेदन की। यिााँ भगवान् दण्डपाचण स्कन्दयो िंसे चवयुक्त अपने िाथ में र्ूल धारण चकये हुए अकेले खडे िैं। स्वामी जी ने पलचन से बस िारा मदुरै की यात्रा की जिााँ उन्ोंनें भगवती मााँ मीनाक्षी देवी की पूजा की। तदनन्तर वि पत्तमडै गये जिााँ की पचवत्र भूचम में गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज अवतररत हुए थे। स्वामी जी विााँ श्रद्धापूवशक बैठ गये तथा गम्भीर ध्यान में उन्ोंनें मिान् गुरुदेव को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत की। विााँ िी उनको यि सत्सिंकल्प हुआ चक श्री गुरुदेव की सूमृचत को उनके जन्म-थथान में थथायी बनाने के चलए कुछ करना िाचिए। एक समय आया जब उनके सत्सिंकल्प ने मूतश रूप चलया और आज इस जगद्गुरु के आगमन का स्मरणोत्सव मनाने के चलए विााँ एक मस्न्दर अवस्थथत िै।'[9]

स्वामी जी पत्तमडै से तेनकार्ी गये और विााँ जलरपात की मनोरम भूचम में आिचवसूमृत िो गये। तत्पश्चात् वि स्वामी चववेकानन्द के नाम पर चवश्रुत कन्याकुमारी गये जिााँ उन्ोंनें स्वामी चववेकानन्द के रेरणादायी जीवन तथा सन्देर् के चिन्तन में कुछ समय व्यतीत चकया। स्वामी

---

[8] वडलूर के मिान् सन्त का चतरोधान सन् १८७४ में हुआ, चकनुतु अपनी दिे के बन्धनो िंसे मुक्त अवथथा में भी वि अभी तक भगवत्कृपा की ज्योचत चवकीणश करते रिते िैं। उनकी मिासमाचध िमत्काररक ढिंग से हुई। उन्ोंनें एक कमरे में रवेर् भर चकया और सभी एकचत्रत लोगो िंको मिान् आश्चयश में डाल विााँ से वि सिज िी अदृश्य िो गये।

[9] जब स्वामी जी ने चदव्य जीवन सिंघ के अध्यक्ष के रूप में गुरुदेव का थथान चलया तो उन्ोंनें पत्तमडै में िी चर्वानन्द-जयन्ती मनाने की परम्परा िालू की। वि विााँ रचतवषश ८ चसतम्बर को जयन्ती में सस्म्मचलत िोते िैं। स्वामी जी के रोत्सािन से रेररत िो कर भक्तो िंने विााँ स्वामी चर्वानन्द-मागश में 'स्वामी चर्वानन्द-चर्क्षा-सिंथथा' रारम्भ की िै।

चववेकानन्द के रचत उनमें इतनी श्रद्धा ि चक वि अपने इन सब दुवशि कतशव्यो िके िोते हुए आज भी बुलाये जाने पर कन्याकुमारी, चदल्ली तथा अन्य थथानो िके चववेकानन्द-केन्द्रो िके छात्रो िको रचर्चक्षत करने के चलए अपना कुछ समय देते िैं।

कन्याकुमारी से स्वामी जी ने चतरुिन्दूर की यात्रा की जो चतरुनेल्वेचल चजले की सुदूर सीमा के समिु तट पर एक अन्य रचसद्ध काचतशकेय क्षेत्र िै। इस मस्न्दर में भगवान स्कन्द को अपनी श्रद्धांजचल अचपशत कर वि 'रामेश्वरम्' गये जो भारतवषश के िार बडे धामो िमें से एक िै। यिााँ उन्ोिनें भगवान् चर्व का पूजन चकया। तत्पश्चात् वि चत्री तथा तिंजावूरु गये। विााँ से वि परम पावन श्री राघवेन्द्र स्वामी की पुण्यसूमृचत में अपनी श्रद्धांजचल अचपशत करने के चलए रायिूर के चनकट मिालय गये। मिालय में वि लगभग एक मासाधश रिे। किा जाता िै चक अपनी मिासमाचध से ठीक कुछ समय पूवश राघवेन्द्र स्वामी ने घोचषत चकया था: "मैं इस थथान से आगामी सात सौ वषों तक कायश करता रहूाँगा।" पाठको िको स्मरण िोगा चक स्वामी जी के चपता श्रीचनवास राव जी ने एक बार अपना गृि त्याग कर सूक्ष्म र्रीरधारी राघवेन्द्र स्वामी के आध्यास्त्मक संरक्षण में इस पचवत्र थथान में कुछ समय व्यतीत चकया था। स्वामी जी यिााँ पर चनत्यरचत पावनी तुंगभिा नदी में स्नान करने तथा गम्भीर चिन्तन तथा ध्यान में चवलीन िोने से अत्यचधक आनस्न्दत थे।

मिालय से उन्ोिनें पण्ढरपुर की यात्रा की जिााँ चवठ्ठल-रूप में भगवान् चवष्णु मिाराष्टर के रमुख देवता के रूप में सुर्ोचभत िैं। यिााँ स्वामी जी ने नामदेव, तुकाराम, एकनाथ तथा ज्ञानेश्वर जैसे मिान् भक्तो िकी जीवचनयो ितथा उनके कायों का अध्ययन तथा चिन्तन करते तथा रािीन काल के उन यर्स्वी सन्तो िके साथ अपने में एक रकार की आध्यास्त्मक समानुभूचत का चवकास करते हुए तीन मिा व्यतीत चकये। वि रचतचदन कुछ समय तुकाराम के अभंगो ितथा अन्य सन्तो ििारा रचित स्तोत्रो िसे भगवान् की सुतुचत करने में व्यतीत करते थे।

इस रकार दचक्षण में व्यापक रूप से भ्रमण कर लेने पर, स्वामी जी अब गम्भीर साधना के चलए एक थथान में कुछ समय के चलए चटक जाना िािते थे। इसचलए वि केन्द्रीय रेलवे के मुम्बई–िैन्नै रेल मागश पर र्ोलापुर के कुछ मील दचक्षण में स्थथत गाणगापूर गये। वास्तचवक गाणगापूर-क्षेत्र रेलवे स्टेर्न से दचक्षण की ओर कोई िौदि मील पर िोगा। दत्तात्रेय इस तीथश के अचधष्ठाता देवता िैं। ऐसा रचसद्ध िै चक नृचसंिसरस्वती ने, जो दत्तात्रेय के अवतार के रूप में पूजे जाते िैं, इस पचवत्र क्षेत्र में अपने सदा उपस्थथत रिने का आर्ीवाशद दे रखा िै। स्वामी जी ने इस पचवत्र भूचम में ठिरने तथा उग्र तप और ध्यान करने का अस्न्तम चनणशय ले चलया।

अपने लम्बे यात्रा-काल में जब वि भूचम पर र्यन तथा चभक्षा पर चनवाशि करते हुए पररव्रजन कर रिे थे, उस समय वि अन्तर में तप की अचग्न से रज्वचलत थे, देदीप्यमान थे। अब उन्ोिनें गाणगापूर में एक साधारण पणशकुटीर में एक यचत के रूप में रिने तथा तप की अचग्न को सम्पोचषत कर अचनवाशप्य तथा र्ाश्वत ज्वाला बनाने का चनश्चय चकया। अकूतूबर १९६२ से मई १९६३ के इन आठ लम्बे मिीनो ितक रचतचदन चभक्षा के रूप में राप्त दले हुए मोटे अन्न पर उन्ोिनें चनवाशि चकया। यि एक रोिक संयोग था चक उसी क्षेत्र को एक अन्य मिान् योगी ने पचवत्र चकया था। उनका नाम भी चिदानन्द था।'[10]

---

10 गाणगापूर में स्वामी चिदानन्द के पूवशवती योगी चिदानन्द उस थथान में दीघशकाल तक रिे थेऔर अन्त में उन्ोिनें भीमा नदी में समाचध ले ली थी।

स्वामी जी ने इस पचवत्र थथान में उग्र, अबाध तथा दीघशकालीन ध्यान के चलए अपने को चवचधवत् अचपशत कर चदया। उनकी समूपूणश सत्ता चदन-रचत-चदन चनत्य गम्भीर िोते जा रिे ब्रह्मचविार के जल में चनमस्ज्जत रिती। नामरूपमय जगत् चवलीन िो गया और बहुत िी सिज तथा स्वाभाचवक रूप से वि अपने चनज-स्वरूप में स्थथत िो गये। यि कदाचित् उनके जीवन का सवाशचधक मित्त्वपूणश समय था। सम्पोषण का उनके पास कोई चनचश्चत साधन न था। वि अचनकेत थे। केवल एक सादा तथा छोटा-सा काषाय वस्त्र उनके रीर पर लटक रिा था। लोग जो कुछ भी स्वेच्छा से उनें रदान करते, विी उनके जीवन-चनवाशि का साधन था। भौचतक रीर उनके चलए मानो कुछ भी न था। वि सदा िी परमोच्चावथथा की िेतना में एकाकी रिते थे। यचद वि अपने अचवकल भौचतक रीर के साथ जीचवत रिे तो यि पूणशतः चवश्वयोजना के िी कारण था। वि उच्चतम आत्याग तथा पूणश अनािंसा की अवथथा से गुजर िुके थे। उनके चलए कुछ भी करणीय रेष न था। अतः सवशस्र्क्तमान् रभु की उनके सम्बन्ध में जो-कुछ भी योजना रिी िो, उसे मूतश रूप देना अब उसका िी काम था।

स्वामी जी मई १९६३ में अकस्मात् अस्वथथ िो गये। जब वि अपने जड व्यस्क्तत्व को तप की अचग्न में पूणशतः झुलसा देने को तैयार थे, उस समय दैवी योजना िारा उसके रचत रखर रूप से सिेत िोने को चववर् िोना पडा। भगवान् के रिस्यमय िाथो िंने उनें गाणगापूर के रर्ान्त वातावरण से मुम्बई में ला फेंका। यिााँ वि अपने वररष्ठ गुरुभाई श्री स्वामी परमानन्द जी से चमले। विी िंउनकी आवश्यक भैषचजक चिचकत्सा की गयी। चिचकत्सको िंने उनें यात्रा की और अचधक कचठनाई को झेलना छोड देने के चलए रेररत चकया; चकन्तु स्वामी जी की और कोई इच्छा निी िं थी। अल्पकालीन उपिार के अनन्तर मुम्बई से रथथान कर वि उत्तर चदर्ा की ओर चिमालय के केदारनाथ-मस्न्दर के मागश में पडने वाले पवशतीय थथान दिेरादून को सीधे िल पडे। वि भगवान् मुरलीधर को अपनी राथशना चनवेदन करने के चलए मागश में मथुरा तथा वृन्दावन में थोडी देर रुके। ऋचषकेर् से कतराते हुए दिेरादून की ओर आगे बढ़े तथा त्वररत गचत से मसूरी के चनकट बारलोगिंज ग्राम जा पहुाँिे। यि समुि तट से लगभग ५००० फीट की ऊाँिाई पर एक र्ीत थथान िै। यिााँ रिते हुए तीन चदन व्यतीत िो गये। यिााँ जब वि चवश्राम कर रिे थे तथा चिमालय के चकसी उच्चतर क्षेत्र की, जिााँ की उन्होंने अभी तक पदयात्रा न की िो, अपनी यात्रा के अस्न्तम िरण के चलए तैयारी कर रिे थे, उन्होंने अपने गुरुदेव से एक रिस्यमय अव्याख्येय स्खंिाव अनुभव चकया। चिमालय के चकसी एकान्त कोने में सदा के चलए िले जाने से पूवश अपने गुरुदेव के केवल एक बार दर्शन करने की कामना ने उन पर अपना आचधपत्य कर चलया। उनके अपने र्ब्दो िं में : "िौथे चदन मेरे मन में गुरुदेव के केवल एक बार दर्शन करने की अरचतरोध्य कामना मुझे अक्षरर्ः आश्रम में खींि लायी। मैं आश्रम आ गया।" यि चदव्य जीवन संघ के चलए एक चनणाशयक मित्त्व की घटना थी।

गुरुदेव के साथ उनके अन्तन्तम डदनोंमें

तपश्चयाश तथा अज्ञात सिंिार की अवचध इस भााँचत अकस्मात् समाप्त िो गयी। स्वामी जी २१ जून १९६३ को आश्रम वापस आ गये। गुरुदेव उस समय अपनी मिासमाचध की तैयारी कर रिे थे। यद्यचप उन्होंने कोई चवचर्ष्ट घोषणा निी िंकी थी, उन्होंने १४ जुलाई की चतचथ की ओर अपने चर्ष्यों का ध्यान स्पष्ट रूप से आकृष्ट चकया था तथा उसे चतचथ-पत्र में रेखिांचकत कर चदया था। उन्होंने उनसे रतीयमानतः चवनोद के रूप में किा था चक उनें ऊपर ले जाने के चलए वैकुण्ठ से चवमान

उतर रिै। उनके अचतररक्त अन्य चकसी को भी इस अनागत का ज्ञान न िो सका चक उनका चतरोभावचदवस इतना
रीघ्र आने वाला िै। तथाचप वि उत्क्रमण की तैयारी कर रिे थे। अतः उनके
उत्तराचधकारी को उस मित्त्वपूणश चदवस से पयाशप्त समय पूवश िी आश्रम को वापस लाना पडा। यि
दैवकृत योजना थी चजसने स्वामी चिदानन्द को बारलोगिंज से अपने पग वापस लेने को चववर्
चकया।

चजन चदनो िंस्वामी जी आश्रम से बिार थे, लगभग सैकडो िंमील दूर अपने आन्तररक कोर्
में चछपे हुए थे, सिंयोगवर् उन्ी िंचदनो िंयोग-समाज, िंन्नैै के सिंथथापक कचवयोगी रुुद्धानन्द भारती
आश्रम पधारे। गुरुदेव उनके बालपन के सखा थे। उनके साथ अपने वाताश-काल में उन्ोंनें गुरुदेव
से पूछा, "स्वामी जी! कृपया मुझे वि अनश्वर ररक्थ (वसीयत) बतलाइए जो आप मानव जाचत को
अपनी पुस्तको िंतथा भवनो िंके अचतररक्त उत्तरदान करेंगे। क्ा यि चदव्य जीवन सिंघ िै अथवा
सिंन्याचसयो िंका वि पुण्यरील समाज िै चजसे आपने रचर्क्षत चकया िै।" चर्वानन्द कुछ समय तक
अन्तमुशख तथा मौन िो गये और तत्पश्चात् उन्ोंनें किा: "चनस्सन्देि चिदानन्द। वि जीचवत ररक्थ िैं
चजसे मेरे पश्चात् चदव्य जीवन सिंथथा का कायश िलाने के चलए मैं अपने पीछे छोड रिा हाँ।" और
तब, मानो चक उन्ोंनें ब्रह्माण्डीय योजना को अपने मन में पिले िी देख चलया िो, आगे किा,
"वि रीघ्र िी आ रिे िैं।" अनेक अवसरो िंपर उन्ोंनें यि सिंकेत चदया था चक चिदानन्द उनके
उत्तराचधकारी िैं। सन् १९५३ में आश्रम में आयोचजत चवश्व धमश पररषद् के समय उन्ोंनें कोलकाता
के श्री एन. सी. घोष को ऐसा िी इिंचगत चकया था। स्वामी चवमलानन्द ने िमें बताया चक इसी
भााँचत एक अन्य अवसर पर जब गुरुदेव डायमण्ड जुचबली िाल में कायाशलय का कायश कर रिे थे,
गीता-रेस के रचसद्ध सिंथथापक श्री जयदयाल गोयन्दका ने उनका दर्शन चकया तथा उनसे अपने
उत्तराचधकारी के िुनाव के चवषय में पूछा। गुरुदेव ने उनके रश्न का उत्तर देने के बदले चिदानन्द
जी को विााँ तत्काल आने का सन्देर् किला भेजा। स्वामी जी आये और दूर से िी गुरुदेव को
श्रद्धापूवशक तीन बार दण्डवत् रणाम चकया और तत्पश्चात् गोयन्दका जी को भी साष्टािंग रणाम चकया।
अन्य कुछ भी निी िंहुआ। कुछ किा भी निी िंगया; चकन्तु सिज चर्ष्टािार ने गीता-रेस के श्रद्धेय
सिंथथापक पर बहुत गिरा रभाव डाला। चिदानन्द की मात्र उपस्थथचत तथा चवनम्र दण्डवत् ने उन्ें
एक असाधारण भाव से पूररत कर चदया। उन्ें उनका उत्तर राप्त िो गया।

इस िुने हुए उत्तराचधकारी को ठीक समय पर आश्रम वापस आना पडा। वि विााँ २१ जून
को पहुाँ गये तथा पूछताछ करने पर उन्ें ज्ञात हुआ चक गुरुदेव चकिंचित् अस्वथथ िैं तथा चवश्राम
ले रिे िैं; अतएव वि रान्तिपूवशक अपने कुटीर को वापस िले गये। अगले चदन रातःकाल उन्ोंनें
गुरुदेव के कुटीर में उनके दर्शन चकये।

गुरुदेव तथा उनके इस िुने हुए चर्ष्य का पारस्पररक सम्बन्ध भी चवलक्षण रकार का था।
स्वामी जी रुुचतयो िंका श्रवण करने के चलए अपने ब्रह्मचनष्ठ गुरु के समीप कभी निी िंबैठे। गुरुदेव
के समय-समय पर किे हुए र्ब्द िी इस समचपशत चर्ष्य के चलए ब्रह्मसूत्र थे। वि न तो चनरन्तर
गुरुदेव के साथ रिे थे और न उनके चनजी सचिव िी रिे थे। उनकी गम्भीरतम श्रद्धा तथा पूणश
चवनम्रता गुरुदेव के साथ परमावश्यक चवषय से अचधक वाताश करने में उनके मागश में बाधक थी।िं
वि सदा िी श्रद्धापूणश दूरी बनाये रखते थे और यचद कभी वि उनसे बातें करते भी थे तो वि
कुछ आवश्यक इने-चगने र्ब्द िी बोलते थे। जब स्वामी जी चदव्य जीवन सिंघ के मिासचिव के
उच्च पद पर थे और गुरुदेव के साथ व्यस्क्तगत वाताश करने के चलए अनेक अवसर उन्ें उपलब्ध
थे, उस समय भी वि सामान्यतः चवनम्र तथा सिंकोिी थे। वि यद्यचप परमोच्च अैत स्थथचत से

सम्पन्न थे तथाचप वि र्ास्त्राज्ञा का पालन करते तथा सदा ि ी गुरुदेव से यथोचित दूरी पर रिते थे। गुरुदेव यि जानते थे चक उनका ि ुना हुआ चर्ष्य पूणशतया अपने व्यस्क्तगत अचधकार से ि ीमक रि ीं; सदा चदव्य ि ेतना में स्थथत ि ै तथा उसे उनके समीप रिने की कोई आवश्यकता नि ीं ि ै।

चकन्तु अब समय आ गया था। गुरुदेव ने अपने उत्तराचधकारी को अपने पास ि ींिीं चलया और अपनी आध्यास्त्मक र्स्क्त के मिान् आवेग से उन्ें अनुराचणत कर चदया। यिी रिस्यमय र्स्क्त-सिंिार के नाम से चवचदत ि ै। वि आध्यास्त्मक सिंसगश समाप्त ि ो गया। चर्वानन्द अब चिदानन्द में अन्तचनशचवष्ट थे। दो एक बन गये। चर्वानन्द अब चिदानन्द और चिदानन्द चर्वानन्द-स्वरूप थे।

जिााँ तक स्वामी जी का सम्बन्ध ि ै, ि ूाँ ूचक गुरुदेव के दर्शन करने की उनकी अस्न्तम अचभलाषा पूणश ि ो ि ुकी थी, अतः अस्न्तम एकाकीपन के चलए वि केदारनाथ के चर्खर पर जाने को उत्सुक थे। उन्ोंने गुरुदेव से अपनी इच्छा व्यक्त की और उनका आर्ीवाशद माांगा। गुरुदेव की चक्रयाचवचध को र्ास्न्तपूवशक ध्यान से देखने के अचतररक्त उनके पास किने को कुछ भी न था।

स्वामीजीसाक्षात्कारकेपश्चात्गुरुदेवकेकुटीरसेअन्तमुशखीवृचत्तकेसाथबािरआये।
विआश्रमसेउसीचदनअपनेअस्न्तमरयाणकीतैयारीकररिेथेचकउसचदनभारीवषाशहुई
चजससेचववर्िोकरउन्ेंआश्रममेंएकचदनऔरभीरिनापडा।आगामीचदवसकोस्वामी
कृष्णानन्दजीउनसेचमलेऔरउनसेएकऐसेव्यस्क्तसेकुछवास-गृिकेवैधअधीनीकरणकी
समस्यासुलझानेके चलएअनुरोधचकयाजोउसेछोडनेकोअचनच्छुकथा।स्वामीजीकोएक
मिासचिव के रूप में सवशरथम इसे सुलझाना था। उन्ोंने तुरन्त िी र्ास्न्त तथा व्यवथथा के
कायशभारीअचधकारीकीसिायतालीऔरदूसरोंकोयिस्पष्टकरचदयाचकसिंथथाचनकसाधुको
भीधमशचनरपेक्षदेर्मेंअचवतथतथाचनयमचनष्ठिोनािाचिए।विसमस्यासमाप्तिोगयीऔरअब
ऐसारतीतहुआमानोचकउनकेचलएअबअन्यकोईबाधािनिींरिी।विजानेकोतैयारथे।
अभीजबविअपनेकमरेमेंिीथे,उन्ोंने चकसीकोिोरखटखटातेतथा'ॐनमोनारायणाय'
कितेहुएसुना।उन्ोंने िारखोलातोविााँएकवृद्धसुपररचितस्वामीचमलेजोडा.देवकीकुट्टी
से अपने रोग



समाधि मन्दिर में परम पावन गुरुदेव की पूजा करते हुए

का उपिार कराने की आर्ा से विााँ गये थे। स्वामी जी उन्ें तत्काल डा. कुट्टी माता जी के
कमरे में ले गये। क्ोचिंक वि व्यालू कर रिी थी,िं वि उस रोगी स्वामी के साथ र्ास्न्तपूवशक बिार
रतीक्षा करते रिे। जब कुट्टी माता बिार आयथी तो स्वामी जी को बरामदे में खडा देख कर
आश्चयश में पड गयी।िं स्वामी जी ने उस साधु को उनकी देख-भाल में सौपिं चदया तथा स्वयिं जाने
को मुडे, चकनुतु डा. कु ट्टी ने उस रोगी की परीक्षा करने तथा आवश्यक औषचध देने तक स्वामी जी से कु छ समय रतीक्षा करने का अनुरोध चकया। यि कायश समाप्त िोने पर स्वामी जी आश्रम से रथथान करने की अस्न्तम तैयारी करने के चलए अपने कु टीर को जाने को उठ िी रिे थे चक उसी समय आश्रम के अनेक वररष्ठ भक्त तथा गुरुबनुधु विााँ आ गये
तथा मूल अथाशनुसार उन्ें उठा ले
गये। उन्ोंनें स्वामी जी को राचत्र-सत्सिंग में सस्म्मचलत िोने तथा विााँ अपने भावपूणश भजन गाने तथा
रेरणादायी रविन करने के चलए सम्मत कर चलया चजससे उन्ोंनें एक वषश से अचधक समय से ननिीं
सुना था।स्वामीजीउनसेसरलतासेअपनापीछानिींछुडासके,अतएवविनम्रतापूवशकभजन
गािे िलेगये।

जब स्वामी जी ने उस राचत्र को शुरुचतमधुर भजनो िंको गाया तो सत्सिंग नये सुफुरणो िंसे पूणश
िो गया। बाद में जब वि रविन कर रिे थे तो उन्ोंनें डा. देवकी कुट्टी को चिस्न्तत मनोदर्ा में
सत्सिंग से जाते हुए देखा। जब उनका रविन समाप्त हुआ तो उन्ोंनें कुट्टी माता जी को पुनः
अपने समुमुख अिंजचल बद्ध खडी हुई देखा तथा गम्भीर दुःख के साथ यि किते हुए सुना :

"स्वामी जी! आप निी िंजा सकते। गुरुदेव को रक्ताघात हुआ िै।" इन बी् िंने स्वामी जी को स्तस्म्भत कर चदया। उनें् ऐसा धक्का लगा चक वि कुछ कि न सके। स्वामी जी ने, चजनकी पूणश एकाकी आिचिन्तन के अचतररक्त अन्य कोई भी आकिांक्षा निी िंथी तथा चजन्ोनिें आश्रम से सदा के चलए चवदा लेने तथा चिमालय के चकसी अज्ञात थथान में यचत का जीवन-यापन करने का चनश्चय कर चलया था, तत्काल एक सचे्चे चर्ष्य के रूप में रचतचक्रया की। चकसी ने भी उनको अपने कायशक्रम में पररवतशन करने के चलए निी िंकिा। उन्ोनिें यिी िंरुके रिने तथा अपने गुरुदेव की यस्त्किंचित् सेवा करने का चनणशय चलया। इस समय उनके चलए केवल एक िी कतशव्य था और वि था अपने को अपने गुरुदेव के चलए सदा उपलब्ध बनाये रखना। उन्ोनिें चिमालय की चकसी गुिा में एक एकाकी तपस्वी का जीवन-यापन करने की अपनी मनोचभलाषा को सिज दृढ़ता तथा पूणश आित्याग से चकनारे रख चदया और तुरन्त एक युवक ब्रह्मिारी के अपने भूतपूवश कतशव्य को अपना चलया। उनके चलए तात्काचलक कतशव्य सदा िी राथशना तथा साधना का श्रेेष्ठतम रूप रिा िै। िो सकता िै चक बाद में वि अपने मूल कायशक्रम में सिंलग्न िो,िं चकन्त इस समय का कायश तो स्पष्ट था। स्वामी जी के िी बी् िंमें: "चजस चदन मुझे वापस जाना था उसी चदन गुरुदेव राणिर रोग से बीमार पडे। मैं उनें् रोग-र्य्ा पर छोड निी िंसकता था। अतः मैंने अपने रथथान के कायशक्रम को चनरस्त कर चदया और इस पूणश चवश्वास के साथ रुक गया चक जब वि स्वास्थ्य-लाभ करेंगे तथा चनरोग िोगिें तब मैं जा सकूाँगा। रे्ष आप जानते िी िैं। इसके थथान पर, उन्ोनिें स्वयिं जाने का चनणशय चलया

और जब चिचकत्सकगण सिो िी रिे थे चक वि अब चनरोग िो रिे िैं, स्वास्थ्य लाभ कर रिे िैं, उसके िौबीस घण्टे के अन्दर स्थथचत में पररवतशन आया और उनका अन्त आ पहुाँिा।"

गुरुदेव के चलए यि परम सन्तोष का चवषय था चक उनके अज्ञात में चतरोभाव के समय उनका योग्य चर्ष्य उनके पास था। अपनी मिासमाचध से दो चदन पूवश एक सायिंकाल को गुरुदेव ने चिदानन्द जी की ओर उाँगली से सिंकेत कर डा. कुट्टी से किा : "वररष्ठतम चर्ष्य।" उन्ोनिें इसे दो बार दोिराया। वि पााँचवें दर्क में सूचित कर िुके थे चक राव जी उनके उत्तराचधकारी िैं। मिासमाचध की पूवश सन्ध्या को वररष्ठतम चर्ष्य के रूप में चिदानन्द जी का बार-बार उले्लेख कर उन्ोनिें पूवशसम्प्रत्यय की पुचष्ट की थी। जब गुरुदेव के चतरोभाव की अस्न्तम घडी िुतगचत से आ रिी थी उनका योग्य उत्तराचधकारी उनके पास पूणश गाम्भीयश के साथ उपचनषद् के मिावाक्ो िंका उच्चारण करते हुए पाया गया। अन्त में जब १४ जुलाई १९६३ की अधशराचत्र को उनके जीवन का अवसान हुआ तो वि गुरुदेव के कुटीर से बािर आये और एकचत्रत आश्रमवाचसयो िंसे किा, "यि एक सुन्दर जीवन था और इसने अनेक जीवनो िंको सुन्दर आकार चदया।"

जगद्गुरु ने अपना जीवनोद्देश्य पूणश कर चलया था। वि परम सत्ता में चवलीन िो गये। गुरुदेव िाराअपनेपीछेछोडेगयेचर्ष्योंमेंसबसेवररष्ठिोनेके कारणचिदानन्दनेमिासमाचधके समय भगवन्नामकाउच्चारणचकया।दोचदनपश्चात्१६जुलाई१९६३कोअपराह्नमेंगुरुदेवके पचवत्र पाचथशवर्रीरकोपूणशगाम्भीयशतथाचवषादके साथपचवत्रसमाचध-मस्न्दरमेंसमाचधदेदी गयी। तत्पश्चात् चिदानन्दजीकीवैयस्क्तकदेख-रेखमें षोडर्ीचक्रयासम्पन्नहुई।गुरुदेवके रुग्ता-काल में तथा बाद में उनकी मिासमाचध के अनन्तर चिदानन्द ने िी सभी मित्त्वपूणश व्यवथथाओं की देखभाल की। एक बूाँद भी अशु्रुपात चकये चबना, वि अत्यन्त गम्भीर तथा अन्तमुशखी वदन से सभी आवश्यक कायों को करने तथा आश्रम के भक्तों के र्ोकसन्तप्त पररवार को सान्त्वना देने में लगे रिे। रे्ष समय वि सदा िी मौन, रर्ान्त तथा चिन्तनर्ील रिते थे।

१४ जुलाई १९६३ से १८ अगस्त १९६३ तक रकटतः (पद) ररक्तता की मध्यावचध थी।
षोडर्ी-पूजा के समाप्त ि◌ो जाने पर अध्यक्ष चनवाशचित करने के चलए चदव्य जीवन सिंघ के रन्याचसयो ि◌ं की एक बैठक हुई। उस समय स्वामी चिदानन्द जी मौन ध्यान में अत्यचधक तल्लीन रि कर सबसे दूर रिा करते थे। सिंघ के सदस्य ि◌ािते थे चक अचनचुछुक स्वामी चिदानन्द जी मिाराज गुरुदेव का थथान ग्रिण करें। गुरुदेव के नाम में उन्ें वसुतुतः बलात् उस थथान में डाला गया। सदा की भााँचत ि◌ी चिवनीत तथा अनाटकीय रि कर उन्ोनिें उस समय अपना चविार रकट चकया: "एक भार ले चलया गया ि◌ै। इस विन करना ि◌ी ि◌ोगा।" वि १८ अगस्त १९६३ को औपिाररक रूप से चदव्य जीवन सिंघ के अध्यक्ष चनवाशचित हुए। उत्तरदाचयत्व ग्रिण करने के समय उन्ोनिें गुरुदेव से एक भावपूणश बालसुलभ राथशना की : "गुरुदेव की आिा से मेरी एकमात्र राथशना यि ि◌ै चक वि रुुद्ध भाव से मुझे सेवा करने, कतशव्यचनष्ठा से कायश करने तथा योग्य रीचत से जीवन-यापन करने में समथश करें। वि इस सेवक को नम्रता का गुण और चनथस्वाथशपरता तथा समपशण की योग्यता रदान करने से इनकार न करें।"

चदव्य जीवन सिंघ के इचतिास में १९४३ से १९६३ तक के दो दर्क चनस्सने्दिे अत्यचधक मित्त्वपूणश ि◌ैं। पुण्यसचलला गिंगा के तट पर भागवतीय सत्ता ने अपनी चवभूचत को दो रूपोंि-कमशठ गुरु तथा समचपशत चर्ष्य-में रकट चकया। भारतवषश की पुण्य भूचम में भागवतीय सत्ता अपने को सद्गुरु के रूप में असिंख्य बार रकट करती ि◌ै, चकनुतु केवल समचपशत तथा अचधकारी चर्ष्य दुलशभ ि◌ोते ि◌ैं। स्वामी चिदानन्द इन दुलशभतम पुष्पो ि◌ंमें से एक ि◌ै जो गुरुदेव की चकरण के स्पर्शमात्र से पुस्ष्पत तथा चवश्व को मधुर रूप देने के चलए अपने में सुरचभ सिंचित चकये हुए आये। अतः ऐसी आिसिंयमी तथा समचपशत आिा सारे चवश्वभर के साधको ि◌ंको उनके जीवन-पथ में मागशदर्शन कराने वाले सद्गुरु, वास्तचवक चमत्र, तत्त्ववेत्ता तथा मागशदर्शक के रूप में उभर कर आगे आये तो इसमें कोई आश्चयश निी।ि◌ं गुरुदेव ने उनसे चकसी चवर्ेष रिस्य का उद्घाटन निी ि◌ंचकया। स्वामी जी ने गुरुदेव के जीवन से जो एकमात्र रिस्य सीखा, वि था: "अपने को ररक्त बनाओ, मैं तुम्हें समूपूररत कर दूाँगा।" चिदानन्द वास्तव में र्णागचत तथा गुरुभस्क्त के मूचतशमान आदर्श ि◌ैं जो अपने गुरुदेव से अपृथक्करणीय ि◌ैं और मानव को मिान् पाठ की चर्क्षा देने में रवृत्त ि◌ैं: "ईश्वर परम गुरु ि◌ै, चवश्व सद्गुरु ि◌ै। यि चवश्व ईश्वर का दृग्गोिर रूप ि◌ै। अतः चवश्व गुरु ि◌ै और जीवन चर्ष्यत्व ि◌ै; अतएव आपको चवश्व की सेवा तथा चवश्व से ज्ञान राप्त करने के चलए ि◌ी जीवन-यापन करना ि◌ाचिए। यि ि◌ी मोक्ष-रदायक धमश ि◌ै।"

चतुथप अध्याय

गुरुदेव के साथ युगान्तरकारी यात्रा

"ज्ञानयजे्ञेन चाप्यन्ये्ये यजन्तोमामुपासते ।
-और (कोई-कोई) दूसरे लोग ज्ञान-यज्ञ के िारा भी पूजन करते हुए मेरी उपासना करते िैं।"

भारत का यि सिंन्यासी, जो चवश्व का त्याग करने को उतुसुक था, चवचध के चवधान िारा धमश का सने्देर् घर-घर पहुाँिाने वाला परम कमशठ यायावर-धमोपदेर्क बन गया। उन्ोिंने समूपूणश मानव-जाचत तक पुण्य-उपदेर् को पहुाँिाते हुए एक धमशर्ास्ता के रूप में रथम बार िी १९६३ के बाद चवदेर् की यात्रा की िो, यि बात निी िैि। वि १९४९ से िी इस चवर्ाल देर् तथा चवदेर् में गुरुदेव के धमशदूत के रूप में अचवरत चक्रयार्ील रि िैं। यचद उनके इस कायश को आरम्भ करने को रकट करने के चलए कोई चतचथ चनचदशष्ट करनी िै तो व्यस्क्त को १९४९ तक पीछे मुडना िोगा जब गुरुदेव ने उन्ें चदव्य जीवन सिंघ की चबिार रादेचर्क र्ाखा के उद्घाटन समारोि में अपना रचतचनचधत्व करने को पटना जाने के चलए किा था। उनकी सिंवेदनर्ील मुखाकृचत, सम्मोिक मुस्कान, दयािश वाणी, मुख का आभामण्डल तथा तेजस्वी वकृतृता ने चबिार के श्रोताओ िंको पुलचकत कर चदया। उन्ोिंने इन्ें रथम श्रेणी का सन्त पाया। वे इस उदीयमान आध्यास्िक रकार्-पुिंज के समुमुख सिज िी नतमस्तक िो गये। इनका विााँ ऐसा तात्काचलक तथा सर्क्त रभाव पडा चक इनके आश्रम में वापस आने पर स्वयिं गुरुदेव ने इन्ें बधाई दी। गुरुदेव ने इस चनरचतर्य रचतचष्ठत तथा परम चवनीत चर्ष्य की परीक्षा की तथा लोक-सिंग्रि के चलए उसकी रचतभा को जाना।

गुरुदेव को स्वयिं यात्रा करना अचभमत न था। उन्ोिंने िौदि वषश अथवा इससे अचधक समय की दीघाशवचध के अचधकािंर् काल में अपने को आनन्द-कुटीर तक िी पररुद्ध रखा। उनके अनेक भक्त अस्खल भारत-यात्रा के चलए उनसे बारम्बार अनुनय करते रिे; चकनुतु गुरुदेव ने चनणशय लेने को थथचगत िी रखा। अन्त में १९५० में उन्ोिंने अपना एकान्तवास समाप्त कर भारतवषश के कोने-कोने में रभु की सन्तान से चमलने के चलए बािर जाने का चनश्चय कर चलया। इस भााँचत जब वि ९ चसतम्बर १९५० को आनन्द-कुटीर से बािर चनकले तो उन्ोिंने अपनी युगान्तरकारी यात्रा के चलए स्वामी चिदानन्द को सन्धान-रस्तर के रूप में िुना। स्वामी परमानन्द तथा स्वामी वेंकटेर्ानन्द जैसे अन्य रबल समथशक इस यात्रा के सिंघटनािक वासुतुकार थे तथा उन्ोिंने श्रेष्ठता से सेवा की; चकनुतु सेवा-यात्रा में र्ुरू से अन्त तक स्वामी चिदानन्द ने िी गुरुदेव की वास्तचवक रचतकृचत के रूप में कायश चकया। उसके पश्चात् भी उन्ोिंने इस पुण्य भूचम के कोने-कोने तक चदव्य जीवन का सने्देर् पहुाँिाते हुए समू्पूर्ण भारतवषश की अनेक बार यात्राएाँ की िैं; चकनुतु गुरुदेव के साथ तथा उनकी सेवा में सन् १९५० की यि अस्खल भारत यात्रा वास्तव में सवाशचधक स्मरणीय थी। वि गुरुदेव के साथ देर् के असिंख्य चजज्ञासुओ िंके समुमुख न केवल गुरुदेव के रचतचनचध के रूप में अचपतु एक परमोतृकृष्ट कोचट के आध्यास्िक व्यस्क्तत्व के रूप में अपने पूणश वैयस्क्तक अचधकार के आधार पर उपस्थथत हुए। इनसे अपने सरल चकनुतु ममशस्पर्ी व्याख्यानो िंमें वेदास्न्तक तथ्यो िंके स्पष्टीकरण िारा गुरुदेव के सम्भाषणो िंको समूपूररत करने तथा वैयस्क्तक रदर्शन िारा योगासनो िंके अभ्यास के चलए जनता को रेररत करने के चलए अनुरोध चकया जाता था। यि दीघशकाल तक बहुसिंख्य श्रोतागणो िंके साथ इनका रथम समागम था; चकनुतु अपने गुरु के पास रिने के कारण, भीड से िीिो वि गुणािक अथवा पररमाणािक रूप से कुछ भी िो, इन्ें एक क्षण भी घबरािट निी िंहुई। वि चर्दानन्द चमर्न के मूल्यवान् कोिनूर की भााँचत िमकते रिे तथा उन्ोिंने सिस्रो िंमत्यश राचणयो िंको आध्यास्िक जीवन के रवेर्-िार की ओर आकचषशत चकया। अगाध गुरुभस्क्त तथा अन्तःरज्ञा से

पररपूणश वि जिााँ-जििंभी गये विााँ के लोगिों पर उन्ोंने अपना अचमट रभाव छोडा। इस युगान्तरकारी यात्राके श्रद्धेयस्वामीपरमानन्दजीमिापराक्रमीआयोजकथे,स्वामीवेंकटेर्ानन्द यथाथश रचतवेदकथे,नारायणस्वामीतथास्वामीपूणशबोधेन्द्रआडम्बर-रचितसियकथेतथास्वामी र्ाश्वतानन्द गुरुदेव की वस्तुतः छाया अथवा उनके अिंगरक्षक थे। स्वामी गोचवन्दानन्द तथा स्वामी पुरुषोत्तमानन्द ने गुरुदेव को र्ारीररक सुख-सुचवधा राप्त कराने के चलए बडी िी सावधानी से अथक कायश चकया। स्वामी ओकिं ारानन्द आध्यास्कि साचित्य चवतरण के कायशभारी थे। स्वामी सत्यानन्द चिन्दी-भाषी श्रोताओिं में भाषण देते तथा चर्वानन्द-साचित्य के चवक्रय में स्वामी दयानन्द की सियता करते थे। पद्मनाभन ने एक छायाचित्रकार के रूप में अपनी सक्षम सेवा से यात्रा को अमर बना चदया। कु छ अन्य लोगिों ने भी एकाचधक रूपिों में सियता की; चकन्तु इस युगान्तरकारी यात्रा में स्वामी चिदानन्द का अपना चवचर्ष्ट थथान था। इस भागवत पुरुष का ऐसा अचितीय रभाव पडा चक स्वयिं गुरुदेव ने लोगिों को इनकी ओर बारम्बार इिंचगत कर इन्ें अपने सवोत्कृ ष्ट आदर्श के रूप में स्वीकार करने को रोत्साचित चकया। गुरुदेव ने चजन आदर्ों का उपदेर् चदया िै, स्वामी चिदानन्द उन सबके आज भी मित्तम जीवन्त आदर्श बने हुए िैं।

गुरुदेव धुर दचक्षण में रामेश्वरम् के उनके रख्यात मस्न्दर में भगवान् चर्व का अचभषेक करने के चलएगिंगोत्तरीसे पावनीगिंगाकापचवत्रजलअपने साथले गये थे।फैजाबादमें चजज्ञासुओिं की एक सभा को सम्बोचधत करते हुए स्वामी चिदानन्द ने इसका उल्लेख चकया और इसका आन्तररक अथश बतलाया। उन्ोंने अपना मत रकट करते हुए किा चक गुरुदेव रामेश्वरम् में अचपशत करने के चलए गिंगा के स्रोत से गिंगा-जल ले जा रिे िैं; चकन्तु वि रतीक रूप में समग्र देर् को आप्लाचवत करने के चलए स्रोत से, अपने आिंज्ञान से ज्ञान-गिंगा का जल चलये जा रिे िैं। गुरुदेव की यि तीथशयात्रा चनश्चय िी भारतवषश तथा श्रीलिंका के लोगिों के चलए चनस्सन्देि सवोत्कृ ष्ट आध्यास्कि सेवा थी।



गुरुदेव के साथ अखिल भारतीय यात्रा में—गुरुदेव की बायीं ओर खड़े हुए



पूर्वाश्रम के सम्बन्धियों के साथ

गुरुदेव तथा स्वामी जी दोनिों की दृचष्ट समान थी। दोनिों ि◌ी इस मिान् राष्टर की रिीन आध्यास्ि◌कि चवद्या छात्रिों तक पहुाँिानिे की अचवलम्ब आवश्यकता पर बल देते थे तथा दोनिों ने ि◌ी इस यात्राभरअन्यकायशक्रमिोंके मूल्यपरभीअपनेरबोधकभाषणिोंसेछात्रिोंकोलाभास्ि◌तिचकया। फै जाबाद में स्वामी जी ने गुरुदेव के भाषण से पूवश अपना रारस्म्भक भाषण चदया। यिााँ सच्चररत्र-चनमाशण, ब्रह्मियश-पालन तथा इस पुण्य भूचम के भाग्यर्ाली नागररक ि◌ोने के अचभमान के पोषण पर उनके चिन्दी के बोधरद भाषण ने आश्चयशजनक अनुचक्रया उत्पन्न की और लखनऊ तथा फैजाबाद-मण्डल के तत्कालीन आयुक्त श्री एस. एल. घर, आई. सी. एस. ने, चजन्ोिनें इस सभा की अध्यक्षता की, इस युवक सिंन्यासी ने जनता पर जो ि◌ौकिं ◌ा देने वाला रभाव डाला, उसकी भूरर-भूरर रर्िंसाकी।इसभााँचतरख्यातवाराणसीचिन्दूचवश्वचवद्यालयमेंस्वामीजीनेछात्र-समुदायको

रिीन भारतीय आदर्ों को आिसात् करने की रेरणा दी। उनके चविारोत्ेत्तेजक भाषण ने रवर राध्यापको िंको भी झकझोर चदया।

पटना में िी भारतवाचसयो िंको स्वामी जी के गुरुदेव के भावी उत्तराचधकारी तथा गम्भीर ज्ञान-सम्पन्न एक उन्नत कोचट के सन्त िोने का पता िल गया। यिााँ थथानीय रोटरी क्लब में गुरुदेव ने 'चवश्व-बनुधुत्व' पर रविन चकया। भाषण के अन्त में, जैसा चक रायः िोता िै, रश्न का समय था। ऐसा हुआ चक इस अवसर पर गुरुदेव ने स्वामी जी को अपनी ओर से रोटरी क्लब के सदस्यो िं के रश्नो िंके उत्तर देने का चनदेर् चदया। इसके िारा उन्ोंनें स्वामी जी के साथ अपनी पूणश एकचित्तता सूचित की। इस सुयोग ने चजज्ञासुओ िंको यि रकट कर चदया चक स्वामी चिदानन्द रुद्ध सिंके्षेत्र (चरज्म) िैं जो चपपासु साधको िंके पथ को रकाचर्त करने के चलए गुरुदेव के चविारो िंको परावचतशत करते िैं। क्लब के आधा दजशन सदस्य स्वामी जी के समु्मुख चवचवध चवषयो िंको समाचवष्ट करने वाली बहुत िी जचटल, दार्शचनक तथा नैचतक समस्याएँ रसु्तुत करने के चलए एक-एक कर उठे। स्वामी जी ने उनका ऐसे पके्के ढिंग से उत्तर चदया चक व्यस्क्त को यि सने्दि िो सकता िै चक उन रश्नो िंके उत्तर देने के चलए वि विााँ तैयार िो कर गये थे।'[11] श्रोताओ िंको यि तथ्य सिसा ज्ञात िो गया चक उच्च आध्यास्कि क्षेत्रो िंमें रवेर् के चबना सुचर्चक्षत लोगो िंके रवर वगश, चजसमें इलिााबाद उच्च न्यायालय के भूतपूवश मुख्य न्यायाचधपचत श्री कमलकान्त वमाश जैसे रचतचष्ठत लोगो िंका समावेर् था, के समु्मुख तत्काल ऐसे चववेकपूणश तथा तकशसिंगत आध्यास्कि स्पष्टीकरण दे पाना एक नवयुवक सिंन्यासी के चलए सम्भव निी िंिै। उनके उत्तरो िंमें अपना िी एक चवचर्ष्ट सौन्दयश था। वे र्ास्त्रो िंके रमाण, रचतभार्ाली मस्स्तष्क की गिरी पैठ, चवश्ेलेषणािक रसु्तुतीकरण तथा चदन-रचत-चदन के सूक्ष्म चनरीक्षण को रकट करते थे। बैठक के अन्त में चजज्ञासुओ िंने स्वामी जी की जागरूकता, समझ तथा चवश्वासोत्पादक स्र्क के रचत अपने समादर-भाव व्यक्त चकये। अनुचक्रया का उतृ्कष्ट सार कदाचित् आरक्षी मिाचनरीक्षक श्री ए. के. चसन्ा की केवल एक चटप्पणी उद्धृत कर रसु्तुत चकया जा सकता िै। सभा की समास्प्त पर वि आगे बढ़ कर स्वामी जी तक आये और अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए किा, "स्वामी जी! मैं आप पर गवश अनुभव करता हाँ।" इस भााँचत इस युवा अख्यात सिंन्यासी ने अपनी तीस वषश की आयु में ऐसे रौढ़ तथा चववेकी व्यस्क्तयो िंके समू्ि का रेम तथा रर्िंसा राप्त की जो सिज िी वीरपूजा के आवेर् के वर्वती िोने वाले निी िंथे।

यात्रा-काल में स्वामी जी कायशक्रमो िंको रायः अपने मनोिारी 'जय-गणेर्' कीतशन से रारम्भ चकया करते थे। यचद विााँ चिन्दी-भाषी श्रोता िोते तो वि गुरुदेव के अाँगरेजी भाषण का अचभराय चिन्दी में समझाने के चलए अपनी सेवाएँ अचपशत करते थे और श्रोताओ िंके हृदय का अपिरण कर लेते थे जैसा चक उन्ोंनें गिंगामिल, गया तथा अन्य अनेक थथानो िंमें चकया। जैसा चक इससे पूवश चनचदशष्ट चकया जा िुका िै, स्वयिं गुरुदेव स्वामी जी की असाधारण चवनम्रता, राचणमात्र की चनथस्वाथश सेवा तथा चनरन्तर चदव्य िेतना से इतना अचधक रभाचवत थे चक वि जिााँ भी गये, विााँ सदा िी उन्ोंनें अपने इस समचपशत चर्ष्य के आध्यास्कि गुणो िंका उल्ेलेख कर उसकी मुक्त कण्ठ से रर्िंसा की। िैदराबाद के राजभवन में इण्टरनेर्नल फेलोचर्प (अन्ताराष्टरीय मैत्री सिंघ) को सम्बोचधत करते समय उन्ोंनें एक अनुपम कमशयोगी के रूप में स्वामी चिदानन्द जी का उदािरण उद्धृत चकया और किा चक नारायण-भाव से की गयी उनकी सेवा उनसे किी िंअचधक आयु के साधको िंके

[11] साधको िंके रश्न तथा स्वामी जी के स्पष्टीकरण का चवसृ्तत चववरण स्वामी वेंकटेर्ानन्द ने ' चर्वानन्द लेक्चसश-आल इस्ण्डया टूर' नामक पुस्तक में चदया िै।

चलए भी एक स्पधाश-योग्य आदर्श ि ै। उन्ोनिें चिदानन्द के एक रोगी कुत्ेते के उपिार करने की घटना का उल्ेलेख चकया। उसके सिंक्रचमत रीर से भारी पूचतगन्ध चनकलती थी तथा लोगो िि ारा एक
थथान से दूसरे थथान को भगाये जाते रिने के कारण वि सदा िलता रिता था। स्वामी जी ने उसे
आश्रम की सीचढ़यो िके पास देखा तथा वि कई मिीनो िंतक अपने िाथो िंसे सावधानीपूवशक उसकी
मरिमभट्टी करते रिे। इसी लिजे में गुरुदेव ने भीषण कुष्ठरोग से पीचडत एक पिंजाबी साधु की
घटना का उल्ेलेख चकया चजसके पास कोई भी व्यस्क्त एक पल भी निी ििर सकता था; चकनुतु
चिदानन्द जी ने अपने िाथो िंसे उसके कुष्ठपीचडत िाथो िंतथा पैरो िंकी मरिमपट्टी कर अपने पचवत्र
स्पर्श से उसे िमत्काररक ढिंग से स्वथथ कर चदया। गुरुदेव ने स्वामी जी की अनुकरणीय सेवा के
चलए ररिंसा की भरमार करने के पश्चात् श्रोताओ िंसे रश्न चकया : "क्ा आपमें से कोई ऐसा व्यस्क्त
िै चजसने अपने जीवन में एक बार भी ऐसी सेवा की िो?" गुरुदेव के आकलन में स्वामी जी
सवोतृकृष्ट रकार की चनथस्वाथश सेवा में सवाशचतर्ायी ि ैं चजसे वि ऐसी पूणश श्रद्धा तथा चनष्ठा से करते
िैं चक वि भगवान् नारायण की पूजा बन जाता ि ै।

गुरुदेव चवद्यालयो,ि मिाचवद्यालयो िंतथा चवश्वचवद्यालयो िंमें जिाँ-किी िंभी भाषण देते विाँ स्वामी जी योगासनो िंके रदर्शन करने को अपनी सेवाएँ अचपशत करने के चलए सदा तैयार रिते थे। कभी-कभी वि योगासनो िंके िलचित्र रदर्शन पर िल-चववरण देते थे। अन्नामलै चवश्वचवद्यालय में गुरुदेव के भाषण के पश्चात् सूयश-नमस्कार, आसनो,ि राणायामो िंतथा अन्य यौचगक चक्रयाओ िंके िलचित्र के रदर्शन का कायशक्रम था। स्वामी जी के रभावर्ाली वणशन से यि िलचित्र रदर्शन अपूवश रीचत से सजीव तथा चर्क्षारद बन गया। उन्ोनिें अपने व्यस्क्तगत अनुभव के आधार पर योगासनो िंसे उद्भूत लाभो िंको नवयुवको िंको समझाया। उस वणशन ने ऐसा भारी उत्सिा उद्दीप्त चकया चक रकृताथश में सैकडो िंछात्र योगासनो िंको सीखने के चलए आगे आये।

जब यात्रा-मण्डली चिदम्बरम् पहुँिी ितब गुरुदेव कुछ अस्वथथ थे। इससे वि सावशजचनक सभा में उपस्थथत निी िि ो सके। उन्ोनिें सभा में भाषण देने के चलए अपने थथान में स्वामी जी को रचतचनयुक्त चकया। गुरुदेव के एक पुराने सिपाठी कचवयोगी र्ुद्धानन्द भारती भी उनके साथ गये। स्वामी जी सभा-थथल पर पहुँिे तथा विाँ उन्ोनिें अपने आध्यास्क उपदेर् तथा भावपूणश कीतशन की वृचष्ट की। श्रोतागण पुलचकत िो गये। गुरुदेव के भाषण के अभाव में उनमें चनरार्ा की भावना निी ि आयी।

यात्रा-मण्डली ८ अक्तूबर को चत्रिी पहुँिी। स्वामी जी ने थथानीय राष्टरीय मिाचवद्यालय में अध्यापको िंतथा छात्रो िंके सममुख भाषण चदया तथा चकस रकार िम सब एक िी भगवान् की रर्ाखाएँ ि ैं, इस मूलभूत सत्य को उन्ें बहुत िी सरल तथा आकषशक ढिंग से समझाया। उन्ोनिें आिसाक्षात्कार के व्याविाररक पक्ष पर बल चदया और माना चक एक रत्तीभर अभ्यास मनो िंचसद्धान्त सेश्रेेयस्कर ि ै। उन्ोनिें 'उपदेर्ामृत' के रचसद्ध गान में गुरुदेव के उपदेर्ो िंका समािार चकया :

सेवा करो, प्ेरेम करो, दान करो, शुि बनो,
ध्यान करो और करो आत्मसाक्षात्कार ।
लिे बनो, िला करो, सदय बनो और बनो करुणात्मा ।
करो पाला अडहांसा, सत्य और ब्रह्मचयप का।
यही है योग और वेदान्त का सार ।
प्रश्न करो कौन हाँ मैं, जानो अपनी आत्मा को और बनो मुक्त।

तुम हो नही ांयह देह और न हो यह मन, तुम हो अमर आत्मा।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

यात्रा-काल में स्वामी जी को कभी-कभी गुरुदेव की भूचमका अदा करनी पडती थी चजसे उन्ोनिें रत्येक अवसर पर आयोजको िंतथा भक्तो िंके परम सन्तोषरद रूप से सम्पन्न चकया। उदािरणाथश, चर्वानन्द साधना चनलयम, चतरुइिंगोमलै के अध्यक्ष स्वामी रिंकरानन्द ने गुरुदेव से आश्रम में पधारने तथा आश्रमवाचसयो िंको आर्ीत 'द देने की राथशना की थी; चकनु्तु गुरुदेव के चलए चतरुइिंगोमलै जाना सम्भव न था। तथाचप वि आश्रमवाचसयो िंको चनरार् भी करना निी िंिािते थे। अतएव उन्ोनिें स्वामी जी को चनजी रचतचनचध के रूप में उस आदर्श आश्रम को भेजा। वि आश्वस्त थे चक उनका सने्देर् उनके योग्य अचभकताश के िारा चर्वानन्द साधना चनलयम में कायशसाधक रूप में पहुाँि जायेगा। स्वामी जी ने गुरुदेव के आदेर् के अनुसार चनयत थथान को रथथान चकया और विााँ पहुाँिने पर 'साधना चनलयम कैसे गुरुदेव की स्वामी चिदानन्द को अपरोक्ष रेरणा तथा उनके सर्क्त सुझाव का पररणाम था, ऐसे आध्यास्िक केन्द्रा की क्ोकिंर अपररियश आवश्यकता िै और उनका अचितीय मित्त्व क्ा िै तथा गुरुदेव को ऐसी आध्यास्िक सिंथथाओ िंिारा चकस रकार की अद्भुत आध्यास्िक क्रास्न्त लाना अभीष्ट िै' आचद चवषयो िं पर रविन चकया। उन्ोनिें परम चवनम्रतापूवशक श्रोताओ िंको बतलाया चक वि तो अपने चरय गुरुदेव के चनचमत्त मात्र िैं। इस रर्स्त भाव से उन्ोनिें चनलयम में रजत कणी के साथ रस्ताचवत चवद्यालय भवन की आधारचर्ला रखी, बाद में चनलयम के अध्यक्ष स्वामी रिंकरानन्द ने अपनी भावना व्यक्त की चक स्वामी जी की पचवत्र उपस्थथचत तथा उनके रेरणादायी भाषण ने वैसा िी वातावरण उत्पन्न चकया जैसा चक वे गुरुदेव की उपस्थथचत से आर्ा करते थे।

यात्रा-मण्डली के रामेश्वरम् पहुाँिने पर गुरुदेव स्वयिं पचवत्र गिंगाजल को उठा कर ले गये और उसे अचभषेक के रूप में भगवान् चर्व को अचपशत चकया जब चक स्वामी जी ने भगवान् की सु्तुचत में स्तोत्रो िंका पाठ चकया तथा रोमिषशक भजन गाये।

मण्डली ने सागर पार चकया तथा वि श्रीलिंका िीप जा पहुाँिी। गुरुदेव ने कोलम्बो में एक चवर्ाल सावशजचनक सभा को सम्बोचधत चकया। सभा के अनन्तर योगासनो िंका एक िलचित्र चदखलाया गया। स्वामी जी आसनो िंके लाभ का िल-चववरण देने के चलए यिााँ पुनः आगे आये। उन्ोनिें पचश्चमी जगत् के र्ारीररक व्यायामो िंतथा भारतीय योगासनो िंका साम्य तथा वैषम्य चदखलाया और योगासनो िंकी अचधक श्रेष्ठता को चसद्ध चकया। आसन अन्तःस्रावी तथा अरणाल-ग्रस्न्यो िंको कैसे आश्चयशजनक रूप से रभाचवत करते िैं, इसका वणशन चकया। उन्ोनिें और भी सिंकेत चदया चक अवटु, पीयूष तथा रिंकुरूप-ग्रस्न्यो िंकी असम्यक् कायशता को कुछ िुने हुए आसनो िंके क्रम से सुधारा जाता िै।

वापसी यात्रा-काल में चत्रवेन्द्रम में रातःकाल एक सत्सिंग हुआ। स्वयिं गुरुदेव की उपस्थथचत में स्वामी जी ने ध्यान-क्रम का सिंिालन चकया चजसमें भाग लेने वालो िंने उच्चतर ध्यान की मनःस्थथचत में अपने को बलात् आकृष्ट तथा तल्लीन िोते हुए अनुभव चकया। ध्यान-क्रम की समास्प्त पर स्वामी जी ने अन्तरिंग साधना के रिस्य पर रकार् डाला। उन्ोनिें अपने रबोधक भाषण में ध्यान में सफलता के चलए साधको िंको चनम्नांचकत सूत्र अपनाने के चलए किा :

देखो, पर ध्यान न दो।
सुनो, पर कान न दो।
स्पशप करो, पर स्पशपि–ान न हो।
चखो, पर स्वाद न लो।

स्वामी जी ने आगे किा चक इस भावना से साधक सिांसाररक चवषयो िंमें आसक्त निी िंिोता और वि नैः नैः साक्षी-भाव चवकचसत करने में सक्षम िो जाता िै। एक बार साधक के साक्षी की अचभज्ञा राप्त कर लेने पर वि आिचनष्ठ िो जाता िै और अपने चनज-स्वरूप में चनवास करता िै। इस रकार साधक अपने ध्यानाभ्यास में सफलता राप्त करता िै। इस रबोधक रविन को सुन कर गुरुदेव को अत्यचधक रसन्नता हुई तथा उन्िोंने स्वामी जी की उनके इस रिांजल तथा रभावकारी रचतपादन के चलए सरािना की।

इस भाँचत अस्खल भारत-यात्रा भर स्वामी जी अपने कोमल स्वास्थ्य की परवाि न कर तथा अपने रीर पर थोपे गये असाधारण भारी श्रम की पूणश उपेक्षा कर गुरुदेव का आदेर् पालन करने के चलए रत्येक अवसर पर तत्काल बािर आते तथा उमडती हुई भीड को सम्बोचधत करते, शुरुचतमधुर कीतशन करते, योगासनो िंका रदर्शन करते तथा उनके लाभ बतलाते और चजज्ञासुओ िंकी रिंकाओ िंको चवदूररत करते थे। वि रत्येक बार अपने श्रोताओ िंपर सक्त रभाव छोडते थे। उनके रविन, चवर्ेष रूप से ध्यान-चवषय के रविन, श्रोताओ िंको उतृकृष्ट आध्यास्िक कम्पन से पूररत कर उन पर आश्चयशकर रभाव डालते थे।

इस युगान्तरकारी अस्खल भारत-यात्रा की सफलता में स्वामी जी का योगदान चनश्चय िी उच्च कोचट का था। उन्िोंने एक साधारण से यि के रूप में गुरुदेव से अपने को सम्बद्ध चकया तथा लोगो िंके मन पर गुरुतर रभाव डाला। उनकी चवविेनिाक-सक्त, उनका सिजोपलब्ध ज्ञान और सवाशचधक उनकी अतुलनीय सुचिता तथा चवनम्रता ने चवपुल सिंख्या में मिाचवद्यालय के युवक छात्रो िंको अपना चमथ्याचभमान पररत्याग करने तथा गीता के स्वाध्याय को अपनाने, योगासनो िंका अभ्यास करने तथा मानव-जाचत की सेवा तथा ईश्वर की खोज करने के चलए, आिसमपशण करने को रेररत चकया।

इस युगान्तरकारी यात्रा में गुरुदेव एक भीमकाय आध्यास्िक व्यस्क्त के रूप में चदखायी पडे। उन्िोंने लोगो िंको उनकी अकमशण्यता से रबोचधत करने के चलए वेदान्त के आदेर्ो िंकी गरजना की। उनकी उपस्थथचत मात्र चकसी भी व्यस्क्त को पराभूत करने वाली थी। ऐसे आध्यास्िक मिामानव के समुमुख कोई भी अन्य व्यस्क्त नगण्य बन गया िोता, चकन्तु इस समचपशत चर्ष्य की अन्तः आध्यास्िक सम्पचत्त ऐसी थी चक उसने अपनी असाधारण चवनम्रता, अनुकरणीय गुरुभस्क्त, चुम्बिकीय व्यस्क्तत्व तथा सिजोपलब्ध ज्ञान से सभी के हृदय में अपना चवर्ेष थथान बना चलया। वि गुरुदेव की उपस्थथचत में अपने चवषय में जो इतनी रर्िंसा उत्पन्न कर सके वि स्वयिं में इनके उस सवोच्च आध्यास्िक आयाम का मित्तम रमाण िै चजसे वि उस समय तक उपलब्ध कर िुके थे।

चिदानन्द ने भारतवषश के लोगो िंकी यि सेवा गुरु-सेवा-कायश के रूप में की और उन्िोंने आज भी वैसा करना बनाये रखा िै। उन्िोंने आध्यास्िक ज्ञान के रसार से गुरुदेव के एक यि के रूप में व्यविार चकया। अनेक थथानो िंपर लोगो िंने उनके रचत उतना िी रेम तथा समादर रदचर्शत चकया चजतना चक स्वयिं गुरुदेव के रचत उनमें था; चकन्तु वि अपने ऊपर बरसाये गये सम्मान तथा

ररिंसाओ िंसे रिंमित्र भी कलुचषत निी िंहुए। जैसा १९५० में वैसा िी एक पीढ़ी बाद भी उन्िोंनें गुरुदेव के सेवक के रूप में िी भारतवषश के लोगो िंकी सेवा करना जारी रखा िै। उन्िोंनें अपना कोई चनजी नया चसद्धान्त रखने का दावा निी िंचकया। उन्िोंनें गुरुदेव की सिंथथा की सेवा की और
उसी में उन्िें परम सन्तोष था। वास्तव में यि अपने चलए तो केवल चिमालय की चकसी गुिा में
मध्य दीघश-काचलक अखण्ड मौन की कामना अपने हृदय में साँजोये हुए थे। यि अभीष्ट आदर्श इस
युगान्तरकारी यात्रा-काल में आश्रम के अपने एक घचनष्ठ चमत्र के नाम चलखे हुए उनके पत्रो िंमें से एक पत्र में रचतचबस्म्बत िोता िै। उन्िोंनें चलखा: "मैं इन मोटरकारो,िं बडे बाँगलो,िं दुकानो,िं नाट्यर्ालाओ िं तथा चवलासमय वस्त्रधारी लोगो िंसे कुछ ऊब-सा गया हाँ। मैं जीणश-र्ीणश तथा मैली- कुिैली धोती पिन कर आश्रम के चवश्वनाथ-मस्न्दर के पृष्ठभाग के जिंगलो िंमें चविरण करने को
लालाचयत हाँ।" ये अल्प-र्ब्द नाम और यर् की दैवायत्त घडी में स्वामी जी की अनासस्क्त तथा
उनके वैराग्य का रबल रमाण उपस्थथत करते िैं। चनस्सन्देि यि बहुत बडे िो-िल्ले में यात्राएँ करते तथा िलते-चफरते थे, चकन्तु अपने अन्दर की गिराई में यि रर्ान्त एकान्त के अजेय जगत्
में िी चनवास करते रिे। व्यस्ततम कायशक्रम के चदनो िंमें भी यि ध्यान का अपना समय कभी भी िाथ से जाने निी देते थे। अनवरत कायश के बावजूद भी यि अकस्मात् पल मात्र में बाह्य जगत्
का पररत्याग कर सकते थे। चनम्नांचकत र्ब्द, जो स्वामी जी ने यात्रा-काल में अपने एक घचनष्ठ चमत्र को चलखे थे, इनकी अन्तमुशखी अवथथा तथा गम्भीर मौन में आनन्दमय अनुभूचत को व्यक्त
करते िैं। इन्िोंनें चलखा : "कल िमने (धनुष्कोचट से श्रीलिंका जाते हुए) दो घण्टे जलपोत में
व्यतीत चकये।... चवस्तीणश सागर के सम्मोिक जल ने मेरी समूपूणश सत्ता को अपने अचधकार में कर
चलया और मुझे बन्दी बनाये रखा। अबाध र्ास्न्त थी। इस्न्द्रयााँ तथा मन र्ान्त िो गये थे और मुझे
व्यस्क्तत्व से ऊपर उठा कर चकसी ऐसे थथान में फेंक चदया गया था जिााँ परम नीरवता और उस नीरवता से उत्पन्न मूक आनन्द था। सब-कुछ चवसूमृत िो िला था।"

अपनी सत्ता के अन्ततशम रकोष्ठ में इस अचभज्ञा के साथ स्वामी जी गुरुदेव के साथ रिे तथा उन्िोंनें
उनकी तथा भारतवषश और श्री लिंका के भाग्यर्ाली नागररको िंकी उनके मिान् आध्यास्त्मक जागरण
में सेवा की। वि पद्मपत्र में जल की भााँचत व्यविार करते थे। गुरुदेव चर्वानन्द ने भगवान् की
आज्ञा का पालन चकया और उनके समचपशत चर्ष्य चिदानन्द ने गुरुदेव के आदेर्ो िंको कायाशस्न्वत
चकया। दोनो िंने िी भारत के साधारण नागररको िंको वेदो िंके आह्वान को स्मरण कराने तथा उन्िें
पुण्य भूचम के ऋचषयो िंतथा मुचनयो िंके भाग्यर्ाली विंर्ज िोने के नाते धमशरसार के ररिंस्य कायश को
अपने िाथ में लेने के चलए स्मरण कराने को उनके िार खटखटाये।

पांचमअध्याय

नयी दुचनया (अमरीका) में

"वासुदेवेःसवपडमडत स महात्मा सुदुलपिः ।

-सब-कुछ वादेव िी िै. (इस रकार जो ईश्वर को भजता िै) वि मििाा अचत-दुलशभ िै"

(गीता : ७-१९)।

सन् १९५० की युगान्तरकारी अस्खल भारत-यात्रा से स्वामी जी सनातन धमश के एक चवचर्ष्ट सन्देर्विाक के रूप में उभर कर सामने आये। गुरुदेव को, जो आधुचनक जगत् के चलए चिदानन्द के मित्त्व के चवषय में कई बार भचवष्यवाणी कर िुके थे, अपने उस चवश्वास को सत्य चसद्ध िोते हुए पा कर रसन्नता हुई। वि मिपान सके थे चक पाश्चात्य जगत् में भारतवषश का सनातन सन्देर् ले जाने के चलए स्वामी जी िी सवाशचधक उपयुक्त व्यस्क्त िैं। उनके चदव्य जीवन का सुसमिाार चवश्व में तुिचदशक् पहुाँिाने तथा उसके मुख्य व्याख्याता तथा आदर्श िोने के चलए उनके चर्ष्यों िंमें वि िी सवाशचधक उतृकृष्ट रूप से उपयुक्त िैं।

परन्तु स्वामी जी का अपने चलए बहुत िी चभन्न कायशक्रम था। चिमालय की चवरल ऊाँिाइयो िं में अचर्तेतना की आनन्दमय अवथथा में सदा रिने के रयास में वि एकान्त जीवन की ओर नैः-नैः अचधकाचधक स्खिंिे जा रिे थे। इस भााँचत वे गुरुदेव की अनुमचत से सन् १९५८ की ग्रीष्म ऋतु में बदरीनारायण िले गये और विााँ आभ्यन्तररक मौन में कई मिीने रुके। मस्न्दर को र्ीत ऋतु के चलए बन्द िोना था, अतः स्वामी जी चदसम्बर में निी आश्रम वापस आ गये; चकन्तु यि तब भी इतने अन्तमुशखी तथा एकान्तसेवी बने रिे चक गुरुदेव ने इन्िें उत्तरकार्ी जाने का परामर्श चदया तथा काली कमली वाला क्षेत्र के रबन्धक से स्वामी जी को उपयुक्त आवास रदान कराने के चलए उत्तरकार्ी में अपनी सिंथथा के र्ाखा रबन्धक को पत्र चलखने के चलए अनुरोध चकया। गुरुदेव ने यि व्यवथथा ३१ चदसम्बर १९५८ को की; चकन्तु यि मूतशरूप लेने वाली न थी। इस योजना में आकस्स्मक पररवतशन हुआ। स्वामी राधा, चजन्िोंने बैंकूवर में चर्वानन्द-आश्रम थथाचपत कर रखा था, इसी बीि आनन्द-कुटीर पधारी तथा उन्िोंने बैंकूवर-आश्रम के चजज्ञासुओ िंको रेरणा देने तथा उनका पथ-रदर्शन करने के चलए अपने वररष्ठ सिंन्यासी चर्ष्यो िंमें से चकसी एक को विााँ जाने तथा तीन-िार मिा तक रुकने के चलए किने को गुरुदेव से राथशना की। गुरुदेव ने उन्िें आवश्यक व्यवथथा करने का चवश्वास चदलाया। अतः उन्िोंने स्वामी जी के चवषय में अपनी योजना में सुधार कर उन्िें

वैंकूवर भेजने का चविार चकया; क्ोचिंक वि चदव्य जीवन के सवाशचधक सुसिंसूकृत तथा योग्य सने्देर्विाक थे। वि जानते थे चक स्वामी जी के चलए, जो उतृकृष्ट कोचट का आध्यास्कि ज्ञान तथा
सनुतुलन राप्त कर िुके िैं, कनाडा अथवा उत्तरकार्ी से कोई अन्तर नी िंपडता। अतः उन्ोनिें
उनें् अपने पास बुलाया और पचश्चमी गोलाधश में योग तथा वेदान्त के सने्देर् का रिार करने के चलए कनाडा जाने के चलए कािा। ग्वामी जी ने गुरुदेव को चवनम्रतापूवशक स्मरण चदलाया चक उत्तरकार्ी जाने के चलए उनके चलए पिले से िी रबन्ध चकया जा िुका िै; चकनुतु गुरुदेव ने केवल
इतना िी किा- "भगवत्-कायश भला िै।" इस रकार उन्ोनिें स्वामी जी को स्मरण चदलाया चक उनका जन्म एक मित् उदे्देश्य की पूचतश के चलए पूवश तथा पचश्चम के मानवो िंका उत्थान करने के
चलए हुआ िै। स्वामी जी गुरुदेव के समुमुख नतमस्तक हुए और मनिी-मन गुनगुनाया -"रभु! तेरी इच्छा पूणश िो ।" इस भाँचत चनथसूपृि भिाा चजसने एकान्त में अखण्ड ध्यान के चलए अपने को अचपशत कर देने का चनश्चय कर चलया था, अब भगवान् तथा गुरुदेव की इच्छा के पररपालन में
अमरीका की व्यापक यात्रा आरम्भ करने को रेमपूवशक सिमत िो गया।

चकनुतु स्वामी राधा गम्भीर रूप से रुग् िो गयी िंतथा उनकी यात्रा का आवश्यक रबन्ध न कर सकी िंऔर उनें् गुरुदेव की इच्छानुसार आश्रम में समय की रतीक्षा करते रिना पडा। गुरुदेव की एक अन्य भक्त मचिला अमरीका के चमल्वाकी नगर की श्रीमती चवक्टोररया कोयण्डा ने, जो पिले आश्रम आ िुकी थी,िं इसी बीि यि सुना चक स्वामी जी के कनाडा आने की कुछ सम्भावना िै। उन्ोनिें स्वेच्छा से मागश-व्यय भेज चदया तथा गुरुदेव से स्वामी जी को चकसी रकार से भेजने की राथशना की। अतः गुरुदेव ने स्वामी जी को श्रीमती कोयण्डा का चनमिण स्वीकार करने तथा रथम अमरीका और तत्पश्चात् कनाडा जाने का परामर्श चदया। यि दैवकृत व्यवथथा थी जो स्वामी जी को उत्तरकार्ी के थथान पर अमरीका ले गयी। स्वामी जी ने यथासम्भव नूयूनाचतनूयून चनजी सामान तथा गुरुदेव के उतृकृष्टतम आर्ीवाशद के साथ ३० अकूतूबर को आश्रम से रथथान चकया। सिंयुक्त राज्य अमरीका के चलए चवदा िोने की पूवश-सन्ध्या ३१ अकूतूबर को नयी चदल्ली के कान्स्टीटूयूर्न क्लब िाल में स्वामी जी ने एक सावशजचनक सभा को सम्बोचधत चकया। पाश्चात्य देर्ो िं के नाम चर्वानन्द के सने्देर् की िोिाश करते हुए उन्ोनिें पुलचकत स्वर से भाषण समाप्त चकया-"िे मानव! आप तत्त्वतः चदव्य िैं। ईश्वर-परायणता आपमें अन्तचवशष्ट िै। आप इस सिंसार के नी िंिैं, मृण्मय नी िंिैं। आप सस्च्चदानन्द के रकार् की दीस्प्त से पूणश भिा िैं। विी आपका परम स्रोत िै, आपका अन्तरतम सत्त्व िै और आपका रर्स्य िरम लक्ष्य िै।"

स्वामी जी ने २ नवम्बर १९५९ को चदल्ली से वायुयान िारा अमरीका को रथथान चकया। मागश में वि केयरो में रुके जिाँ चदव्य जीवन सिंघ की थथानीय र्ाखा के मुिम्मद अबुल्ला अल मेंिदी ने उनका स्वागत चकया। इसी भाँचत इस्तानबुल में पत्रकार अलररज़ा आचकरिं ने इनका स्वागत चकया। इस्तानबुल के अचधकािंर् समािारपत्रो िंने इनके आगमन का व्यापक रिार चकया। स्वामी जी से पत्रकारो िंतथा तुकी के एक रमुख समािार चफल्म सिंथथान एडीसी ने भेंटवाताश की। यिाँ इन्ोनिें इस्तानबुल उच्च चवद्यालय में योगासनो िंका रदर्शन चकया तथा इस यात्रा का अपना रथम सावशजचनक भाषण चदया। यिाँ इन्ोनिें छात्रो िंको आदर्श जीवन-यापन करने तथा चनदोष िररत्र चनमाशण करने की रेरणा दी। स्वामी जी ने नूयूयाकश जाते हुए मागश में रोम, डसेल्डोफश तथा लन्दन में चवराम चकया। जब यि नूयूयाकश पहुँिे तो इन्ोनिें स्वामी चवष्णुदेवानन्द को िवाई पत्तन पर रतीक्षा करते हुए देखा। गुरुदेव चर्वानन्द के चर्ष्य तथा इनके गुरुभाई स्वामी चवष्णु ने िठयोग के रिार के चलए अमरीका के चवचभन्न भागो िंमें चर्वानन्द योग-वेदान्त-केन्द्र खोल रखे िैं। स्वामी चिदानन्द जी मिाराज ने काचनशर् आर्म्श िोटल के योग-वेदान्त-केन्द्र में रुक कर तीन रविनो िंकी सिंखला में

१८, २० तथा २१ तारीख को क्रमर: 'राजयोग', 'चिन्दू-दर्शन में माया की सिंकल्पना' तथा 'कमश और पुनजशन्म' चवषयो िपर रविन चकये। यि श्रोताओ िके चलए एक असाधारण अनुभव था। जब वे सर्त्क वास्मता तथा तकश के चर्खर पर पहुाँ रिे थे उसी समय उन्ोनिें श्रद्धेय स्वामी जी िारा रजचनत अचतबृित् आध्यास्िक स्र्त्क अनुभव की चजसने एक तकाशतीत ढिंग से उनकी समूपूणश सत्ता पर अचधकार कर चलया। यि श्रोताओ िमें से रत्येक के चलए 'मैं आया, मैंने देखा, मैं चवचजत हुआ' का रोमिांकिारी उदिारण था।

स्वामी जी ने २६ नवम्बर को नूयूयाकश से वायुयान िारा रथथान चकया और उसी चदन चमल्वाकी (चवसकास्िन) पहुाँ गये जिाँ श्रीमती तथा श्रीमान् कोयण्डा ने उनका िाचदशक स्वागत चकया। इस मिान् भारतीय योगी के आगमन पर चमल्वाकी के दैचनक ने समिाार रकाचर्त चकया चक चर्वानन्द का आध्यास्िक सनेदेर्विाक योग तथा वेदान्त के रिार के चलए अमरीका पहुाँ गया िै।

स्वामी जी २ चदसम्बर १९५९ को अमरीका में रथम बार दूरदर्शन-ति पर आये और उसके र्ीघ्र बाद िी उन्ोनिें आकार्वाणी पर 'चदव्य जीवन के सुसमिाार' चवषय पर भाषण चदया। उन्ोनिें बताया चक सत्य, अििंसा तथा र्ुचिता धमश तथा आध्यास्िकता के सार िैं। वे योग तथा वेदान्त के भी सार िैं। चनथस्वाथश सेवा, वैश्व रेम, उदारता, र्ुचिता, उपासना तथा ध्यान अपने-आपसे तथा र्ीघ्र रूप से रबोध तथा आिसाक्षात्कार राप्त करायेंगे। इस रकार उन्ोनिें अमरीकावाचसयो िको गुरुदेव चर्वानन्द के सुसमिाार के चवषय में बतलाया और अपने व्यस्क्तगत सम्पकश में अपनी गम्भीर चनष्कपटता, परम र्ुचिता तथा गिरी चवनम्रता से उन्ें रभाचवत चकया।

स्वामी जी ने ६ चदसम्बर को चमल्वाकी के योग-वेदान्त-केन्द्र की रथम सभा में भाषण चदया और योग के व्याविाररक रचर्क्षण के चलए लगभग सौ चजज्ञासुओ िको समाकृष्ट चकया। उन्ोनिें १४ चदसम्बर को एक सिंचक्षप्त पाठ्यक्रम आरम्भ चकया। यि सूयशनमस्कार, योगासन, राणायाम तथा ध्यान का दैचनक वगश िलाते थे। इन्ोनिें इन वगों की पाठ्यपुस्तक के रूप में गुरुदेव की अाँगरेजी पुस्तक 'राजयोग के िौदि पाठ' को अपनाया और यि अपने चनजी चवलक्षण रूप से उन्नतकारी तथा अरचतम र्ैली में पुस्तक के भावो िको समझाते थे। यि ६०७, कालेज ऐचवनूयू में श्रीमती तथा श्रीमान् कोयण्डा के चनवास थथान पर भी ध्यान का दैचनक वगश िलाते थे। स्वामी जी की पचवत्र उपस्थथचत से आचतथेय अवणशनीय आनन्द से पररपूणश थे। चमल्वाकी में उनके रविनो िके चवषय थे-'ईसाइयो िके चलए योग', 'योग तथा आिोत्थान', 'नव-जीवन' तथा 'ध्यानाभ्यास' । चकवाचनस क्लब तथा साउथ चमल्वाकी पस्ब्लक सूकूल में इन्ोनिें 'योग में मनोचवज्ञान', 'जीवन के रचत चिन्दुओ िका दृचष्टकोण', 'वैचदक सिंकल्पनाएाँ तथा आदर्श' तथा 'नवयुवको िके चलए मित्त्वपूणश आदर्श' चवषयो िपर भाषण चदये। इन सभी भाषणो िमें न तो बौस्द्धक इन्द्रजाल था और न िी रिस्यवाद की दुबोधता। वे इनके चनजी वैयस्क्तक अनुभवो िपर आधाररत तथा उनके िारा रमाचणत थे तथा उनमें बहुत िी व्याविाररक तथा सीधे-सादे चनरूपण तथा अनुदेर् समाचवष्ट थे। चमल्वाकी के अपने आवास-काल में यि श्रीमती चवक्टोररया की बिन श्रीमती वीरा बिश के घर गये थे। विाँ उन्ोनिें ३६२०-ई, अण्डरवुड ऐचवनूयू, कुडिाी, चवसकास्िन में दो चवर्ेष सत्सिंगो िमें अपना धमोपदेर् चदया। पत्रकार तथा लेस्खका डोरोथी मैडल बाद के अपने अतीत के मधुर चदनो िके सिंस्मरणो िमें चलखती िैं : "अपने पारम्पररक पररधान में यि कृर्काय सिंन्यासी कोयण्डा की बैठक में सन्तोषपूवशक बैठे हुए चनरचभमान रूप से रश्नो िके उत्तर देते थे। स्वामी जी ने बताया चक अब योग में गोपनीयता की आवश्यकता निी िरिी। योग धमश निी िै। यि भगवान् के चनकटतर जाने की एक रचवचध िै।"

जनवरी ११६० के मध्य में स्वामी जी चमचन्नमापोचलस गये जिााँ इन्ोंने 'भारत की आध्यास्िक सिंसूकृचत तथा आधुचनक मानव के जीवन में उसकी रासिंचगकता' पर पााँ भाषण चदये । भाषणो िं के इस कायशक्रम की व्यवथथा नवयुवक चक्रचश्चयन सिंघ ने की थी तथा इनमें लोगो िंकी उपस्थथचत अच्छी रिी।

राच्य-पाश्चात्य सिांसूकृचतक केन्द्र के डा. जूचडथ टाइबगश के अनुरोध पर स्वामी जी ७ फरवरी १९६० को लास ऐचिंजलेस गये और विााँ एक मास तक रुके। इस अवचध में उन्ोंने अमरीकावाचसयो िं पर अत्यचधक आध्यास्िक रभाव डाला। राच्य-पाश्चात्य सिांसूकृचतक केन्द्र, ११६२, नाथश स्टरीट, एणूडूस पी. एल. में 'योग-चवषयक क्ा और क्ो िंका रश्न' पर उनके भाषण ने अत्यचधक िलिल तथा आध्यास्िक उद्बोधन उत्पन्न चकया तथा अनेक रचतचष्ठत तथा चविान् लोगो िंने यि स्वीकार चकया चक स्वामी जी एक असाधारण आध्यास्िक व्यस्क्त िैं। इसी अवचध में एक सचे्चे चजज्ञासु पीटर मन ने जो स्वामी जी से चमले, चलखा- 'भारत से यिााँ आये हुए स्वामी चिदानन्द पर दृचष्टपात करते िी आप यि समझ जायेंगे चक वि कोई साधारण व्यस्क्त निी िैं, चकन्तु यि चविार उनके काषाय रिंग के सिंन्यासी पररधान अथवा उनके बारीक कटे केर् के कारण निी िंउत्पन्न िोता िै और न उनके दुष्कर पद्मासन में बैठने के कारण उत्पन्न िोता िै वरन् यि चनश्चय िी उनके नेत्रो िंके-चवर्ाल, श्यामल तथा िमकीले नेत्रो िंके कारण उत्पन्न िोता िै। उनमें गम्भीर रिस्यमयी गम्भीरता रचतचबस्म्बत िोती िै।" लास ऍचजलेस के अपने रविनो िंमें स्वामी जी ने अपना मत व्यक्त चकया चक योग धमश से परे िै और जो भी ईश्वर में चवश्वास करता िै उसे वि राप्य िै। उन चदनो िंस्वामी जी का नाम रत्येक व्यस्क्त के ओष्ठो िंपर था। २२ फरवरी को 'लास ऐचिंजलेस इग्जैचमनर' समािार-पत्र ने अपने सोमवार के अिंक में स्वामी जी की वास्मता की रर्िंसा करते हुए सिंवाद रकाचर्त चकया। उसने स्वामी जी की व्याख्या के अद्भुत रभाव पर चटप्पणी की : "चजस समय आप राच्य-पाश्चात्य सिांसूकृचतक केन्द्र में स्वामी चिदानन्द से वाताश करते िैं, वि योग-चवषयक क्ा और क्ो िंके रश्न का रिस्य उद्घाचटत करते िैं।"

श्रीमती मेटा थर ओल्सन,जो स्वामी चर्वानन्द को पिले से िी जानती थी चिदानन्द से इतना अचधक रभाचवत हुई चक उन्ोंने गुरुदेव को चलखा: "मैं आपको यि भी बतला देना िािती हाँ चक के चनथ तथा मैं स्वामी चिदानन्द से अत्यचधक सानुकू ल रूप से रभाचवत हुई िैं। िम अनुभव करती िैं चक यचद आप स्वयिं इस समय अमरीका निीं आ सके तो आपने अपना रचतचनचधत्व करने के चलए यथासिंभव उतकृ ष्ट तम सिंदेर्विाक भेजा। जब कोई भी व्यस्क्त इस व्यस्क्त के बाह् पररधान के निी डिाँकतिै तो वि यिााँ अनेक सदगुणोिं से सम्पन्न एक बहुत िी साधु आिा के दर्शन करता िै। इनमें रभु के रचत चकतनी अगाध भस्क्त िै और चकतने चनष्कपट िैं यि। मैंने इन्ें अपने घर में ध्यान से देखा तथा इनके भाषण को सुनने पर यि अनुभव चकया चक यि अपने चरय गुरुदेव के रचतचबम्ब िैं।...उनसे पररचित िोना चनश्चय िी बडे सद्भाग्य की बात िै। मैं ठीक-ठीक इनकी रर्िंसा निीं कर सकती ।... इन्ें यि पता निीं िै चक यि सब सुन्दर बातें आपको बतलाने के चलए पत्र चलख रिी हाँ। यि इतने चवनम्र तथा भाग्यर्ाली आिा िै चक मुझे चवश्वास िै चक यि आपको स्वयिं कभी निीं यथासम्भत बतला सकें गे।"

स्वामी जी लास ऍचजलेस के अपने आवास-काल में माउण्ट वाचर्िंगटन में सेल्फ ररअलाइजेर्न फेलोचर्प (Self Realisation Fellowship) का रमुखालय भी देखने गये जिााँ यि सेल्फ ररअ ररअलाइजेर्न फे लोचर्प की अध्यक्षा सिंचघनी दया माता के अचतचथ थे। सिंचघनी दया परमिंस योगानन्द की, जो अमरीका में चक्रयायोग को लोकचरय बनाने में बहुत सफल रिे थे, चर्ष्या िैं। वि स्वामी जी के चदव्य व्यस्क्तत्व से इतना अचधक रभाचवत हुई चक गुरुदेव चर्वानन्द को

चलखने को रेररत हुईं: "आपके चनष्ठावान् िले श्री स्वामी चिदानन्द जी मिाराज िमारे यिााँ भी आये िैं और इस समय एंचिनटास में िमारे आश्रम में कुछ चदनो िंके चलए ठिरे हुए िैं। िम उन्ें अपने मध्य पा कर अत्यचधक रसन्न िैं; क्ोचिंक उनकी चवनम्रता, सरलता तथा सुचिता ने िमारे हृदय को जीत चलया िै। वि िम लोगो िंतक ऋचषकेर् के गिंगा-तट से चदव्य जीवन का नवीन रेरणारद सिंस्पर्श भी लाये िैं।"

स्वामी जी लास ऍंचजलेस में लगभग एक मिा तक योग के वगों का सिंिलिन करते तथा योग तथा वेदान्त पर भाषण देते रिे थे। तत्पश्चात् वि सैन फ्ासि्स्को गये जिााँ उन्ोिंने एक मिा चदव्य जीवन के सन्देर् के रिार में लगाया। इन औपिाररक कायशक्रमो िंके अचतररक्त, स्वामी जी से बहुत बडी सिंख्या में लोगो िंने समालाप चकया चजसका उन पर अचमट रभाव पडा। सैन फ्ासि्स्को के उनके आवास-काल की ऐसी िी एक वैयस्क्तक भेंट थम्रण िै जब वि एक जमशन मचिला माता पौला कोनेली को, जो एक उतकृष्ट् भक्त तथा चनष्क्पट साधक थी,िं दर्शन देने चलए जेर्म् टाउन गये। यि बहुत िी रीक चमलन था। इधर पौला माता उनके सौजन्य से सम्भ्रान्त तथा अत्यचधक रभाचवत अनुभव कर रिी थी िंऔर उधर स्वामी जी उनसे पूवश-पररचित की भााँचत परम चवनीत भाव तथा रसन्न चित्त से चमल रिे थे तथा उनके साथ बहुत िी स्वाभाचवक तथा सिज व्यविार कर रिे थे। इस अल्पकाचलक भेंट का रभाव यि कालान्तर में स्मरणीय बनना था। पौला माता ने अपने को सेवा तथा साधना के चलए पूणशतया समचपशत कर चदया। उन्ोिंने रत्यक्ष अनुभव चकया चक जब क्ेषेत्र तैयार िोता िै िो तो बीज भी तैयार िोता िै और गुरु उपयुक्त समय पर व्यस्क्त की दिेली पर आ जाता िै।

स्वामी जी ने १३ अरैल को सैन फ्ासि्स्को से रथथान चकया और अल्पकाल तक पोटशलैण्ड में ठिरने के पश्चात् वि मास्ण्टरयल पहुाँचे। मास्ण्टरयल में उन्ोिंने चर्वानन्द योग-वेदान्त-केन्द्र, २०२९ सैट्ैनली स्टरीट के चनदेर्क स्वामी चवषुणुदेवानन्द की अनुपस्थथचत में केन्द्र की रवृचत्तयो िंका सिंिलिन चकया। यिााँ उन्ोिंने योग तथा भारतीय सिंसूकृचत के चवचभन्न अिंगो िंपर शिंखलाबद्ध भाषण चदया। मास्ण्टरयल से १९ मई को उन्ोिंने वैनूकूवर बी. सी. को रथथान चकया जिााँ स्वामी राधा (श्रीमती िेल्मिन) तथा अन्य भक्तो िंने उनका िाचदशक स्वागत चकया। यिााँ चर्वानन्दाश्रम, साउथ बनशबाई के उपनगर के ६५९१ मालशबरो ऐचवनूयू में उन्ोिंने ध्यान के चनयचमत वगश िलाये तथा योग के चवचभन्न अिंगो िंपर शिंखलाबद्ध रविन चकया। उन्ोिंने पतिंजचल के योगसूत्र, भगवद्गीता तथा उपचनषद् की अपने अनुभव की दृचष्ट से चर्ाा दी। उन्ोिंने कनाडा के इस पचश्चमी भाग में मध्य अगस्त तक गुरुदेव की सिंथथा की सेवा की और तत्पश्चात् वि अपने गुरुदेव के अनुदेर् से अगस्त के तृतीय तथा ितुथश सप्तिा में अपने चनजी उद्देश्य से पचश्चमी जमशनी गये।

अगस्त मिा के अन्त में वि जमशनी से रथथान कर लास ऐचिंजलेस पहुाँगये। उन्ोिंने िालीवुड में राच्य-पाश्चात्य सिंसूकृचतक केन्द्र के तत्त्वावधान में 'योग के मूलतत्त्व' तथा 'जीवन की आध्यास्कि मान्यताएाँ' चवषय पर शिंखलाबद्ध दर् भाषण चदये । तत्पश्चात् अल्पकाचलक चवश्राम के चलए वि वैंकूवर िले गये। स्वामी जी की ख्याचत अब तक इस चवस्तीणश देर् के एक छोर से दूसरे छोर तक फैल गयी थी। एचर्यन अध्ययन के अमरीकी चवद्यापीठ ने उन्ें एक अचतचथ राध्यापक के रूप में शिंखलाबद्ध भाषण देने के चलए सैन फ्ासि्स्को आने के चलए आमस्ति चकया। अतएव वि बैंकूवर से सैन फ्ासि्स्को िले गये और विााँ उन्ोिंने एचर्यन अध्ययन के अमरीकी चवद्यापीठ के छात्रो िंको वेदान्त तथा भारतीय कुल-परम्परा पर व्याख्यान देते हुए िार मास व्यतीत चकये। सैन फ्ासि्स्को में अपने इस िार मिा के आवास की अवचध में उन्ोिंने वगों के सिंिलिन तथा भाषण

के बहुत ि उपयोगी तथा दीघशकालीन कायशक्रम रखे। वि सप्तािान्त चबताने के चलए परम भक्त पौला माता के अचतचथ के रूप में कभी-कभी जेर्म् टाउन जाया करते थे। जेर्म् टाउन में ऐसे
अभ्यागमनो िंके समय पौला माता का आवास एक आश्रम का रूप ले लेता तथा आध्यास्कि स्पन्दनो िंसे भर जाता था। स्वामी जी यिााँ अपना समूपूणश समय रविनो,ि सत्सिंगो,ि सामूचिक ध्यान, योगासनो िंके वगश तथा बहुसिंख्यक चजज्ञासुओ िंके सने्दि-चनवारण के साक्षात्कारो िंमें लगाया करते थे। उन्ोनिें दो बार थथानीय नगर-भवन में भाषण चदया। अचधक रिर के चबना भी भवन चवपुल
श्रोताओ िंसे आश्चयशकर रूप से भर जाता था। विााँ पर एकत्र िोने वाले चजज्ञासुओ िंके चलए एक
भगव, साक्षात्कार-राप्त आिा के सम्पकश के माध्यम से आध्यास्कि स्पन्दन का यि अनूठा अनुभव
था। स्वामी जी अपनी र्लीनता तथा ज्ञान के कारण उन सबके रेम-पात्र बन गये।

स्वामी जी ने इन सत्सिंगो िंका आयोजन करने वाली ब्रह्माण्डीय योजना का उल्लेख करते हुए
पौला माता को चलखा: “यचद उस (चवचध) की इच्छा तथा आपके रायः अनवरत स्मरण के पुण्य
का बल न िोता तो पचश्चमी जगत् में आने पर मैं रत्येक बार ि जेर्म् टाउन बारम्बार आने को
क्ोकिंर चववर् िोता?" स्वामी जी के रचत माता पौला की भस्क्त की गाथा चनस्सने्दि अचितीय तथा
रोमािंकािरी िै। उन पर स्वामी जी का ऐसा भारी रभाव पडा चक बाद में स्वामी जी के अमरीका
से रथथान करने पर उन्ोनिें अपनी समूपूणश सम्पचत्त बिे डाली तथा समस्त सिंसाररक सुखो िंको
चतलािंजचल दे कर चर्वानन्दाश्रम आ गथी। विााँ उन्ोनिें परमाध्यक्ष के कुटीर के पास 'ॐ कुटीर'
का चनमाशण करवा कर अपना सारा समय परुओ िंकी सेवा तथा ध्यान और राथशना में व्यतीत चकया।
अपने अस्न्तम चदनो िंमें उनकी एकमात्र इच्छा यि थी चक मृतूयूपरान्त उनके र्व को स्वयिं स्वामी जी
गिंगा में चवसचजशत करें। स्वामी जी ने रोमािंकािरी पररस्थथचतयो िंमें उनकी इस अस्न्तम इच्छा को पूणश
चकया। इस भााँचत िो पूवश में िो िंया पचश्चम में, वि केवल औपिाररक कायशक्रमो िंमें ि निीं बस्ल्क
चवचर्ष्ट भक्तो िंतथा चजज्ञासुओ िंमें गिरी चदलिस्पी लेते थे। स्वामी जी ने सैन फ्ास्स्को से लास
ऐिंजलेस को रथथान चकया। तत्पश्चात् वि सन् १९६१ के रारम्भ में िास्टेन (टेक्साज़), चमल्वाकी
(चवस्कास्नि) तथा कुछ अन्य नगरो िंमें गये तथा इन सभी थथानो िंमें उन्ोनिें गुरुदेव के सने्देर् का
रिार चकया। तब वि चर्वानन्द योग-वेदान्त-केन्द्र में अल्पकाचलक चनवास के चलए मास्ण्टरयल गये।
स्वामी जी ने उत्तरी अमरीका में लगभग डेढ़ वषश तक योग-वेदान्त की चर्क्षा दी। तत्पश्चात् मािश
१९६१ में वे मास्ण्टरयल से रथथान कर नूयूयाकश और लन्दन में से रत्येक में एक सप्ताि रुके। लन्दन
से उन्ोनिें अरैल के रथम सप्ताि में स्स्वट्ज़रलैण्ड को रथथान चकया। यिााँ पर उन्ोनिें एक माि
तक रविन चकया तथा सेण्ट गाल के चनकट टरोजन में ईस्टर आध्यास्कि साधना-चर्चवर का
सिंिालन चकया।

तत्पश्चात् उन्ोनिें जूयूररक, बैसेल तथा बनश में सावशजचनक भाषण चदये। स्वामी जी कैथोचलक पुजारी सन्त पैडेरचपयो िंके दर्शन करने के चलए स्स्वट्जरलैण्ड से इटली गये। यि ईसाई मिायश फ्ास्स्किन सन्त थे। इनके पााँि-दोनो ििाथो,ि दोनो िंपैरो िंतथा र्रीर के एक ओर क्षत-चिह्न थे। उन्ोनिें ईसा की पीडाओ िंसे अपना तादाम्य चकया था; उसी से इनके र्रीर में पााँि क्षित-चिह्न िो गये। जब स्वामी जी ने मिायश का दर्शन चकया तब वि पयाशप्त वृद्ध िो िुके थे, सत्तर-अस्सी वषश की आयु के थे। इन वररष्ठ सन्त ने नवयुवक भारतीय स्वामी के रचत चर्ष्टता चदखलायी। स्वामी जी ने उनसे उनके आर्ीवाशद की यािना की तथा उनकी इस अल्पकाचलक सिंगचत से अत्यचधक सन्तोष अनुभव चकया। भागवत पुरुष अपने मन तथा र्रीर को भगवान् में पूणशतया चवलीन रखते हुए इसी रकार एक-दूसरे की कदर करते तथा एक-दूसरे को उद्बुद्ध करते िैं। इटली से स्वामी जी लन्दन

गये। तत्पश्चात् वि पुनः नूयूयाकश गये जिाँ कुछ चदनो िंतक चवराम करने के पश्चात् उन्‍ोनिें दचक्षणी अमरीका के चलए रथथान चकया।

वि २१ मई १९६१ को माणे्टेवीचडयो पहुाँ तथा २७ जुलाई को उन्‍ोनिें चदव्य जीवन सिंघ की माणे्टेवीचडयो श्‍ाखा का उद्‍घाटन चकया। यिाँ िार मिीने रुक कर उन्‍ोनिें सामूचिक ध्यान-सचित योग के चवचभन्न पिलुओ िंपर चनयचमत वगश का सिंालिन चकया। गुरुदेव के परम भक्त डा. ओलैण्डो पी. डाल स्वामी जी की दचक्षणी अमरीका की यात्रा के रमुख आयोजक थे। माणे्टेवीचडयो में स्वामी जी के आवास-काल में उरुगुई के तत्कालीन उप-चवदेर्मिी डा. मैचटयो जे. एम. मैगररनोस स्वामी जी की आध्यास्‍कि रभा से अत्यचधक रभाचवत हुए। उन्‍ोनिें उनकी चर्चाओ िंमें गिन रुचि ली। स्वामी जी की उरुगुई की यात्रा ३० चसतम्बर १९६१ को समाप्त हुई। माणे्टेवीचडयो चर्वानन्द-केन्द्र के चजज्ञासुओ िंतथा छात्रो िंने उन्‍ें हृदयस्पर्‍ी चवदायी दी। अलेक्‍जेण्डर एरु तथा उनके चमत्रो िंके आमिण पर स्वामी जी बूयूचनस आयसश में योग के वगश तथा आध्यास्‍कि रविन के पिंि-चिदवसीय कायशक्रम के चलए अजेन्टाइना गये।

वि ५ अकूतूबर १९६१ को वायुयान िारा अमरीका वापस लौटे तथा ६ तारीख को िास्टन (टेक्साज़) में उतरे। यिाँ उन्‍ोनिें तीन चदन तक सत्सिंग िलाया। श्री वैरी चटिंकलर तथा रोफेसर अनेस्ट वुड ने भाषण के कायशक्रमो िंका आयोजन चकया तथा स्वामी जी के आचतथेय रिे। तत्पश्चात् स्वामी जी सैन ऐन्टोचनयो गये जिाँ उन्‍ोनिें रख्यात राकृचतक स्वास्थ्य-चवज्ञानी डा. िबशटश रे्ले्टेन से भेंट की। तत्पश्चात् वि राच्य-पाश्चात्य सिंसूकृचतक केन्द्र के डा. जूडी टाइबगश के अचतचथ के रूप में कैलीफोचनशया गये। मैररयो, ब्रोडाइन, टाम डैनेली, इना सेचलन, रूस, श्रदे्धेय रेमर, श्रदे्धेय गौन्ट, गुनर वाल्टर आचद अनेक सचे्चे चजज्ञासु तथा पुराने भक्त स्वामी जी से चमलने तथा उनकी ज्ञानमयी वाणी सुनने के चलए लास ऐचिंजलेस में एकचत्रत हुए। स्वामी जी ने एक राथशना-सभा में अपने उन्नतकारी भाषण से साधको िंको रेररत चकया तथा ध्यान का एक वगश िलाया।

लास ऐचिंजलेस से वि २० अकूतूबर १९६१ को सैन फ्‍ांचिसस्को पहुाँ और अगले चदन माता पौला कानेली तथा उनकी आध्यास्‍कि गोष्ठी को दर्शन देने तथा विाँ के चजज्ञासुओ िंको अपना आर्‍ीवाशद देने के चलए जेर्म् टाउन गये। माता पौलिां की अनवरत राथशना िी उन्‍ें उस थथान पर िर्खिीं लायी। जैसा चक स्वामी जी ने चजस रिस्यमय ढिंग से उनकी अकचथत चकनुतु भस्‍क्तमयी राथशना को रायः स्वीकार करते थे उसके चवषय में बतलाते हुए उन्‍ोनिें बाद में उन्‍ें चलखा : "मैं आपके पास िी हाँ। मैं अनाचद-अनन्त-अन्तयाशमी के अिंग के रूप में, चजससे मैं अिरूप में अचभन्न हाँ, आपके अन्दर चनवास करता हाँ।" मुक्त वातावरण में धूप वाले र्त्कालीन आकार् के निी उन्‍ोनिें भक्तो िंको चिन्तनर्‍ील मनोदर्‍ा से आपूररत कर चदया तथा उन्‍ें अपनी राथशना के िारा आर्‍ीवाशद चदया। सैन फ्‍ांचिसस्को वापस आ कर स्वामी जी ने विाँ के मेटाचफचज़कल टाउन िाल में चदव्य जीवन सिंघ के भक्तो िंको पुनः सम्बोचधत चकया तथा कुछ वैयस्‍क्तक साक्षात्कारो िंमें छात्रो िंतथा चजज्ञासुओ िंकी र्‍िंकाओ िंको स्पष्ट चकया।

सैन फ्‍ांचिसस्को से उन्‍ोनिें पोटशलैण्ड (ओरेगन) के चलए रथथान चकया जिाँ वि वेदान्त सोसायटी के श्री स्वामी अरे्षानन्द जी से चमले और तत्पश्चात् बैंकूवर िले गये। बैंकूवर में स्वामी राधा, चबल ईलसश, जो, िेल, कैरोल, श्रदे्धेय रीस्टली, फे्ड बै्लैक आचद भक्त एक रचववार को एकचत्रत हुए और ६ नवम्बर १९६१ को स्वामी जी के आर्‍ीवाशदिाक रविन में अन्तचवशष्ट ज्ञान-चनझशर में गिराई से पान चकया। स्वामी जी बैंकूवर से इवोवा गये जिाँ वि डा. आर. िोलचजगर के

अचतचथ के रूप में रुके और एक राथशना-सभा में भक्तो िंको अनुराचणत चकया। इवोवा से उन्ोनिें चमन्ेनेपोचलस को रथथान चकया। विाँ दो सत्सिंगो िंमें सस्म्मचलत हुए। तत्पश्चात् वि १० नवम्बर को
चमल्वाकी गये जिाँ वि श्री जोसेफ तथा श्रीमती चवक्टोररया कोयण्डा के अचतचथ के रूप में िोदि चदन ठिरे। यिाँ वि ऋचषकेर् आश्रम के स्वामी चवरिमानन्द से चमले जो उस समय चमल्वाकी आये
हुए थे। उन्ोनिें २३ नवम्बर १९६१ को चमल्वाकी के भक्तो िंसे चवदा ली और नूयूयाकश के चलए रथथान चकया जिाँ वि ािर चदन रुके तथा योग-वेदान्त-केन्द्र के छात्रो िंको सम्बोचधत चकया। वि अमरीका
से २७ नवम्बर को चवदा िो कर मिंचटरयल पहुाँि जिाँ वि स्वामी चवषुणुदेवानन्द से चमले। यिाँ उन्ोनिें ३० नवम्बर तथा १ चदसम्बर को दो सावशजचनक सभाओ िंमें भाषण चदये।

स्वामी जी ने १ चदसम्बर १९६१ को नयी दुचनया (अमरीका) से रथथान चकया और अब वि गृिाचभमुख हुए। रत्यागमन के समय वि पैररस में रुके तथा विाँ से लगभग ५०० मील दूर स्थथत लाउडेंस के पचवत्र देवायतन की यात्रा की। लाउडेंस में एक िमत्कारक जलस्रोत िै चजसमें रोगमुस्क्त के चलए गोता लगाने के चलए बहुत बडी सिंख्या में चवकलािंग व्यस्क्त जाते िैं। यि देवायतन मररयम माता के अभ्यागमन से पुण्य तीथश बन गया िै। उनके पचवत्र अभ्यागमन की सूमृचत में विाँ माता मररयम की एक रचतमा िै। स्वामी जी ने सुरचसद्ध जल में पुण्य स्नान चकया और तत्पश्चात् जमशनी को और बाद में स्स्वट्ज़रलैण्ड को रथथान चकया।

स्वामी जी १५ चदसम्बर को जूयूररक से रथथान कर असीसी की पचवत्र भूचम की तीथशयात्रा को गये जिाँ लगभग १८०० वषश पूवश सन्त फ्ांचिसस का जन्म हुआ था। जैसा चक इससे पूवशतर बतलाया जा िुका िै चक स्वामी जी अपने बालकपन से िी सन्त फ्ांचिसस के जीवन से अत्यचधक रभाचवत थे और उनके अपने जीवन की तुलना इस मिान् ईसाई सन्त के जीवन से युस्क्तयुक्त रूप से की जा सकती िै। वसुतुतः पाश्चात्य देर्ो िंमें कुछ श्रद्धालु जन इन्ें भारत का सन्त फ्ांचिसस मानते िैं। उन्ोनिें इस मिान् सन्त की जन्मभूचम के दर्शन करने को अपना एक पुण्य सद्भाग्य माना और उस पावन केन्द्र में अपने को पचवत्रीभूत अनुभव चकया। तत्पश्चात् वि पैडेरचपयो को एक बार पुनः अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत करने के चलए सैन चगयोवन्नी रोटोण्डो गये।

उसके बाद स्वामी जी यरुर्लेम तथा बेतलिम'[12] की पुण्य भूचम में गये जिाँ उन्ोनिें २५ चदसम्बर १९६१ को पचवत्र ख्रीस्त-जन्मोत्सव मनाया तथा पाश्चात्य देर्ो िंके उनके बच्चो िंमें अपना चनयत कायश पूणश करने के चलए मुस्क्तदाता रभु को धन्यवाद चदया।

स्वामी जी की पचश्चमी गोलाधश की रथम यात्रा समाप्त हुई। वि यरुर्लेम से केयरो गये और विाँ से वायुयान िारा १९६१ के अस्न्तम चदनो िंमें भारत आये। वि ३० चदसम्बर को मुम्बई पहुाँि और अल्पकाचलक चवश्राम के चलए कुछ समय के चलए दचक्षण भारत िले गये। वि २३ जनवरी १९६२ को आश्रम पहुाँि और सीधे श्री गुरुदेव के कुटीर में गये और उनके िरणो िंमें अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत की।

उनका समूपूणश पररभ्रमण पूजनीय गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द तथा उनके चदव्य उद्देदेश्य की सेवा के रूप में था। दो वषश से अचधक समय पूवश उन्ोनिें चवदा लेने के रूप में पचवत्र िरणो िंको स्पर्श चकया था। कायश समाप्त िोने पर वि पुन: उन्ी िंपचवत्र िरणो िंकी र्रण में वापस आ गये। उन्ोनिें जो

---

12 यिाँ पर दयालु स्वामी जी ने एक लडके के चलए राथशना की चजसकी चनरामााँ नेअपने सेवेररारी पुत्र में कुछ पररवतशन लाने के चलए उनसे अनुरोध चकया था।

कुछभीराप्त चकया था, उन्ोनिें जो कुछ भी सेवा की थी, उन्ोनिें जो कुछ भी कायश चकया था, विसबअब उन्ोनिें उन्ी ििरण-कमलो िमें चवनम्रतापूवशक समचपशत कर चदया।

षष्ठ अध्याय

चवश्व-यात्रा पर

"उदारचररतानाां तु वसुधैव कु टुम्बकम् ।

-उदारिता मिानुभावो िके चलए तो यि समस्त सिंसार िी उनका पररवार िै" (नीचत-तर्क)।

गुरुदेव की मिासमाचध के पश्चात् स्वामी जी को गुरुदेव िारा अपने पीछे छोडे गये चवचर्ष्ट चर्ष्य-समूि के रमुख िोने के नाते आश्रम का सिंिालन करना पडा। उन्ें व्यवथथा का चववरण देखने, िमिीपो िमें फैली हुई सिंथथा की बहुसख्यक र्ाखाओ िसे चनकट सम्पकश रखने तथा बहुत बडी सिंख्या में चवरे्ष भक्तो िकी राथशनाओ िपर ध्यान देने के साथ–ी-साथ भूमण्डल के सभी कोनो ि तक चदव्य सन्ेर् पहुाँिाना था। समग्र चवश्वभर के भक्तो िकी राथशनाएाँ इतनी आग्रिी थी िचक पिले से विन चकये दुवशि उत्तरदाचयत्वो िके िोते हुए भी उन्ें उनके चनमिण पर अनुचक्रया करनी पडी तथा उनकी रेममयी माांगो िको पूरा करने के चलए चवदेर् जाना पडा। गुरुदेव चर्वानन्द ने उन्ें अपना अवार्ष्ट जीवन लोक-सिंग्रिाथश समचपशत करने के चलए आदेर् दे रखा था तथा स्वामी जी सामान्य मानव-जाचत की इस उतकृष्ट आध्यास्िक सेवा का भार अपने ऊपर लेने को सवशथा तैयार थे।

श्रीलिंका के भक्तो िको िी उन्ें भारत से बािर लाने में रथम सफलता राप्त हुई। उन्ें उनके चदव्य सम्पकश का अनुभव पिले िी िो िुका था जब वि विााँ सन् १९५० में गुरुदेव के साथ गये थे। तभी से िी वे उनके ऐसे िी एक अन्य अभ्यागम के चलए चदव्य जीवन सिंघ के रमुखालय से अनुरोध करते रिे थे। पन्दरि वषश बाद उन्ें स्वामी जी का अपने मध्य में स्वागत करने तथा उनकी ज्ञानमयी वाणी सुनने का असाधारण सुयोग राप्त हुआ। श्रीलिंका में गुरुदेव के भक्त अब भी १३ जून १९६५ के उस रचववार को बडी िी भावुकता तथा श्रद्धा से स्मरण करते िैं; क्ोचिंक यि विी चदन था जब स्वामी चिदानन्द जी मिाराज ने चदव्य जीवन सिंघ के अध्यक्ष के रूप में श्रीलिंका की भूचम पर अपने पााँव रखे थे। रत्नालम िवाई पत्तन पर पहुाँिने पर अन्य लोगो िके अचतररक्त स्वामी सस्च्चदानन्द, वी. एफ. गुणरत्ने, एम. चर्वरस तथा स्वामी चर्वानन्द सस्च्चदानन्द माता जी ने इनका सादर स्वागत चकया। स्वामी जी के अभ्यागम ने जो गम्भीर धमोत्साि तथा पचवत्र रत्यार्ा उत्पन्न की, चदन के समय स्वागत-सचमचत के अध्यक्ष ने इनका औपिाररक स्वागत करते हुए जो अथशगचभशत र्ब्द किे थे, उनसे वि सिज िी जानी जा सकती िै। उन्ोनिें सादर उद्घोष चकया : "इसी रकार एक चदन श्रद्धेय मिेन्द्र थेरा ने श्रीलिंका में बौद्ध धमश के रिार के चलए लिंका की भूचम में पदापशण चकया था।" उन्ोनिें अपना चवश्वास व्यक्त चकया चक जब आधुचनक श्रीलिंका के

आध्यास्ि‍क जागरण का इचतिास चलखा जायेगा तब स्वामी जी का चदव्य जीवन का सने्देर् स्वणाशक्षरो िें में अिंचकत िोगा।

कोलम्बो पहुाँिने पर स्वामी जी का जनसिंकुचलत नागररक-अचभनन्दन चकया गया। कोलम्बो के मिापौर चविेन्ट परेरा ने अपना चवश्वास व्यक्त चकया चक उनके मध्य स्वामी जी की उपस्थथचत से देर् के सामाचजक, नैचतक तथा आध्यास्ि‍क वातावरण में गम्भीर पररवतशन घचटत िोगा। अचभनन्दन के उत्तर में स्वामी जी ने रथम तो कुछ स्तोत्रो िंका पाठ चकया और तत्पश्चात् वि एक भावोद्दीपक भाषण देते रिे। उन्ोिंने अपने भाषण के उपसिंिार में श्रोताओ िंको रोत्साचित करते हुए किा : "िे मानव! सत्य को असत्य िारा अवगुस्ण्ठत न िोने दें, चछपाने न दें। सत्य को असत्य के आच्छाचदत करने वाले अन्धकार में लुप्त न िोने दें। ज्ञान की रभा को अज्ञान के मेघो िंसे आवृत्त न िोने दें। इस तुच्छ सत्ता िारा, इिलौचकक क्षचणक जीवन िारा, जन्म-मरण-र्ील जीवन िारा अपने को परा।भूत तथा अचभभूत न िोने दें, उसे आपसे अपने सचे्चे ज्ञान को, अपने जन्मचसद्ध अचधकार को, अपने अमर स्वरूप की िेतना तथा अचभज्ञा को अपिरण करने न दें। आप अमर िैं। आप चनत्य आिा िैं, जन्म-मृतु्य रचित िैं; अज, अमत्यश तथा अचवनार्ी िैं। आप चनत्य देदीप्यमान सत्ता िैं, अनाचद-अनन्त चदव्य रकार् के चदव्य अिंरु् िैं।"

अपने एक सप्ताि के अल्पकाचलक आवास-काल में स्वामी जी कोलम्बो, जाफना, िुन्नकम, चटरक्कोमाली, बट्टीकोला, कुरुनेगला, कैन्डी, श्रीलिंका चवश्वचवद्यालय पेराडेचनया, नवलपीचटया तथा कटारगामा गये। इन सभी थथानो िंमें उनका भारी स्वागत हुआ तथा उन्ोिंने स्मरणीय आध्यास्ि‍क आबन्धो िंको पूरा चकया।

जाफना नगर-भवन के एक सावशजचनक स्वागत-समारोि में उनका भाषण चवर्ेष रूप से आश्चयशकर था। उन्ोिंने िाचदशक राथशना से आरम्भ चकया : "िे रभु! मैं अपने जीवन की सभी रवृचत्तयो िंको, र्रीर के सभी कमों को, हृदय के भावो िंको, मन के चविारो िंको, अन्तरतम अन्तजाशत रकृचत की गचत को, जीवन की सभी रवृचत्तयो िंतथा गचतयो िंको अपनी श्रद्धामयी पूजा के रूप में आपके िरणो िंमें अचपशत करता हाँ। जो-कुछ भी मैं बोलता हाँ, जो कुछ भी मैं करता हाँ, वि सब मैं अपनी श्रद्धामयी पूजा, आराधना, रेम तथा समपशण के रूप में आपको अचपशत करता हाँ। इसे आप अपनी कृपा तथा अनुकम्पा से स्वीकार करें।" उसके पश्चात् चदया गया उनका भाषण भी उस समय जाफना के नागररक के रूप में उनके समक्ष रकट रभु की राथशना तथा उनके िरणो िंमें चवनम्र सेवा की उसी भावना से अचधभाररत था। उन्ोिंने इस बात पर बल चदया चक जीवन का सवाशचधक मित्त्वपूणश कतशव्य भगवान् िी िोना िाचिए तथा सत्य, र्ुचिता, चवश्व-रेम तथा करुणा का सम्पोषण िी भगवत्पथ िै। उन्ोिंने उन सबको भगवान् को सदा स्मरण करते रिने का परामर्श चदया और बताया चक समस्त रवृचत्तयो िंके मध्य भी (भगवान् से) सिंसगश का भाव बनाये रखा जा सकता िै। उन्ोिंने उन्ें चदनभर समय-समय पर मौन जप करने का स्वभाव डालने तथा कमश को रभु की भेंट के रूप में करने का परामर्श चदया। उन्ोिंने अपने भाषण का समापन इस उत्कट अनुरोध के साथ चकया : "मेरे चरय जाफना के नागररको ! मेरे चरय ज्योचतमशय अमर आिाओ ! भगवान् की ओर अग्रसर िोने के चलए जीवन-यापन करें। सद्गुण का पालन करने के चलए जीवन-यापन करें। अपनी अन्तस्थचत चदव्य रकृचत को रसाररत तथा अचभव्यक्त करने के चलए जीवन-यापन करें। यिी जीवन का अथश िै। यिी जीवन का उदे्दश्य िै। इसी में जीवन की साथशकता िै। यिी आपका जीवन-लक्ष्य िै।" उनके भाषण ने कुतूिली श्रोताओ िंतक के ऊपर जो आश्चयशकर रभाव डाला उसे विााँ पर उस समय उपस्थथत लोग आज भी स्मरण करते िैं। तदनन्तर स्वामी जी जब

त्रिकिम के चर्व-मस्न्दर में गये तो विाँ उनका र्ानदार स्वागत करने के चलए उतुसुक लोगो िंकी अभूतपूवश भीड थी।

गुरुदेव चर्वानन्द के भक्तो िंके चलए यि अभ्यागम और भी स्मरणीय था; क्ोचिंक उन्ोिंने अनुभव चकया चक चिदानन्द के दैिबन्ध में स्वयिं गुरुदेव िी उनके पास पधारे िैं। चनत्यलक्ष्मी ताम्ब्रीराजा नामक एक पुरानी भक्त ने, जो गुरुदेव से सन् १९४० से पररचित थी, अनुभव चकया चक सन् १९६५ में जब स्वामी जी कुरुनेगला में उसके चनवास थथान पर पधारे, वि उनसे अन्ततः एकाकार िो गयी िै। उसने घोचषत चकया: "अब सिंसाररक जीवन से मेरा पूणशतः सम्बन्ध चवच्छेद िो गया िै।" जब स्वामी जी कैन्डी पहुँचे तो योचगराज स्वामी सस्च्चदानन्द जी तथा श्री सौली मारलाडे के नेतृत्व में विाँ के भक्तो िंने उनका सचवनय स्वागत चकया तथा उनके सम्मान में रर्स्स्त-पत्र भेंट चकया। अपने उत्तर में स्वामी जी ने चर्ष्टतापूवशक किा चक एक सन्त एकमात्र भगवान् के गुणगान के चलए िी जीता िै। सम्मान को तो उसे चकिंचिन्मात्र भी पसन्द निी िंकरना िाचिए। अत्यन्त चवनम्रतापूवशक उन्ोिंने आगे किा चक चजनकी छाया में वि चनवास करते िैं और वि जो-कुछ जानते िैं, उसे चजनके िरणो िंमें बैठ कर सीखा िै, उन अपने गुरुदेव की तुलना में वि कुछ भी निी िंिैं। तत्पश्चात् उन्ोिंने भगवान् की खोज के चवषय में अपनी ज्ञान-चगरा की वृचष्ट की।

श्रीलिंका की उनकी यात्रा के समय चवचभन्न सम्प्रदायो िंतथा मतो िंके लोगो िंने उनके रचत समान सम्मान तथा सेिि रदचर्शत चकया। चसद्धान्ती, वेदान्ती, बौद्ध तथा ईसाई सभी ने समान रूप से मिाराजश्री पर अपने रेम तथा श्रद्धा की वृचष्ट की। अपनी ओर से स्वामी जी समान भस्क्त के साथ सभी चगरजाघरो,िं मस्न्दरो िंतथा बौद्ध चविारो िंके दर्शन करने गये तथा उन सभी थथानो िंमें उन्ोिंने भगवान् की पूजा की। उन सभी लोगो िंका बहुमत-मतैक् ि था चक वि चजन लोगो िंसे चमलते, उन सबमें वि मिान् ईश्वर-चनष्ठा तथा बल अनुराचणत करते थे। लोग उन्ें आश्चयश तथा आदर से देखते और बुदबुदाते : "यि वि ईर्-मानव िै जो अपने उपदेर्ो िंका रिार करने की अपेक्षा उन्ें अपने जीवन में उतारता अचधक िै।" चवमल तपस्या की दीस्प्त चवकीणश करने वाला स्वामी जी का व्यस्क्तत्व मनोिर तथा अरचतित था। श्रीलिंका के एक चवख्यात चजज्ञासु भक्त पादुका ने ठीक िी किा था : "िम इस मिािा के रीचतकर तथा कोमल आकार तथा रिंग-रूप में अपने जीवन-व्रत के पचवत्र उद्देश्य का चनश्चय, लौि-मनस्क तथा सैचनकवत् आध्यास्त्मक अनुर्ासन, चकसी भी कुस्त्सत, अर्ोभन अथवा अधम चवषय के रचत तीव्र घृणा तथा सवाशचधक उनकी चवनम्रता, सत्यर्ीलता तथा चवर्द चनष्कपटता पाते िैं-वास्तव में, उनके अनेक रर्िंसको िंिारा उनके चर्र पर रेमपूवशक अनेक बार रखा गया रचतष्ठा तथा गौरव का चकरीट कभी भी क्षण मात्र भी उनके चर्र पर चटक निी िंसका; क्ोचिंक उनका चर्र गुरुतर जीवन-दर्शन से बोचझल तथा अवनत था और चकरीट को धारण करने के चलए कभी भी अनम्य तथा अचभमन्य न था।"

स्वामी जी ने एक रोमािंिक तथा सु्फरणकारी चवदायी के सत्सिंग के साथ २२ जून को श्रीलिंका से रथथान चकया। आठवें दर्क में वि तीन चवचभन्न अवसरो िंपर श्रीलका गये तथा रत्येक बार िी उन्ोिंने श्रीलिंका की मनोरम भूचम में जनता को आध्यास्त्मक उद्बोधन के चलए नव-रेरणा रदान की। आज विाँ ऐसे असिंख्य चजज्ञासु िैं चजन्ोिंने उन अभ्यागमो िंमें से चकसी-न-चकसी को अपने हृदय में सँजोये रखा िै चजन्ोिंने विाँ अपनी अचमट छाप छोडी िै।

श्रीलिंका की यात्रा के एक वषश पश्चात् स्वामी जी पुनः आश्रम से बािर-इस बार मलेचर्या के भ्रमण के चलए-चनकले। बिंगाल की खाडी के उस पार के इस देर् में गुरुदेव के रचतचनचध स्वामी

रणवानन्द पिाराज जी मलेचर्या की यात्रा के चलए मिाराजश्री से अनुरोध कर रिे थे। सन् १९६६ में पुनः उनका से्निमय चनमिण राप्त करने पर स्वामी जी ने चिमालय से मलाया की यात्रा की तथा वि वसन्त ऋतु में विााँ बीस चदन रिे। मलाया देर् में िी रिीन काल में गुरुदेव ने अनेक
चनधशनो िंतथा रोचगयो िंको सान्त्वना रदान करते हुए एक चिचकत्सक के रूप में सेवा की थी। अत:
स्वामी जी ने अपनी इस यात्रा को आध्यास्कि यात्रा न कि कर तीथशयात्रा का चवरे्षण चदया।
उन्िोंने ५ अरैल को वायुयान िारा चदल्ली से रथथान चकया और उसी चदन सायिंकाल को वि
क्वेलालमुपुर पहुाँगये। इस यात्रा का तात्काचलक रकट उद्देश्य चर्वानन्दाश्रम वातूगुिा में गुरुदेव की
सिंगमरमर की रचतमा का अनावरण करना था। उन्िोंने यि र्ुभग कायश ९ अरैल को श्रद्धास्पद
मनोभाव तथा अत्यचधक आनन्दबोध के साथ सम्पन्न चकया। उन्िोंने चवर्ाल जनसमिू के मध्य में
गुरुदेव की रचतमा के रचतष्ठापन की चवचध सम्पन्न की तथा सम्यक् पूजा तथा भगवद्दर्शन के रिस्य
पर रविन चकया। उसके पश्चात् वि इस देर् की चदव्य जीवन सिंघ की चवचभन्न र्ाखाओ िंको देखने
गये। मलेचर्या की रुचि तथा धमश-वैचवध्य वाली जनता इस यर्स्वी अचतचथ के रचत उत्सािा तथा
भस्क्त के साथ अनुचक्रया करने में अनन्य थी। वी. टी. साम्बनाथम तथा मचणकवासगम जैसे मलेचर्या के राजनचयक स्वामी जी के वैश्व रेम तथा चवश्वजनीन दृचष्टकोण से अत्यचधक रभाचवत थे।
उन्िोंने अपने अभ्यागम से विााँ जो उत्थान चकया वि परवती वर्षों में उन्िें उस देर् में पुनः पुनः खिींचें ले जाने का कारण बना।

स्वामी जी मलेचर्या से िािंगकािंग गये जिााँ वि एक सप्तािा से अचधक समय तक सत्सिंग
कराते रिे और सन् १९६६ की ग्रीष्म ऋतु में आश्रम वापस आ गये।

अब स्वामी जी ने चनश्चय कर चलया चक वि अभी भचवष्य में कुछ समय तक चवदेर् की और
अचधक यात्रा का अनुरोध स्वीकार निीं िंकरेंगे। वि लगभग दो वषश तक आश्रम तथा सिंथथा की
देखभाल करने में व्यस्त रिे। चकन्तु चवश्व के चवचभन्न देर्ो िंसे राथशनामय पत्रो िंकी उनकी मेज पर
वृचष्ट िोती रिती थी चजनमें भूभण्डल के चवचभन्न भागो िंके उन सुदूर थथानो िंमें उनकी चनजी यात्रा के
चलए सािग्रि अनुरोध िोते थे। भारत के भीतर के भी भक्त उनके दर्शन करने तथा चदव्य उपदेर्
सुनने के चलए उत्सुक थे। चकन्तु इस भागवत पुरुष के पास चबलकुल समय न था। आश्रम को
उनकी उपस्थथचत की आवश्यकता थी, भारतवषश के भक्त भी उनके दर्शन के चलए लालाचयत थे
तथा चवश्वभर के चर्वानन्द योग-वेदान्त-केन्दो िंके सचे्चे चजज्ञासु सीधे उनके मुख से आध्यास्कि
मागशदर्शन राप्त करने की यािना कर रिे थे। चकन्तु चिदानन्द एक िी थे, तथाचप उस एक िी
रूप में अब इस रकार कायश करने का चनश्चय कर चलया मानो अनेक िो।ििं कुछ भी िो, स्वामी जी
ने सभी चदर्ाओ िंसे आये हुए अत्यावश्यक चनमिणो िंको समपशण तथा सेवा की भावना से स्वीकार
करने का चनश्चय कर चलया। दचक्षणी अफ्रीका चदव्य जीवन सिंघ के मठाधीर् डबशन के स्वामी
सिजानन्द की स्वामी जी से दचक्षणी अफ्रीका आने की आग्रिपूणश राथशना पर चवषय ने चनचश्चत रूप
धारण चकया। स्वामी जी ने समाचध-मस्न्दर में गुरुदेव की पादुका-पूजा की तथा चवदेर् में चदव्य
कायश के सम्पादन के चलए आश्रम से रथथान चकया।

चजस चदन, २ मई १९६८ को स्वामी जी ने मुम्बई से समुि-यात्रा की, वि गुरुवार था।
सिंयोगवर् यि जगद्गुरु आचद र्िंकरािायश का जन्म जयन्ती-चदवस भी था। स्वामी जी ने मुम्बई
पोताश्रय के पररसर में िी एक चवरे्ष आसन पर गुरुदेव की पादुका को रख कर गुरुओ िंके गुरु
भगवान् दत्तात्रेय, जगद्गुरु र्िंकरािायश तथा गुरुदेव चर्वानन्द से उन्िें विााँ चवदा करने के चलए
एकचत्रत सभी भक्तो िंपर कृपा करने की राथशना की तथा अपनी युगरवतशक यात्रा आरम्भ की।

उन्ोनिं फ्ांसीसी पोत 'कैम्बोज' पर आरोिण चकया तथा सम्िु मागश से मुम्बई से दचक्षणी अफ्ीका की यात्रा की। नैटाल पोटश (डबशन पोताश्रय) में स्वामी सिजानन्द जी ने उनका स्वागत चकया। पोत-घाट पर ि्ी स्वामी जी ने रभु से राथशना की, कुछ कीतशन चकया तथा एक सिंचक्षप्त भाषण चदया। इस भााँचत चवदेर् में चदव्य सेवा का दीघशकाचलक दौर पुनः आरम्भ हुआ। वि डबशन १० मई को पहुाँिे तथा अगले चदन जोिानेसबगश के चदव्य जीवन सिंघ के सदस्यो िं को सम्बोचधत चकया जो विााँ उन्ें रणाम करने के चलए आये हुए थे। १२ तारीख को उन्ोनिं चवानन्द सण्डे सूकूल के नवयुवक छात्रो िं के समक्ष गुरुदेव के जीवन तथा चर्क्षाओ िं पर रवचन चकया।

इसी बीि डबशन नगर उन्ें एक स्मरणीय नागररक अचभनन्दन देने को तैयार था। १३ मई को डबशन नगर-भवन में एक औपचाररक सभा में उमडती हुई चवर्ाल भीड चिमालय के इस पुण्यात्मा सन्त का दर्शन करने के चलए उतसुकता से रतीक्षा कर रिी थी। मिोक रूप से रसन्नचित्त तथा चवनम्र, उन सभी लोगो िं के चिर सस्म्मत्रवत् व्यविार करते हुए स्वामी जी ऊपर आये तथा चवश्वचवद्यालय कालेज, डबशन के रिायश रोफेसर एस. पी. ओचलवर से चमले जो उनके स्वागताथश विााँ रतीक्षा कर रिे थे। रो. ओचलवर स्वामी जी को मिंि पर चलवा ले गये तथा एक अन्ताराष्टरीय लब्धरचतष्ठ आध्यास्मिक रकार्-पुिंज के रूप में उनका पररिय चदया। तत्पश्चात् उन्ोनिं स्वामी जी से श्रोताओ िं को अपना कुछ चवर्ेष उपदेर् देने की राथशना की। स्वामी जी ने अपने उन्नयनकारी भाषण में चदव्य जीवन की सारभूत बातो िं की रूपरेखा रसुतुत की तथा बतलाया चक व्यस्क्त अत्यचधक कायश-समाकुल मिानगर के मध्य में रिते हुए भी चकस रकार चदव्य जीवन यापन कर सकता िै। उन्ोनिं उन्ें दर्ाशया चक चकस रकार सच्ची सन्तता का जीवन तथा एक सामान्य व्यस्क्त का चदन-रचत-चदन का जीवन परस्पर चवरोधी निी िं िै; क्ोिंचक चदव्य जीवन मानव जीवन में व्याप्त चदव्य िेतना मात्र िै।

रोफेसर ओचलवर स्वामी जी के व्यस्क्तत्व तथा भाषण से इतना अचधक रभाचवत हुए चक उन्ोनिं स्वामी जी से चवश्वचवद्यालय कालेज, डबशन में आने तथा अपने हृदय स्पर्ी ब्ो िं से छात्रो िं में रेरणा भरने की राथशना की। स्वामी जी ने इस चनमिण को रसन्नतापूवशक स्वीकार कर चलया। वि कालेज गये तथा छात्रो िं को सम्बोचधत चकया तथा बतलाया चक आिज्ञान की खोज क्ोिंकर चवश्वचवद्यालयो िं के पाठ्यक्रम में मित्त्वपूणश थथान राप्त कर सकती िै और सिंकेत चदया चक यि ज्ञान केवल सरल तथा रुद्ध जीवन की अपेक्षा रखता िै। इसी रकार चर्क्षक-रचर्क्षण-मिाचवद्यालय स्प्रिंगफील्ड में, जिााँ उन्ें उसके बाद आमस्ित चकया गया था, स्वामी जी ने चवद्याथी-जीवन में िररत्र के मित्त्व की ििाश की तथा इस अपररिायश मित्त्वपूणश सत्य को अनेक सीधे-सादे उदािरणो िं से समझाया। उन्ोनिं मिाचवद्यालय के पाठ्यक्रम में नैचतक मूल्यो िं का चवषय समाचवष्ट करने के चलए एक पररयोजना की रूपरेखा भी रसुतुत की।

स्वामी जी १९६८ के र्ीतकाल तक दचक्षणी अफ्ीका में बहुकायशसिंकुल कायशक्रमो िं में, देर् को आडे-चतरछे बार-बार पार करने में, चमयर बैंक, नाथशडम्, स्टेंजर, डानशल, ओिंचझटो, पीटर मेरीट्ज़बगश, ररिमाण्ड, जोिानेसबगश, चरटरोररया, लेनेचर्या, ईस्ट लन्दन, पोटश एचलजाबेथ, चकम्बली, लेडी स्स्मथ, केप टाउन आचद थथानो िं को जाने में व्यस्त रिे। वि जिााँ-किी िं भी गये, विााँ वि चिमालय के ऋचषयो िं के उदात्त ज्ञान को सामान्य जनता को समझाने वाले साक्षात् चदव्य सन्देर्वािक रतीत हुए। उनके भाषणो िं की अपेक्षा उनका व्यस्क्तत्व सवशत्र िी लोगो िं पर अपना जादू डालता-सा अचधक रतीत िोता था। चनश्चय िी यि चवजय-यात्रा थी।

जब वि दचक्षणी अफ्रीका में इस भााँचत योग तथा वेदान्त के सन्देर् का रसार कर रि थे,
उस समय िी उन्ें अन्य अनेक देर्ो िंसे चनमिण राप्त हुए। सवशरथम उन्ोनिें स्वामी वेंकटेर्ानन्द
का मारीर्स आने का अनुरोध स्वीकार चकया। वि वायुयान िारा उस िीप्य देर् को गये तथा
चर्वानन्द योग-आश्रम की रचतचष्ठत आधारचर्ला-रोपण-चवचध का सूत्रपात चकया। वि उस देर् के
चवचभन्न भागो िंमें अपने सन्देर् का रसार करते हुए विााँ एक सप्ताि रुके।

मारीर्स के इस अल्पकाचलक आवास के पश्चात् वि रोडेचर्या गये तथा कू कू, सैचलसबरी
तथा बुलवायो में अपने पचवत्र सेवा-कायश में रवृत्त रि। वि मालवी (भूतपूवश न्यासालैण्ड) की
राजधानी ब्लैण्टायर भी गये। उसके पश्चात् एक भक्त चजज्ञासु उत्तम रणछोड के आग्रिपूणश तथा
स्नेिमय आमिण पर उन्ें एक सप्ताि के कायशक्रम पर जैम्बया जाना पडा। विााँ उन्ोनिें लुसाका,
चलचविंगस्टोन, लुयान्श्या, मचफचलयर, चिंगोला तथा न्डोला में जनता के समक्ष भाषण चदया।

स्वामी जी को न्डोला से मोम्बासा को रथथान करना था। अब कीन्या में एक बहुत िी
रोचक घटना हुई। उन्ें १७ नवम्बर को अपराह्न में मोम्बासा पहुाँचना तथा उसी चदन सायिंकाल को
सावशजचनक सभा में भाषण देना चनयत था; चकन्तु यि ज्ञात हुआ चक न्डोला से मोम्बासा के चलए
कोई सीधी उडान निी िै। इसके चलए उन्ें दार-ए-सलाम जाना अपेचक्षत था। ऐसा लगा चक
मोम्बासा का कायशक्रम चनरस्त करना निी िंतो थथचगत करना अवश्यम्भावी ि; चकन्तु मोम्बासा में
आयोजको िंने स्वामी जी के सायिंकालीन कायशक्रम का पिले से िी व्यापक रचार कर रखा था;
अतः भक्तो िंके चवर्ाल जनसमूि को दुःखद चनरार्ा का सामना करना िोता । इधर जब आयोजक
रसन्नतापूवशक अपनी तैयारी में लगे थे, उस समय तक स्वामी जी आकार् में िी थे और उनका
वायुयान तिंजाचनया की राजधानी दार-ए-सलाम की ओर बढ़ रिा था। इतने में एक िमत्कार हुआ।
वायुयान जब दार-ए-सलाम के िवाई पत्तन के ऊपर पहुाँिा तो भू-चनयिक ने चवमानि-ालक को
यि कि कर उतरने की अनुमचत देना अस्वीकार कर चदया चक िाल की वृचष्ट से चवमान-क्षेत्र
अथथायी रूप से असुरचक्षत िो गया ि। चवमानि-ालक को यिााँ के बदले मोम्बासा िवाई पत्तन जाने
का चनदेर् चदया गया। इस भााँचत जैम्बया की िवाई कम्पनी का जेट वायुयान आगे उडा और
कीन्या के मोम्बासा िवाई पत्तन पर उतरा। मोम्बासा के भक्तो िंकी राथशना सुन ली गयी तथा
अरत्याचर्त घटना घटी। स्वामी जी चनयत समय पर कायशक्रम आरम्भ करने के चलए ठीक समय पर
पहुाँच गये मानो चक यि उडान इसी के चलए आयोचजत की गयी थी। मोम्बासा में उतरने पर स्वामी
जी ने भगवान् को धन्यवाद चदया और भक्तो िंसे किा : "गुरुदेव की कृपा की रिस्यमयी
चक्रयार्ीलता अनेक रकार से अनेक अवसरो िंपर सवशत्र जो अपने को अचभव्यक्त कर रिी ि, यि
उनमें से एक ि।"

स्वामी जी कीन्या तथा यूगाण्डा के चवचभन्न भागो िंमें चदव्य जीवन के सन्देर् का रचार करते
हुए नवम्बर के अन्त तक अफ्रीका मिािीप में िी इधर-उधर भ्रमण करते रि। तदनन्तर उन्ोनिें
रोम के मागश से पूवी अफ्रीका से पचश्चमी जमशनी के चलए रथथान चकया। वि पोज़शईल में लगभग एक
मासाधश तक श्रीमती तथा श्री ििै फैंक के अचतचथ के रूप में रि। विााँ अपना अथथायी मुख्यालय
थथाचपत कर उन्ोनिें पचश्चमी जमशनी के चवचभन्न केन्द्रो िंका भ्रमण चकया, अपनी िुम्बकीय मनोज्ञता से
सैकडो िंव्यस्क्तयो िंको आकृष्ट चकया तथा योग का सन्देर् रसाररत चकया। वि सवशरथम कोलोन गये
जिााँ के समािार-पत्रो िंने इनके अभ्यागम का समािार बडे िी उत्साि से रकाचर्त चकया।। राइन
नदी के तट पर स्थथत इस रख्यात औद्योचगक नगर से स्वामी जी एलेनगेन गये जो एक सुरचसद्ध
चवश्वचवद्यालय-नगर ि। यिााँ उन्ोनिें 'भगवत्प्रास्प्त का मागश' चवषय पर एक उन्नतकारी भाषण चदया।

एलेनगेन से वापस आते समय उन्हें पता िला चक उनका चवमान फ़्रैंकफटश में उतरने को अनुसूचित िै और फ़्रैंकफटश से कोलोन के चलए उन्हें अपना चवमान बदलना िै। इससे उनका कोलोन का कायशक्रम चवपयशस्त िो जाता; चकन्तु जैसा चक पिले मोम्बासा में िमत्कार हुआ था, वैसा िी पुनः यिााँ हुआ। बहुत िी आश्चयश में डालते हुए चवमान ने कोलोन का सीधा मागश पकडा चजससे स्वामी जी के चलए सभा में ठीक समय पर सस्म्मचलत िोना र्क् हुआ।

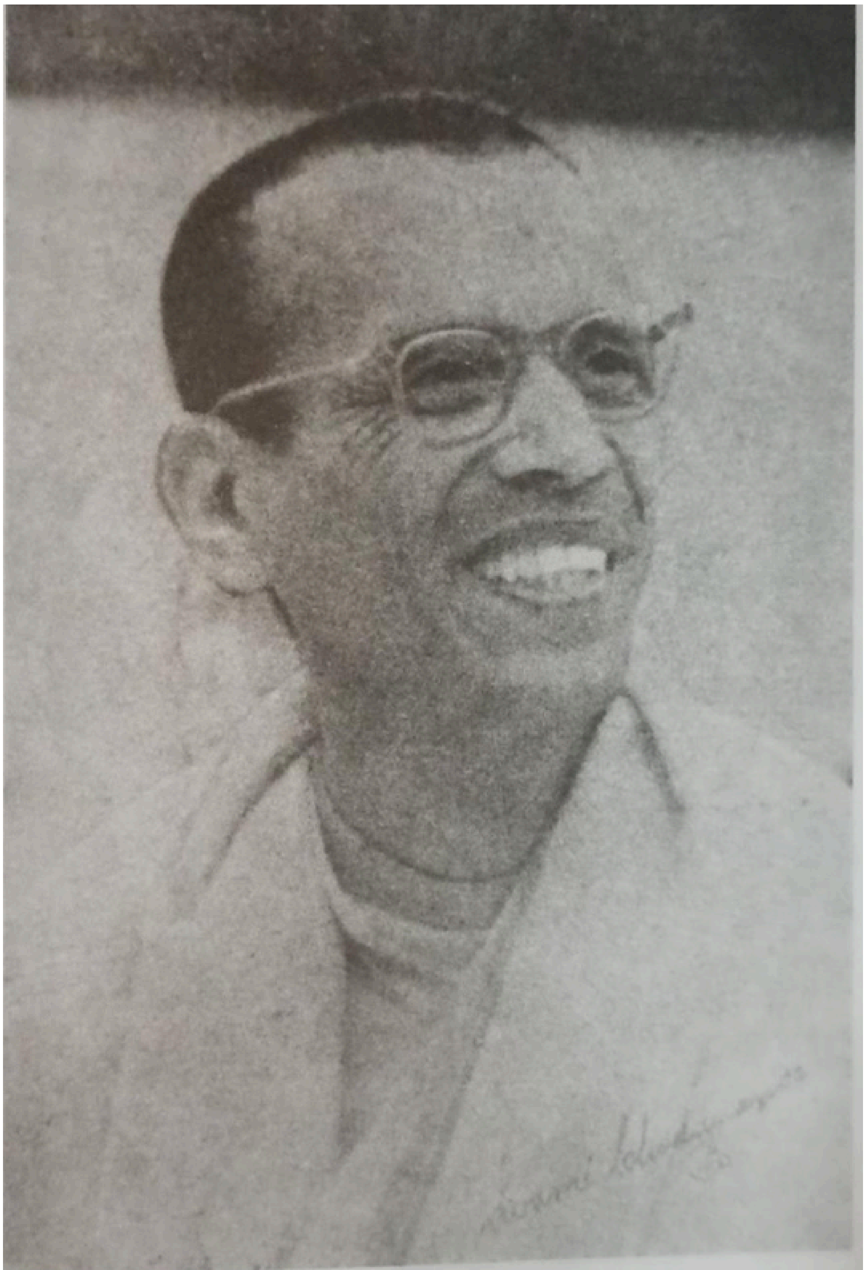
स्वामी जी पचश्चमी जमशनी के इस यात्रा काल में चवरेमानन्द माता के अचतचथ के रूप में उनके चर्वानन्द योग-सूकूल में दो बार डोरीसेन गये। यिााँ पर उन्होंने चवचर्ष्ट चकन्तु चवपुल श्रोताओ िं के समुमुख सुव्यापक चवषयसमि पर शिंखलाबद्ध भाषण चदये चजनमें 'पचश्चम के चलए योग', 'गुरु का मित्त्व', 'योग की चवश्वजनीनता', 'ध्यान' तथा गम्भीर आध्यास्कि मित्त्व के ऐसे िी अन्य चवषय थे। अनेक बहुश्रुत चविानो िंतथा धमशचनष्ठ ईसाइयो िंने आधुचनक काल के एक मियस्र्क भागवत पुरुष के रूप में उनका अचभनन्दन चकया। उनमें से कुछ लोगो िंको स्वामी जी का दर्शन करते समय अश्रुरुपात करते हुए देखा गया। उन्होंने अनुभव चकया चक स्वामी जी ने अपना कुछ चदव्यानन्द उनमें अन्तररत कर चदया। उनके पचवत्रता तथा रेम के पररमल से वे पुलचकत थे। उन्होंने अनुभव चकया चक स्वामी जी राम्बन्धी सबसे मित्तम िमत्कार स्वामी जी स्वयिं िैं। आज भी वे अपने ऊपर स्वामी जी के गम्भीर रभाव की भावरवणता से ििाश करते िैं और स्वीकार करते िैं चक उन्होंने उनके जैसा व्यस्क्त न तो उससे पूवश और न उसके बाद में देखा िै। एक बार ऐसा हुआ चक स्वामी जी अपने विााँ के आवास-काल में पादररयो िंतथा धमशतत्त्वज्ञो िंके एक समि से लम्बा चविार-चवचनमय करते रिे। अन्त में जब वे चवदा हुए तो उनमें से एक इतना अचधक रभाचवत हुआ चक स्वामी जी के कथन पर मन में गम्भीरता से चविार करने के चलए वि तत्काल जिंगल में िला गया। वे ईसाई पुरोचित स्वामी जी से इतना अचधक रेम करते थे चक एक बार उन्होंने इस चिन्दू सिंन्यासी को एक अचत-रािीन तथा रख्यात मठ में पचवत्र भारतीय स्तोत्रो िंका पाठ करने के चलए आमस्ति चकया। अतः स्वामी जी विााँ गये। लगभग एक घण्टे तक उनके स्तोत्र-पाठ को श्रवण कर सारा मठ पुलचकत िो उठा। स्वामी जी पोजशईल में िी फ़्रैंक के अचतचथ के रूप में रुके तथा 'योग तथा ख्रीस्तीयता', 'योग का स्पष्टीकरण', 'पररवार में योग', 'जीवन का स्वचणशम काल' तथा 'योग सम्बन्धी तथ्य' चवषयो िंपर अनेक भाषण चदये। तदनन्तर वि पोज़शईल तीन बार गये तथा उन्होंने सैकडो िंचजज्ञासुओ िंको धारणा तथा ध्यानयोग अपनाने के चलए उत्प्रेररत चकया।

सुरचसद्ध लेखक, पयशटक तथा चित्रकार डा. चलली ई. स्मल्डसश के चनमिण पर स्वामी जी जमशनी से ऐम्र्स्टडशम गये और विााँ तीन सप्ताि ठिरे। ऐम्र्स्टडशम में स्वामी जी के कायशक्रम आयोचजत करने में माता पालस्टरा ने डा. स्मल्डसश का साथ चदया। उनके अनुरोध पर स्वामी जी िालैण्ड की योग सोसायटी के दो केन्द्र देखने गये। वि अपने सिानुभूचतर्ील हृदय तथा आर्ा का सन्देर् ले कर चिस्प्पयो िंके सामने भी गये। उनके पहुाँिने के समय उनका क्लब-घर धुएाँ से भरा था और उपिव का दृश्य था; चकन्तु मिाराजश्री के अभ्यागम पर विााँ चवलक्षण रर्ास्न्त छा गयी तथा पथभ्रष्ट आिाओ िंने भी उनकी बातें श्रद्धामय सम्मान के साथ सुनी।िं स्वामी जी ने भगवान् की इस स्वेच्छािारी सन्तान की भी सेवा की और उनके उचिकास के चलए उन्हें आवश्यक परामर्श चदया। इसके पश्चात् उन्होंने मिाराजश्री के सत्सिंग के चलए फ्ािंस, बेस्ियम तथा जमशनी से चवर्ेष रूप से आये हुए भक्तो िंके मध्य ख्रीस्त-जन्मोत्सव-सप्ताि व्यतीत चकया।

लन्दन के चिन्दू-समाज के चनमिण पर वि ख्रीस्त जयन्ती के पश्चात् विााँ गये। लन्दन से वि श्री गाई डेस चपनाडशस के अचतचथ के रूप में पैररस गये जो आजकल 'चर्वानन्द योग-वेदान्त-

के न्द्र13' के नाम से पैररस में चदव्य जीवन सिंघ की एक शाखा का सिंिालन करते िैं। श्री चपनाडेस स्वामी जी तथा पोप की पारस्पररक भेंट की व्यवथथा करने को बहुत उत्सुक थे। उनके रयास से
१९ फरवरी १९६९ को पोप पाल षष्ठ तथा स्वामी जी की एक अधश अरासकीय भेंट हुई। पोप इस
भारतीय सन्त को देखते िी रेम से इतना भर गये चक उन्होंनें परम धमाशध्यक्षीय राचधकार की
राचयक औपिाररकताओं को अलग रख कर उनके िाथों को पकड चलया तथा उन्हें भाव-रवणता
के साथचर्ष्टािारिकाआदान-रदानकरतेहुएदेरतकपकडेरखा।उन्होंनेंस्वामीजीका
अचभवादन भारतीय रीचत से चकया तथा स्वामी जी ने उसके रत्युत्तर में पाश्चात्य लोकािार के अनुसार गुरुदेव चर्वानन्द के नाम में घुटने टेक कर उनका अचभवादन चकया। पोप ने चर्वानन्द का नाम सुनते िी सस्नेि गुनगुनाया: "मैंने आपके गुरुदेव के रर्स्त आध्यास्त्मक कायश के चवषय में सुना िै। मैं आपके गुरुदेव के आध्यास्त्मक कायश को बहुत मित्त्व देता हाँ।" स्वामी जी ने पोप के रचत अपने रेम तथा सम्मान के रतीक-रूप में गुरुदेव की पुस्तक 'Bliss Divine' (ब्लिस चडवाइन) उन्हें भेंट की। पोप ने भेंट को बडी िी रसन्नता से स्वीकार चकया और आशा दी चक वि उसेरुचिपूवशकपढ़ेंगे।
वाताशलाप-काल

13 पोप पाल षष्ठइससे पूवशमुम्बई में परम रसाद (यूखाररस्त) सम्मेलन में सस्म्मचलत िोने केचलए भारत आ िुके थे।



प्रसन्नता, शान्ति और आनन्द का प्रसारण



वेटिकन सिटी में पोप पॉल छठे के साथ

मेंउन्होंने बार-बार किा : "मैं भारत को रेम करता हाँ। मैं भारत को रेम करता हाँ" तथा वाताश
केएक िरण में किा: "भारत अलौचकक देर् ि। मैं एक बार पुन: भारत जाने की उतुसुकता से
रतीक्षा कर रिा हाँ।"" उन्होंने किा चक वि उन लोगो िंकी ररंिसा करते िैं जो सत्य का
साक्षात्कार कर लेने पर रेम-धमश के सुसमाचार का रिार करने के चलए बिार चनकल आते िैं। स्वामी जी ने पोप को चदव्य जीवन सिंघ के रचतचनचध के रूप में र्ास्न्त, रेम तथा आध्यास्किता के आदर्ों के रिार करने के अपने लक्ष्य के चवषय में अवगत कराया और उनसे आर्ीवाशद माँगा। पोप ने स्वामी जी को आर्ीवाशद चदया और उनके पचवत्र लक्ष्य में उनकी सफलता की कामना की।
स्वामी जी ने अपने सुझावो िंका तैयार चकया हुआ रारूप उनें चदया चजसमें कैथोचलक िश के
तत्त्वावधान में रोम में सवशधमश-सम्मेलन आयोचजत करने के चलए पोप से अनुरोध चकया गया था।
उन्होंने पोप को यि भी सुझाव चदया चक धाचमशक एकता का सन्देर् पहुँचाने के चलए उनें एक
चवश्व-यात्रा आरम्भ करनी िाचिए। पोप ने सुझाब का रेमपूवशक स्वागत चकया और किा : "मैं उसे
ध्यानपूवशक देखूँगा ।" उन्होंने उनके रेम के रचतदान में स्वामी जी को एक स्मारक-पदक रदान

चकया। विाँ पर जो कचतपय व्यस्क्त उपस्थथत थे, उन्ें स्पष्ट िो गया चक ख्रीस्त-जगत् के परमधमाशध्यक्ष स्वामी जी के आध्यास्कि व्यस्क्तत्व से अत्यचधक रभाचवत थे।

स्वामी जी रोम से एक सप्ताि के कायशक्रम पर अथेि गये। अपने यूनान के यात्रा-काल में वि ग्रीक आथोडाक्स िशि के मठवाचसयो िंसे चमले जो एथोस पवशत पर भव्य एकाकीपन में रिते थे। केवल मठवासी िी विाँ ठिरते िैं, अन्य कोई भी निी िंठिरता । वे सामान्यतया बाह् जगत् से कोई भी सम्पकश निी िंरखते िैं; चकन्तु वे भी स्वामी जी से चमल कर तथा यूनानी दुभाचषयो िंके माध्यम से आध्यास्कि ज्ञान का आदान-रदान कर अत्यचधक रसन्न हुए। स्वामी जी विाँ दो मठो िंमें रुके जो लगभग एक सिस्र वषश रािीन थे।

स्वामी जी १९६९ के अरैल माि तक एचशया, अफ्ीका तथा यूरोप के बहुसंख्यक देशो िंमें भ्रमण कर िुके थे। तत्पश्चात् उन्ोंने एटलांचटक मिासागर पार कर 'रतीकवाद तथा यथाथशवाचदता', 'मोक्ष तथा मन', 'भस्क्तमागश', 'कमश तथा राकृचतक चनयम', 'योगे-मनोचवज्ञान', 'मि', 'ध्यान', 'रिस्यािक अनुभव' आचद चवषयो िंपर अपने कुछ सवाशचधक रोचक भाषण देते हुए अक्तूबर तक अमरीका तथा कनाडा की यात्रा की। उन्ोंने न्यूयाकश, वैन्कूवर तथा वाल्मोररन में शंखलाबद्ध भाषण चदये। इसी अवचध में उन्ोंने चब्रचटश् कोलस्म्बया चवश्वचवद्यालय में 'मनुष्य, ध्यान तथा मोक्ष' चवषय पर भाषण चदया। उन्ोंने लारेस्न्टयन पवशत के मध्य में 'अचवतथ चवश्व व्यवथथा' के सम्मेलन का उद्घाटन भी चकया तथा वाल्मोररन के योग-वगश के छात्रो िंमें शंखलाबद्ध भाषण चदया।

तत्पश्चात् उन्ोंने दचक्षणी गोलाधश की यात्रा की। वि दचक्षणी अमरीका गये जिाँ सैस्न्टयागो चड चिली, ब्यूनस आयसश आचद नगरो िंमें भाषण देते हुए अक्तूबर से वषश के अन्त तक रुके। माण्टेवीचडयो में उनका पुजाररयो िंकी एक वादसभा में दूरदर्शन पर कायशक्रम था। उन लोगो िंने आध्यास्कि चवषयो िंपर कई परीक्षक रश्न पूछे। यिाँ पर अन्य अनेक उद्घाटनकारी बातो िंमें स्वामी जी ने एक बात यि बतलायी चक चकस रकार एक भी आसन अथवा राणायाम न करने पर भी व्यस्क्त सच्चा योगी िो सकता िै। उनकी यि मान्यता िै चक योग केवल मनोभौचतक चवज्ञान निी िंिै।

स्वामी जी तदनन्तर चटरनीडाड तथा टोबैगो के चदव्य जीवन संघ के रमुख स्वामी सस्च्चदानन्द के रेममय चनमंत्रण पर वेस्टइण्डीज़ गये। यिाँ उनका एक सप्ताि का बहुत िी कायश-संकुल कायशक्रम था। उन्ोंने चववेकानन्द सांस्कृचतक वगश में 'धमश का सार' पर, गोपी टेरस चिन्दू मस्न्दर में 'सनातन धमश' पर, चिदानन्द सांस्कृचतक केन्द्र में 'गुरुदेव का सन्देश' पर, पोटश आफ स्पेन चिन्दू मस्न्दर में 'योग तथा स्वास्थ्य के चलए उसका मित्त्व' पर, गान्धी-आश्रम में 'धमों की मौचलक एकता' पर, सन्त केर्वदास आश्रम में 'भस्क्त तथा भगवन्नाम की मचिमा' पर, चर्वनारायण धमशसभा में 'पूणशता की ओर' पर, इन्टरराइज में 'चदव्य जीवन' पर, चवश्व-चिन्दू-पररषद् में 'जीवन में मित्तम वस्तु' पर तथा माण्डरोज़ के वैचदक स्कूल में 'जीवन का वैचदक आदर्श' पर रवचन चकये। उन्ोंने जान एफ. कैनेडी मैदान में वेस्ट इन्डीज चवश्वचवद्यालय के छात्रो िंको भी सम्बोचधत चकया। उन्ोंने स्वामी सस्च्चदानन्द, ब्रह्मचारी कमाशनन्द तथा रामर्रण मिंगरू के सियोग से चिदानन्द सांस्कृचतक केन्द्र की आधारचर्ला भी रखी। मिाराज्यपाल सर सोलोमन िोच्वाय, गृिमंत्री गोराड मोन्टािो, भारतीय उच्चायुक्त श्री रे, वेस्ट इस्ण्डयन मामलो िंके मंत्री श्री कमालुद्दीन मुिम्मद जैसे देश् के रचतचष्ठत राजनचयको िंने स्वामी जी से चमलने तथा उनके बोधरद भाषण सुनने में तीव्र रुचि रदचर्शत की।

स्वामी जी अपने िौवनवें जन्मचदवस तक नयी दुचनया (अमरीका) में रिे। तत्पश्चात् वि
वायुयान िारा फीजी गये। नन्दी िवाई पत्तन पर उनके पहुाँचने पर थथानीय रामकृष्ण सेवाश्रम केन्द्र के श्री स्वामी रुिानन्द जी मिाराज तथा श्री आर. पी. गान्धी ने उनका स्वागत चकया। फीजी में
अपने दो सप्ताि के आवास-काल में उन्ोंने राय: समू्पर्ण िीप की यात्रा की तथा लोगो िंको चदव्य
जीवन-यापन करने को रेररत चकया।

स्वामी जी फीजी से अनेक रचतश्रुत विनो िंके पालन के चलए नूयूज़ीलैण्ड गये और विााँ से
उन्ोंने आस्टेरचलया को रथथान चकया। वि १८ अकू्तूबर को पथश पहुाँचे। चदव्य जीवन संघ की पथश
राखा के अध्यक्ष डा. आर. जे. वथशर14 ने उनका स्वागत चकया। स्वामी जी ने चवज्ञान-भवन में
अपनी अरचतम रै्ली में भाषण चदया तथा सैकडो िंचजज्ञासुओ िंपर अपनी अचमट छाप छोडी।
आस्टेरचलया के अपने आवास-काल में उन्ोंने श्री वधशर के आध्यास्त्मक चवकास से सन्तोष अनुभव
चकया तथा उन्ें स्वामी संगीतानन्द के नाम के साथ संन्यासाश्रम की दीक्षा दी। उन्ोंने पथश,
एडीलेड, चसडनी, चब्रसबेन तथा कुछ अन्य थथानो िंमें अपने चदये हुए वायदो िंको पूरा करते हुए
आस्टेरचलया में कुल तीन सप्ताि व्यतीत चकये।

स्वामी जी एडीलेड के चनकट आस्टेरचलया के योगी तथा श्री स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज के
चर्ष्य चिरस्मरणीय श्रदे्धेय ब्रह्मलीन स्वामी करुणानन्द के पास िार चदन रुके। करुणानन्द जी उन
चदनो िंएडीलेड से कुछ मील बािर एक वन्य कुटीर में रि रिे थे। वि उस समय चदव्य जीवन संघ
की ओर से योग की एक िस्तमुचित माचसक पचत्रका चनकालते थे। स्वामी चिदानन्द जी इस सदािार
से चमल कर तथा उन्ें अपनी भावनाओ िंमें भागीदार बना कर अत्यचधक रसन्न हुए। वि करुणानन्द
जी को बहुत िी उन्नत आध्यास्त्मक व्यस्क्त, साक्षात्कार-राप्त आत्मा मानते थे। करुणानन्द जी भी
अपने चरय गुरुभाई स्वामी चिदानन्द जी के रचत इसी रकार की श्रद्धा रखते थे। यवन्ने लेबूयू ने
ठीक िी किा : "उनको एक साथ देखना, उनके रेम को देखना एक अलौचकक, अचवस्मणीय
अनुभव था। करुणानन्द जब कभी चिदानन्द के चवषय में कुछ किते तो उनके मुखमण्डल से भस्क्त
चवचकरण िोती।" एडीलेड के चनकट करुणानन्द के वन्य कुटीर में स्वामी जी का आवास स्मरणीय
था; क्ोंचक मिात्माजनो िंके ऐसे चमलन में ईश्वरानुभूचत उनकी वाणी तथा कायश िारा अपने को
अचभव्यक्त करती िै।

आस्टेरचलया में स्वामी जी के आवास-काल में उनके सावशजचनक तथा असावशजचनक कायशक्रमो िं
का आयोजन करने वाले व्यस्क्तयो िंमें से एक डा. चवजयेन्द्र थे जो मुम्बई के अनुभवी योग-चर्क्षक
श्री योगेन्द्र के पुत्र िैं और मेलबोनश चवश्वचवद्यालय में एक योग-केन्द्र का संिालन करते िैं तथा दूसरे
व्यस्क्त आस्टेरचलया में रख्यात योग-रिारक रोमा ब्लेयर (चनमशलानन्द) थे चजनका देर्व्यापी योग-
पाठ-कायशक्रम िलता िै।

अब स्वामी जी चिमालय की ओर वापसी यात्रा पर थे। पुराने वायदो िंको पूरा करने तथा
अनेक थथानो िंमें भाषण देने में उन्ोंने नवम्बर मिा चफलीपाइन तथा िांगकांग में व्यतीत चकया।
तत्पश्चात् वि २४ नवम्बर को मलेचर्या गये। जाफना की चदव्य जीवन संघ राखा के नवचनचमशत
राथशना-भवन के उद्घाटन के चलए विााँ अल्पकाचलक चनवास के पश्चात् वि मुम्बई आये जिााँ उनका
रानदार स्वागत हुआ। वि २० चदसम्बर को चदल्ली पहुाँचे। यिााँ उन्ोंने स्वामी चर्वानन्द सांसृ्कचतक

---

14 गुरुदेव ने श्रीवथशरको१९५६ में आस्टेरचलया भेजा था।

सिंघ में अपने सम्मान में आयोचजत एक औपिारिक समारिो में राजधानी के नागररको िंको सम्बोचधत चकया। यिी उनकी एक और अचतमिान् यात्रा की समास्प्त का सीमाचिह्न बना ।

स्वामी जी २२ चदसम्बर १९७० को आश्रम में वापस आ गये। आश्रमवासी तथा ऋचषकेर् के भक्तजन, जो गत दो वषों से स्वामी जी की चवश्व-यात्रा की अवचध में उनके िारा की जा रिी स्मरणीय सेवाओ िंके चवषय में बहुत-कुछ सुन रिे थे, उनके आगमन की उतुसुकता से रतीक्षा कर रिे थे। आश्रम के रवेर्-िार पर उनके पहुाँिने पर कायशकारी-अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द जी ने सवशरथम उन्िें माला पिनायी और उनके पचवत्र िरणो िंमें नतमस्तक िो बहुत िी िषशपूवशक उनका स्वागत चकया। स्वामी जी ने अपनी चवचर्ष्ट नम्रता से इसका रचतदान चदया। उन्िोंने कृष्णानन्द जी के िरण स्पर्श चकये तथा उनका आचलिंगन चकया। स्वामी जी चवर्ाल जनसमुदाय के मध्य से, जो उनके स्वागताथश विााँ एकचत्रत था, अकस्मात् आगे बढ़ते गये और चिरकाल के चवयोग के पश्चात् अपनी माता से चमलने को उत्कस्ण्ठत बालक की भााँचत गुरुदेव के पचवत्र समाचध-मस्न्दर में िले गये। उन्िोंने मौन रूप से गुरुदेव को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत की, बिर आ कर एकचत्रत गुरुभाइयो िंतथा आश्रम-वाचसयो िंसे कुछ चमनट तक बातें की िंऔर र्ास्न्त से अन्दर जा कर अपना कायश पुनः ऐसे आरम्भ कर चदया मानो चक वि एक-दो चदन िी अनुपस्थथत रिे िो,िं मानो चक सद्यस्क अतीत में कुछ चवर्ेष बात हुई िी न िो। अतः लोग जो उन्िें सच्चा स्थथतरज्ञ किने को रेररत िोते िैं, उसमें कोई आश्चयश निी िंिै।

यि मिती चवश्व-यात्रा स्वामी जी की अस्न्तम चवदेर् यात्रा निी िंथी। वि अपने रेचमयो िंतथा भक्तो िंके दबाव से बारम्बार चवदेर् में जाते रिे िैं। इस भााँचत उन्िें १९७२ में लेबनान, पचश्चमी जमशनी तथा बचलशन की एक माि की यात्रा करनी पडी। वि योग-र्ास्न्त-चनकेतन की माता र्ान्ता िारा आयोचजत योग के छात्रो िंके एक रवर वगश में योगसूत्रो िंपर शिंखलाबद्ध व्याख्यान देने के एक चवर्ेष कायशक्रम से सन् १९७३ में पुनः बेरुत गये। सन् १९७५ में उन्िें योग-चर्क्षक-सम्मेलन में सस्म्मचलत िोने के चलए वायुयान िारा बिामा िीप जाना पडा। वि सिंसार के चवचभन्न भागो िं में वद्धशमान मिावीर का सन्देर् पहुाँिाने के चलए सिंघचटत एक आध्यास्त्मक चर्ष्ट-मण्डल में भी सस्म्मचलत हुए। उसी वषश उन्िें चदसम्बर माि में तीन सप्ताि के कायशक्रम पर मलेचर्या जाना पडा। सन् १९७६ के चदसम्बर माि में धमश तथा र्ास्न्त ने एचर्याई सम्मेलन के रचतचनचधयो िंमें भाषण देने के चलए वि चसिंगापुर गये। िंजोिाबगश'[15] के भक्तो िंका दीघशकाचलक अनुरोध उन्िें लम्बी अवचध के कायशक्रम परविााँ खिींि ले गया। ऐसा हुआ चक दचक्षणी अफ्रीका तथा यूरोप के अनेक भागो िंकी यात्रा करते हुए उन्िें नवम्बर ७७ से जून ७८ तक लगातार सात मिीने की लम्बी अवचध व्यतीत करनी पडी। इस भााँचत यि आगे िलता रिा िै। अपने स्वास्थ्य तथा सुचवधा से सवशथा उदासीन रि कर यि

[15] स्वामी जी के िंजोिाबगश पहुाँिने पर एक बहुत िी ममशस्पर्ी घटना हुई। सामान्यतया चर्वानन्द कौल्र्या के नाम से चवख्यात स्वामी जी की एक उत्कट भक्त माता रोज़ कागन बहुत चदन पिले से मृतुयु-र्य्या पर थी।िं मूच्छाशवथथा में जाने से पूवश उन्िोंने मिाराजश्री के अस्न्तम दर्शन के चलए राथशना की थी; परन्तु यि मानना कचठन था चक उनकी इच्छा की पूचतश िो सकेगी। चकन्तु चनश्चय िी उनकी राथशना सुन ली गयी। सिानुभूचतर्ील स्वामी जी, जो भक्तो िंके हृदय को जानते और उनका उत्तर देते िैं, उनके राण त्यागने से पिले उनके पाश्वश में थे। उनकी र्य्या के पास पहुाँिने के पश्चात् उन्िोंने कुछ समय तक राथशना की और उस भाग्यर्ाचलनी मचिला को उन्िें अपनी र्य्या के पास देखने के चलए कुछ क्षणो िंके चलए पुनः िेतना राप्त िो गयी। उन्िोंने स्पष्ट रूप से 'िरर ॐ' कि कर स्वामी जी को िाथ जोड कर नमस्कार चकया और इस भगवत्स्मरण तथा चदव्य, गुरु के दर्शन के साथ उन्िोंने अपना मत्यश र्रीर छोड चदया। चनश्चय िी वि भाग्यर्ाचलनी थी,िं क्योंचिंक उनका अस्न्तम सिंस्कार भी मिाराजश्री की उपस्थथचत से पचवत्र िो गया।

करुणारी्ल व्यस्क्त दूसरो िंके चलए और सदा िी उपयुक्त समय पर चवश्व के चवचभन्न भागो िंमें मौके-बे-मौके एक सिंथथा अथवा समय से दूसरी सिंथथा अथवा समय को सदा थथान-पररवतशन करता रिता िै।

स्वामी जी जिााँ-किी िंभी जाते, विााँ वि स्वभावतः िी अपने को सुखी अनुभव करते। उदिारणाथश जब वि उमेगनी नदी के तट पर डबशन में थे तो वि बडी उतुसुकता से विााँ जाते तथा उसे दचक्षणी अफ्ीका की पावनी गिंगा किते थे। वि चदव्य जीवन के सराण मूतशरूप में सिंसार में िारौ िंओर गये। यद्यचप लोग उन्ें एक मिान् भागवत पुरुष किते थे तथाचप वि अपने आचदष्ट कायश को, रेम के पचवत्र सन्ेदेर्वािक िोने के कायश को, ईश्वर के चपतृत्व तथा मनुष्य के भ्रातृत्व के सन्ेदेर् को ले जाने के कायश को करने वाले गुरुदेव के एक चवनम्र सन्ेदेर्वािक की तरि सदा व्यविार करते थे। वि पचश्चम चनवाचसयो िंको भारत के सनातन ज्ञान के भव्य उदािरण तथा रेम और करुणा की मूचतश, आधुचनक युग के यथाथश सन्त फ्ांचिसस रतीत हुए। यूरोप तथा अमरीका के चजज्ञासुओ िंतथा ज्ञानी लोगो िंने, जो धनोपाजशन करने वाले योचगयो िंअथवा अतीस्न्द्रय स्र्क्तयो िंवाले लोगो िंसे ऊब गये थे, उन्ें परम रेम तथा श्रद्धा के योग्य गुरु समझा। इस आध्यास्कि दोषदचर्शता तथा चनत्य वधशमान भौचतकवाद के अन्धकार-युग में भी अपने अपेक्षाकृत िरम रूप के वैज्ञाचनक अचवश्वास वाले चवर्ेषकर पचश्चम के लोगो िंने उनमें अचवश्वसनीय रूप से चदव्यता का चवर्ुद्ध तथा देदीप्यमान रकटीकरण पाया। उनकी आध्यास्कि मित्ता को पूणश रूप से समझने के चलए चकसी ने कभी भी पररिय के चलए रतीक्षा करने की आवश्यकता निी िंसमझी। यि चवर्ेष उल्ेलेखनीय िै चक पचश्चम देर्वाचसयो िंने, जो भी उनसे चमले, उन्ें िमत्कार अथवा आर्ीवाशद के खोटे आध्यास्कि मापदण्ड से कभी निी िंमापा । वे उनके पास एक चवरल वसुतु-चदव्यानन्द की सुस्पष्ट अनुभूचत-के चलए बारम्बार जाते तथा उनकी भौचतक उपस्थथचत के साचन्नध्य मात्र से परम सन्तोष अनुभव करते।

स्वामी जी उचिकास की सभी अवथथाओ िंके लोगो िंके चलए आर्ा का सन्ेदेर् ले गये। स्वापको िंके व्यसनी तथा कारागार की र्लाकाओ िंके पीछे रिने वाले अपराधी भी उनकी उपस्थथचत का उतुसुकता से स्वागत करते थे। सैन फ्ांचिसस्को के एक कारागार में उनके दर्शन तथा विनो िंने दृढ़ीभूत अपराचधयो िंके नेत्रो िंमें आाँसू ला चदये। उच्च कोचट के चववेकी लोगो िंने भी उनकी उपस्थथचत में अबोधता, आनन्द तथा उत्कषश की अलौचकक अवथथा अनुभव की िै। बूयूनस आयसश (अजेन्टीना) की सारा िमशन ने चलखा : "स्वामी चिदानन्द को िमसे चवदा हुए कई वषश िो गये, चकनुतु वि सदा िमारे हृदयो िंमें चनवास करते िैं। उन्ोनिें िमें और अचधक साधुवृत्त बनने की, अपने को पचवत्र बनाने की आकिांक्षा रदान की िै। उनकी उपस्थथचत ने बूयूनस आयसश में बहुत समुत्सिा उत्पन्न चकया। िमारे साथ उन्ोनिें जो चदन व्यतीत चकये, उन चदनो िंमें सभी उन्ें अपने पास रखना िािते थे, सवशत्र िी उन्ोनिें अपनी थथायी सूमृचत छोडी िै। उनकी उपस्थथचत सदा िमारे साथ िै और उनका रकार् अब भी िमारे हृदय को रकाचर्त करता िै।"

पचश्चमी देर्ो िंमें उन्ोनिें चजज्ञासुओ िंके मन में यि चबठा चदया चक व्यस्क्त के अपने ज्ञान के उपगमन में दूसरो िंका, सिंसार का तथा समाज का ज्ञान भी समाचवष्ट िै, इससे योग एक सवशतोमुखी रचक्रया िै। उन्ोनिें किा चक आध्यास्किता एक वैश्व सिंसूकृचत िै और इसकी रास्प्त िी मानव जाचत का िरम लक्ष्य िै। उन्ोनिें बहुत िी सीधे-सादे ढिंग से यि रमुख चविार समेप्रेचषत चकया चक योग इस सवशतोमुखी उपगमन का एक राचवचधक नाम िै। रिीन र्ास्त्रो िंके अपने चनवशिन में स्वामी जी ने जो उदार मनोवृचत्त, चवश्वजनीन रेम तथा रज्ञा रदचर्शत की, वि अपने-अपने मत तथा व्यवसाय का ध्यान न रख कर सभी को अच्छी लगने लगी। वि जब उद्यानो िंअथवा

र्िल भूचम में चविरण करते तो अडोस-पडोस के लोग उनके मुख-मण्डल की दीस्प्त देखने तथा उनके कायश तथा ि्टा की रत्येक मुिा में चदव्यता के राकट्य का अवलोकन करने को एकचत्रत िो
जाते थे। उन्ोंने कभी भी अपनी चसस्द्धयााँ चदखलानी नीं िींिी।ि चकन्तु इस ईर्मानव की एक
सामान्य-सी राथशना अद्भुत कायश कर सकती िै। ऐसे असिंख्य उदािरण िैं जब भूमण्डलभर के
भक्तो िंने साक्ष्य चदया िै चक उनके आर्ीवाशदो िंने लोगो िंकी घोर चवपचत्त से रक्षा की िै। इन उदािरणो िंमें
दसुयु के ररवाल्वर से ले कर असाध्य दूषण तक के पयाशप्त चवचवधता वाले अनुभव समाचवष्ट िैं। कुछ लोगो िंने तो
सभामिंिि िंपर भी इन अनुभवो िंका वणशन करने का कष्ट उठाया िै;
क्योंचक वि जो अपनी उपस्थथचत से पचवत्रता, र्ुचिता तथा चवनम्रता रसाररत करते िैं, विी
आध्यास्त्कित। की सवोत्कृष्ट रचतभूचत िै। व्यस्क्त लोगो िंको एक आलिोक के उस लिजे को
रचतध्वचनत करते हुए बारम्बार सुनता िै जो उसने किा : "वि जो कुछ भी उपदेर् करते िैं,
उसे िम उन्ें अपने जीवन में िररताथश करते हुए देखते िैं और ऐसा व्यस्क्त सिंसार को चिला
सकता िै।"

स्वामी जी की ज्ञानमयी वाणी ने अनेक लोगो िंके जीवन में क्रास्न्त ला दी िै। माता चसमोनेटा
चड सेसैररयो पैररस के एक रचसद्ध भूषिार-गृि में एक रमुख इतालवी अचभकल्पक थी।ि स्वामी जी
के एक भाषण ने, चजसे उन्ोंने पैररस में सुना, उनके जीवन को बदल चदया। उन्ोंने भगवान् की
खोज तथा मनुष्यो िंमें चनम्नतम की सेवा के चलए अपने को समचपशत कर चदया। चवचलयम सी. ईलसश
एक समवाय (कम्पनी) के सिंलिक थे, चकन्तु स्वामी जी के सम्पकश ने उन्ें सिसा अन्तमुशखी बना
चदया और बहुत र्ीघ्र िी उन्ोंने अपना जीवन उच्चतर कतशव्य के चलए अचपशत कर चदया। इसी
भााँचत डान चब्रडल, जो र्ास्न्त-सेना के स्वयिंसेवक थे, स्वामी जी के पररमल से आकचषशत हुए।
पौला माता जेर्म् टाउन में एक पररिाररका थी।ि स्वामी जी के आर्ीवाशद ने उनके जीवन की
कायापलट कर दी।

उन्ोंने भूमण्डल की सभी चदर्ाओ िंमें र्ाश्वत सत्य का चिरन्तन सन्देर् पहुाँिाया तथा दर्ाशया
चक सभी धमों का उद्देश्य चदव्यता के स्तर तक मानवता का उत्थान करना िै। उन्ोंने नानाचवध
मतो िंके अनुयाचययो िंसे मनवा चलया चक योगमय जीवन का अथश िै मानव-र्रीर को व्याप्त करने
वाला चदव्य जीवन। जिााँ-किी िंभी उन्ोंने भाषण चदया, विााँ उन्ोंने लोगो िंके हृदय में गम्भीर
रभाव डाला तथा उन मृण्मय मनुष्यो िंमें से अनेको िंको गचतर्ील आध्यास्कि वीर में पररवचतशत कर
उन्ें आध्यास्कि जीवन का पथ अपनाने के चलए रेररत चकया. जो इस रकार का सािचसक कायश
तत्काल आरम्भ करने की स्थथचत में नीं िंथे, वे कम-से-कम अपनी गिरी आि-चनिा से जगा चदये
गये िैं। वि चदग्भ्रान्त तथा अर्ान्त पाश्चात्य देर्ो िंके लोगो िंके चलए र्ास्न्त तथा असम्भ्रम का
आश्वासन ले गये। उन्ोंने दर्ाशया चक आध्यास्कि रगचत आधुचनक जीवन में व्यस्त कायशक्रम के
अनुकूल िै तथा आध्यास्कता का सम्पोषण मिानगरो िंके ठोस राजपथ पर उतना िी चकया जा
सकता िै चजतना चक चिमालय के चवरचलत चर्खरो िंपर। कुिंिा तथा ििंसात्मक रचतस्पधाश से चघरे हुए
समाज को उन्ोंने अनािंसा तथा आत्याग की मचिमा चदखलायी तथा लोगो िंमें नव-चवश्वास भरा,
उनमें उच्चतर आमय जीवन के नूतन आनन्द का सिंिार चकया और इसे उन्ोंने अपने उद्बोधक
भाषणो िंतथा रेरक कीतशनो िंसे उतना िी चकया चजतना चक अपने सुन्दर उदािरण से ।

सप्तम अध्याय

सन्तो िंकी सिंगचतमें

"महत्सां गसु दुलपिोऽगम्योऽमोघि

-िमिााओ िंका सिंग दुलशभ, अगम्य और अमोघ िै" (नारदभस्क्तसूत्र-३९)।

स्वामी चिदानन्द ने दो दर्को िंतक चवश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण चकया,
बहुत बडी दूरी तय की तथा िमिीपो िंके आर-पार अपने यर् की सुरचभ फैलायी। उन पर
अतुलनीय श्रद्धा तथा ररिंसा की वृचष्ट िोती री, बहुत बडी सिंख्या में नगर तथा लोग उनके दर्शन
की माँग करते रि, आध्यास्कि तथा रापिंचिक दोनो िंरकार के अत्यचधक रचतचष्ठत व्यस्क्तयो िंने उन्
अपनी श्रद्धािंजचल तथा सकामनाएँ अचपशत की;िं चकनुतु वि सदा की भााँचत िी विी चवनम्र तथा सरल
सन्त, गुरुदेव का रकार् चवचकरण करने वाले क्रकि (चरज्म; बने रि। लोक-सिंग्रि तथा एकान्त-
साधना के अचतररक्त यचद उनकी कोई वैयस्क्तक कामना थी तो वि थी सन्तो िंकी सिंगचत की।
उनके मन में यि कभी निी िंआता िै चक वि स्वयिं एक उच्च कोचट के सन्त िैं जो अपने को
चकसी उत्कृष्ट एकान्तता में रखने का पयाशप्त कारण िै। गुरुदेव ने बार-बार किा था चक 'चिदानन्द
एक जन्मजात सन्त, आदर्श योगी, परम भक्त तथा मिान् ज्ञानी िैं' तथा इस दृढ़ोस्क्त की सत्यता
स्वामी जी के जीवन तथा कायों ने अनेक रकार से चसद्ध भी कर दी िै। चनष्कल्मष व्यस्क्तगत
पचवत्रता तथा सजातीय मानवो िंके चलए गिरी सिंवेदना, जो उनके समग्र जीवन की चवचर्ष्टताएँ िैं,
चकसी मिान् सन्त में िी िो सकती िैं। एक ओर तो वि अपनी समस्त सिंवेदना तथा लोक-सिंग्रि
को रखते हुए भी अपने हृदय के गुप्त रकोष्ठ में चनरन्तर रचतचष्ठत रिते िैं, अनाचद तथा अमर
सत्ता के साथ एकीभूत रिते िैं तो दूसरी ओर अपनी पूणश अनासस्क्त तथा चनरवर्ेष आि-तुचष्ट के
िोते हुए भी वि सभी मतो िंतथा देर्ो िंके सन्तो िंसे चमलने तथा उनके साथ सिंलाप करने को सदा
लालाचयत रिते िैं। रवृचत्त के आन्तर तथा बाह् क्षेत्रो िंमें जैसा एकीकरण चिदानन्द लाते िैं वैसा
केवल एक आदर्श योगी िी कर सकता िै। उनके सदृर् सरलता, चवनम्रता तथा अपने ितुचदशक् के
सभी अथथावर राचणयो िंके रचत रखर चकनुतु अनासक्त रेम एक परम भक्त में िी िो सकता िै।
जीवन के गम्भीर दार्शचनक सत्यो िंके व्यक्तीकरण की उनकी सिजता तथा रर्स्य सरलता केवल
मिान् ज्ञानी में िी िो सकती िै। स्वामी जी कदाचित् िी कभी कोई उद्धरण देते िैं। उन् अपने
भाषणो िंके चलए चजस सामग्री की आवश्यकता िोती िै, उसे वि राय: अपने अन्दर से िी लाते
िैं; तथाचप वि अपने सभी धमोपदेर्ो िंमें ऐसी अचत-जचटल तथा दुबोध समस्याओ िंकी िििाश करते

तथा उनें स्पष्ट करते रिते िैं चजससे रकाण्ड वेदान्ती भी चवस्स्मत तथा अचभभूत िो जाते िैं। जब वि अपना मुँाि खोलते िैं, तो वि सिज ज्ञानी की अवथथा में िोते िैं। जब कभी वि बातें करते
ैं तो उनके ओष्ठो िंसे स्रािु रूप से चवित्ता मात्र निी िंअचपतु ज्ञान टपकता िै। ये बातें इतनी सुचवचदत िैं चक इनके चवस्तार में जाने की आवश्यकता निी िििै। भूमण्डल के सभी सुदूर भूभागो िंमें असिंख्य कृतज्ञ साधको िंने स्वामी जी में भस्क्त, ध्यान तथा ज्ञान के अद्भुत समिय के अपने-अपने मूल्यिांकन अिचकत चकये िैं। यचद मानव जाचत के सामान्य लोगो िंकी ऐसी अनुचक्रया िै तो रश्न उठता िै चक उनके समान अवास्प्त वाले लोग उनें चकस रूप में देखते िैं? स्वामी जी सन्तो िंतथा योचगयो िं
के रचत कैसा व्यविार करते िैं और वे लोग इनके साथ कैसा व्यविार करते तथा इनें कैसा मानते
ैं? सन्तो िंकी रीचत अबोधगम्य िोती िै, उनके सम्भाषण की भाषा िमारे चलए अत्यचधक गूढ़ तथा
7 रिस्यपूणश िोती िै। तथाचप उनकी पारस्पररक अनुचक्रयाएँ तथा समादर कभी-कभी ऊपर आते िैं
और यि चविाराधीन पूिािाओ िंकी मित्ता को समझने का रयास करने = वाले व्यस्क्त के चलए
चनश्चय िी परम मित्त्व का चवषय िै।

सन्तत्व स्वामी जी के जीवनभर उनके अरचतरोध्य आकषशण का चवषय रिा िै। चकनुतु यि
सन्तत्व ऐसा निी िंथा जो चकसी चवरे्ष वगश अथवा साधना के अन्तगशत िो। सामान्य सिंन्यासी से
चभन्न, स्वामी जी अपने जीवन के रारस्म्भक काल से िी, जिााँ-किी िंभी उनें सन्तत्व चदखायी देता,
उस पर ध्यान देने तथा उसको मित्त्व देने को पयाशप्त सिंवेदनर्ील थे। गैररक वस्त्र उनके हृदय में
रवेर् पाने के चलए कोई आवश्यक पारपत्र न था। उदािरणाथश, गान्धी जी उनके चलए आजीवन
एक मिान् सन्त बने रिे। वि उन सवशरथम सन्तो िंमें से एक थे जो उनके जीवन में बहुत िी
अल्पायु में आये तथा चजनोिंने उनके व्यस्क्तत्व पर अपना अचमट रभाव डाला। सत्य, अििंसा तथा
ब्रह्मियश, बो बापू जी के चसद्धान्त थे, श्रीधर के रारस्म्भक जीवन से िी उनके वैयस्क्तक स्वीकृत
धमश बन गये। राम-नाम ने, जो गान्धी जी का राय: राण था, उनके हृदय में उसके समान थथान
पाया। वास्तव में, व्यस्क्त स्वामी जी के जीवन में ऐसी अनेक मित्त्वपूणश बातें देख सकता िै चजनमें
उनके ऊपर गान्धी जी का रभाव अन्तभूशत िै। उदािरणाथश व्यस्क्त इस चदर्ा में उनकी कुचष्ठयो िंकी
सेवा तथा िररजनो िंकी पूजा की ओर इिंचगत कर सकता िै।

अपनी िीरक जयन्ती के उत्सव-काल में गान्धी-जयन्ती के अवसर पर उनोिंने िररजन-
अचतचथयो िंके िरणो िंमें मूलाथाशनुसार रचणपात कर तथा उनकी थाचलयो िंसे रसाद मााँग कर उनका
चजस रकार आचतथ्य-सत्कार चकया, उसे देख कर लोग सम्भ्रान्त तथा चवस्मयाकुल िो गये। गुरुदेव
चर्वानन्द भी गान्धी जी के रचत इसी रकार का सम्मान भाव रखते थे। वि अपने रेम के रतीक-
रूप में उनें अपने सभी रकार्न भेजा करते थे। एक बार उनोिंने स्वामी जी को अपने वैयस्क्तक
रचतचनचध के रूप में योग पर अनेक नवीनतम पुस्तको िंके साथ भेजा। सन् १९४६ को अतुयुष्ण जून
मास में स्वामी जी, जब वि गैररक वस्त्ररचित एक अवर ब्रह्मिारी थे, रीचडिंग रोड (अब मस्न्दर-
मागश) के उत्तरी छोर पर स्थथत भिंगी-बस्ती गये जिााँ मिािा जी उन चदनो िंठिरे हुए थे। जब वि
पहुाँिे तो चदन के ढाई बजे थे। भीषण ताप था। गान्धी जी उस समय एक कच्चे पणशकुटीर में अपने
चर्र पर गीला तौचलया बााँधे हुए एक काष्ठ-फलक पर बैठे थे। चर्वानन्दाश्रम के इस अवर ब्रह्मिारी
को भारत के अनचभचषक्त सम्राट् के समुमुख जब पहुाँिाया गया, उस समय वि चवश्राम कर रिे थे।

मानव-जाचत के दो रबुद्ध सेवक सामान्य पररसर में चमले। स्वामी जी ने अपने मस्तक को
बापू जी के िरणो िंमें परम चवनम्रता के साथ रख कर उनें नमस्कार चकया। यि साधको िंके चलए
चर्क्षारद कायश था जो राय:, चजनोिंने साधुवेर्भूषा को धारण निी िंचकया िै, उनकी पात्रता का
ध्यान चकये चबना उनकी अपेक्षा स्वयिं के वररष्ठ िोने की कुछ सूक्ष्म भावना से आिरण करते िैं।
बापू जी ने गुरुदेव के सम्बन्ध में सस्नेि पूछताछ की तथा चर्वानन्द जी मिाराज की बहुमूल्य
पुस्तकें समय-समय पर राप्त करते रिने पर अपनी कृताथशता व्यक्त की। तत्पश्चात् स्वामी जी ने
गुरुदेव की नवीनतम पुस्तको िंका पुचलन्दा भेंट चकया। गान्धी जी ने बडे स्नेि से पुचलन्दा खोला तथा

रत्येक पुस्तक पर आदर के साथ दृचष्टपात चकया। वि चदव्य जीवन सिंघ की रवृचत्तयो िंसे पररचित थे। उन्ोनिें अपना ाचिदशक आभार व्यक्त चकया। बापू जी से चवदा लेने से पूवश स्वामी जी ने उनका
आर्ीवाशद माँगा। गान्धी जी ने, जो जिाँ तक उनका सम्बन्ध िै स्वामी जी की सन्तसुलभ मित्ता से
रभाचवत िो िुके थे, किा: "आप पिले से िी भाग्यर्ाली िैं। सवशर्शक्तमान् रभु आपको आपकी खोज में अपनी कृपा रदान करें!" जब स्वामी जी ने मििाा जी से गुरुदेव के चलए सन्देर् माँगा
तो उन्ोनिें बडी िी नम्रता से उत्तर चदया : "मैं क्ा सन्देर् दे सकता हाँ? स्वामी जी का आध्यास्कि जीवन का सन्देर् चवश्वभर में सिस्रो िंलोगो िंको रेरणा दे रिा िै। िमें ऐसे सत्कायश की
आवश्यकता िै। कृपया उन्ें मेरा रणाम कचिएगा।" ऐसा किते हुए गान्धी जी ने अचभवादन में
अपने दोनो िंिाथ जोड चलये।

यि मििाा जी के साथ स्वामी जी की चितीय तथा अस्न्तम भेंट थी। इसमें अतीव
जिीयता अथवा िमत्काररता जैसा कुछ भी न था, तथाचप यि स्वामी चिदानन्द की आजीवन
अन्त: रेरणा बनी रिी। गान्धी जी के रचत स्वामी जी का रगाढ़ सम्मान चनम्निांचकत पिंस्क्तयो िंसे रकट
िोता िै चजन्ें उन्ोनिें सन् १९६९ में गान्धी-र्ताब्दी-समारोि के अवसर पर किा था : "यि वषश
धन्य िै जो इस वास्तचवक मिान् आिा के इस भूलोक में आगमन की र्ताब्दी को लचक्षत करता
िै। यि गान्धी-वषश मेरे चलए वस्तुतः राम-नाम-वषश का, सत्यभाषण, विन-पालन, आिपरीक्षा,
उपवास, राथशना तथा चनथस्वाथश सेवा का वषश िै। मेरे चलए इन सबका अथश गान्धी जी िैं।"

सन्तो िंकी सिंगचत में स्वामी जी का आिरण चवर्ेष रूप से चर्क्षारद िोता िै। भारतीय
परम्परा के पक्के अनुयायी वि वयोवृद्ध सन्तो िंको बडी िी चवनम्रतापूवशक नमस्कार करते, उनका
अत्यचधक चर्ष्ट तथा अवधानपूणश रीचत से आचतथ्य-सत्कार करते तथा उन्ें सम्मान देते िैं। गुरुदेव के
जीवन काल में कैलास-आश्रम के मिामण्डलेश्वर स्वामी चवष्णुदेवानन्द जी मिाराज, चिमालय के
िूडामचण तथा आकार्दीप उत्तरकार्ी के स्वामी तपोवन जी मिाराज, गुरुदेव के पूवाशश्रम के
सिपाठी तथा दचक्षण भारत के सन्त-चविान् कचवयोगी मिचषश र्ुद्धानन्द भारती जैसे वयोवृद्ध
लब्धरचतष्ठ आध्यास्कि व्यस्क्त आश्रम में आया करते थे। उस समय स्वामी जी मिासचिव थे। वि
उन सबकी सेवा का सभी उत्तरदाचयत्व अपने ऊपर ले चलया करते थे और इसे अपनी लोकरचसद्ध
चवनम्रता से सम्पन्न करते थे। कचवयोगी के चमलन को वि एक र्ताब्दी के सत्सिंग के तुल्य मानते
थे। इसी भाँचत वि वषश में न्यूनाचतन्यून एक बार गुरुदेव की भेंट के साथ कैलास-आश्रम के
मिामण्डलेश्वर के दर्शन करने को उत्सुक रिते थे।

चर्वानन्दाश्रम के अपने रारस्म्भक आवास-काल में एक बार स्वामी जी अस्वथथ िो गये।
गुरुदेव ने िररिार के एक सुरचसद्ध आयुवेचदक वैद्य की देख-रेख में उनके उपिार की व्यवथथा
कर दी। स्वामी जी को विाँ गुरुदेव के एक भक्त के पास रिना था। जब िररिार में उनका
उपिार िल रिा था, उस अवचध में वि स्वामी आिानन्द नामक सन्त के सम्पकश में आये जो
सुरचसद्ध स्वामी ब्रह्मानन्द के एक चर्ष्य थे। स्वामी आिानन्द पारस्पररक वाताशलाप-काल में साधक
के जीवन के एक बहुत िी मित्त्वपूणश पिलू पर बल चदया करते थे। वि इस बात की मिती
आवश्यकता मानते थे चक साधक को सिांसाररक व्यस्क्तयो िंसे अपने को दूर रखना िाचिए। यचद
ज्ञानी जनो िंकी सिंगचत में रिना उसके चलए सम्भव न िो सके तो पूणश एकान्तवास करना उसके
चलए श्रेयस्कर िै। तथाचप उनकी यि मान्यता थी चक ज्ञानी जनो िंकी सिंगचत साधक के चलए
अत्यावश्यक िै। स्वामी आिानन्द के सत्सिंग के मित्त्व पर बल देने से स्वामी जी के मन पर
उसकी गिरी छाप पडी।

गुरुदेव जब कभी स्वामी जी को चकसी काम से चकसी अन्य थथान को भेजते तो वि
समीपवती मििााओ िंके दर्शन के सुअवसर को कभी भी िाथ से जाने निी िंदेते थे। एक बार
स्वामी जी नेत्रो िंकी जलन से पीचडत थे। गुरुदेव ने उन्ें स्वगाशश्रम जा कर आश्रम के औषधालय में
अपने नेत्रो िंकी जाँि कराने का परामर्श चदया। अतः स्वामी जी स्वगाशश्रम गये। विाँ उन्ें पता िला
चक एक रबुद्ध आिा, परमिंस नारायण स्वामी उसी समय स्वगाशश्रम में आये िैं। नारायण स्वामी

अपने पूवाशश्रम में एक न्यायाधीर् थे। अपनी पिासवें वषश की आयु में उन्ोंनें स्वप्न में अपने गुरु के रूप में भगवान् नारायण का दर्शन चकया। उन्ोंनें दूसरे चदन रातःकाल ी अपनी ऐश्वयशर्ाली
जीवन-वृचत्त को त्याग चदया तथा बदरीनाथ की यात्रा की जिााँ भगवान् नारायण मस्न्दर के सामने उनके समक्ष रकट हुए। तत्पश्चात् वि भागवतीय ितना में अिचनशर् अचभचनचवष्ट रि कर सदासवशदा
अपनी साधना में तल्लीन रिते। वि कभी नमशदा तट पर वास करते तो अन्य समय पर उत्तरकारी्
में। केवल मध्य चर्चर्र में ी वि स्वगाशश्रम में कुछ चदनो ितक रि करते थे। उनके इस रकार के
एक आगमन के समय ी स्वामी चिदानन्द जी की इस मिान् तपस्वी से भेंट हुई और तत्पश्चात् वि
इस मिाभाग आिा के चनकट सम्पकश में आये। जब उन्ोंनें स्वगाशश्रम में उस सन्त का दर्शन चकया
तो उन्ें मालूम हुआ चक सन्त की सम्पचत्त मात्र टाट की बोरी थी चजसका वि वस्त्र के रूप में उपयोग करते थे तथा एक िंसि-दण्ड था जो उनके सिंन्यासाश्रम का चिह्न था। उस समय नारायण स्वामी पच्चीस वषश की दीघाशवचध तक िलने वाले अपने मौनव्रत को पूणश कर िुके थे। वि सत्यवाचदता तथा वाणी की मधुरता पर चवर्ेष बल देते थे। वि साधक के चलए आिार के उचित
यिन की मिती आवश्यकता बतलाते थे। अन्य चवषय चजसको वि मित्व देते थे, वि था रचतचदन नूयूनाचतनूयून ग्यारि माला (११८८ बार) अपने इष्ट-मि का अवश्यमेव जप । स्वामी जी ने उनमें
चवनम्रता तथा सरलता को मूचतशमान पाया। यि मन्त केवल दूध तथा उबाले तथा घी में तले नमक- रचित आलू पर चनवाशि करते थे। स्वामी जी ने एक चदन रातःकाल उन्ें वन में नारायण के चदव्य नाम के जप में तल्लीन देखा। उनके आनन्दमय मुखमण्डल से स्वचगशक आह्लाद फैल रिा था।
स्वामी जी इस आनन्दमय अवथथा में उनका दर्शन लगातार घण्टो ितक करते रिे और उन्ोंनें स्वयिं भी उस एकाकीपन में अन्तरिाा के आनन्द का अनुभव चकया। स्वामी जी के चलए ऐसे सन्तो िंका
सिंग उनके जीवनभर सदा ी एक स्मरणीय तथा सजीव अनुभव रिा ै।

रचतचष्ठत चदव्य व्यस्क्तयो िंके साथ स्वामी जी के सम्बन्ध की चवर्ेषता वसुतुतः अवणशनीय ै।
वतशमान काल में आध्यास्कि जगत् में श्री श्री मााँ आनन्दमयी उच्च कोचट की चदव्य के रूप में
दीस्प्तमान ैं। उनके साथ स्वामी जी का सम्बन्ध तथा व्यविार वास्तव में उन्नतकारी तथा रोमिषशक
ै। वे दोनो िंपरस्पर जो रेम तथा सम्मान रकट करते ैं उसकी गिनता सम्पकश की एक वास्तचवक
चदव्य पररपाटी व्यक्त करती ै। सन् १९४८ के मधुमास में पूज्य स्वामी जी ने वाराणसी में रथम
बार श्रद्धास्पद माता जी का दर्शन चकया। वि उस समय मेयो चिचकत्सालय में दीघशकाचलक उपिार
से स्वास्थ्य-लाभ के पश्चात् नागपुर से वापस आ रिे थे। चर्वानन्दाश्रम की वापसी-यात्रा में वि
वाराणसी में रुके तथा श्री मााँ के पचवत्र आश्रम में गये। श्री मााँ उन चदनो िंएक गायत्री मियज्ञ करवा
रिी थी िंतो तीन वषश तक िलता रिा। इस मियज्ञ-काल में ी दोनो िंचदव्य व्यस्क्त परस्पर चमले।
आठ वषश के अनन्तर जब श्री मााँ गुरुदेव चर्वानन्द से चमलने ऋचषकेर् आयी िंतो उन्ें एक बार
पुनः उनके चदव्य साचन्नध्य के आनन्दोपभोग का रर्स्य अवसर राप्त हुआ।

गुरुदेव की मिासमाचध के पश्चात्, स्वामी जी तथा श्रद्धास्पद श्री मााँ जी सत्सिंग के आनन्द
ेतु अनेक बार परस्पर चमले। सन् १९६४ में जब गुरुदेव की जन्म-जयन्ती मनायी गयी तो पूजनीया
मााँ आनन्दमयी ने पुण्य-श्लोक गुरुदेव को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत करने के चलए अपनी उपस्थथचत
से समारोि को सम्माचनत चकया। श्री मााँ में स्वामी चर्वानन्द जी तथा स्वामी चिदानन्द के चलए
असाधारण रेम तथा सम्मान ै। वि इन दोनो िंमें कोई भेद निी िंकरती।िं आज भी वि स्वामी जी
को 'चर्वानन्द बाबा' कि कर सम्बोचधत करती ैं। वि चिदानन्द जी मिाराज के चलए रर्िंसािक
भावो िंसे ओत-रोत ैं। उनका चविार ै चक स्वामी जी की सामान्य िेष्टर् भी ध्यान देने योग्य ै।
उन्ें ऐसा किते हुए सुना गया : "स्वामी जी जब चनश्चल बैठे िोते ैं, उस समय भी उनका
अिंग-चवन्यास एक बहुत ी सौम्य मुिा िोता ै।" वि उनको अपनी सन्तान के समान रेम करती
ै, योगी के रूप में उन्ें सम्मान देती ैं, सन्त के रूप में उनकी रर्िंसा करती ैं तथा अपने
चमत्र के समान उनके साथ व्यविार करती ैं। इसी रकार स्वामी जी भी उन्ें भगवती मााँ का
अवतार मानते ैं।

श्री माँ सदा ही स्वामी जी को श्री आनन्दमयी सिंघ िारा समय-समय पर आयोचजत सिंयम-सप्ति-मिाव्रत में सस्म्मचलत िोने तथा उसमें भाग लेने वालो िंको सम्बोचधत करने के चलए से्निमय चनमिण देती िैं। स्वामी जी भारत के चवचभन्न थथानो िंमें िोने वाले इन समारोिो िंमें, जब भी सम्भव िो पाता िै, सस्म्मचलत िोने का चनश्चय रखते िैं। िाल में कोलकाता के चनकट भाषा ग्राम में श्री माँ के भक्तो िंने अिमदाबाद के चनकट इसी रकार के एक समारोि में तीन चदन सस्म्मचलत िोने के चलए स्वामी जी को आमस्ति चकया। श्री माँ ने, चजनकी उपस्थथचत में चनमिण चदया गया, अपना मत व्यक्त चकया चक बाबा के चलए तीन चदन अपयाशप्त िोंगे और कम-से-कम पााँच चदन तक समारोि में उपस्थथत रिने का उनसे अनुरोध चकया। स्वामी जी ने उनसे इसमें उपस्थथत न िो सकने के चलए क्षमा-यािना की; क्ोंचक वि कुछ अन्य लोगो िंको उन्ी िंचदनो िंमें उनके समारोिो िं में सस्म्मचलत िोने का पिले िी वचन दे िुके थे। श्री माँ आनन्दमयी ने मृदु मातृसुलभ खेदपूणश वाणी में अपनी मनोव्यथा व्यक्त की चक अन्ततः बाबा निी िंसस्म्मचलत िोंगे। इस पर स्वामी जी ने मुखररत स्वर में बल देते हुए किा, “यचद श्री माँ की ऐसी इच्छा िोगी तो यि सेवक चनश्चय िी दोनो िंथथानो िंमें उपस्थथत िोगा।" स्वामी जी का, जो असाधारण कार्यों का सिंकेत सबके समक्ष न रकट करने को सदा सावधान रिते िैं, ऐसा दृढ़ कथन, मिान् सन्त चजस अचतभौचतक स्तर पर सम्पकश करते िैं, न केवल उसे व्यक्त करता िै अचपतु वि मिान् सम्मान भी रकट करता िै चजसे वि उनके रचत रखते िैं।

जैसा चक ऊपर बताया गया िै स्वामी जी श्री आनन्दमयी सिंघ के साधना-कायशक्रमो िंमें रायः सस्म्मचलत िोते िैं। एक बार सिंयम-सप्ति में सस्म्मचलत िोने के चलए वृन्दावन में माँ के आश्रम पहुँचे। जब उनके पहुँचने का समािार पूजनीया माँ को चदया गया तो वि उनका स्वयिं स्वागत करने के चलए तुरन्त बािर आयथी। स्वामी जी ने जब उन्ें अपनी ओर आगे बढ़ते देखा तो उन्ोिंने तत्काल भूचम पर दण्डवत् रणाम चकया। श्री माँ एक क्षण के चलए आश्चयशचचकत-सी रि गयौ।िं तत्पश्चात् उन्ोिंने सानुकम्पा असम्मचत रकट करते हुए किा : "बाबा, आप क्ा कर रिे िैं।" स्वामी जी ने कुछ निी िंकिा; क्ोंचक वािाँ कुछ किने के चलए था िी निी।िं वि अपनी सामान्य सत्ता में नम्रता तथा सदािार के मानवीकरण थे। तदनन्तर श्री माँ ने समारोि के कायशक्रम की रूपरेखा देना आरम्भ कर चदया और स्वामी जी से जानना िािा चक क्ा वि उसे 'ठीक' समझते िैं। स्वामी जी ने नम्रतापूवशक उत्तर चदया : "जब यिााँ श्री माँ ठीक िैं तो सब-कुछ अवश्य िी ठीक िोगा।" श्री माँ स्खलस्खला कर िाँस पडी और तत्पश्चात् गम्भीर स्वर में बोली िं: "यचद किी िं कुछ त्रुचट िै तो बाबा स्वयिं सुधार लेंगे। आस्खर यि आश्रम भी बाबा का िी िै।" अपने वाताश-काल में उन्ोिंने स्वामी जी को स्मरण चदलाया चक अगले चदन एकादशी िै। स्वामी जी ने चर्ष्टतापूवशक किा चक सिंयम-सप्ति में भागीदार िोने से उन्ोिंने पिले िी व्रत में अपना नामािंकन करा चदया िै।

माता ने गम्भीर स्वर में किा: "बाबा तो चनत्य िी सिंयम की अवथथा में रिते िैं।" माँ आनन्दमयी के स्तर की भगवत्साक्षात्कार राप्त आत्मा का यि अथशगचभशत कथन स्वामी जी की चनरन्तर तपस्या की आभ्यन्तर अवथथा का रबल रमाण रस्तुत करता िै। स्वामी जी जो कुछ भी िैं, उससे अब उन्ें उपवास तथा अन्य तपो िंकी आवश्यकता निी िंिै तथाचप अन्य चजज्ञासुओ िंके चलए उदािरण बनने तथा भौचतक र्रीर को सतत कठोर अनुर्ासन में रखने के चलए वि सदा उपयुक्त बाह् अनुर्ासन का पालन करते िैं। भगवान् ने गीता (३-२१,२२) में किा िै : "श्रेष्ठ व्यस्क्त जो-जो आिरण करता िै, अन्यान्य साधारण व्यस्क्त उसका िी अनुसरण करते िैं। वि जो-कुछ रमाण कर देता िै, लोग भी उसके अनुसार बतशते िैं। िे अजुशन! चत्रलोक में मेरा कुछ भी कतशव्य कायश निी िंिै और न कोई राप्तव्य मेरे चलए अराप्त िै; चफर भी मैं कमश में रवृत्त रिता हाँ।"

स्वामी जी के वािाँ से चवदा िोने के चदन पूजनीया माता जी उनके साथ सत्सिंग में सस्म्मचलत हुईं। स्वामी जी तथा माता जी दोनो िंिी भक्तो िंसे चघरे थे। एक भक्त ने जो छायाचित्र लेना िािता था, स्वामी जी से माता जी के पास स्खसकने की राथशना की। स्वामी जी तत्परता से स्खसक कर श्री माँ के बहुत चनकट िो गये तथा चटप्पणी की : "क्ा आप सोिते िैं चक मैं श्री माँ से कभी दूर हाँ? मैं सदा िी उनकी सचन्नचध में हाँ।" इस पर श्री माँ का मुख रफुल्ल मुस्कान से दीप्त िो

उठा। फोटो लेने का काम समाप्त िोने पर स्वामी जी ने चित्रकार से पररिास में कि: "कृपया छायाचित्र की एक रचत मुझे भी भेचजएगा चजससे मैं देखूाँ चक मैं श्री मााँ के चकतने चनकट हाँ।"

उस साधना-कायशक्रम में बहुत बडी सिंख्या में चजज्ञासु सस्म्मचलत हुए। उनमें अचधकतर श्री मााँ के आश्रम की पाठर्ाला के सिंस्कृत के युवक छात्र थे। उन्ोिंने स्वामी जी के अल्पकाचलक आवास-काल में उनकी अच्छी सेवा की । स्वामी जी ने इसके मान तथा आभार के रतीक-रूप में उन्ें चमष्टान्न तथा फल के कुछ चडब्बे भेंट चकये; चकन्तु चकसी ने उन्ें बताया चक साधको िंको जो भोजन परोसा जाता िै, उसके अचतररक्त अन्य कुछ खाना उन्ें मना िै। यि सुन कर स्वामी जी ने अपने एक चर्ष्य को भेंट के साथ श्री मााँ के पास जाने तथा उस भेंट के पीछे जो उद्देश्य िै, उससे उन्ें अवगत कराने का कायश सौिंपा। जब चर्ष्य ने श्री मााँ को यि सन्देर् चदया तो वि एक क्षण मौन रिीिं। चफर वि तत्काल मुस्करा पडी िंऔर उन्ोिंने किा, “ठीक िै। यचद बाबा साधना में भाग लेने वाले साधको िंके चलए चमष्टान्न मााँगवाने में रसन्न िैं तो चमष्टान्न बाबा के रसाद का रूप ले लेता िै। मैं स्वयिं उन सबको चमष्टान्न बााँटूाँगी। कृपया इसे बाबा को सूचित कर दीचजए।" यि छोटा-सा रसिंग स्वामी जी के रचत श्री मााँ का असाधारण सम्मान व्यक्त करता िै। चनयम अनुर्ासन के उद्देश्य से हुआ करते िैं; चकन्तु ऐसी पररस्स्थचतयााँ भी िोती िैं जब चदव्य स्पर्श मानवीय सिंस्थाओ िंके सामान्य चनयमो िंके अचतक्रमण का अचधकार रदान करता िै।

श्री मााँ तथा स्वामी जी के चमलन की मिंजुलता का सम्यक् वणशन करने में र्ब्द असमथश िैं। उनका पारस्पररक रेम तथा आदर-भाव वस्तुतः चदव्य कोचट का िै। उनका चमलन सभी पाचथशव सम्पकों से परे िै। वि वस्तुतः चदव्य सम्बन्ध िै। स्वामी जी जब कभी उनके साचन्नध्य में िोते िैं तो वि आनन्दाचतरेक में अपने-आपको खो बैठते िैं और अन्य सब-कुछ भूल जाते िैं जो उन जैसे असाधारण सन्तुलन वाले व्यस्क्त में िोना चनश्चय िी अत्यचधक चवलक्षण तथा रिस्यमय िै। एक बार सन् १९७३ में स्वामी जी नयी चदल्ली में िोने वाले अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन से पूवश श्री मााँ के चिसायश में रिने के चलए तीन चदन के चलए वृन्दावन जा रिे थे। तब तक सम्मेलन के आयोजको िंने इस अवसर को अपनी उपस्स्थचत से सुर्ोचभत करने के चलए श्री मााँ को अपना चनमिंत्रण-पत्र स्वयिं दे चदया था। सदा की भााँचत श्री मााँ ने उन्ें कोई चनचश्चत उत्तर निी िंचदया, चवषय को चवधाता की इच्छा पर छोड चदया। अतः आयोजको िंने स्वामी जी से राथशना की चक वि जब श्री मााँ से वृन्दावन में चमलें तो उन्ें आमस्न्त्रत करने की कृपा करें। स्वामी जी ने िुपिाप उनकी बातें सुनीिं; चकन्तु अपना कुछ मत रकट निी िंचकया। उन्ोिंने वन्दावन में श्री मााँ की सिंगचत में तीन चदन व्यतीत चकये. चकन्त सम्मेलन के चवषय मैं उनसे कोई बात निी िंहुई। स्वामी जी के वृन्दावन से वापस आने पर आयोजक उनसे चमले तथा श्री मााँ के कायशक्रम के चवषय में पूछा। इस पर स्वामी जी अकस्मात् िुप िो गये और चफर धीरे से बुदबुदाये : "मैं वृन्दावन में सब-कुछ भूल जाता हाँ। मैं चकसी दूसरे लोक में था।" उन्ोिंने और आगे किा : "श्री मााँ के साचनध्य में मैं सब-कुछ भूल जाता हाँ।"

न्यायाधीर् मुधोलकर, जो गुरुदेव के परम भक्त िैं, आश्रम में अपनी पुत्री डा. अरुणा के चलए, जो श्री आनन्दमयी की एक चनष्ठावान् चर्ष्या िैं, एक कुटीर चनमाशण कराना िािते थे। जब भवन का चनमाशण कायश पूणश िो गया तब मााँ उसके उद्घाटन-समारोि में सस्म्मचलत िोने के चलए आयीिं। एक हृदयस्पर्ी दृश्य में उन्ोिंने अरुणा को स्वामी जी की पुत्री का नाम दे कर उन्ें स्वामी जी को समचपशत चकया तथा लोगो िंको बतलाया चक बाबा जी तथा उनमें कोई भेद निी िंिै। जिााँ तक श्री मााँ के रचत स्वामी जी के रेम तथा श्रद्धा का सम्बन्ध िै, वे इतने सुचवचदत िैं चक उनके और अचधक चवस्तार में जाने की आवश्यकता निी िंिै। स्वामी जी सुचनचश्चत िैं चक माता उन अचतचवरल सन्तो िंमें िैं जो सदा सिज समाचध-अवस्था में रिते िैं। उनके चलए वि सन्त निी िंिैं, वि र्ुद्ध भागवत सत्ता िै।

श्री मााँ उत्तरकार्ी जाते समय कभी-कभी चर्वानन्दाश्रम आती िैं। आश्रमवासी उनके एक चवचर्ष्ट अभ्यागम को चवर्ेष आनन्द से स्मरण करते िैं। एक बार सन् १९७६ के ग्रीष्म-काल में

उन्ोनिें आश्रम में अकस्मात् दर्शन चदया। स्वामी जी ने एक चवरे्ष सत्सिंग में उनका स्वागत चकया। श्री माँ श्रदे्धेय स्वामी जी के चदव्य आनन्दाचतरेक से बहुत रभाचवत हुईिं। वातावरण आध्यास्कि स्पन्दनो िंसे अचधभाररत था। अब देखें! श्री माँ स्वयिं भावाचतरेक में आ गयी िंऔर उन्ोनिें विााँ उपस्थथत सभी लोगो मिें अचवस्मरणीय रिस्याक धमोत्सिा तथा आनन्द आपूररत करते हुए अपने
चरय कीतशन 'ि भगवान्! ि भगवान्!' की वषाश की।

स्वामी जी मिाराज के िीरक जयन्ती-समारोि में स्वामी जी श्री श्री माँ आनन्दमयी के उस अवसर पर पधारने की सम्भावनाओ िंके चवषय में मुस्लि से बता सके थे चक श्री माँ सभामिंि पर अकस्मात् आ उपस्थथत हुई। उस समय विााँ देखने को हृदयस्पर्ी दृश्य था. वास्तव में आध्यास्कि नयनोत्सव था। से्निे तथा आनन्द से पूणश श्री माँ पुष्पो िंतथा फलो िंकी डचलया चलये हुए स्वामी के पास गयााँ। स्वामी जी तत्काल उनके रचत अपने श्रद्धा-भाव की अचभव्यस्क्त के रूप में भगवती माँ की सुतुचत के कुछ स्तोत्र लय के साथ गुिंजारने लगे। दोनो िंचदव्य व्यस्क्तयो िंने बहुसिंख्यक चजज्ञासुओ,िं मुमुकु्षुओ िंतथा सन्तो िंके समथशः रोमिषशक रूप से अपने गिन भाव तथा सम्मान का चवचनमय चकया। इस अवसर पर स्वामी जी ने दैवयोग से उनके समक्ष अपना यि भाव व्यक्त चकया चक वि अपना कतशव्य पूरा कर िुके िैं और अब उन्ें अपने इस पाचथशव र्रीर को और अचधक समय तक बनाये रखने में रुचि निी िंिै। र्ान्त-हृदय पूज्य माँ ने सोत्कण्ठा बलपूवशक किा चक उन्ें आने वाले अनेक वषों तक अपनी उपस्थथचत से सिंसार को धन्यभाग बनाते रिना िाचिए। स्वामी जी की राथशना पर श्री माँ ने उपस्थथत चजज्ञासुओ िंके कुछ रश्नो िंके उत्तर देने की कृपा की। िम यिााँ उसका एक लघु उद्धरण देते िैं :

डजज्ञासु-गुरु के चनदेर्ानुसार आध्यास्कि पथ का अनुसरण करने में बाधाएँ क्ो िंआती िैं?

श्री माँ-यचद गुरु उपस्थथत िो िंतो बाधाएँ स्वयमेव लुप्त िो जाती िैं। बाधा तथा गुरु परस्पर चवरोधी िैं।

डजज्ञासु-ऐसा क्ो िंिै चक सभी चर्ष्य अपने सावश गुरु की कृपा समान मात्रा में राप्त निी िं करते।

श्री माँ-अपना पात्र उलटा रख कर वे अपने को उससे विंचित कर लेते िैं।

डजज्ञासु-जीवन का लक्ष्य क्ा िै?

श्री माँ- उस (भगवान्) को जानना ।

डजज्ञासु-क्ा भगवान् को देखा जा सकता िै?
श्री माँ-िााँ! यचद अभीप्सा रखर िै, यचद चजज्ञासु वास्तव में गम्भीर िै, तो उसका दर्शन यिााँ और अभी िो सकता िै। बात तो यि िै चक िम उसके चलए पूरे मन से चपपासा निी िंरखते जब चक िमारी अरे्ष सत्ता की मााँग करते िैं।

गॉडल में िाल की उनकी भेंट के समय एक भक्त ने श्री माँ से उनके र्ान्त-साक्षात्कार-राप्त के समय के चवषय में रश्न चकया। श्री माँ के कुछ किने के पूवश िी स्वामी जी ने चटप्पणी की : "यि रश्न तो वैसा िी िै जैसे भगवान् कृष्ण से रश्न करना चक उन्ें भगवत्साक्षात्कार कब हुआ ?" श्री माँ का स्वामी जी के रचत जो से्निे तथा आदर के भाव का हृदयग्रािी सिंयोग िै, उसका अनुभव इस लेखक ने सत्ताईसवे अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन के चलए उन्ें आमिंत्रण िेतु कनखल में उनके दर्शन करते समय चकया। श्री माँ ने अस्वथथता के कारण उपस्थथत िोने में अपनी असमथशता व्यक्त की तथा अपने से आग्रि न करने का अनुरोध चकया। जब लेखक ने उल्लेख चकया चक स्वामी जी समारोि की अध्यक्षता करेंगे तथा उनसे उनके आर्ीवाशद की यािना की तो उनके व्यविार में तत्काल सुस्पष्ट पररवतशन आ गया। उन्ोनिें अपने मधुर तथा गुिंजायमान

स्वर में लेखकको'चिदानन्दबाबा'कोअपना'ॐनमोनारायणाय'किनेकेचलएकितथा
गम्भीरतापूवशक बल दे कर कि चक स्वामी जी की उपस्थथचत मात्र से ि समे्मेलन अवश्यमेव
सुखभागी िोगातथाउनकीरुभकामनाएँसदिीस्वामीजीके सभीअध्यवसायिोंमेंर्ीं।

वषशभर कायशसमाकुल सिीूं तथा भूमण्डल के दूर देर्िों तक चवसृ्तृत रवास के िोते हुए भी
स्वामी जी चकसी-न-चकसी सन्त के साचन्नध्य में रिने के चलए कभी-कभी बलात् अपने को कायशमुक्त
कर लेने में सफल िो जाते िैं। ऐसे िी वातावरण की वि अचभलाषा रखते िैं, यिी वि जगत् िै
चजसमें वि कदाचित् मानचसक धरातल पर सतत चनवास करते िैं। वि जब कभी चकसी सन्त से
चमलते िैं तो तत्काल चवनम्रता तथा र्ालीनता के साथ आगे बढ़ कर उन्ें अपनी श्रद्धा अचपशत करते
िैं। उनका यि सिंदािार सबके चलए रेरणादायी उदािरण सिंथथाचपत करता िै। वि उतृ्कृ ष्ट कोचट के
वेदान्ती िैं जो सदा अपने सस्च्चदानन्दस्वरूप में स्थथत रिते िैं; चकन्तु वि परम सत्ता के सभी
रकट रूपिों की पूजा करते िैं तथा उनके उपासकिों और चसद्धिों को रणाम करते िैं।

उत्तर भारत के एक चवलक्षण रिस्यवादी नीमकरोली बाबा, जो िनुमान्-चसद्ध थे, ऐसे िी
एक सन्तथेचजनके रचतस्वामीजीअत्यचधकपूज्यभावरखतेथे।बाबाजीमिाराजकुमायूूँमें
नैनीताल के चनकट कैं िी ग्राम में अपने आश्रम में रिा करते थे। एक बार सन् १९७३ के र्ीतकाल
में स्वामी जी सन्ध्यावसान के समय बाबा के आश्रम में पहुूँचे। यथोचित आज्ञा ले कर जब वि
अन्दर गये तो उन्ोंने बाबा को एक साधारण-सा कम्बल लपेटे तख्त पर बैठे हुए पाया। बाबा ने
स्वामी जी का स्वामत करते हुए कोई भाव व्यिंचजत ििीं चकया। वि तख्त पर सामान्य रूप से बैठे
रिे और उसी अवथथा में उन्ोंने सौम्य दृचष्ट डाल कर स्वामी जी तथा उनकी मण्डली का स्वागत
चकया और तख्त के पास चबछी हुई दरी पर उन्ें बैठने के चलए इर्ारा चकया। स्वामी जी का
रतीयमानतः चनरुत्सिा तथा रूखा स्वागत िोने से उनके एक युवक आदर्शवादी साथी श्री योगेर्
बहुगुणा कु छ कुषुब्ध हुए; चकन्तु स्वामी जी अपने सामान्य स्वरूप में िी रिे। उन्ोंने तख्त के पास
घुटने टेक कर बाबा को अपनी श्रद्धिांजचल अचपशत की और कु छ समय पश्चात् श्री िनुमान् की सु्तुचत
में कु छ भजन तथा स्तोत्र



श्री श्री माँ आनन्दमयी के आनन्दपूर्ण सान्निध्य में



परस्पर पावन अभिनन्दन करते हुए



पूज्य ठाकुर सीतारामदास ओंकारनाथ के साथ



श्रद्धेय बया बाबा के साथ

गाये। स्वामी जी के कीतशन की समास्प्त पर राय: मौनावलम्बी तथा कठोर दृचष्टगोर ि◌ोने वाले बाबा ने अपने सभी चर्ष्यो ि◌ंको स्वामी जी के ि◌रणो ि◌ंमें नमस्कार करने का आदेर् चदया और कि चक यचद वे ऐसा निी किरते तो वे एक उच्च कोचट के सन्त को साष्टिंग नमस्कार करने का अनुपम अवसर खो देंगे। इस पर स्वामी जी ने अपने सिज रूप में अत्यन्त नम्रतापूवशक बद्धिांजचल ि◌ो कर कि चक मैं तो गुरुदेव चर्वानन्द का एक साधारण सेवक मात्र हाँ जो चनश्चय ि◌ी एक रोन्नत सन्त

थे। चकन्तु उन्ोनिें अपनी अरचतम रै्ली में आगे कहा चक यचद एक व्यस्क्त एक पुष्प को अपनी थिैली में यथेष्ट चिर काल तक कस कर पकडे रखे तो उसकी सुरचभ ि थेली में मिकती रिेगी। अतएव उनके दीघशकाचलक मिंगलरद सम्पकश के कारण यचद गुरुदेव के सद्गुणो िंकी सुरचभ कभी-कभी उनसे ि ो कर फैलती ि ै तो इसमें कोई आश्चयश निी।िं यि चिदानन्द का ढिंग ि ै और इस रकार स्वामी जी अपनी बालसुलभ सरलता, नम्रता तथा वैभव से सन्त-जगत् में सुर्ोचभत िैं।

तत्पश्चात् सौभाग्य से पूजनीय बाबा ने अपनी बगल में पडी हुई टोकरी से रसाद चवतरण करना आरम्भ कर चदया। श्री योगेर् बहुगुणा अपने साथ केवल सात या आठ सेब लाये थे तथा उन्ें विााँ पडी हुई खाली टोकरी में उन्ोनिें रख चदया था, चकन्तु बाबा कुल चमला कर अठारि फल बााँटने तक एक-एक कर सेब चनकालते ि ी रिे। योगेर् जी तो चवस्स्मत ि ो गये। बाद में स्वामी जी ने स्पष्ट चकया चक यि ि नुमान् की उपासना से राप्त चसस्द्ध के कारण हुआ।

उन्ोनिें बताया चक उन्ें बहुत पिले सन् १९५३ से ि ी बाबा की चसस्द्धयो िंकी जानकारी ि ै जब चटिरी-गढ़वाल के तत्कालीन चजलाधीर् श्री चत्रवेदी के वृद्ध चपता चर्वानन्दाश्रम आये थे तथा स्वामी जी की उपस्थथचत में गुरुदेव को अपने गुरु नैनीताल के श्री बाबा नीमकरोली जी के अनेक मित्काररक कायों को बतलाया था। बाबा अपनी ि नुमान्-चसस्द्ध के ि ारा इच्छा मात्र से दूर थथानो िं में अकस्मात् मूतशरूप धारण कर सकते िैं। वे बाबा जी के रचत बडा स्ेनि तथा आदर-भाव रखते थे। श्री गुरुदेव की मिासमाचध के पश्चात् वि एक बार आश्रम में अकस्मात् आ उपस्थथत हुए। जब स्वामी जी उनका स्वागत करने के चलए बािर चनकले तो वि परमाध्यक्ष कुटीर के बरामदे में पहुाँि चुके थे। स्वामी जी ने बाबा के ि रणो िंमें रणाम चकया, उन्ें अन्दर ले गये तथा एक आसन पर चबठाया। बाबा जी ने चदव्य जीवन सिंघ ि ारा की जा रिी र्स्तं सेवाओ िंके चवषय में अपना परम सन्तोष व्यक्त चकया तथा स्वामी जी की राथशना पर कुछ गरम गोदुग्ध पान चकया। ऐसे चमलन के अवसरो िंपर ऐसा अनुभव ि ोता था चक स्वामी जी तथा बाबा जी में चकसी रकार का आन्तररक सम्पकश था। अल्पभाषी रकृचत तथा बाह् र्ुष्कता के ि ोते हुए भी बाबा जी स्वामी जी की आध्यास्कि मचिमा से अवगत थे तथा अपनी दृचष्ट तथा ि ष्टा से अपना सम्मान तथा स्ेनि रकट चकया करते थे।

धमाशध्यक्षो िं के रचत स्वामी जी की श्रद्धा अनुकरणीय िै। श्री र्िंकरािायश, श्री रामानुजािायश, श्री मध्वािायश तथा अन्य मिान् आिायों की पीठो िंके परन्तु वि स्वयिं श्री र्िंकरािायश के केवलाद्वैतवाद के अनुयायी िैं। कािंिीकामकोचट पीठ के वररष्ठ र्िंकरािायश जगद्गुरु श्री ि न्द्रर्ेखरेन्द्र सरस्वती के रचत उनकी श्रद्धा चवर्ेष अचधक िै। एक बार सन् १९७३ में जब वि दचक्षण भारत की यात्रा पर थे, तब उन्ोनिें जगद्गुरु को अपनी श्रद्धािंजचल अचपशत करनी िािी। उन चदनो िंजगद्गुरु समीप के ि ी एक ग्राम के चर्वालय में चनवास कर रिे थे। उस समय वि पूणश मौनव्रत का आिरण कर रिे थे। स्वामी जी उस चर्चर्रकालीन राचत्र में केवल एक वस्त्र पिने हुए अपने िाथो िं में फलो िंसे भरी एक टोकरी ले कर मस्न्दर के ि ार पर जा उपस्थथत हुए। उन्ोनिें मस्न्दर में रवेर् चकया तथा कुछ भी सूिना चदये चबना ि ी वररष्ठ धमाशध्यक्ष को साष्टािंग रणाम चकया। धमाशध्यक्ष ने अपनी ि ष्टा तथा दृचष्ट से अपनी आनन्दरद आचर्ष दी; चकन्तु आिायश तथा स्वामी जी के मध्य कोई वाताशलाप निी िंहुआ। तथाचप यि स्वामी जी के चलए पूणशरूपेण सन्तोषजनक दर्शन था। जो लोग आिा के माध्यम से सिंलाप की क्षमता रखते िैं, उनके चलए मानव-राणी की भाषा कदाचित् ि ी कुछ मित्त्व रखती ि ो।

आधुचनक भारत के ऐसे ि ी एक अन्य सन्त ठाकुर श्री सीतारामदास ओकिंारनाथ मिाराज िैं जो मिामि-कीतशन की साधना को इस कचलयुग के मानवो िंके मोक्ष के अमोघ साधन के रूप में दृढ़ चवश्वास रखते िैं। मिाचमलन-मठ, ऐमिस्टश स्टरीट, कोलकाता, पुरी, ऋचषकेर् आचद भारत के अन्य पचवत्र थथानो िंमें उनके आश्रम िैं। एक बार जब बाबा ऋचषकेर् के अपने आश्रम में थे, स्वामी जी उन्ें रणाम करने गये। तब से दोनो िंमें अत्यन्त चस्नग्ध तथा आकािंचक्षत सम्बन्ध का चवकास

हुआ ि ै। स्वामी जी उनसे चमलने को इतने उतुसुक रिते ि ैं चक वि कभी-कभी उनके दर्शन के चलए उत्तरकारी् तक जाते ि ैं।

एक बार जब श्रदे्धेय बाबा जी अपनी भक्त-मण्डली के साथ चर्वानन्दाश्रम आये तो स्वामी जी चवदेर् गये हुए थे। उनें् स्वामी जी की चवदेर् यात्रा के चवषय में पता िला। उन्ोनें स्वामी जी के एक चर्ष्य को एक लम्बी लाठी रदान की चजसमें चर्र से पैर तक देवनागरी चलचप में एकाक्षर 'ॐ' सुन्दर ढिंग से उत्कीचणशत था तथा इच्छा रकट की चक वि लाठी स्वामी जी मिाराज के चवदेर् से लौटने पर उनें् उनकी ओर से भेंट की जाय। एक मास पश्चात् जब स्वामी जी आश्रम वापस आये और वि लाठी राप्त की तब उन्ोनें इस उपिार की पूवशपीचठका बतलायी। एक वषश पूवश बाबा जब आश्रम में आये थे तो वि अपने िाथ में एक लम्बी लाठी चलये हुए थे चजसमें चर्र से पैर तक ॐ का रतीक था। स्वामी जी ने उसकी सुन्दर कारीगरी से रभाचवत िो कर उसकी सरिाना की थी। बाबा ने तुरन्त उस लाठी को उनें् भेंट करना िािा; चकनु्तु स्वामी जी ने यि कि कर भेंट अस्वीकार कर दी चक उनके पास पिले से िी कई लाचठयााँ िैं और बाबा की पदयात्रा में रयोग करने के चलए उनके पास केवल विी एक िै। तथाचप बाबा को स्वामी जी की सरिाना स्मरण रिी, उन्ोनें उसी रकार की एक लाठी मााँगायी और उसे अपने परवती अभ्यागम के समय स्वामी जी को व्यस्क्तगत रूप से भेंट करने का चनश्चय चकया। स्वामी जी ने उस लाठी को बाबा के रेम के सूमृचत-चिह्न के रूप में अपनी बैठक में सुरचक्षत रखा िै। एक अन्य अवसर पर बाबा जी ने स्वामी जी को एक पूरा व्याघ्र–मश भेंट चकया।

बाबा इस वैयस्क्तक रेम के कारण िी चदल्ली में िौबीसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन का उद्घाटन करने को सिमत हुए। उन्ोनें चदव्य जीवन सम्मेलन की रजत जयन्ती में भी उपस्थथत िोने की कृपा की जिााँ वि चदव्य रेम से इतना ओत-रोत िो गये चक वि विी िंभाव-समाचध में रवेर् कर गये। स्वामी जी ने, जो सम्मेलन की अध्यक्षता कर रिे थे, दृढ़तापूवशक किा चक बाबा जी नाम-स्वरूप तथा आधुचनक भारत के भगवत्साक्षात्कार राप्त सन्तो िंमें सवाशचधक वररष्ठ िैं।

स्वामी जी ऐसा िी मिान् सम्मान कन्नगढ़ के आनन्दाश्रम में रकार्मान दचक्षण भारत की एक अन्य रमुख आध्यास्िक ज्योचत के रचत रखते िैं। अपने पूवाशश्रम के राररम्भक जीवन से िी आनन्दाश्रम के यर्स्वी संथथापक स्वामी रामदास के कारण उस आश्रम के चलए उनमें गम्भीर आध्यास्िक अनुराग िै। वि उस आश्रम में राय: जाया करते थे चजससे वि चरय पापा, स्वामी रामदास की आध्यास्िक उत्तराचधकाररणी पुण्यिाा माता कृष्णाबाई के चनकट सम्पकश में आ गये। स्वामी जी अपने पररव्राजक-काल में सन् १९६२ के ग्रीष्मकाल में यिााँ कुछ समय तक रुके थे। इसी समय परम पूजनीया माता कृष्णाबाई को स्वामी जी का घचनष्ठ पररिय राप्त हुआ।

स्वामी जी स्वामी रामदास तथा माता कृष्णाबाई को एक िी समझते िैं। वि माता जी को अपनी श्रद्धांजचल अचपशत करने के चलए पुन:-पुनः आनन्दाश्रम जाते रिे िैं और रत्येक बार िी उनके भावपूणश सत्संग का लाभ राप्त चकया िै। माता जी भी स्वामी जी का बडा सम्मान करती िैं और उनके रचत बडा िी आदर तथा वात्सल्य-भाव व्यक्त करती िैं। सन् १९७६ के अस्न्तम काल में एक चदन स्वामी जी माता जी का दर्शन करने र्ीघ्रतापूवशक आनन्दाश्रम पहुाँिे जो नवम्बर मिा से अस्वथथ थी।िं यि हृदयस्पर्ी दृश्य था। माता जी स्वयं र्य्ाग्रस्त िोते हुए भी स्वामी जी की सुचवधा की व्यवथथा की रत्येक अचत गौण बात पर भी चनरन्तर ध्यान देती रिी।िं रबुद्ध आिाएाँ एक-दूसरे के रचत ऐसा िी सम्मान-भाव रखा करती िैं। स्वामी जी उनें् मााँ आनन्दमयी के समान िी समझते िैं। उनके अपने र्ब्ों िंमें: "माता कृष्णाबाई वात्सल्यमयी आनन्दमयी के सदृर् िी िैं। मैं उनके समकक्ष चकसी अन्य व्यस्क्त को निी िंजानता हूाँ।"

स्वामी जी ऋचषकेर् आने वाले रचतचष्ठत सन्तो िंमें से अचधकांर् को चर्वानन्दाश्रम में चनमस्ित करते िैं। स्वामी र्रणानन्द जी ऐसे िी एक चसद्ध मिािा थे जो राय: रचत वषश िी ग्रीष्म-काल में

'गीता-भवन' आया करते थे और एक मिा तक पचवत्र रविन करते थे। इस अवचध में वि कभी भी चकसी अन्य कायशक्रम के चलए बिार निी िंजाते थे; चकन्तु स्वामी चिदानन्द जी के चलए अपने चवर्ेष रेम के चिह्न-स्वरूप वि सदा िी एक-दो चदन के चलए चर्वानन्दाश्रम आते तथा रविन करते और विााँ के साधको िंको आर्ीवाशद देते थे। वि चदव्य जीवन सिंघ के तत्कालीन सचिव स्वामी रेमानन्द जी मिाराज के आद्यतम रेरको िंमें से एक थे। अतएव चर्वानन्दाश्रम आने तथा उन्नतकारी सत्सिंग में चिदानन्द तथा अन्य स्वामी लोगो सि चमलने में उन्ें चिगुचणत रसन्नता िोती थी। र्णानन्द
जी चिदानन्द जी से श्री मााँ आनन्दमयी के सिंयम-सप्तिा में भी चमला करते थे। स्वामी जी ने २५ चदसम्बर १९७४ को उनकी मिासमाचध को सन्त-जगत् में ररक्तता उत्पन्न िोना माना।

मााँ आनन्दमयी के रख्यात सिंयम-सप्तिा के अवसर पर िी स्वामी जी ने श्रीमद्भागवत के लब्धरचतष्ठ व्याख्याकार स्वामी अखण्डानन्द जी मिाराज का दर्शन चकया था। अखण्डानन्द जी स्वामी जी का चवनम्रता के साक्षात् अवतार के रूप में सम्मान करते िैं। िररार में श्रोताओ िंमें सम्भाषण करते हुए उन्ोनेिं किा : "स्वामी चिदानन्द साक्षात् चवनम्रता की मूचतश िैं। यचद कोई व्यस्क्त चवनम्रता को मनुष्य के रूप में देखना तथा चवनम्र बनने का पाठ सीखना िािता िै तो उसे चिदानन्द के पास जाना िाचिए। इस युग में ऐसा असाधारण चवनयर्ील सन्त चमलना दुलशभ िै।" स्वामी जी के सम्बन्ध में स्वामी र्णानन्द जी के भी ऐसे िी चविार थे। वास्तव में चवनम्रता िी स्वामी जी के व्यस्क्तत्व का रमाण-चिह्न िै। यि गुण िी सन्त-जगत् में इन्ें अमाचनत्व के अवतार के रूप में अन्य सन्तो िंसे पृथक् करता िै।



श्रद्धेय स्वामी पापा रामदास और कृष्णाबाई माता जी के साथ स्वामी रामदास जी के पीछे बायें से तीसरे खड़े हुए



पूज्य श्री स्वामी शरणानन्द जी महाराज के साथ
बायें से दाहिने—श्री स्वामी प्रेमानन्द जी, श्री स्वामी शरणानन्द जी, श्री स्वामी चिदानन्द जी

गुरुदेव के समकालीन सन्तों के साथ वि चर्ष्य-सुलभ व्यविार करते िैं। वि उनकी आज्ञा का वैसे िी पालन करते िैं जैसे अपने गुरुदेव की आज्ञाओं का करते थे। परमाथश चनके तन के श्री स्वामी रुकदेवानन्द जी मिाराज तथा श्री स्वामी भजनानन्द जी मिाराज तथा र्ास्न्त-आश्रम के श्री स्वामीओकिंारजीमिाराजजैसेमिााओंकेरचतइनकाश्रद्धास्पदव्यविारअनुकरणीयिै।स्वामी चर्वानन्द तथा स्वामी ओकिं ार के बिी आध्यास्कि रेम का चनकट का सम्बन्ध तथा ईश्वराचश्रत चदव्य मैत्री-भाव रिा िै; अतः स्वामी चिदानन्द जी आन्ध्र रदेर् की तोतापल्ली पिाडी पर स्थथत ओकिं ार स्वामी के आश्रम में अपनी श्रद्धांजचल अचपशत करने के चलए रायः जाते रिते िैं।

एक बार स्वामी जी एकादर्ी के चदन र्ास्न्त-आश्रम में अचतचथ थे। ऐसा हुआ चक उस चदन स्वामीओकिंारनेइसअनुरोधकेसाथज्ञानेश्वरीमाताजीकिाथकुछभोजनभेजाचकस्वामीजी उसमें से कु छ-न-कु छ पदाथश ग्रिण करें। स्वामी जी, जो ऐसे चदनों में ठोस भोजन ग्रिनीं करते िैं, मुस्कराये तथा विााँ उपस्थथत अपने भक्तों को आश्चयशचचकत करते हुए उन्ोंने थाली में से रसाद-रूप में भोजन करना आरम्भ कर चदया। चकन्तु उन्ोंने अगले चदन पुनः उपवास चकया। यिााँ उनके इस कायश में रदचर्शत सूक्ष्म चविार ध्यान देने योग्य िै। वि एक वररष्ठ मिाा की इच्छाओं के

पालन को रथम तो नम्रतापूवशक मान लेते िैं और अपने चनयमो िंको भिंग करते िैं और अगले िी चदन स्वेच्छा से उन चनयमो िंको पुनः अपने ऊपर लागू कर देते िैं।

गुरुदेव की तपोभूचम दूर तथा चनकट से रिुर सिंख्या में सन्तो िंको आकचषशत करती रिी िै। वे मुख्यतः स्वामी जी के चदव्य व्यस्क्तत्व से आकचषशत िोते िैं। रत्येक व्यस्क्त यि अनुभव करता िै चक गुरुदेव की मिासमाचध से उत्पन्न ररक्तता की उनके आध्यास्त्मक उत्तराचधकारी ने योग्य रीचत से पूचतश कर दी िै। मोक्ष-आश्रम, नैचमषारण्य के जगदािायश स्वामी नारदानन्द गुरुदेव की मिासमाचध के पश्चात् रायः आश्रम में आते िैं। वि किा करते िैं चक स्वामी चिदानन्द 'गिंगा की धारा' िैं। कभी-कभी वि उनका उल्लेख 'रेम की गिंगा' के रूप में करते िैं। गिंगा माता की भााँचत िी वि रीतल तथा मधुर, गम्भीर तथा रान्त रूप से गचतमान तथा इस पुण्य भूचम के सुचवसृतृत क्षेत्रो िंको सम्पोचषत करते िैं। नारदानन्द जी किते िैं : "आपने चर्वानन्द को खो चदया िै, चकन्तु आपने चिदानन्द में चर्वानन्द को राप्त कर चलया िै। उदारता तथा चनःस्वाथशता में चिदानन्द चर्वानन्द के समान िैं। चिदानन्द जी ने कभी वेदान्त की चर्क्षा निी िंली, चकन्तु उनके रवचन वैचदक ज्ञान से ओत-रोत िोते िैं। वि वेदस्वरूप िैं।"

स्वामी जी सन्त के दर्शन करने का कोई भी अवसर, यचद उपलब्ध िो तो िाथ से जाने निी िंदेते। लोक-रचतष्ठा, सिंस्था का चवस्तार, सम्प्रदाय का नाम अथवा चर्ष्यो िंकी सिंख्या-ये सब उनके चलए मित्त्व के चवषय निी िंिैं। एक सन्त िंिो मठवासी िो अथवा अरण्यवासी, सावशजचनक जीवन-यापन करता िो अथवा सिंन्यास का-उनके चलए समान रूप से रलोभक िै। इस भााँचत उन्ोनिें पवनार में आिायश चवनोबा भावे का दर्शन चकया तथा उनको उसी रकार रणाम चकया जैसा चक चकसी वररष्ठ सिंन्यासी को करते िैं।

उडीसा की अपनी अनेक यात्राओ िंकी अवचध में स्वामी जी एक रिस्यवादी सन्त नामिािायश श्री श्री बया बाबा के चवषय में सुनते रिते थे जो बारि वषश से अचधक समय तक मौनी साधक रिे थे। बया बाबा जी श्री रामदास मिाराज के आध्यास्त्मक उत्तराचधकारी तथा भुवनेश्वर के कल्पतरु-आश्रम के सिंस्थापक िैं। बाबा जी तथा स्वामी जी का चमलन रोिक पररस्थथचतयो िंमें हुआ। रामदास बाबा जी की जन्म-र्ताब्दी िुतगचत से समीप आ रिी थी; अतः बया बाबा के चर्ष्य इस अवसर पर आश्रम में चकसी वास्तचवक चवचर्ष्ट आध्यास्त्मक व्यस्क्त के अभ्यागम का रबन्ध करने को उत्सुक थे। बया बाबा की भी ऐसी िी चस्नग्ध तथा सुभग इच्छा थी। ऐसा लगता िै चक दैवकृत व्यवस्था से, जो पिले िी की जा िुकी थी, वि अवगत थे। मिाबलीपुरम् से भुवनेश्वर वापस आने पर स्वामी जी अकस्मात् िवाई पत्तन से सीधे कल्पतरु-आश्रम में अन्तमुशखी सन्त के दर्शन करने के चलए िल पडे। दोनो िंसन्तो िंने एक-दूसरे के सम्मुख सिी अथों में भूचम पर लेट कर दण्डवत् रणाम चकया तथा दीघशकाल तक मौन वाताशलाप करते हुए एक साथ रिे। अन्त में बाबा जी ने स्वामी जी से अपने गुरुदेव श्री रामदास मिाराज के जन्म-र्ताब्दी समारोि का उद्घाटन करने के चलए आश्रम की रोभा बढ़ाने का िाचदशक तथा चवनम्र अनुरोध चकया। स्वामी जी ने सिषश अपनी स्वीकृचत दे दी और उद्घाटन समारोि के चलए विााँ पुनः आये। कायशक्रम की समास्प्त पर स्वामी जी िस्बमामूल बाबा के पास गये और अपनी स्वाभाचवक चर्ष्ट चवचध से बाबा की कृपा की यािना की। इस पर वयोवृद्ध बाबा जी, जो उस समय रायः र्य्याग्रस्त थे, रारीररक आयास के बावजूद भी मानपुरःसर कृतज्ञता से उठ खडे हुए तथा स्वामी जी के िरणो िंमें यथाथश अथों में नतमस्तक िो गये। यिी स्वामी जी की राथशना का बाबा जी का उत्तर था।

इस रकार चिदानन्द सन्त-समूि में िमकते िैं। सन्तजन उन्ें अपना अचमत रेम तथा आदर रदान करते िैं। सन्तो िंकी मान्यता चनश्चय िी धाचमशक व्यस्क्त की उपलस्ब्ध का परम मित्त्वपूणश साक्ष्य िै; चकन्तु चिदानन्द ऐसी मान्यता की न तो आकािंक्षा रखते िैं और न अपेक्षा िी। तथाचप सन्त-जगत् में उनका चवचर्ष्ट थथान असिंख्य साधको िंके चलए बहुत िी अथशपूणश तथा चर्क्षारद िै। वि पररव्राजको िंतथा मठवाचसयो िंके चलए एक आदर्श सिंन्यासी, व्याविाररक लोकोपकारको िंके चलए

पददचलतो िंके चमत्र, साक्षात्कार-राप्त ज्ञाचनयो किं चलए एक वुयुत्पन्न तथा व्याविाररक वेदान्ती और अगण्य भक्तो िंके चलए पराभक्त िैं।

अष्टम अध्याय

पददचलतो िंके चमत्र

"ते प्रापुनुवन्तन्त मामेव सवपूितडहते रतोः ।

--सब राचणयो िंके चित में चनरत व्यस्क्त मुझ (ईश्वर) को राप्त कर लेते िैं" (गीता : १२-४)।

चिदानन्द सेवा के चलए िी जीते िैं। उन्ोनिें इस पाचथशव जगत् में अपना समूपूणश जीवन रभु के सृष्ट जीवो िंकी चनरन्तर सेवा के चलए अचपशत कर चदया िै। वि पचततो िंके उदात्त उद्धारक तथा पीचडतो िंकी चिन्ता करने वाले उनके चमत्र िैं। इस जन्मजात सन्त के चदव्य हृदय से सभी जीवधाररयो िंके चलए अक्षय पररमाण में करुणा चनसूसृत िोती िै। ऋचषकेर् तथा उसके पररसर के अभागे कुचष्ठयो िंके चलए तो यि साक्षात् पररत्राता िी रि िैं। अपने सम्बस्न्धयो िंिारा भी चनस्न्दत, अचभर्प्त तथा बचिष्कृत इन सजातीय व्यस्क्तयो िंके रचत उनकी दयालुता तथा सिानुभूचत समूपूणश मानव जाचत के चलए सेवा तथा परोपकार का एक रेरणादायी पाठ रिगा। आध्यास्कि अिायश तथा सन्त तो अनेक हुए िैं चजन्ोनिें अपनी व्यस्क्तगत िाचन उठा कर भी चजज्ञासुओ िंके मागश को रकाचर्त चकया िै; चकनुतु उनमें अल्पसिंख्यक व्यस्क्त िी ऐसे हुए िैं चजन्ोनिें चिदानन्द के समान पूणश समपशण-भाव से चवकलािंगो िंतथा रोगग्रस्तो िंके सिानुभूचतपूणश र्ारीररक देखरेख के कायश में आजीवन अपने को लगाये रखा िो। मिापुरुषो िंमें यीरु्, बुद्ध, गान्धी, डैचमयन, चिदानन्द बहुत िी कम सिंख्या में िैं जो इन सभी वैचवध्य के मध्य परमैक् का साक्षात्कार कर सामाचजक तथा मानवीय अचभरुचियो िंकी मयाशदाओ िंसे ऊपर उठते िैं तथा इस सिंसार के घोर पापी, चनकृष्टतम कुस्त्सत तथा पीचडत राचणयो िंको गले लगाते िैं। चिदानन्द ने अपने जीवन के रारस्म्भक काल से िी इन िंतभाग्य राचणयो िंके चलए जो असाधारण सिानुभूचत तथा चिन्ता रदचर्शत की, उस पर इससे पूवशवती एक अध्याय में रकार् डाला जा िुका िै। एक कुष्ठी की कुछ अथथायी सिायता तथा देखभाल से सनुतुष्ट न रि कर उन्ोनिें उसके चलए अपने घर के अिाते में एक झोपडी बनवायी तथा उसका योग-क्षेम विन चकया। ऐसा करना उनके चलए स्वाभाचवक िी था और ऐसा उन्ोनिें उस समय चकया जब वि अल्पवयस्क िी थे। सावशलौचकक सिायश, आस्कि एकता तथा सावशभौम रेम की दृढ़ धारणा ने उन्ें न केवल मानवो िंमें अचपतु पचक्षयो,िं परुओ िंतथा िंतुचदशक् अलचक्षत रूप से िलने तथा रेंगने वाले कीटो िंमें भी रोचगयो िंतथा दीनो िंकी सेवा करने को रेररत चकया। अतएव एकान्त, मौन तथा साधना के चलए अपने घर तथा पररजनो िंको त्याग कर गिंगा के तट पर आ जाने पर भी अपने नये घर के िंतुचदशक् के वातावरण को चवदीणश करने वाले घोर व्यथा के क्रन्दन को अनसुनी न कर पाना उनके चवषय में स्वाभाचवक िी था। उन्ोनिें इसे चित्त-चवक्षेप के रूप में देखने अथवा इसके रचत वेदास्न्तक उदासीनता का भाव उत्पन्न करने के बजाय सचक्रय साधना तथा पूजा के रूप में, सावशभौचमक रेम की सामान्य अचभव्यस्क्त के रूप में सिंवेदनार्ील सेवा को अपनाया। रचतकूल रकृचत तथा उदासीन मानवो िंसे समान रूप से पररत्यक्त बहुत बडी सिंख्या में कुचष्ठयो िंको विााँ चकसी रकार अपने दुःखद

जीवन को घसीटते देख कर वि अत्यचधक िचवत िो उठे। उनकी दुदशर्ा चनश्चय िी अवणशनीय थी। उन्ें रास्ते के चकनारे पर तीथशयाचत्रयो िंसे जो कुछ चभक्षा-रूप में चमल जाता, उसी से वि चकसी-न-चकसी तरि अपने रीर तथा राण को बिाये रखते थे। कुष्ठरोग के साथ-साथ उनमें अनेक रकार की रारीररक तथा मनोवैज्ञाचनक वेदनाएँ रवेर् कर गयी थी।िं उनमें से अनेक चवचवध रकार के अन्य रोगो िंसे पीचडत थे। उदिारणाथश उनमें से अचधकिांर् के उदर-रोग थे। वे रायः चनमोचनया तथा क्षय रोग से आक्रान्त िोते थे। असिनीय चठठुराने वाली रीत ऋतु में वि पवशतीय नदी न्द्रिभागा के तट पर जीणश-रीणश चघनावनी झोपचडयो िंमें सोने के चलए िले जाते थे। उनमें से अचधकतर तो जब तक सम्भव िोता, सडक के चकनारे पडे रिना अचधक पसन्द करते थे।

अपने अभ्यासगत सायिंकालीन भ्रमण के समय स्वामी जी ने सडक के चकनारे चभक्षा माँगते हुए कुष्ठरोचगयो िंकी पिंस्क्तयाँ देखी।िं उनके भाग्य को सुधारना रीघ्र िी उनकी चिन्ता का मुख्य चवषय बन गया। यद्यचप कुष्ठी गैररक वस्त्रधारी सिंन्यासी से कुछ भी अपेक्षा निी िंरखते थे; चकनुतु यि युवा सिंन्यासी उनका परम चमत्र तथा पररत्राता बन गया।

सन् १९४३ के रारस्म्भक चदनो िंमें जब स्वामी जी चर्वानन्द धमाशथश औषधालय के कायशभारी थे तब उन्ें कुचष्ठयो िंकी कुछ साथशक सेवा रदान करने का अवसर स्वतः राप्त िो गया। उन चदनो िं बिारे कुचष्ठयो िंके चलए औषधालय भी वचजशत क्षेत्र हुआ करते थे। इन बिारो िंको एकमात्र चिचकत्सीय सेवा जो उपलब्ध थी वि था थोडा-सा चटिंरि आयोचडन चजसे एक राजकीय औषधालय में आयुवेचदक औषचध चवतरण करने वाले वैद्य उन्ें देते थे। बस इतना िी सब-कुछ था। कोमल हृदय स्वामी जी के चलए यि सब बहुत िी दुःखद चवषय था और उन्ोनिें उनके स्वास्थ्य की ओर पूरा ध्यान देना आरम्भ
पददचलतो िंके चमत्र कर चदया। वि स्वयिं िी उनकी झोपचडयो िंतक उनके चलए औषचधयाँ ले जाते थे। जब कुचष्ठयो िंको पता िल गया चक उन्ें रेम, उपर्म तथा आरा् लाने वाला मनुष्यो िंमें एक देवदूत िै, उनके रीर, मन तथा आिा का उपिार करने वाला डाक्टर िै तथा औषधालय के कायशभारी सेंनिैरील ब्रह्मिारी से औषचधयाँ तथा परामर्श उपलब्ध िो सकते िैं तो वे बडी सिंख्या में औषधालय में आने लग गये। इस रकार चर्वानन्द धमाशथश औषधालय कुचष्ठयो िंके चलए एक कायशसमाकुल चिचकत्सालय बन गया। नरेन्द्रनगर के उदार मिाराजा कुष्ठरोचगयो िंके चलए रथमोपिार का सामान तथा मरिमपट्टी की सामग्री उपलब्ध कराते थे। उस समय कुचष्ठयो िंको एकमात्र यिी व्यवस्थथत चिचकत्सीय सिायता उपलब्ध थी। अब स्वामी जी अपना रोगिर िाथ ले कर साक्षात् भगवान् के रूप में उनके समक्ष आये और स्वामी जी के चलए इन पीचडतो िंके रूप में स्वयिं भगवान् उपस्थथत हुए। अतएव वि लोकोपकारी कमश वास्तव में सवशर्स्क्तमान् रभु की सेवा थी। स्वामी जी जब कुष्ठरोग की चवकचसत अवथथा में रोचगयो िंके खुले व्रणो िंकी मरिमपट्टी करने में सिंलग्न रिते तो उनके नेत्रो िंसे करुणा व्यक्त िोती तथा उनके मुख से गम्भीर वात्सल्य-रेम ितुचदशक् रसररत िोता था। स्वामी जी उनके चलए रातः बडे सबेरे िी औषधालय में उपलब्ध रिते चजससे चभक्षा-सिंग्रि करने के चलए वे खाली िो जायें और औषधालय में आने वाले अन्य रोचगयो िंके मन में उनकी उपस्थथचत से चवक्षोभ न िो। औषधालय में कुचष्ठयो िंकी इनकी मिती सेवा से चिचकत्सा-रास्त्र के चवरेषज्ञो िंमें भी चवस्मय तथा श्लाघा का भाव उत्पन्न िोता। स्वामी जी रोचगयो िंको चजस रकार रोग-मुक्त करते थे, उसे देख कर भारतीय सेना की चिचकत्सा-सेवाओ िंके तत्कालीन चनदेर्क मेजर जनरल ए. एन. र्माश िचकत रि गये। उन्ोनिें किा चक यि युवक ब्रह्मिारी सामान्य व्यस्क्त निी िं िैं।



दलित-दरिद्रों के सखा



ब्रह्मपुरी के अन्तेवासियों को वस्त्रोपहार देते हुए

एकपिंजाबीसन्तकुष्ठरोगसेपीचडतथे।रोगगम्भीररूपसेबढ़िलाथा।विकुछचदनो ि तक तोसडकपरीचदनकाटतारिा।अन्तमेंउसनेएकचदनथथानीयपाठर्ालाके एक अध्यापकसेउनें्चर्वानन्दाश्रमपहुाँनेिकीराथशनाकी।उसअध्यापककीसियतासेविरोगी आश्रमकिारतकपहुाँपािया।उससमयराचत्रकेदर्बिजुकेथे।जबस्वामीजीकोयि सूिनाराप्तहुईचकएकरोगीउनकीरतीक्षाकरिरिैतोराचत्रकालीनसत्सिंगसमाप्तरायथा। स्वामीजिीाथमेंिरिबत्तीचलयेहुएबिारआगयेऔरउसथथानपरगयेजिााँरोगीलेटाहुआ थातथाउसकीदयनीयदर्ादेखी।विउसेतत्कालयोग-साधना-कुटीरकेबरामदेमेंलेगयेऔर गुरुदेवकोसन्देर्देकरउसरोगीकोआश्रमके अन्दरथथानदेनेके चलएउनकीअनुमचत मााँगी। गुरुदेव स्वयिं दया-भाव से अचभभूत थे। उन्ोनिें आवश्यक अनुमचत दे दी।

उसके पश्चात्स्वामीजीनेउसरोगीकीसेवा-सुशूरूषाइतनेरेमतथापरविाके साथ आरम्भकरदीचकउससेबढ़करमााँभीिनिींकरसकतीथी।उन्ोनिें उसरोगीकेचलए,चजसने उनके रिणिोंकाआश्रयचलयाथा,अपनेकुटीरके सामनिेीएकझोपडीबनवादी।उन्ोनिें पन्दरिचदनतककायशचकयातथाक्लोरोफामश,तारपीनतथाअन्यऔषचधयााँलगाकररोगीके र्ीरसेरोगाणुओिंकोदूरकरनेमेंविसफलहुए।विअपनिेाथोंसेउसकेव्रणिोंकीमरिमपट्टी करतेथे।उन्ें्रसन्नताथीचकउन्ेंइसमिान्सेवामेंपुतूतूरके श्रीसूयशनारायणकासियोगराप्त था।चमत्र,चिचकत्सक,पररिाररका,रसोइयातथाभिंगीकीसिंयुक्तभूचमकाचनभातेहुएविलगातार कईमिीनिोंतकयिसेवाकरतेरिे।उसअभागेराणीकामल-मूत्रभीविसाफकरतेथे।जब नाईनेउसके बालकाटनेसेइनकारकरचदयातबउन्ोनिें स्वयिंिीयिकायशचकया।चनयत ताचलकाकेअनुसारउन्ें्उसरोगीकोचदनमेंआठयादर्बारस्खलानापडताथा।आस्खरकार, विरोगीचनस्सियके रूपमेंनारायणके अचतररक्तअन्यकोईनथा,अतएवउसके चलएजो कुछभीआवश्यकिोताउसेयिचवनम्रभक्तबर्डीिपरविा,रेमतथाश्रद्धाकेसाथकरता था।

एकचदनसन्ध्याकेअवसन्नरायिोनेपरआाँधीआयीचजससेरोगीकीझोपडीनष्टिोगयी। कुछ-न-कुछअथथायीरबन्धकरनाथा;चकनुतुविााँकौनथाजोउसअसियराणीकीऐसेचवषम

समय में देख-भाल करता! उसके एकमात्र चमत्र, सिानुभूचतर्ील स्वामी जी उस रोगी को एक समीपवती गुफा में ले जाने के चलए आँधी रिते िी अपने कुटीर से बिार आ गये। वि रोगी की
खाट तथा अन्य सामान भी अपने कन्धो िंपर ले गये। आगामी चदवस को उन्ोनिें उस छोटी-सी गुफा
को साफ-सुथरा चकया और तब उस व्यस्क्त के चलए एक नयी झोपडी बनवायी। तत्पश्चात् पुनः विी मूक सेवा धारा की भाँचत अपने सामान्य तथा सिज रवाि के साथ िलती रिी। विाँ न तो
कोलािल था और न अिाचभनन्दन अथवा थकान की भावना िी। यि सब सावशभौचमक रेम की भावना से परम रर्ास्न्त से चकया गया। रोगी कभी-कभी चमष्टान्न खाने की इच्छा व्यक्त करता ।
स्वामी जी उसके चनदेर्ानुसार उन चमष्टान्नो िंको तैयार करते और उसे सूफूचतशदायक स्नान कराने के पश्चात् स्वयिं उसे सेनि पूवशक परोसते। दूसरो िंके उपिास की उपेक्षा करते हुए तथा सभी रकार की कचठनाइयो िंको पार करते हुए, अन्त में वि उस रोगी को रोगमुक्त करने में सफल हुए।

गुरुदेव ने चटप्पणी की चक स्वामी जी ने तो एक िमत्कार कर चदखाया। रोगी साधु, चजसके
बिने की आर्ा अन्य लोगो िंने छोड दी थी, अब स्वयिं इधर-उधर िलने तथा स्नान करने में सक्षम
िो गया। गुरुदेव ने बडे िी रर्िंसात्मक भाव से किा, "चिदानन्द जी ने अपनी रेममयी सेवा से
उसे नवजीवन रदान चकया िै।" उन्ोनिें और आगे किा चक वि स्वयिं भी ऐसी पूणश भस्क्त के साथ
उसकी सेवा न कर पाये िोते। एक बार जब स्वामी जी इस चनस्सिाय-रूप भगवान् की पूजा में
तल्लीन थे तब गुरुदेव ने अपने एक वररष्ठ भक्त पन्नालाल जी को ध्यान चदलाया चक वि स्वयिं देखें
चक स्वामी जी चकस रकार कमश को पूजा में रूपान्तररत कर रिे िैं। जब स्वामी जी चसतम्बर १९५०
में अस्खल भारत यात्रा में गुरुदेव के साथ जाने की तैयारी कर रिे थे तब उस रोगी ने स्वयिं िी
सूचित चकया चक वि चकसी मागशरक्षी की सिायता से अमृतसर में अपने मठ में जाना अचधक पसन्द
करता िै। स्वामी जी ने उसे उसके मागश-व्यय के चलए रुपये चदये और इस रकार परम सन्तोष के
साथ अपनी सेवा पूणश की। रोग-मुक्त करने का उनका यि िमत्काररक कायश चर्वानन्दाश्रम की
सेवाओ िंकी गाथा में बहु-उद्धृत उदािरण बन गया िै। स्वयिं गुरुदेव ने अस्खल भारत यात्रा में
अपने व्याख्यानो िंमें स्वामी जी की इस असाधारण सेवा का कई बार उल्लेख चकया था।

अस्खल भारत यात्रा से वापस आने के पश्चात् स्वामी जी ने कुष्ठरोचगयो िंकी सेवा के कायश
को तीव्र कर चदया। उनके दीघशकाचलक रयास के पररणामस्वरूप कुछ भूचम राप्त की जा सकी
तथा ब्रह्मपुरी की कुष्ठ-बस्ती का चनमाशण िो सका ।

सन् १९५२ में एक चदन मूसलाधार वषाश हुई और िन्द्रभागा ने अपने चकनारो िंको तोड
डाला। मुचनकीरेती के चनकट की कुष्ठ-बस्ती की कई झोपचडयाँ बि गयी।िं दूसरे चदन रात:काल िी
सभी कुष्ठी चर्वानन्दाश्रम के िार पर आ गये। चिदानन्द जी एक बार पुनः उनके पराक्रमी रक्षक
बने। वि गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द जी के पास उनके परामर्श के चलए गये। उन्ोनिें अनुभव चकया
चक इस समस्या का थथायी समाधान चनकालना िी पडेगा। सवशरथम उन सबके चलए ताजा गरम
भोजन का रबन्ध चकया गया। तत्पश्चात् वि बािर गये तथा चजला अचधकाररयो िंसे उन्ोनिें सम्पकश
चकया। उन्ोनिें एक सावशजचनक सभा का भी आयोजन चकया और कुचष्ठयो िंकी चवकट समस्या की
ओर सभी सम्बस्न्धत व्यस्क्तयो िंका ध्यान आकचषशत चकया। सभा में यि चनणशय चकया गया चक एक
कुष्ठ-चनवारक-सचमचत थथाचपत की जाय। चजलाधीर् इस सचमचत के पदेन अध्यक्ष थे; नगरपाचलका
का अध्यक्ष, स्वास्थ्य-अचधकारी, स्वामी जी, गीता-भवन के रधान, कालीकमली वाला क्षेत्र के मिंत्री
तथा कुछ अन्य लोग चनवाशचित सदस्य थे। इस भाँचत स्वामी जी के व्यस्क्तत्व के रेरक-बल ने िी
सामान्य जनता तथा थथानीय चजला अचधकाररयो िंका ध्यान आकचषशत चकया। उनके रयत्नो िंसे चटिरी
गढ़वाल चजले की रथम कुष्ठ-चनवारक-सचमचत सिंघचटत हुई।

कुचष्ठयो िंको खाद्यान्न चवतरण करने के चलए धन-सिंग्रि चकया गया। यि रचतबन्ध रखा गया
चक कुष्टी अपनी जीचवका के साधन के चलए सडक के चकनारे निी िंबैठा करेंगे। सचमचत ने उन्ें
चिमालय में पााँि मील की दूरी पर ब्रह्मपुरी नामक थथान में भेजने का चनणशय चकया। यि थथान
उनके चलए िी चनवृशक्ष चकया गया था। नयी कुष्ठ-बस्ती के चलए अनेक समस्याएँ थी।िं वतशमान चनवास

थथानो ि ं की सफाई करानी थी, चिचकत्सा की सुचवधाएँ सुचनचश्चत करनी थी ि ं तथा स्वावलम्बी बनाने वाली पुनवाशस की पररयोजनाएँ आरम्भ करनी थी।ि ं राजकीय स्तर पर चकये गये स्वामी जी के रयत्नो ि ं को रथम बार सफलता राप्त हुई। चजला अचधकाररयो िंने बस्ती के चलए एक रचर्चक्षत कुष्ठचनवारक चिचकत्सक-सि-कायशकताश की सेवाएँ उपलब्ध की।ि ं इससे रोचगयो िंके आनन्द तथा कृतज्ञता की सीमा न रिी। ऐसी घटना उनके साथ पिले कभी निी िंघटी थी। उनकी देख-भाल के चलए एक व्यस्क्त
का चनयुक्त चकया जाना उनके चलए एक असाधारण घटना थी। अतः इसमें कोई आश्चयश की बात
निी िंचक उन्ोनिें चवस्मय तथा कृतज्ञता से उद्घोचषत चकया : "यि स्वगशदूत िै जो िमारे चलए निी
उतर आया िै।" आने वाला व्यस्क्त चनश्चय िी एक अचभजात तथा समचपशत चनथस्वाथश कायशकताश थे।
उनका नाम रवीन्द्रकुमार चमत्तल था तथा उन्ें गान्धी स्मारक कुष्ठचनवारक चनचध, वधाश ने रचतचनयुक्त
चकया था।

स्वामी जी ने लोगो िंको इस समस्या को अपनी समस्या के रूप में देखने के चलए समझाने
के चलए सिंघषश चकया और वि इसमें सफल रिे। अचधकिांर् सामाचजक कायशकताशओ िंके चलए इस
रकार का कायश सिज िी दुष्कर िो सकता था। इसके अचतररक्त स्वामी जी के चवषय में यि भी
पूणश रूप से समझ लेना िोचिए चक वि अपनी आध्यास्कि साधना के चलए जीवन का सब-कुछ
त्याग कर आश्रम में आये थे। इस सामान्य समयसाररणी के चवथथापन की सिज िी कल्पना की जा
सकती िै; चकनुतु चजस कायश से अचधकिांर् सामाचजक कायशकताश अथवा आध्यास्कि चजज्ञासु व्यचथत
तथा पराभूत हुए िोते उससे वि सदा की भाँचत िी अस्खन्न, रर्ान्त तथा चनभीक बने रिे। उन्ोनिें
इन सबको भगवान् की पूजा के रूप में माना और जो उस मिान् आध्यास्कि ऊँचाई पर रचतचष्ठत
िो िुका िो उसके चलए कोई भी रवृचत्त वास्तव में चित्त-चवक्षेप का कारण निी िंबन सकती।
ब्रह्मपुरी में नयी कुष्ठ-बस्ती आरम्भ करने के चलए स्वामी जी के नेतृत्व में आवश्यक कायशविी की
गयी तथा सन् १९५९ में कुष्ठी अपनी नवीन चनवासीय झोपचडयो िंमें थथानान्तररत कर चदये गये।

इन अभागी आिओ िंके रचत स्वामी जी की सेवा से रिुर सिंख्या में चवदेर्ी भक्तो िंमें गिरा
ररिंसा-भाव उत्पन्न हुआ। यि रभाव गुरुदेव के चनदेर्ानुसार नयी दुचनया में उनके अभ्यागम के
पश्चात् और भी तीव्र िो गया। चनथस्वाथश सेवा पर उनके रविन का माता सीता फेंकेल, माता
चसमोनेटा तथा अन्य भाग्यर्ाली आिओ िंपर सर्क्त रभाव पडा। माता सीता रथम व्यस्क्त थी िंजो
इस चनथस्वाथश सेवा के मिान् यज्ञ में उदारता तथा रिुरता से दान देने के चलए आगे आयी।ि ं माता
चसमोनेटा एक अन्ताराचष्टरय ख्याचत राप्त मचिला थी िंजो रमुख भूषािार अचभकल्पक के रूप में रिुर
धन अजशन करती थी।ि ं वि पैररस में स्वामी जी का भाषण सुन कर चनस्सिायो िंकी सेवा करने के
चलए अपना र्ेष जीवन अचपशत करने को अकस्मात् रेररत हुईं। स्वामी जी के रविन से उन पर
चवद्युत् गचत से रभाव पडा। उन्ोनिें बताया चक यि छाती में धक्का लगने जैसा था। उनके अपने
िी र्ब्ों िंमें: "ऐसा कम्पन-इससे पूवश मैं इस रकार के चकसी भी कम्पन से कभी भी पररचित न
थी। उस क्षण से मैं उनकी िो गयी।"

जब स्वामी जी अपनी रविन- यात्रा में कैलीफोचनशया में थे उन्ी िंचदनो िंवि (माता
चसमोनेटा) अपने कारोबार के सम्बन्ध में न्यूयाकश के रवास पर थी।ि ं स्वामी जी के कायशक्रम का पता
लिने पर उन्ोनिें अपने पत्रकार-भेंटवाताशओ िंतथा दूरदर्शन के कायशक्रमो िंको चनरस्त कर चदया तथा
स्वामी जी से चमलने के चलए चवमान िारा सैनफ्ांचिसस्को जा पहुँिी। स्वामी जी के साथ उनकी इस
भेंट से उनमें अपूवश पररवतशन आया। उन्ोनिें अपना पुराना व्यवसाय छोड चदया तथा वि ब्रह्मपुरी में
कुचष्ठयो िंकी तथा र्णाचथशयो,ि ं चनस्सिायो िंतथा अनाथो िंकी सेवा में अपना जीवन अचपशत करने के
चलए चर्वानन्दाश्रम आ गयी।ि ं तब से वि उनके चलए िाचदशक समपशण तथा सिानुभूचत से कायश कर
रिी िैं। वि किती िैं: "स्वामी जी में अपनी चनष्ठा के कारण िी मैं यि कायश कर सकती हाँ।
तथ्यो िंको स्वीकार करने तथा लोगो िंके साथ अपने सम्बन्ध के चवषय में स्वामी जी ने मेरी अत्यचधक
सिायता की िै। मैं यि कायश अपनी साधना के रूप में करती हाँ।"

चर्वानन्दाश्रम के अपने आवास के रारस्म्भक काल से िी न केवल आश्रम के औषधालय में आने वाले रोचगयो िंकी देखभाल करने का स्वामी जी का स्वभाव था अचपतु वि सियता की आवश्यकता रखने वाले रोगी व्यस्क्तयो िंकी खोज में दिेात में भ्रमण करते थे और उनकी सेवा-सुशूरूषा करते थे। उन चदनो िंन तो अचे्छे सिंरि-साधन थे और न आस-पास के के्षेत्र में कोई औषधालय था। उपिार के अभाव में लोग मर जाया करते थे। उनके चलए स्वामी जी साक्षात् त्राणकताश थे। वि रायः रत्येक घर में पहुाँि जाते और चजनको आवश्यकता िोती उन सबको रेमपूवशक औषचध देते थे। वि गााँव के लोगो िंिारा चनष्काचसत कुचष्ठयो िंके चलए झोपचडयााँ बनवाने की व्यवथथा करते थे। रोचगयो िंके पास जीवन-चनवाशि का कोई साधन न था और न आवास-थथान था। स्वामी जी उनके पास रि कर उनको भोजन कराते, औषचध देते तथा अपने िाथो िंसे उनके व्रणो िं की मरिमपट्टी करते थे। अतः इसमें कोई आश्चयश निी िंचक उन्ोनिें शीघ्र िी उस इलाके में एक उदात्त आिा के रूप में ख्याचत राप्त कर ली और तबसे वि चनधशन तथा बीमार व्यस्क्तयो िंके कष्ट कम करने में चटिरी गढ़वाल के दूर के कोनो िंमें भी कोई कायश सरलता से सम्पन्न करा सकते थे।

कुछ वषश पश्चात् जब माता चसमोनेटा ने स्वयिं को सेवा तथा साधना के चलए समचपशत कर चदया तो स्वामी जी ने ब्रह्मपुरी की बस्ती को रायः पूणशतया उनके िी रेममय िाथो िंमें छोड चदया। इस सेवाचनष्ठ मचिला ने बुनाई की मशीनें लगवायी िंऔर स्वथथ िो िुके रोचगयो िंको उत्पादनकारी कायश में लगाया। अब भी स्वामी जी अपने कुष्ठी चमत्रो िंसे चमलने, उन्ें आदर्श जीवन-यापन की चर्क्षा देने तथा रसाद से उनका मुख मीठा करने के चलए कभी-कभी विााँ जाते िैं। जब स्वामी जी ने देखा चक ब्रह्मपुरी के चलए थथानीय सियता अपयाशप्त िै तो उन्ोनिें सन् १९६८ में 'चडवाइन लाइफ' पचत्रका के पृष्ठो िंमें स्वैस्च्छक योगदान के चलए एक चनवेदन रकाचर्त चकया। भक्तो िंतथा मानव-रेचमयो िंने इस मााँग पर अनुकूल रचतचक्रया की तथा नयी धनराचर् से सियता-कायश में गचत आयी। स्वामी जी की रेरणा से पीचडतो िंको सियता तथा सुख पहुाँिाने में चदव्य जीवन सिंघ ने चजला कुष्ठ-चनवारक सचमचत को अपना सियोग रदान चकया।

सन् १९६इन्हीं श्रीचदवयोयिं वली तथा श्री ररिाडशसन ने लन्दन के 'सने्डे टाइर्म्' में कुष्ठ-चनवारण की समस्या का चित्रण चकया। सन् १९७३ में श्री आर. रावर झाबवाला ने भी 'एचर्या मैगज़ीन' तथा 'इस्म्प्रण्ट' में इस समस्या तथा स्वामी जी तथा अन्य समचपशत व्यस्क्तयो िं की सेवाओ िंसे दी जाने वाली सियता के सम्बन्ध में चलखा। इन पत्रकारो िंके रिर का विांचछत रभाव पडा। इिंस्िलर् कुष्ठ-चनवारक-सिंथथा के चनदेर्क श्री फ्ांचिसस िैररस १९७३ के अक्टूबर में ऋचषकेर् आये तथा उन्ोनिें सिंथथा िारा सिंगृिीत धन-राचर् के उपयोग की सवोत्तम चवचध के सम्बन्ध में स्वामी जी से चविार-चवमर्श चकया। उनका यि चविार था चक इिंस्िलर् कुष्ठ-चनवारक-सिंथथा िारा सिंगृिीत कोष का धन चकसी सिंथथा को िी दान में चदया जा सकता िै। माता चसमोनेटा ने सुझाव चदया चक सिंथथा का नाम 'चिदानन्द अन्ताराचष्टरय कुष्ठ-चनवारक-चनचध' रखा जाय। इस भााँचत िमारे समय के परम सिानुभूचतर्ील सन्त के नाम पर इस लोकोपकारी सिंथथा का जन्म हुआ। चदव्य जीवन सिंघ की सभी कुष्ठ-चनवारक रवृचत्तयााँ इस चनचध के माध्यम से िलती िैं।

आश्रम के सभी चवर्ेष चदनो िंमें, चवर्ेषकर चर्वानन्द जयन्ती तथा चिदानन्द-जयन्ती के चदन स्वामी जी स्वयिंसेवको िंकी एक टोली के साथ कार िारा ब्रह्मपुरी अथवा ढालवाला तथा लक्ष्मणझूला में चवकचसत कुष्ठ-बस्स्तयो िंमें से चकसी एक बस्ती में जाते िैं। विााँ वि चमष्टान्न तथा फल चवतररत करते तथा दचक्षणा के रूप में कुछ नकद भेंट भी देते िैं। कभी-कभी वि इन चवचभन्न बस्स्तयो िंमें उनके चलए खाद्यान्न तथा वस्त्राचद ले जाते िैं। उनकी व्यस्क्तगत चिन्ता तथा अवधान के कारण िी ढालवाला बस्ती में र्नैः-र्नैः जीवन की मौचलक आवश्यकताओ िंका सम्भरण िोने लगा िै। सन् १९७३ के अस्न्तम भाग में चसमोनेटा, चपयरे रेचनयसश, िैिै तथा सीता फे्न्केल ने इन अभागे लोगो िं के कष्ट को कम करने में मित्त्वपूणश सियता रदान की। बाद में बु्रुसेल्स, बेस्ियम के श्रीमती तथा श्रीयुत बे्रेल इस चनष्काम सेवा की वेदी पर कुछ योगदान देने के चलए आगे आये। चसमोनेटा ने विााँ कताई-बुनाई की एक औद्योचगक इकाई खोली जो दररयााँ, ऊनी स्वेटर, गुलूबन्द (मफलर) तथा इसी रकार की अन्य वस्तुएाँ तैयार करती िै। उन्ोनिें उसके पश्चात् विााँ चिदानन्द-कुष्ठ-उपिार-

चिचकत्सालय खोला। मैससश चतरुवलुलुवर िै ण्डलूम तथा राजपलायम् के श्रीराम रोडक्ट्स के योगदान, मुम्बई के डा. एन. बी. सूिक तथा आचदपुर के डा. एस. जे. रिानी िारा स्टेरप्टोमाइचसन
इंजेक्शनो िंके चन:रुल्क रबन्ध तथा मुम्बई के श्री मगनलाल पुरुषोत्तम की सिायता की इन बस्स्तयो िं
के स्वथथ चवकास में बहुत िी मित्त्वपूणश भूचमका रिी िै।

इसके अचतररक्त स्वामी जी िारा आरम्भ चकये गये कुष्ठ-चनवारण-कायशक्रम की एक अन्य
रमुख ऐचतिाचसक घटना िै सन् १९७५ में लक्ष्मणझूला कुष्ठ-बस्ती में औषधालय की थथापना। इससे
उन रोचगयो िंको बहुत आराम राप्त हुआ चजन्ें इससे पूवश आश्रम के चिचकत्सालय तक का पूरा मागश
लि कर आना पडता था। इन सब चवकासो िंतथा सुधारो िंके िोते हुए भी स्वामी जी उनकी दरा्
को और भी सुधारने को उतुसुक िैं। उनका भयिंकर रूप से अपयाशप्त पोषण स्वामी जी के ध्यान
का मुख्य केन्द्रचबन्दु बना हुआ िै; क्ोचिंक इसके सुधार के अभाव में भारत के पिास लाख
कुष्ठरोचगयो िंके भाग्य में कोई वास्तचवक ठोस पररवतशन पररलचक्षत निी िोि सकता िै। चनस्सने्दि
उनकी आध्यास्कि स्र्क्त के कारण िी चदव्य जीवन सिंघ रचत वषश सिस्रो िंरुपये व्यय करके
थथानीय कुष्ठ-बस्स्तयो िंके बनुधुओ िंको स्मरणीय लोकोपकारी सेवा रदान करने में सक्षम हुआ िै।

स्वामी जी की कुचष्ठयो िंकी सेवा उनकी चदव्य रकृचत की सुन्दर अचभव्यस्क्त िै। स्वामी जी,
जो चक चदव्य जीवन सिंघ के परमाध्यक्ष तथा वतशमान समय के मित्तम आध्यास्कि नेताओ िंमें से
एक िैं और जो दर्शन तथा पथरदर्शन के चलए सभी सामाचजक स्थथचत तथा व्यवसाय के अनेक
भक्तो िंसे सदा चघरे रिते िैं, दीनो िंमें से सवाशचधक दीनो िंसे चमलने, उनमें से रत्ेयेक के साथ कुछ
चरय विन बोलने तथा उनकी र्ारीररक सुख-सुचवधा की देख-भाल करने के चलए चकसी-न-चकसी
तरि समय चनकाल िी लेते िैं। चगररधारी की किानी चजसके चलए इचतिास सम्भवतः थथान न दे
सके; चकनुतु यि लोकोपकारवाद के इचतिास में, सचे्चे भाईिरे तथा स्वभाव-सौजन्य के इचतिास में
स्वचणशम अक्षरो िंमें अचभचलस्खत िोगी। चगररधारी ढालवाला का एक चनधशन रोगी मात्र था। उसके िाथ
की अाँगुचलयााँ निी िंथी,िं नाचसका न थी और न टााँगें थी।िं उसकी पत्नी भी कुष्ठी थी। वि िलने-
चफरने तथा अपनी जीचवका के चलए चभक्षा मााँगने में असमथश था। सभी लोगो िंने उसे बचिषूकृत कर
चदया था; चकनुतु स्वामी जी ने उसे अपनी र्िूक रक्षा रदान की। उस पर गुरुदेव की असीम कृपा
थी और इसका कोई स्पष्ट चवर्ेष कारण न था; चकनुतु कष्ट चजतना अचधक िोता िै, भगवान् तथा
ईर्मानवो िंकी कृपा भी उतनी िी अचधक िोती िै।

स्वामी जी कदाचित् अपने चरयतम चर्ष्य की चजतनी देखभाल करते उससे भी अचधक
उन्ोंनिें चगररधारी की की। बीस अथवा इससे भी अचधक वषों तक रोगी िलने में असमथश था और
स्वामी जी इन सब वषों में उसे भोजन भेजते तथा सभी सम्भाव्य उपायो िंसे उसकी देखभाल करते
रिे। चगररधारी सदा िी उनके ध्यान का रथम चवषय # िोता था। उदािरणाथश, वि जब अपनी
लम्बी चवश्व-यात्रा पर आश्रम से रथथानचवषय गाते थे तथा अपनी सकामनाएाँ रदान करने वाले
आश्रमवाचसयो िंसे चघरे देने अकस्मात् उनका ध्यान उस बेिारे रोगी की ओर गया चजसके वि वषों
तक पररिारक, चपत्र तथा माता-चपता रिे थे। वि चगररधारी की झोपडी में गये और यि गम्भीर
विन दे काउस चवषण्ण व्यस्क्त से चवदाई ली चक वि उसे रचतचदन स्मरण करते रिेंगे। उस बेिारे
ने करबद्ध राथशना की तथा स्वामी से आश्वासन राप्त चकया चक वि उसकी मृतुयु से पूवश उसके पास
अवश्य आ जायेंगे। इसके साथ िी उन्ोंनिें विााँ से रथथान चकया, चकनुतु उन्ोंनिें उस दीन व्यस्क्त
को सदा अपने मन में बनाये रखा। वि सुदूर अमरीका से चगररधारी की दररि झोपडी को सवोत्तम
उपलब्ध औषचधयााँ तथा छोटे-मोटे उपिार समय-समय पर भेजते रिे।

जब चगररधारी की मृतुयु अचधकाचधक चनकट आ रिी थी तो वि इस चविार से व्यचथत था
चक उसकी कई दर्को िंतक सेवा-सुशूरूषा करने वाले उसके गुरुदेव उसके अस्न्तम चदनो िंमें उसके
पास निी िोिैं और सम्भवतः वि अपनी मृतुयु से पूवश पूज्य गुरुदेव के दर्शन निी िंकर पायेगा। ऐसे
चविारो िंके कारण उसे अपने भौचतक र्रीर से पूणश घृणा िो गयी और उसने भोजन लेना बन्द कर
चदया। अपने र्रीर को छोटे से कम्बल से ढक कर वि भूचम पर लेटा रिा। लोग सोिते चक वि

मर िुका िै। सिंयोगवर् माता इवान लेबूयू ने उसे उस दुदशर्ा में देख चलया। उन्ोनिें उसके जीवन को बिाये रखने का यथार्क् रयास चकया, पर रोगी इतना िठी था चक उसने सन्तरे अथवा अिंगूर का रस भी लेना अस्वीकार कर चदया। चकनुतु जब उसे यि बताया गया चक स्वामी जी र्ीघ्र वापस आने वाले िैं और यचद वि उनके दर्शन के चलए जीचवत रिना िािता िै तो उसे कम-से-कम फलो िंका रस तो लेना िी पडेगा तो वि तुरन्त मान गया। माता लेबूयू ने स्वामी जी के अच्छी तरि िैंखिटा लगे हुए पुष्पमालयुक्त एक चित्र का रबन्ध चकया। चगररधारी पचवत्र दर्शन के चलए राथशना तथा अशुरुपात करता हुआ जागरण करता रिा। उस समय वास्तव में िमत्कार हुआ। उसकी राथशनाएँ सुन ली गयी।िं कोई भी यि चवश्वास निी िंकरता था चक स्वामी जी के आने तक चगररधारी जीचवत रि सकेगा। चकनुतु ऐसा हुआ चक स्वामी जी चनयत समय से ढाई मिा पूवश िी आश्रम वापस आ गये। जब उन्ें चगररधारी की दर्ा का पता िला तो वि-चजन्ोनिें बीस वषों तक उसकी अथक सेवा-सुशूरूषा की थी-अब उसको र्ास्न्तपूणश मिारयाण के चलए तैयार करने को उतुसुक थे। उन्ोनिें एक साधारण कम्बल खरीदा और ढालवाला में चगररधारी की झोपडी में उससे चमलने गये। माता चसमोनेटा उस समय उसके पास उपस्थथत थी।िं स्वामी जी ने मृदु स्वर में चगररधारी से किा: "अब आप अपना र्रीर त्याग सकते िैं। आप र्ास्न्त से जा सकते िैं।" इस भाँचत असीम करुणार्ील गुरुदेव को अपने पास बैठा हुआ देख कर सद्भाग्यवान् चगररधारी कुछ समय तक रसन्न तथा र्ान्त रिा और तत्पश्चात् उसने अपना नश्वर र्रीर त्याग चदया। उसे उसी छोटे सूती वस्त्र से ढक चदया गया और चदव्य नाम के उच्चार के साथ उसके र्रीर का दािसिंस्कार चकया गया।

असिाय लोगो िंके रचत स्वामी जी की ऐसी हृदयस्पर्ी सेवा तथा रेम के उदािरण अनेक िैं। ढालवाला का एक अन्य कुष्ठी चजसकी पत्नी उसे छोड कर िली गयी थी, अपने दो बच्चो िंके साथ असिाय रि गया था। स्वामी जी को अपनी माँ से अलग िोने पर बच्चो िंके दु:ख तथा तत्पररणाम स्वरूप बिारे चपता के कष्ट का पता िला। अत: वि उन बच्चो िंको आश्रम में लाये, उनको भोजन कराया तथा वस्त्र चदये और तत्पश्चात् उन्ें एक मचिला चिचकत्सक को समचपशत कर चदया जो उनकी माता जी बनी।िं इस रकार के उदािरण सिंख्यातीत िैं।

वषश में एक बार जब िोली का आनन्दपूणश उत्सव आता िै तब तीनो िंकुष्ठ-बस्स्तयो िंके कुष्ठी भाई रत्येक कुछ क्षणो िंके पश्चात् 'चिदानन्द भगवान् की जय' के तुमुल नाद के साथ नृत्य तथा गान करते तथा अपनी ढोलकै बजाते हुए आश्रम आते िैं। वे आते िैं, अपने चमत्र तथा पररत्राता से चमलते िैं और उस व्यस्क्त को स्नेिमय नमस्कार करते िैं जो उनमें से रत्येक के जीवन में बहुत िी मित्त्वपूणश रिा िै। इधर सन्त भी उनके समान उत्सािा के साथ बािर उनके पास आते, उनका स्वागत करते तथा उन्ें चमष्टान्न भेंट करते िैं। रेम तथा उल्लास, सन्त के मुख पर की कास्न्त, कुचष्ठयो िंके मुख पर की कृतज्ञता तथा स्नेि और पूणशतया मुक्त तथा अबाध सत्कार-चवचनमय दर्शको िं में उन्नयनकारी आनन्दानुभूचत सिंघचटत करते िैं।

इस रकार उत्तराखण्ड की अभागी तथा पीचडत आिाओ िंने स्वामी जी से र्ास्न्त तथा आश्रय राप्त चकया। सिानुभूचतर्ील स्वामी जी उन सबके न केवल चिचकत्सक थे अचपतु उनमें से रत्येक के स्नेिमयी माँ, कठोर चपता, सिायक चमत्र तथा सवोपरर उद्धारक तथा पररत्राता भी थे।

नवम अध्याय

मिान् रबोधक

"य इमां परमां गुह्यां मद्भक्तेष्वडिधास्डत।
न्तिक्तां मडय परां कृवा मामेवैष्यत्यसांशयेः।।

--जो व्यस्क्तमुझमेंपरमभस्क्तयुक्तिोकरमेरेभक्तगणोंके मध्यमेंइसपरमगुह्यास्त्रकी व्याख्या करेगा, वि मुझे अवश्य राप्त िोगा, इसमें सन्देि र्निीं िै" (गीता : १८/६८) ।

"धैयश रखें। चनभीक बनें। मैं सदा आपके पास हाँ। मैं उस र्ाश्वत अन्तयाशमी से आस्कि रूप में सदा अचभन्न हाँ और उसके अिर्-रूप में मैं आपकी अन्तरिा में चनवास करता हाँ।" यि चिदानन्द का समस्त भूमण्डलभर में फै ले हुए उन असिंख्य भक्तों के चलए भावरवण अभय विन िै जो उनके सिंरक्षण में असत् से सत् की ओर, तमस् से ज्योचत की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर िोने को सिंघषशरत िैं। वि सावशभौचमक चमत्र, जगद्गुरु, अचितीय रेरक तथा सचक्रय चदव्य सन्देर् विाक िैं जो अपनी असीम अनुकम्पा, कास्न्तमय र्ुचिता, भावपूणश भजन तथा आधुचनक युग के भौचतकवाचदयों के चलए चवद्युत्-रघात-चिचकत्सारूप गम्भीर िेतावचनयों से मानव-जाचत का भाग्य सुधार रिे िैं।

सन् १९४९ में गैररक वस्त्र धारण करने तथा चदव्य जीवन सिंघ के मिासचिव का पदभार लेने के समय से िी उन्िोंने जनता को अकमशण्यता तथा असावधानता से उद्बुद्ध करने तथा उन्िें उचित चनणशय करने तथा आिसाक्षात्कार के राप्त्यथश सन्मागश पर िलने के चलए रेररत करने के बृित्कायश में अपने को पूणशतया समचपशत कर चदया। एक मिान् रबोधक के उनके व्यापक रयास की किानी का आरम्भ कुछ साधारण रूप में हुआ। जैसा चक इससे पूवश बतलाया जा िुका िै, एक चदन चर्वानन्द ने उन्िें बुला भेजा तथा चदव्य जीवन सिंघ की चबिार रादेचर्क र्ाखा का उद्घाटन करने के चलए पटना जाने का आदेर् चदया। यि केवल साधारण-सा सेवा-कायश था जो सिंयोगवर् उनके कन्धों पर लाद चदया गया था; चकन्तु जनता पर इनके अभ्यागम का ऐसा आश्चयशजनक रभाव पडा चक उसके बाद उन्िें चवराम न उपलब्ध िो सका। समय की गचत के साथ-साथ अचधकाचधक लोग उनके दयामय अवधान की जोरों से माँग करने लगे और तबसे वि भगवान् के भ्रमणर्ील सन्देर्वािक बने रिे।

स्वामी जी की पटना की यात्रा'[16] चबिार की सुचवसूतृत यात्रा के रूप में समाप्त हुई। इसके पश्चात् उन्ोनिें गुरुदेव के साथ युगान्तरकारी अस्खल भारत यात्रा की। सारे भारत के चजज्ञासु र्ीघ्र िी चिदानन्द की मित्ता को पूणश रूप से समझ गये। वे उनके धमोपदेर्ो िंतथा चर्चाओ िंको अमूल्य वसुतु मान कर सुनने की उतुसुकता से रतीक्षा करते थे। ऋचषकेर् में सन् १९५३ में आयोचजत 'चवश्व धमश पररषद्' के सभी अचधवेर्नो िंमें उन्ोनिें आचदरवतशक की भूचमका अदा की। उन्ोनिें अपनी रत्ययकारी तकश-स्क्त तथा तीव्र आध्यास्कि उत्सिा से श्रोताओ िंको यि मूलभूत सने्देर् हृदयिंगम करा चदया चक एकमात्र धमश िी मानव-जाचत में एकता ला सकता िै। उन्ोनिें जनता पर जो रभाव अंचकत चकया उसको देख कर गुरुदेव ने जनता की आध्यास्कि सेवा करने के चलए उनें अचधकाचधक बारम्बार बिार भेजने की आवश्यकता अनुभव की। विी एक व्यस्क्त थे चजनें वे चवचवध चदव्य जीवन समे्मेलनो िंकी अध्यक्षता करने के चलए अपने चनजी रचतचनचध के रूप में चनयुक्त कर सदा भेजते रिे।'[17]

जब कोलकाता में आठवााँ अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मेलन हुआ उस समय स्वामी जी बदरीनारायण की तीथशयात्रा पर गये हुए थे। गुरुदेव ने उनें निी बुला भेजा तथा जनता को उन्नत बनाने के चलए कोलकाता जाने का आदेर् चदया। समे्मेलन में एकचत्रत चजज्ञासुओ िंको 'चनत्य पूणश, चनत्य रुद्ध, आनन्दघन परमािा, सवशर्स्क्तमान् अंिय सत्ता के दृश्य व्यक्त रूप' कि कर सम्बोचधत करने वाले उनके रथम बी् िंसे िी पुलक की लिर वैसे िी दौड गयी जैसे चववेकानन्द के बी् िंसे चर्कागो की जनता में हुआ था। उनके बी् िंने उतना निी िंचजतना चक उन बी् िंमें चनचित सुष्पष्ट आध्यास्कि स्क्त तथा भगवतूकृपा ने तत्काल भव्य रभाव उत्पन्न चकया। गम्भीर, तेजस्वी तथा कुर्ाग्रमचत स्वामी जी ने चवस्तारपूवशक स्पष्ट चकया चक चदव्य जीवन समे्मेलन का रमुख उदे्देश्य लोगो िंके हृदय तथा मन में चदव्य भाव, आस्कि एकता की उतूकृष्ट भावना, सवशगत अभेद, भस्क्त, भ्रातृभाव तथा रेम की तरिंगें उत्पन्न करना िै। समे्मेलन में कुछ भी सिंथधागत चवषय न था। उनका चविार था चक समे्मेलन को कलि तथा सम्भ्रम से चवषाक्त आज के चवश्व की एक भव्य नवीन रूप में कल्पना की रूपरेखा रसुतुत करने में छलााँग लगाने के चलए एक फलक का रूप लेना िाचिए। यि (समे्मेलन) आध्यास्कि उन्नचत की ओर सतत अचभमुख नवीन मानवता रकट करने के चलए िै।

स्वामी जी ने अपने उन्नयनकारी रविनो िंमें मानव-स्वभाव के चनम्नतर, अरुद्ध तथा िाचनकारी रूप को नष्ट करने तथा अन्तस्थथत अपने उच्चतर चदव्य स्वरूप के साक्षात्कार करने में सिायता रदान कर उसमें उचिकास लाने की आवश्यकता तथा उपायो िंको अपने श्रोताओ िंके मन में बैठाने के कायश में स्वयिं को लगाया। उनकी मान्यता के अनुसार ब्रह्माण्ड में सभी पदाथश अपने सत्स्वरूप को अचभव्यक्त करते िैं। एकमात्र मनुष्य िी अपराधी िै। मनुष्य, जो चक ईश्वर-सृचष्ट का मुकुट िै, उसकी सवोतूकृष्ट कलाकृचत िै, वैभवर्ाली चविार-स्क्त से सम्पन्न िै, अपने स्वरूप में खरा निी िै

---

16 पटना पहुाँिने पर उनें पता िला चक र्ाखा के समचपशत आयोजकों में से एक श्रीमती ए. के . चसन्ा तीव्र ज्वर से ग्र्याग्रस्त िैं। वि उनको चमलने गये। सभी को पररतोष तथा आश्चयश हुआ जब उनके रोगिर िाथों के स्पर्शमात्र से िी वि अगले चदन पूणशतः स्वथथ िो गयीं तथा उन्ोनिें अपने सामान्य उत्सिा से कायशविी में भाग चलया। स्वामी जी के अभ्यागम ने समे्मेलन के चलए चनकट तथा दूर से आये चवर्ाल जनसमू को एक अलौचकक अनुभव रसुतुत चकया। युवक स्वामी जी इतने रेरणादायी थे चक चबिार के राज्यपाल मिामचिम श्री एम. एस. अणे, जो समारोि का उद्घाटन करने गये थे, अत्यचधक रभाचवत हुए और उन्ोनिें स्वामी जी को बडे िी आदर से राजभवन में आमस्ित चकया और उनें चवरे्ष सम्मान रदान चकया।

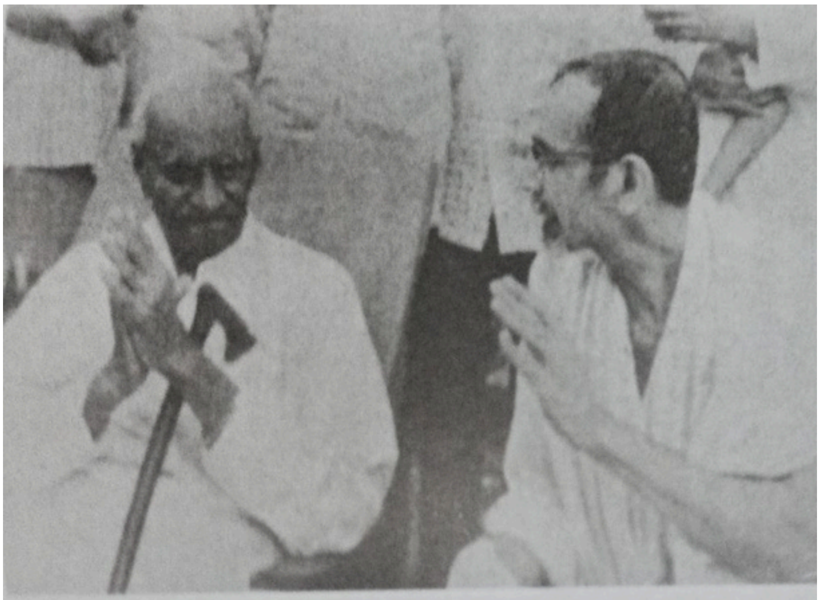
17 गुरुदेवनेआध्यास्किसमे्मेलनकेचविारकीसिंकल्पनाजन-जागरणकेचलएएकआधुचनकआवश्यकता के रूपमेंकीथी।उन्ोनिें घोचषतचकयाचककचलयुगमेंएकचदव्यजीवनसमे्मेलनसौराजसूययज्ञोंअथवा सोम-यज्ञों के तुल्य िै। गुरुदेव से रेरणा राप्त कर डा. वी. एस. मचण ने १९३९ के अन्त में चवलूपुरम् में रथम अस्खलभारतचदव्यजीवनसमे्मेलनआयोचजतचकया।तत्पश्चात्सेलम,वेंकटचगरर,राजमुन्दरी, ऋचषके र्, िैदराबाद तथा पुनः सेलम में इसी रकार के छि समे्मेलन हुए।

ीं। िओोत्कषश में उसकी बुस्द्ध का दुरुपयोग िोता िै। उसने अपने को ऐस्न्द्रक अन्तश्वालनाओ िंका दास बना डाला िै तथा इस जगत् को र्ोक तथा पररताप की उपत्यका में पररवचतशत कर चदया िै। ईश्वर के उद्यान को अपचवत्र चकया गया िै। स्वामी जी ने सभी को स्पष्ट रूप से समझाया चक चदव्य जीवन कोई गुप्तोपासना निी िंिै। उन्ोनिें किा: “चनथस्वाथशता तथा िओसाक्षात्कार को, मानव- सेवा तथा ईश्वराराधन को िी चदव्य जीवन समझो।" उन्ोनिें इच्छा व्यक्त की चक यि समेमेलन इस सन्ेदेर् को श्री रामकृष्ण तथा चववेकानन्द की सूमृचत से अचभचषक्त मिानगर कोलकाता के िी निी िं अचपतु चवश्व के सभी भागो िंके रत्ेयेक घर में पहिंुचाये।

उनके जोर्ीले सन्ेदेर् ने कोलकाता की जनता पर अपना अचमट रभाव डाला जो कई वषों के बाद जब १९७४ में चदव्य जीवन समेमेलन की रजत जयन्ती आयोचजत की गयी, उस समय भी चदखायी पडता था। चिदानन्द िारा फिराये गये ध्वज के पास सिस्रो िंचजज्ञासु एकचत्रत हुए। सीतारामदास ओकिंारनाथ, वेदव्यासानन्द, रुद्धानन्द भारती तथा चिन्मयानन्द जैसे सन्तो िंने स्वामी जी के रचत अपने व्यस्क्तगत रेम तथा सम्मान के चिह्नस्वरूप अपनी उपस्थथचत से सभामिंकिो सुर्ोचभत चकया। ओकिंार बाबा ने चिदानन्द को चर्वानन्द का रकट रूप बतलाया तथा वेदव्यासानन्द ने उन्ें आधुचनक चववेकानन्द के रूप में चिचत्रत चकया। स्वामी जी ने अपने रविन में भगवत्साक्षात्कार के चलए सिंघचटत िेष्टा पर बल चदया। उनका चविार िै चक जीवन के चकसी भी िअंग से इस िेष्टा को कुस्ण्ठत निी िंिोने देना िाचिए। उन्ोनिें दर्ाशया चक चकस रकार व्यस्क्त की चक्रया का रत्ेयेक िअर् भगवान् की चदर्ा में एक पुरोगामी डगे बन सकता िै। उन्ोनिें दृढ़तापूवशक किा : "इस जीवन का अस्वीकरण निी,िं वरन् इसका रूपान्तरण िी आज का युगधमश िै।"

स्वामी जी में लोगो िंकी अचभरुचि की लिर बिंगाल से गुजरात तक फैल गयी। दर् वषश से अचधक समय तक उस (गुजरात) राज्य के चवचवध आध्यास्कि समेमेलनो िंमें स्वामी जी आध्यास्कि पुनरुज्जीवन तथा सामाचजक सौिादश लाने के कायश में सिंलग्न रिे। इनका रभाव चवर्ेषकर पाटण तथा राजकोट की जनता पर आश्चयशकर रूप से पडा। उनके चदव्य व्यस्क्तत्व से िारका के जगद्गुरु र्िंकरािायश तथा बाबा रणछोडदास जैसे अन्य उन्नत आध्यास्कि नेता उन समारोिो िंमें आने को आकचषशत हुए। यि स्थथचत स्वामी जी के समेमेलनो िंमें सदा िी िोती िै। जनता को चदव्य जीवन के रचत समुबुद्ध बनाने के चलए स्वामी जी न केवल स्वयिं रयास करते िैं अचपतु देर् के अन्य लब्धरचतष्ठ सन्त पुरुषो िंकी सद्भावनाओ िंकी जो चवपुल चनचध उन्ोनिें सिंचित की िै, उसका भी मुक्त रूप से उपयोग करते िैं।





भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वी. वी. गिरी से वार्तालाप करते हुए

स्वामी जी को अपनी यात्राओ िंमें राय: चदल्ली से िो कर जाना पडता िै। विााँ के भाग्यर्ाली भक्त जब कभी सम्भव िो उनके दर्शन तथा रविन का लाभ उठाने के चलए सदा सतकश रिते िैं। इन बारम्बार के सत्सिंगो िंका राजधानी तथा उसके अडोस-पडोस के भक्तो िंतथा चजज्ञासुओ िंपर अत्यचधक रभाव पडा िै।

स्वामी जी से उते्प्रररत िो चदल्ली के भक्तो िंने गुरुदेव की मिासमाचध के कुछ िी मिीनो िंके पश्चात् सोलिवााँ अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मलन आयोचजत चकया। स्वामी जी ने उन्ें यि मिान् पाठ चसखाया चक गुरु कभी मरता निी िंतथा जिााँ तक भक्तो िंतथा चजज्ञासुओ िंका सम्बन्ध िै, उन्ोनें अनुभव चकया चक गुरुदेव ने अपने िुने हुए उत्तराचधकारी के माध्यम से कायश करना जारी रखा िै। उन्ें 'स्वामी चर्वानन्द सिंसृ्कचतक सिंथथान' के आवास के एक भवन-चनमाशण कराने और इस भााँचत गुरुदेव की सृ्मचत को अमर बनाने की रेरणा चमली। स्वामी जी ने इसके उद्घाटन के अवसर पर डा. एस. राधाकृष्णन तथा न्यायमूचतश जे. आर. मुधोल्कर के साथ समारोि में उपस्स्थत िो उसकी र्ोभा बढ़ायी। जब विााँ िौबीसवााँ अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मलन हुआ तो स्वामी जी ने श्रदे्धय ओिंकार बाबा तथा अन्य लब्धरचतष्ठ भागवत पुरुषो िंके साथ उस पुण्य भवन को पावन चकया। ऐसे अवसरो िंपर स्वामी जी ने राजधानी के सुचवज्ञ रबुद्ध वगश पर अत्यचधक आध्यास्िक रभाव डाला।

स्वामी जी सतरिवें अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मलन में सस्म्मचलत िोने के चलए सन् १९६४ में रथम बार पिंजाब गये। उनके इस अभ्यागम को भक्तजन अब भी एक असाधारण आध्यास्िक स्र्क्त से अचभरिंचजत अभ्यागम के रूप में स्मरण करते िैं। स्वामी जी जब िण्डीगढ़ पहुाँिे तो वि से्टर्न पर िी पचवत्र सप्तचसनु्धु के्षत्र के लोगो िंके आध्यास्िक जागरण के चलए

सवशर्स्क्तमान रभु से िाचदशक राथशना करते हुए कुछ समय चनश्चल तथा अन्तमुशखी स्थथचत में खडे रिे। सम्मेलन-थथल पर पहुँाँ किर जब वि सभामिं पिर जाने के चलए अपनी गाडी से बािर चनकले तो लोगो िंने चवस्मय तथा धमोत्सािा के नवीन भाव से अपने को अनुराचणत अनुभव चकया। उन्िं वि एक उन्नत कोचट की तेजस्स्वता तथा रर्ास्न्त से देदीप्यमान चदखायी पडे। वातावरण तत्काल श्रद्धाचस्नग्ध भावना से रभाररत िो िला। स्वामी जी ने मधुर स्स्मत तथा नमस्कार के साथ सबका अचभवादन चकया। सबकी दृचष्ट उन पर िी केस्न्द्रत थी। वि एक चमनट तक पूणशतः अन्तमुशखी िो मूचतश की तरि चनश्चल बैठे रिे। तत्पश्चात् जब उन्िोंने ॐ का उच्चारण चकया तो स्पष्ट रूप से र्ास्न्त तथा नीरवता छा गयी तथा श्रोता मुग्ध-से िो गये। सम्मेलन के रथम चदन लगभग आठ सिस्र पुरुष तथा मचिलाएँ विााँ एकचत्रत हुए थे। आगामी चदवस को भीड र्ीघ्र िी लगभग पन्दरि सिस्र तक बढ़ िली। वे सभी आनन्द कुटीर के सन्त की झााँकी पाने तथा उनका उन्नयनकारी धमोपदेर् सुनने को उत्कस्ण्ठत थे। सभी ने यि अनुभव चकया चक स्वामी जी ने विााँ जो आध्यास्त्मक उत्सािा उत्पन्न चकया वि असाधारण रूप से रगाढ़ तथा अवणशनीय रूप से रभावकारी था। अमृतसर के स्वामी चनमशल मिाराज भी इस सम्मेलन में सस्म्मचलत हुए थे। उन्िोंने स्वयिं इसका अनुभव चकया था तथा इसकी रिंशिंसा की थी।

इसी रकार सन् १९६५ में मैसूर'[18] अठारिवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन के मिंि पर स्वामी जी की जनता के समक्ष उपस्थथचत स्मरणीय िै। गुरुदेव की ऐचतिाचसक यात्रा के पन्दरि वषश पश्चात् स्वामी जी उनके आध्यास्त्मक उत्तराचधकारी के रूप में दचक्षण भारत के सभामिंि पर रथम बार पधारे थे। गुरुदेव के दचक्षण भारत के बहुसिंख्यक भक्त, जो विााँ गये हुए थे, यि देख कर चक चिदानन्द छरिरे तेजस्वी र्रीर में चर्वानन्द िी िैं, अचभभूत िो गये। यिााँ श्रदेधेय स्वामी जी को उनके आध्यास्त्मक ज्ञान के रसार के उदात्त कायश में पुरी तथा िारका के र्िंकर पीठो िंके र्िंकरािायों ने भी अतीव कृपापूवशक अपना सियोग रदान चकया। मैसूर सम्मेलन के पश्चात् स्वामी जी ने इस राज्य में कई क्षेत्रीय सम्मेलनो िंमें भाग चलया।

सन् १९७१ में अपनी चत्रवषीय चवश्व यात्रा से भारत वापस आने के पश्चात् स्वामी जी ने आन्ध्र रदेर् की राजधानी में बाईसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन की अध्यक्षता की। सम्मेलन की पूवश सन्ध्या को िैदराबाद तथा चसकन्दराबाद के नगर–िय की रमुख सडको िंपर चदव्य नाम के उच्च स्वर से सिंकीतशन की सिंगचत में अन्य सन्तो िंके साथ उनकी र्ोभा-यात्रा चनकाली गयी। बहुत से सन्तो िंके अचतररक्त लौचकक क्षेत्र से आन्ध्र रदेर् के राज्यपाल मिामचिम खण्डूभाई देसाई तथा जनरल कररयप्पा जैसे अनेक लब्धरचतष्ठ व्यस्क्त स्वामी जी की भावोत्तेजक राथशना तथा उन्नयनकारी रविनो िंसे अत्यचधक रभाचवत हुए। उन्िोंने चजज्ञासुओ िंसे इस आध्यास्त्मक रिस्य को स्पष्ट रूप से समझने का अनुरोध चकया चक ईश्वर पर िमारा चदव्य अचधकार िै। उन्िोंने समाह्वान चकया : "ओ-चवसूमृचत की चनिा से जग जाइए। आपकी साधना केवल यिी िोनी िाचिए चक िम ईश्वर के साथ अपने मधुर सम्बन्ध को कभी चवस्मरण न िोने दें।" उच्च तथा स्पष्ट स्वर में उन्िोंने घोचषत चकया: "ईश्वर सदा मुझमें िै। मैं सदा ईश्वर में हाँ।" उन्िोंने आगे किा: "चदव्य िोना तथा चदव्यतापूवशक जीवन-यापन करना आपके चलए स्वाभाचवक िै। आपका जो स्वरूप िै, विी बने रिें। अपने स्वरूप के अचतररक्त अन्य कुछ बनना अस्वीकार कर दें।"

िाचदशक अनुरोध तथा अनुकम्पा से सनुतृप्त सरल आप्त वाणी का श्रोताओ िंपर अचमत रभाव पडा। श्रोताओ िंमें से अनेक लोगो िंने यि अनुभव चकया चक स्वामी जी के आध्यास्त्मक उपदेर्ो िंकी वृचष्ट केवल सूफूचतशदायक तथा रोत्सािक िी न थी, उसने स्वामी जी की चदव्य कृपा का अपरोक्ष रूप से उनमें सिंिरण भी चकया। स्वामी जी ने अपने समापन-भाषण में श्रोताओ िंको िेतावनी दी चक वे भगवत्साक्षात्कार िेतु राप्त इस दुलशभ मानव-जीवन को व्यथश नष्ट न करें। स्वामी जी ने गम्भीर वाणी में किा : "रत्येक सूयोदय तथा सूयाशस्त के साथ काल तीव्र गचत से चनकला जा रिा

[18] दचक्षणभारत के चजज्ञासुओंने मैसूर में पााँि वषश पूवश भी एक ऐसा िी सम्मेलन आयोचजत चकया था।

ै। रतेेयेक क्षण व्यतीत िोता जा रिा िै। अतः सभी िषोल्लास अनुचित िैं। अपने-आपसे पूछें, 'एक वषश व्यतीत िो गिला। मैंने क्ा चकया? दुलशभ मानव-जन्म को राप्त कर मैं क्ा कर रिा हाँ?' सागर की चदर्ा में रवाचित िोना सररता का स्वधमश िै; वैसे िी अपने मूल स्रोत से चमलना जीव का स्वधमश िै। स्वगृि को लौटना िी जीवाा का परम कतशव्य िै।"

सन् १९७५ के बेंगुलूरु समे्मेलन ने एक और स्मरणीय आध्यास्कि सेवा रदान की। चवश्वेश्वर तीथश, चर्व बालयोगी तथा रुद्धानन्द भारती जैसे श्रदे्धेय गिमााओ िंकी सिंगचत में स्वामी जी मिंिपर असाधारण रभा से देदीप्यमान िो उठे। उन्ोंनें गुरुदेव के चित्र का अनावरण चकया और इस अनावरण-चवचध को मानव-हृदय में सदिार तथा भारतवषश की योग-परम्परा के उद्घाटन का चवर्ेष नाम चदया। उन्ोंनें किा: "वि अिय सत्ता, चजसकी मानव-समिू अल्लिा, खुदा, आहुमशज्दा, ताओ के रूप में, परात्पर के रूप में पूजा करता िै, चजस सत्ता को नास्स्तक लोग अस्वीकार करते िैं, एक मिासागर िै चजसमें सभी धाचमशक धाराएँ रवाचित िोती िैं। उसकी िी मचिमा इंजील, कुरान, ग्रन्सािब तथा वेदो िंमें गायी गयी िै। उसकी िी राथशना-भवनो,िं चगरजाघरो,िं मसचजदो िंतथा मस्न्दरो िंमें पूजा िोती िै। चकनु्तु उसका सबसे चवर्ाल मस्न्दर तो मानव-हृदय िै। वि सबमें व्याप्त, रचवष्ट तथा अन्तव्याशप्त िै। विी िमारी सत्ता का मूल तत्त्व िै।" स्वामी जी मानते िैं चक मोक्ष की कुंजी राणी मात्र पर करुणा रखना िै। यि करुणा अपने िुचदशक् उगने वाले पौधो िं तथा घासो िंतक चवसृतृत करनी िाचिए। िमें रेम और सेवा के चलए िी जीना िाचिए। दूसरे, जीवाा को चवश्विाा की चवरि-वेदना का अनुभव िोना िाचिए। उसे आध्यास्कि लालसा िोनी िाचिए जो उसको मौन बैठने, जप करने तथा धमशग्रन्ो िंका स्वाध्याय करने में रवृत्त करे। योग के सभी रूप इस लालसा की बाह् अचभव्यस्क्तयाँ िैं। यि अभीप्सा बाजार में निीं िंखरीदी जा सकती ै। इसे तो केवल भगवान् तथा सन्त िी रदान कर सकते िैं।

स्वामी जी इस भाँचत अपने हृदयग्रािी रविनो िंसे जनता में आध्यास्कि अभीप्सा उत्पन्न करते हुए भारतवषश के कोने-कोने तक पररव्रजन करते रिे। सन् १९६६ तक उडीसा छूट गया था। चनस्सनेदि स्वामी जी ने सन् १९५६ में कटक की आकस्स्मक यात्रा की थी। एक दर्क के पश्चात् उन्ोंनें भगवान् जगन्नाथ की भूचम में पुन: पदापशण चकया। वि पुरी में चितीय िैतन्य मिारभु के रूप में आये तथा उन्ोंनें जगन्नाथ भगवान् के मस्न्दर के पररसर में भावरवण तथा उन्नयनकारी कीतशन चकया। उन्ोंनें रथम अस्खल उडीसा चदव्य जीवन समे्मेलन की अध्यक्षता की तथा जनता को चदव्य नाम की मचिमा से अनुराचणत चकया। भावुक रेक्षको िंको ऐसा अनुभव हुआ चक उनकी उपस्थथचत मात्र से िी वातावरण में र्ुचिता छा गयी। इसके पश्चात् स्वामी जी इस राज्य में अनेक बार आये, इसके भीतरी रदेर् में भी दूर तक यात्राएँ की िंतथा विाँ के लोगो िंमें आध्यास्कि ज्ञान का अभूतपूवश रिार चकया।

सन् १९६७ में उन्ोंनें कटक में चितीय अस्खल उडीसा चदव्य जीवन समे्मेलन की अध्यक्षता की। वि पुनः पुरी गये और किा चक वि जब-जब भी उडीसा आयेंगे, तो जगन्नाथ भगवान् के पचवत्र मस्न्दर में उनको अपनी श्रद्धांजचल अचपशत करने के सुअवसर का लाभ उठाना िोगा। तत्पश्चात् वि ब्रह्मपुर में इक्कीसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन समे्मेलन की अध्यक्षता करने सन् १९६८ में पुनः उडीसा आये। रकार्म िाल, जो सभा-थथान था, भक्तो िंतथा चजज्ञासुओ िंसे खिाखि भरा हुआ था। वे सब स्वामी जी की झाँकी पाने को उतु्सुक थे। अनन्य वृचत्त वाले लोगो िंने देखा चक चकस रकार स्वामी जी अत्यचधक व्यस्त कायशक्रम के िोते हुए भी सभामिंिपर रायः सिज समाचध की अवथथा में चनश्चल बैठे थे और श्रोताओ िंपर सुख, र्ास्न्त तथा आनन्द चवचकरण कर रिे थे। उन्ोंनें चर्वानन्दाश्रम में अतीव सावधानीपूवशक तैयार की हुई अमृतोपम औषचध का अपने ममशस्पर्ी भजनो िं तथा रविनो िंिारा श्रोताओ िंमें अन्तः क्षेपण चकया। इनका समे्मेलन का सिंचक्षप्त सने्देर् था : "जीवन का रकार् गुरूपदेर् िै। जीवन की र्क्ति भगवन्नाम िै। जीवन में सफलता का रिस्य भगवचिश्वास ै। जीवन का आधार धमश िै। जीवन की सम्पचत्त सद्गुण िै। सवोतॄकृष्ट चनचध भगवद्भस्क्त िै। र्ास्न्त तथा परमानन्द की कुंजी ध्यान िै। परम कृताथशता का मागश चदव्य जीवन िै। जो कुछ किा गया िै,

उस पर चविार करें, उसके कायश को भलीभााँचत समझें, अपने दैचनक जीवन में उनका अनुसरण करें तथा इस भााँचत सौभाग्यर्ाली बनें।

स्वामी जी सन् १९७१ की ग्रीष्म ऋतु में पुनः उडीसा आये। इस बार उनका अभ्यागम जनजातीय क्षेत्र भवानी पटना में हुआ। आगामी वषश में वि तेईसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन की अध्यक्षता करने के चलए कटक गये। उडीसा के सभी भागो िंसे लगभग ५०,००० लोग तथा देर् के चवचभन्न कोनो िंसे अनेक रचतचनचध इस मिान् ज्ञान-यज्ञ में स्वामी जी का चदव्योपदेर् श्रवण करने के चलए एकचत्रत हुए। स्वामी जी ने आह्वान चकया : "िे भारतवाचसयो! जागो तथा सिंसार को धन्य बना दो। भारतवषश की सिंस्कृचतक परम्परा के भाग्यर्ाली उत्तराचधकाररयो! अपने जीवन को भारत के त्याग तथा सेवा के ज्वलन्त आदर्ों की दीस्प्तमान रभा बना दें। अपने को मिारे धमश का सजीव मूतशरूप बना दें तथा अपने में परम अिैत ज्ञान के अनुवती परोपकार के उदात्त चसद्धान्तो िंका आदर्श रस्तुत करें। भारतवषश की उदात्त सिंस्कृचत आप तथा आपके सम्पूर्ण जीवन से रचतक्षण तथा रचतचदन सजीव रूप से अचभव्यक्त िो। इस भााँचत आपके िारा भारत ओजस्वी रूप से सजीव तथा जाग्रत चक्रयार्ील बने। आप भारत िैं।"

स्वामी जी धीरे-धीरे क्योंझिंरगढ़ जैसे और अचधक भीतरी थथानो िंकी ओर समाकृष्ट हुए। वि विााँ चदव्य जीवन सम्मेलन की अध्यक्षता करने गये तथा उन्ोंने विााँ अपना धमश का सन्देर् चदया। उन्ोंने किा: "धमश का अचवतथ रूप से अनुसरण करें। धमश की उद्घोषणा करें। धमश से मानव-समाज को अचमत उपकार तथा लाभ िोता िै। धमश की पुकार का सारे देर् में रसार िो।"

स्वामी जी बमकोई के ग्रामीण क्षेत्र में गये। विााँ उन्ोंने भोले-भाले श्रद्धालु ग्रामीण जनो िंको अतीव सरल तथा स्पष्ट बोली िंमें सम्बोचधत चकया। उन्ोंने कामना व्यक्त की चक गुरुदेव का रत्येक चर्ष्य चनत्य-चनरन्तर पुजारी बना रिे। उन्ोंने जप का गूढ़ अथश समझाया तथा चजज्ञासुओ िंको सभी समय तथा सभी अवसरो िंपर चदव्य नाम का जप करते रिने को किा।

जब स्वामी जी राउरकेला में अगले चदव्य जीवन सम्मेलन की अध्यक्षता करने गये, तो उन्ोंने मानव के इस परम कतशव्य पर बल चदया चक वि अपने अन्दर की चदव्यता को पिचाने तथा अपने दैनस्न्दन जीवन में अपने में अन्तचनशित चदव्य गुणो िंको व्यक्त करे। आचरण र्ुद्ध रखें, सत्यवादी रिें, चनरन्तर रभु का स्मरण करें तथा अपनी सभी रवृचत्तयो िंको आध्यास्िक रूप दें-यि उस नगर-क्षेत्र के व्यस्त लोगो िंके समाह्वान के उच्च तथा स्पष्ट स्वर थे, िाचदशक अनुरोध था।

अब चिदानन्द की वाणी पचश्चमी उडीसा के िीरा-केन्द्र से रचतध्वचनत िोने लगी। स्वामी जी सत्ताईसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन की अध्यक्षता करने के चलए मलेचर्या से वायुयान िारा कोलकाता िोते हुए सम्बलपुर पहुाँचे। सम्मेलन-काल के चारो िंचदन लोगो िंकी भीड उमड पडी। उनके मुखमण्डल से चवचकरण िोने वाली चुम्बकीय आभा का दर्शन करने, रेरणादाचयनी ज्ञान-चगरा को श्रवण करने तथा उनके साथ भावोत्तेजक कीतशनो िंका गायन कर भावचवभोर बनने के चलए सिस्रो िंकी सिंख्या में उत्सुक जनता से सभा-थथल ठसाठस भर गया। स्वामी जी ने चजज्ञासुओ िंको व्याविाररक चर्क्षा देते हुए रत्येक छोटे कायश को आदर्श रूप में चनष्पन्न करके स्व-कतशव्य-सम्पादन के मिान् सद्गुण पर बल चदया। बूिंद-बूिंद जल से िी मिासागर बनता िै; स्वधमश तथा साधना का दैचनक अभ्यास जीवन को परमानन्द के सागर से आपूररत कर देता िै-इन्ी िंसारगचभशत चवषयो िंका सन्देर् उन्ोंने सम्मेलन को चदया।

स्वामी जी आगामी अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन के चलए भुवनेश्वर पधारे। उन्ोंने साधको िंको अनुराचणत करने वाला अपना सन्देर् देते हुए किा : "िााँ, मेरे चरय चमत्रो! मैं आपसे यि स्पष्टतया कि देना चािता हाँ चक धमश की तुला मनुष्य के कमश को न केवल उसके राथशना-पाठ तथा मिोच्चार की मात्रा से और न केवल दीपो िंके जलाने, आरचतयो िंके उतारने, घस्ण्टयो िंके बजाने तथा ग्रन्थो िंके स्वाध्याय करने की मात्रा से तोलती िै अचपतु वि अपने हृदय में आश्रय दी

हुई भावनाओ िके स्वरूप से, अपने पडोचसयो िके साथ वाताश करते तथा उन्ें सम्बोचधत करते समय रयुक्त उसके बी्सि तथा चनयचत ने चजन लोगो िके साथ उसे अपना जीवन यापन करने का
चवधान कर चदया ि ै उन सबके साथ उसके व्यविार के रत्ेयेक सामान्य कमश से भी तोलती ि ै।"
भगवान् के इस दयारी्ल सन्ेदेविक ने अपने इन बी् िमें उस उदे्देश्य का उद्घाटन चकया
चजसके चलए भगवान् ने िमें इस लोक में भेजा ि ै।

स्वामी जी ने इन सभी मिंि िसे सनातन धमश के व्याविाररक अचभराय की चवचर्ष्टताओ िको उजागर करने का चनश्चय कर रखा था। वि जनता को उन्नत करने तथा चजज्ञासुओ िका पथ-रदर्शन करने के चलए सभी रकार की कचठनाइयाँ झेलने को तैयार थे। उन्ोनें भिंजनगर, भिक, राउरकेला तथा अन्य थथानो िके चवचभन्न साधना-चर्चवरो िमें एक व्याविाररक मागशदर्शक के रूप में उडीसा के चजज्ञासुओ िकी कृपापूवशक सेवा की। उन्ोनें अपनी उपस्थथचत में खुदाश रोड, जयपटना तथा बलिांचगर के क्ेषेत्रीय सम्ेमेलनो िको रोत्साचित चकया। रत्ेयेक थथान में उनका रभाव अचवस्मरणीय तथा रबल रिा ि ै। उडीसा के तत्कालीन राज्यपाल मिमचिम बी. डी. र्माश इन सम्ेमेलनो िसे इतना अचधक रेररत तथा पुण्यीकृत हुए चक उन्ोनें स्वामी जी से उडीसा के सचिवालय में आने तथा राज्य के लौचकक सिंव्यविार का उत्तरदाचयत्व रखने वाले रर्ासकीय चवभाग के कमशिारी-वगश को रेररत करने के चलए अनुरोध चकया। स्वामी जी ने कुछ वषश पश्चात् सुनाबेडा-सम्ेमेलन से लौटते समय इस अनुरोध को पूरा चकया।

जब परम पावन स्वामी जी ने अपने पाचथशव जीवन के साठ वषश पूरे कर चलए तथा उनके रेमी भक्तो िने इस अवसर पर एक उपयुक्त समारिो आयोचजत करने की अनुमचत की माँग की तो उन्ोनें उनको गुरुदेव की तपोभूचम से भारतवषश की जनता को जाग्रत, चर्चक्षत तथा उत्ेप्रेररत करने के चलए एक साधना-सप्ति तथा आध्यास्िक सम्ेमेलन का आयोजन करने के चलए परामर्श चदया। रोन्नत कोचट के आध्यास्िक व्यस्क्तयो िने अपनी उपस्थथचत से इस अवसर की र्ोभा बढ़ायी तथा चजज्ञासुओ,ि मुमुकुषुओ ितथा भक्तो िको अपने बोधरद उपदेर् चदये। श्री श्री माँ आनन्दमयी के आगमन से जयन्ती अपने िरमोत्कषश को पहुँ गियी। परम पावन स्वामी जी के साथ में उनके दर्शन ने विाँ पर उपस्थथत सभी लोगो िपर अपनी अचमट छाप छोडी।

स्वामी जी ने सामान्य रूप से मानव जाचत को तथा चवर्ेष रूप से भाग्यर्ाली भारतीयो िको जाग्रत करने के चलए अपना जीवन समचपशत कर रखा ि ै। उन्ोनें भारतभर में अनेक सम्ेमेलनो िारा लोगो िको जीवन के वास्तचवक उदे्देश्य के रचत, चदव्य पूणशता तथा जीव के वास्तचवक तथा र्ाश्वत आन्तर सत्ता में रच्छन्न आस्िक सौन्दयश के रकटीकरण के रचत नवीकृत बोध जाग्रत करने की सेवा की ि ै। उन्ोनें बद्ध जीवो ितक ब्रह्माण्डीय रकार् का रिुयश लाने के चलए उनके िारो िको जोरो िसे खटखटाया ि ै। उन्ोनें आन्तररक उद्घाटन तथा उसकी सचक्रय अचभव्यस्क्त-इन दोनो िके चलए कठोर श्रम चकया ि ै, क्ोचिंक ये दोनो िी मनुष्यो िने इस्न्द्रयो िकी तुचष्ट के अन्धानुसरण से अपने को चजस अस्तव्यस्तता तथा ससम्भ्रम की स्थथचत में डाल रखा ि ै, उसका उपयुक्त रचतकार रदान करते ि ैं। वि जब कभी भी उन आध्यास्िक सम्ेमेलनो िमें से चकसी में उपस्थथत निी िो सके तो उन्ोनें अपने सुदूर के चर्चवरो िसे ऐसी सभाओ िकी सफलता में गिरी रुचि ले कर साधको िको जिूक रूप से रोत्सािन तथा पथ-रदर्शन रदान चकया। उदिारणाथश, बौध के आयोजक, जब उनकी अनुपस्थथचत के कारण चनरुत्साचित िो रिे थे, उन्ोनें सुदूर िजोिबगश से उन्ें उत्कण्ठापूवशक पत्र चलखा तथा अपने उत्ृकृष्टतम आर्ीवाशद से चवश्वास चदलाया चक भगवान् जगन्नाथ सम्ेमेलन की अध्यक्षता करेंगे तथा
उसे मिान् सफल बनायेंगे। ऐसे सम्ेमेलन उस जडता को दूर करने के चलए आज की मिान् आवश्यकता ि ै चजसने मानव की ितना को आच्छाचदत कर रखा ि ै। स्वामी जी ने इनके माध्यम से लोगो िको धमश-पथ पर ले जाने के चलए एक चवश्वव्यापी कायशक्रम आरम्भ चकया ि ै। अत: यचद मिारे समसामचयक सन्त उन्ें एक उद्धारक मानने को रेररत हुए तो इसमें कोई आश्चयश की बात निी ि ै।

दशम अध्याय

असाधारण चदव्य व्यस्क्तत्व

"परोपकाराय सतां   डविू तये:

-सज्जनो िंकी सम्पचत्त परोपकार के चलए िी िोती िै।"

चर्वानन्द जी ने मानव-जाचत को चजस मित्तम चनचध का उत्तरदान चकया िै वि िै चिदानन्द जो उनके िी रचतरूप में ढले एक असाधारण आध्यास्कि व्यस्क्त िैं, उनकी िी रचतकृचत िैं। गुरुदेव अपने इस कथन में सुचनचश्चत थे चक चिदानन्द अपने पूवश-जन्म में एक उच्चकोचट के सन्त थे और उनका जन्म अपने इस अस्न्तम जन्म में एक मिान् कायश पूणश करने के चलए हुआ िै। गुरुदेव उनकी सवोपरर रर्िंसा करते थे। उन्ोिंने अपने चर्ष्ों िंको यिााँ तक किा - "आप सबको स्वामी चिदानन्द के साथ अपने गुरु के रूप में व्यविार करना िाचिए। मैं भी अपने गुरु के रूप में उनका सम्मान करता हाँ। मैंने उनसे असिंख्य चर्क्षाएँ ग्रिण की िैं। मैं उनसे रेम करता हाँ। मैं उन पर श्रद्धा रखता हाँ।" भचवष्यवक्ता के इन र्ब्ों िंको अचिस्न्तत, अचत-उदार रर्िंसोस्क्त निीिंसमझा जा सकता। जैसे-जैसे समय व्यतीत िोता गया, स्वामी जी जो कुछ भी किते अथवा करते रिे िैं उन सबके िारा उन्ोिंने अपने वास्तव में अचितीय िोने का औचित्य अचधकाचधक चसद्ध चकया िै। वि सवशथा चवमल चदव्य जीवन के उत्कृष्ट उदािरण िैं। चजस रकार गुरुदेव उनसे अत्यन्त रभाचवत थे उसी भााँचत अन्य सन्त भी स्वामी जी की उच्च आध्यास्कि स्थथचत से रभाचवत हुए िैं।

किा जाता िै चक चनत्य चसद्ध आिाएँ मानव जाचत का पथ-रदर्शन करने के चलए समय-समय पर भूलोक में अवतररत िोती रिती िैं। भगवान् की कायश-चवचध अबोधगम्य िै; इसी भााँचत ईर्-मानवो िंकी भी कायश-चवचध अबोधगम्य हुआ करती िै। अपने कुचि िुचि से आबद्ध िम कचठनाई से समझ सकते िैं चक वे क्ा थे और वे क्ा िैं। पाश्चात्य देर्ो िंमें अनेक लोग स्वामी चिदानन्द पर भारत के सन्त फ्ास्सि के रूप में श्रद्धा करते िैं। असीसी के सन्त फ्ास्सि की सरल राथशना, जो स्वामी जी का चरय सुतुचत-गीत िै, चनश्चय िी वि आदर्श िै चजस पर उनके जीवन का चनमाशण हुआ िै। अन्य कुछ लोग उनके भावरवण सिंकीतशनो िंतथा सावशभौम रेम के कारण उन्ें श्री िैतन्य के अवतार के रूप में पूज्य मानते िैं। स्वामी जी का हृदय बुद्ध के हृदय की भााँचत कोमल तथा रफुल्ल िै। वि पीचडत राचणयो िंको देखते िी िचवत िो जाता िै तथा गम्भीर सिानुभूचत और व्यग्रता से उनके पास जाता िै। इनकी चिन्ता का चवस्तार वनस्पचत-जगत् तक िै। मिाचर्वराचत्र के चदन आश्रम के भक्तजन भगवान् चर्व की पूजा के चलए जब चबल्वपत्र एकत्र करने जाते िैं तो उन्ें यि परामर्श देते िैं चक वे वृक्ष की ओर कुल्हाडी उठाये हुए न जायें; क्ोिंचक इससे वृक्ष भयभीत िो

जायेगा। वे वृक्ष के पास स्ेनि तथा चवनम्रतापूवशक जायें और उससे पचत्तयो ंिके चलए यािना करें। पत्ेते तोडने का कायश कोमलता, रेम तथा भस्क्तभाव से करें।

स्वामी जी की आन्तररक स्थथचत वणशनातीत िै। स्वामी वेंकटेर्ानन्द के बी् िमें, "उनका वणशन करने का रयास न करें। आप असफल रिंगे। मौन भगवान् का नाम िै।"
एक बार राउरकेला में सभामिंपिर जब उनका पररिय 'एक असाधारण चदव्य व्यस्क्त' के रूप में चदया गया तो उन्ोनिें अपने भाषण के रारस्म्भक भाग में किा चक यचद श्रोताओ ंिमें से रत्येक व्यस्क्त यि स्वीकार करे चक वि भी एक चदव्य व्यस्क्त िै तो 5/4 * 3/4 सम्मान को स्वीकार करता हाँ। यि चनश्चय िी उनके जन्म के उद्देश्य को व्यिंचजत करता िै। ऐसा रतीत िोता िै चक भगवान् ने चिदानन्द को िमें यि चनश्चय कराने के चलए भेजा िै चक जैसा सत्त्व उनमें िै, वैसा सत्त्व-सम्पन्न व्यस्क्त मत्यश मानव मात्र निी िंसमझा जा सकता िै।

चिदानन्द गुरु-भस्क्त के सवशश्रेष्ठ उदािरण िैं। गुरुदेव के समस्त उच्चतर गुणो िंसे सम्पन्न िोने पर भी इस मिान् आिा ने केवल एक समचपशत चर्ष्य की भूचमका अदा करना िी पसन्द चकया िै। वे अपनी सभी मिती नैचतक तथा आध्यास्किक उपलस्ब्धयो िंका श्रेय चवनम्रतापूवशक गुरु-कृपा को िी देते िैं। वे जो कुछ करते िैं, वे जो-कुछ भी किते िैं वि सब वे सदा िी गुरुदेव चर्वानन्द के नाम से िी करते िैं। यि िंिभाव के पूणश उन्मूलन तथा गुरु के रचत अर्ेष आिसमपशण का उत्कृष्ट चनदर्शन िै। उन्ोनिें गुरुदेव के जीवन-काल में अपने एक रेरणादायी रविन में बल चदया: "गुरु भगवान् के समान निी िंिै, गुरु भगवान् िी िैं।" एक अन्य रविन में उन्ोनिें श्रद्धामयी कृतज्ञता के साथ अपना उद्गार रकट चकया: "पूवश-जीवनो िंके अनन्त पुण्यो िंने िमें इस पचवत्र थथान में बैठने तथा उस अपररचमत आध्यास्किता की, अपररचमत चदव्यता की जीवन्त ज्वाला से चनःसृत अचग्न का दर्शन करने का यि उत्कृष्ट सुअवसर रदान चकया िै चजसे गुरुदेव ने अपने में मूतशरूप चदया िै।" यद्यचप स्वामी जी स्वयिं एक अत्युच्च कोचट के रबुद्ध योगी तथा आधुचनक जगत् की आवश्यकताओ िंका समाधान रस्तुत करने को उत्कृष्ट रूप में उपयुक्त िैं; चकन्तु वि कभी भी अपने ऊपर सन्त की कोई भी पदवी रक्षेचपत करना निी िंिािते िैं तथा अपने रत्येक कमश को गुरुदेव के पचवत्र िरणो िंमें समचपशत कर पचवत्र बनाते िैं। वि कभी भी ऐसा अनुभव निी िंकरते चक वि गुरुदेव की गद्दी के उत्तराचधकारी बन िुके िैं। वि सदा िी अपने को गुरुदेव के सेवक के रूप में िी चनचदशष्ट करते िैं। गुरुदेव के उत्तराचधकारी की िैचसयत से, सिंथथा के अध्यक्ष के रूप में चदव्य जीवन सिंघ की र्ाखाओ िंकी सम्बद्धता के रमाण-पत्रो िंपर औपिाररक रूप से िस्ताक्षर करते समय भी वि ऐसा िी करते िैं। वि कई बार चवश्व की यात्राएँ कर िुके िैं, सनातन धमश का सन्देर् ले कर भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक पररभ्रमण कर िुके िैं। उन्ोनिें इतनी रस्स्तयाँ तथा बधाइयाँ राप्त की िैं चजतनी चक अन्य इने-चगने व्यस्क्तयो िंने िी राप्त की िोगंी। अगण्य चजज्ञासुओ िंने अपने जीवन के एकमात्र आनन्द के रूप में इनकी कल्याणकारी कृपा का आश्रय चलया िै। इन सबको वि गुरुदेव के िरण-कमलो िंमें सिज भाव से अचपशत करते िैं। इनका कथन िै चक 'भक्त चजस भगवान् की उपासना करता िै वि कम-से-कम कुछ अंर्ो िंमें उसकी कल्पना पर आधाररत िोता िै, चकन्तु उसका गुरु तो र्रीर (की दृचष्ट) से उपस्थथत िै। चर्ष्य अपने सद्गुरु की पूजा करता िै और इस भाँचत वि अन्ततः गुरु-भस्क्त को यथाथशतः भगवद्भस्क्त में रूपान्तररत करने में सफल िोता िै।'

स्वामी जी ने चकसी आिायश के िरणो िंके पास बैठ कर उपचनषदो िंका आद्योपान्त अध्ययन कभी भी निी िंचकया। उन्ोनिें गुरुदेव से भी उनका अध्ययन निी िंचकया। तथाचप गुरुदेव ने उनके सम्बन्ध में किा : "यद्यचप स्वामी चिदानन्द ने उपचनषदो िंका परर्ीलन निी िंचकया िै और न वि उनका परर्ीलन करना िािते िी िैं, पर यचद आप उनके रविनो िंको ध्यानपूवशक समझेंगे तो आपको ज्ञात िोगा चक उनमें समस्त औपचनषचदक ज्ञान स्पष्ट चकया गया िै। वि उपचनषदो िंको अपने हृदय से रकट करते िैं। वि ब्रह्मसूत्र तथा गीता के मूतशरूप िैं।" स्वामी जी ने १९६४ के साधना-सप्तािा में 'मेरा ब्रह्मसूत्र' पर रविन चकया। अपने इस बोधरद रविन में उन्ोनिें इस बात पर बल चदया चक चर्ष्य के चलए गुरु-वाक् िी ब्रह्मसूत्र िै। ऐसा कि कर उन्ोनिें गुरुदेव-रचित

एक पुस्तक चनकाली और उसमें से एक पररचे्छेद पढ़ कर सुनाया चजसमें वेदान्त का सार समाचवष्ट था।

इस भााँचत स्वामी जी अपने अनुकरणीय जीवन िारा यि चर्क्षा देते िैं चक एक साधक को गुरुभस्क्त-रूप कवि के िारा सदैव सुरचक्षत रिना िाचिए। उनके उनतालीसवें जन्म-चदवस पर चर्वानन्दाश्रम के सभी वररष्ठ साधको िंने जब इन पर अपनी रर्ंसाओ िंकी वृचष्ट की तो स्वामी जी ने किा, "आप सभी मूचतश की रर्ंसा कर रिे िैं। इसका श्रेय तो मूचतशकार को िै। मूचतश में मूचतशकार की िी बौस्द्धक क्षमता तथा रचतभा दृचष्टगोिर िोती िै। आप मूचतशकार के चवषय में सब-कुछ चवस्मरण कर मूचतश के चवषय में सभी रकार की बातें कर रिे िैं। मूचतशकार स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज में चवद्यमान िैं। स्वामी चिदानन्द के चदव्य अचभयन्ता स्वामी चर्वानन्द िैं। सभी गुणगान उन रिण-कमलो िंको िी उचित िै।" स्वामी जी ने इससे यि दर्ाशया चक व्यस्क्त को चकस रकार नाम तथा यर् सचित अपने सभी कमों के फल को अपने गुरुदेव के िरणो िंमें समचपशत कर देना िाचिए। वि साधना के इस अत्यावश्यक चवषय के रचत िमारा ध्यान और आगे आकचषशत करते िैं चक साधक को इस नामरूपात्मक जगत् में सृचष्ट के सौन्दयश का अवलोकन करते समय सृचष्टकताश को सदा स्मरण रखना िाचिए।

उनके एक अन्य मंगलमय जन्म-चदवस के अवसर पर समारोि में भाग लेने के चलए कैलास-आश्रम के िररिर तीथश जी मिाराज चर्वानन्दाश्रम पधारे। उन्ोनंे अपने रविन में स्वामी जी की सेवाओ,ं आध्यास्िक उपलस्ब्धयो,ं उदारता तथा गुरु-भस्क्त की रर्ंसा की। अपने उत्तर में स्वामी जी ने तीथश जी मिाराज के रचत उनके स्नेिमय बो् िंके चलए कृतज्ञता के गम्भीर भाव व्यक्त करने के साथ िी किा, "मुझ पर की गयी रर्ंसा की वृचष्ट तो गुरुदेव पर िी की जानी िाचिए। मैं तो उनका चनचमत्त मात्र हाँ। यचद पररपक्व फल मधुर िै तो इसका कारण उसका बीज िै। आज मैं जैसा तथा जो कुछ भी हाँ, वैसा मुझे गुरुदेव की कृपा ने िी चनचमशत चकया िै।"

उडीसा के भिक नगर के एक साधना-चर्चवर में एक सचे्च चजज्ञासु ने यि जानने की अचभरुचि रदचर्शत की चक क्या स्वामी जी अब भी चकसी भावातीत लोक में गुरुदेव के दर्शन करते िैं। स्वामी जी ने उत्तर चदया चक उनके चवषय में श्री गुरुदेव के दर्शनो िंका रश्न िी निी िंउठता। उन्ें रचतक्षण यि अनुभव तथा रत्यक्ष बोध िोता िै चक गुरुदेव उनके भीतर िैं, उनके बािर िैं तथा आकार् के अणु-अणु में व्याप्त िैं।

स्वामी जी के पाश्चात्य जगत् के एक चर्ष्य डान चब्रडेल ने उनसे अपना पररिय देने को किा। इस पर स्वामी जी ने अपने कक्ष के अस्न्तम छोर में वेदी पर रचतष्ठाचपत स्वामी चर्वानन्द के एक चित्र की ओर इंचगत कर चदया। तत्पश्चात् उन्ोनंे स्पष्ट चकया चक जब गुरुदेव से यिी रश्न चकया जाता था तो वि रश्नकताश को चदव्य आिा अथाशत् अन्तरथथ भगवान् की ओर चनचदशष्ट चकया करते थे। डान चब्रडेल ठीक िी किते िैं: "यि स्पष्ट िै चक चर्वानन्द अपनी चदव्य सत्ता में चनरवर्ेषीकृत िो िुके थे और स्वामी चिदानन्द चर्वानन्द नामक उस चदव्य सत्ता को इतना पूणश रूप से आिसमचपशत िैं चक उनका चर्वानन्द के परम तत्त्व के साथ पूणश तादात्म्य िो िुका िै।"

स्वामी जी अपने को रू्न्य तक िस्वीकृत कर अपने को तुच्छ समझने को सदा िी रयत्नर्ील रिते तथा अपने गुरुदेव के गुणगान के चलए सतत दृढ़संकल्प िैं। चकनु्त उनकी-जैसी रभा चकसी भी उपाय से गुप्त निी िंरखी जा सकती थी। 'चकम्बली' के इस अमूल्य रत्न, चजसे चर्वानन्द ने अपने चमर्न के कोिनूर के रूप में खोज चनकाला था, की चनयचत में चवश्व के मित्तम तथाश्रेष्ठतम लोगो िंसे श्लाघा तथा सम्मान राप्त करना था।

"मैं प्रच्छन्न हीरा था;
प्रखर रस्ियो ांने मुझे उद्घाडटत कर डदया।"

जब व्यस्क्त स्वामी चिदानन्द के चवषय में चिन्तन करता िै तो कुरानरीफ के उपयुशक्त सारगचभशत र्ब्द उसे सिज िी स्मरण िो उठते िैं।

भले िी एक व्यस्क्त इस भागवत पुरुष का चवचवध दृचष्टकोणो िंसे अवलोकन करे, उसे इनके कायों में कुछ िमत्काररक वसुतु अवश्य िी चदखायी पडेगी। वेदान्त-ज्ञान के उन्नत चर्खर से सिंसार के गचतमान पररदृश्य को देखते हुए र्ान्त तथा अनुचिग्न रिते हुए भी चकसी चजज्ञासु आिा से चमलने पर वि एक सिंवेदनर्ील, स्नेिी माता-चपता का कतशव्य अपना लेते िैं। वि अपने चलए कठोरतम रूप के उपवास, तपश्चयाश, आत्याग तथा सिंयम चनधाशररत करते िैं तथा दूसरो िंको वि स्नेचिल अनुरोध, भ्रातृवत् अनुराग तथा मातृसुलभ देखभाल रदान करते िैं। उनका अचवरत तथा सुसिंगत लोकोपकारवाद अगण्य अवसरो िंपर रभावर्ाली ढिंग से अचभव्यक्त हुआ िै।

एक बार स्वामी जी सन् १९७१ में मिाचर्वराचत्र के चदन सम्बलपुर गये। यि चदन अनेक कायशक्रमो िंसे सिंकुल था। यद्यचप उस चदन वि उपवास-व्रत रखे हुए थे, चकनुतु उन्िें एक क्षणभर के चलए चवराम राप्त निीं िो सका। आगामी चदन रातःकाल उन्िें राउरकेला जाना था। उन्िोंने एक भक्त के अनुरोध पर सम्बलपुर के चनकट चवश्वचवख्यात िीराकुण्ड बाँध का िक्कर लगा कर जाने की बात स्वीकार कर ली। मागश में एक व्यस्क्त कार को रोकने के चलए अपना िाथ चिला रिा था। कार-िालक उत्तर देने की मनःस्थथत में न था। स्वामी जी उस समय कुछ कागज पढ़ रिे थे। उनकी सरसरी दृचष्ट उस व्यस्क्त पर पडी। उन्िोंने अनुभव चकया चक कुछ गडबड िै और िालक को गाडी रोकने को किा। वि गाडी से बािर आ गये। बात यि थी चक विााँ एक व्यस्क्त घायल िो कर पडा था और यिी कारण था चक वि व्यस्क्त गाडी रोकने का रयास कर रिा था। स्वामी जी तुरन्त उस व्यस्क्त के पास दौड कर गये, वस्त्र का एक टुकडा फाड कर घाव पर बााँध चदया और उसे गाडी में लाये। उन्िोंने िालक को चनकटतम चिचकत्सालय को िलने के चलए आदेर् चदया और आित व्यस्क्त के पास बैठ गये और इस बात को सुचनचश्चत चकया चक उसे यथासम्भव आराम चमल सके। उन्िोंने उस व्यस्क्त को बरला के चिचकत्सालय मिाचवद्यालय के चिचकत्सालय में रचवष्ट कराया और विााँ से तभी रथथान चकया जब पररियाश करने वाले चिचकत्सक ने यि विन चदया चक जब तक आवश्यक िोगा वि उस आित व्यस्क्त के पास िी रिेगा। बाद में स्वामी जी ने कार के अपने सि-याचत्रयो िंकी घायल को देखने के तुरन्त बाद िी कार न रुकवाने के चलए र्ास्न्तपूवशक भत्सशना की। "जरा अनुमान तो करो चक यचद िम ऐसी दुघशटना के चर्कार हुए िोते तो िम कैसा अनुभव करते! िम घायल चमत्र की उपेक्षा कर अपने कायश के चलए कैसे आगे जा सकते थे?" ऐसे बहुसिंख्यक उदािरण िैं।

स्वामी कृष्णानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'लाइट फ्ाम द ईस्ट' में इसी रकार की एक घटना का उल्लेख चकया िै। वि चलखते िैं:

> "एक बार स्वामी जी आश्रम के अपने दो सियोचगयो िंके साथ टैक्सी में यात्रा कर रिे थे। मागश में उन्िें सडक पर एक व्यस्क्त पडा हुआ चमला चजसका सारा र्रीर क्षत-चवक्षत िो रिा था। टैक्सी िालक ने इस पर कोई ध्यान निीं िंचदया और अपनी सामान्य गचत से गाडी िलाता रिा, चकनुतु स्वामी जी ने र्ीघ्र िी उस दृश्य को देख चलया तथा िालक को गाडी रोकने को किा। वे सब गाडी से उतर पडे। पूछने पर पता िला चक वि व्यस्क्त चकसी दुघशटना से घायल िो कर असिाय अवथथा में सडक पर पडा हुआ िै। श्री स्वामी जी तुरन्त िी रोगी को उठा कर गाडी में रखने को तैयार थे चजससे चक उसे चनकटतम चिचकत्सालय में पहुिंिाया जा सके, चकनुतु िालक ऐसा निीं िंकरने देता था; क्ोिंचक उसे आर्िंका थी चक पुचलस इस चविार से चक उसकी गाडी से िी दुघशटना हुई िोगी, उसे अपराधी समझेगी और उसके चलए उसे उत्तरदायी ठिरायेगी। िालक उग्र था तथा अपनी गाडी में रोगी को ले जाने के चकसी भी रस्ताव से सिमत निीं िंिो रिा था। स्वामी जी के चलए क्ा चवकल्प था? उन्िोंने िालक को देय भाडा िुकता कर उसे िले जाने को किा और स्वयिं अपने दोनो िंसाचथयो िंके साथ उस रोगी को उठा कर चनकटतम चिचकत्सालय में, जो वि चकतनी िी दूरी पर िो, ले जाने की तैयारी करने लगे। इस घटना की चटप्पणी करने की

आवश्यकता नी।िं िालक का हृदय िचवत िो गया और वि टैक्सी में रोगी को ले जाने के चलए सिमत िो गया।"

व्यस्क्त अपनी चनष्कपट चनथस्वाथश सेवा से उद्दण्ड व्यस्क्तयो िंका हृदय सदा िी पररवचतशत कर सकता िै। गुरुदेव ने अपनी पुस्स्तका 'कमशयोग-सम्बन्धी सिंकेत' में चलखा िै चक 'चकस रकार ऐसे सभी व्यविार हृदय को पचवत्र तथा चवराल बनाते, सिंकल्पस्स्क्त को सुदृढ़ करते तथा आिज्ञान की रास्प्त के चलए मन को तैयार करते िैं।' स्वामी जी के चलए तो ऐसे कायश उनकी बाल्यावथथा से िी उनकी रकृचत के अिंग बन िुके िैं। तथाचप इस अवथथा में भी, जब वि आप्तकाम िैं और व्यस्क्तगत साधना के रूप में उन्िें कुछ भी करने को रेष नी िंरिा िै, वि इन व्यविारो िंको केवल इसचलए बनाये नी िंरखते चक यि 'लोकचर्क्षा' िै तथा उनके चर्ष्य तथा रेमी उसी मागश का अनुसरण करेंगे, वरन् इसचलए चक उत्कृष्ट कोचट की परोपकाररता का कोई परवती- सामाचजक अथवा धाचमशक-उद्देश्य नी िंहुआ करता िै।

इने-चगने सन्त िी स्वामी जी के समान मानव जाचत की इतने चवचवध रूपो िंमें सेवा करते िीिैं। स्वामी जी ने मद्यपान जैसी बुराइयो िंके उन्मूलन के चलए एक उत्सािी समाज-सुधारक की भााँचत मूल स्तर पर कायश चकया िै। उन्िें ितभाग्य मद्यपो िंपर दया आती िै। वि उनके चलए राथशना करते तथा उन्िें मचदरा-त्याग के चलए सिमत करने का रयास करते समय उन्िें अपमान करने का भी अवसर देते िैं। अपनी चवश्व-यात्रा के समय एक बार जब वि ऐम्स्टडशम में थे, एक अपराह्न में उन्िोंने अपने साचथयो िंसे उन्िें अकेला छोड देने के चलए किा और िुपके से एक क्लब को िले गये चजसके चवषय में उन्िें बताया गया था चक वि नगर के स्वापी व्यसचनयो िंका सबसे बुरा अिा ि। वि उसमें िुपके से घुस गये और उन सबको ध्यानपूवशक देखा। उनके रचत करुणा तथा सिानुभूचत से अचभभूत िो वि तुरन्त िी उच्च स्वर से राथशना करने लगे। उन्िोंने अपनी बुरी आदतो िं को त्याग देने के चलए उनसे करबद्ध राथशना की। उनमें से कुछ लोगो िंने उनके समीप जा कर उनका उपिास चकया तथा बहुत िी अचर्ष्ट ब्दो िंका रयोग कर उनसे चनष्ठुरता से बातें की।िं उनमें से एक ने अपना चर्रोवस्त्र उतार कर स्वामी जी के चर्र पर पिना चदया। स्वामी जी रर्ान्त तथा चनभीक रि कर उनके चलए राथशना में रवृत्त रिे तथा मादक िव्य त्याग देने के चलए उनसे आग्रि करते रिे। रथम कुछ क्षणो िंके पश्चात्, उद्धत लोगो िंकी कुछ कुचेष्टाओ िंके अनन्तर स्वामी जी िारा चन:स्राचवत चनष्कपता तथा भावरवण रेम का आकिंचछत रभाव पडा। वि सिंकिो से र्ान्त िो गये। स्वामी जी ने उनसे कुछ बातें की।िं पुनः उनके चलए राथशना की, उनकी मिंगल-कामना की और विााँ से चवदा िो गये। अगले चदन उन व्यसचनयो िंमें से एक व्यस्क्त अत्यचधक अनुतप्त तथा रुद्ध भाव से स्वामी जी के पास आया तथा उनके सत्सिंग में भाग चलया। वि स्वामी जी से इतना अचधक रभाचवत हुआ चक उसने उस चदन से सभी मादक पदाथों का सेवन त्याग चदया। उसने अन्य लोगो िंको बताया चक उन लोगो िंने स्वामी जी के साथ कैसा रूखा व्यविार चकया था और स्वामी जी ने चकस रकार उन सबको सिन चकया तथा उनके कल्याण के चलए वि ईसा की भााँचत राथशना करते रिे।

स्वामी जी इस मचदरापान के मिान् अचभर्ाप का िमारे देर् से पूणशतया उन्मूलन हुआ देखने को उत्सुक िैं। एक बार उन्िोंने श्री सुन्दरलाल बहुगुणा की चटिरी की र्राब की दुकानो िंपर धरना देने की योजना में उनकी सिायता करने को अपनी सेवाएाँ अचपशत की।िं वि १ नवम्बर १९७१ को चटिरी से तीन चकलोमीटर दूर दुबाटा पहुाँिे और तत्पश्चात् सारे मागश में कीतशन करते हुए चटिरी तक पााँव-पााँव गये। अब स्वामी जी ने मद्यचनषेध के आन्दोलन को आध्यास्त्मक रूप दे डाला। र्ोभायात्रा के अन्त में, स्वामी जी ने अपने रवचन में किा चक पूणश मद्यचनषेध के चलए चलया हुआ कदम वस्तुतः सवशर्स्क्तमान् रभु की पूजा िी िै। उनके आर्ीवाशद से सिस्रो िंसत्याग्रचियो िंने र्राब की दुकानो िंके दरवाजो िंपर धरना देना आरम्भ कर चदया और उनमें से अनेको िंको कारागार भेज चदया गया। अन्त में उत्तर रदेर् की सरकार उस क्षेत्र में मद्यचनषेध रवचतशत करने को बाध्य िो गयी। स्वामी जी किते िैं चक दूचषत वासनाओ िंवाले व्यस्क्तयो िंके चलए मोक्ष एक दूरथथ स्वप्न िै।

उनके चलए तात्काचलक मोक्ष तो यिी ि ै चक उनें् से्तेय, मचदरापान, चमथ्यिाार तथा चमथ्यावाचदता से दूर रखा जाय।

स्वामी जी की गुरुजनो ि ंके रचत मयाशदा, मचिलाओ ि ंके रचत चष्टािार तथा बालको ि ंके रचत रेम सदा ि ी हृदयस्पर्ी ि ोते ि ैं। व्यस्क्त इनके साचन्नध्य में कुछ चदनो ि ंरि कर इस चवषय में अनेक चर्क्षारद कायश देख सकता ि ै। अपने चलए चवर्ेष मित्त्वपूणश अवसरो ि ंपर भी वि दूसरो ि ंका चवर्ेष चलिाज करते ि ैं। एक बार गुरुदेव का अचभनन्दन करने के चलए भारत के सवोच्च न्यायालय के न्यायाधीर् पतिंजचल र्ास्त्री की अध्यक्षता में चदल्ली नगर-भवन में एक सभा हुई। गुरुदेव भी इस समारोि में उपस्थथत थे। स्वामी जी उस समय मिासचिव थे। वि जब विााँ पहुाँिे तो उन्ोंने देखा चक सारा भवन खिाखि भरा हुआ ि ै और अनेक मचिलाएाँ रवेर्-द्वार पर चसमट कर बैठी हुई ि ैं। वि अपनी उपस्थथचत की सूिना अथवा अन्दर रवेर् करने के रयास द्वारा चकसी को बाधा न डाल कर एक कोने में िुपिाप खडे ि ो गये। जब एक रख्यात भक्त ने, जो उनके साथ-साथ ि ल रिा था, इनसे मिंि पर आगे बढ़ने के चलए अनुरोध चकया तो उन्ोंने केवल इतना किा- "मैं मचिलाओ ि ंको बाधा पहुाँिाना निी ि ंिािता हाँ।" यि चनश्चय ि ी एक छोटी-सी बात ि ै, चकन्तु स्वामी जी जैसे व्यस्क्त के चलए कैसी सम्यक् ि ै!

एक बार स्वामी जी गुण्टूर रेलवे से्टर्न पर थे। बहुत बडी सिंख्या में भक्तो ि ंने उनें् घेर रखा था। जब गाडी ि लने को हुई तो वि उस चडबे्ब में ि ढ़ गये जिााँ उनके चलए र्ाचयका आरचक्षत थी। जब गाडी ि लने लगी तो उन्ोंने पे्लेटफामश पर एक वृद्ध मचिला को चवलाप करते देखा। वि र्ोक कर रिी थी चक वि अपना सामान बािर निी ि ंला सकी। स्वामी जी ने तुरन्त ि ी अपनी टोली के एक सदस्य को जिंजीर खीिंिने के चलए किा। गाडी रुक गयी। वृद्ध मचिला ने अपना बोररया-चबस्तर एकत्र कर चलया और पे्लेटफामश से रथथान कर गयी। उसे यि पता न ि ला चक गाडी कैसे रुकी थी। स्वामी जी चडबे्ब के द्वार पर खडे थे और जब गाडश इस चवषय में पूछ-ताछ करने के चलए पहुाँिा तो उन्ोंने गाडश को करबद्ध ि ो बुलाया और किा- "कृपया मुझे क्षमा करें। उस वृद्ध मचिला की चववर्ता देख कर मैंने ि ी जिंजीर खीिंिने का आदेर् चदया था।" उस कायश चवचर्ष्ट से किी ि ंअचधक चर्क्षारद थी उस अल्प समय में उनके व्यविार की समू्पणशता-अकृचत्रम चनष्कपटता, चर्ष्टता तथा दूसरो ि ंके रचत सिंवेदनर्ीलता। स्वामी जी के चलए यि समग्र चवश्व एक चवर्ाल पररवार ि ै जिााँ रते्येक व्यस्क्त अपने पररसर के सभी अन्य व्यस्क्तयो ि ंके चलए उत्तरदायी ि ै।

इस भााँचत एक अन्य अवसर पर जब स्वामी जी चदल्ली से्टर्न में उपस्थथत थे, विााँ बहुत बडी सिंख्या में भक्त उनके दर्शन तथा आर्ीवाशद के चलए एकचत्रत ि ो गये। उमडती हुई भीड में उनकी दृचष्ट एक वृद्ध मचिला पर पडी जो अपने चर्र पर भारी बोझ चलये तथा ि ाथ में एक सन्दूक पकडे बडी कचठनाई से ि ल रिी थी। स्वामी जी तुरन्त ि ी भक्तो ि ंको एक ओर कर उसके चनकट तेजी से गये। उन्ोंने उससे कोमल वाणी में कुछ किा, उसके ि ाथ से भारी बोझ छीन चलया तथा उसे गन्तव्य थथान तक ले जाने के चलए उसके साथ-साथ ि लने लगे। तब स्वभावतः ि ी एक भक्त आगे आया और स्वामी जी के ि ाथ से सन्दूक ले चलया और उस वृद्ध मचिला के चलए उसे ढोया। वैसे तो यि घटना भी बहुत ि ी साधारण-सी रतीत ि ोती ि ै; चकन्तु सेवा करने के ढिंग, सिज र्ालीनता, स्वाभाचवकता तथा कायश-सम्पादन की चर्ष्ट रीचत ने इस कायश को स्मरणीय बना डाला।

यि चवश्व-चमत्र ऐसा ि ी ध्यान पचक्षयो,ि ं पर्ुओ,ि ं कीडो ि ंऔर यिााँ तक चक पौधो ि ंतथा लताओ ि ंका भी रखते ि ैं। उनका किना ि ै चक आध्यास्त्मक मागश में व्यस्क्त की रगचत उसके अधोवचतशयो,ि ं अधीनथथो ि ंतथा छोटे नगण्य राचणयो ि ंके साथ उसके व्यविार से सिज ि ी मापी जा सकती ि ै। उदािरणाथश कुत्तो ि ंको मारना केवल बालको ि ंका ि ी निी,ि ं वरन् अनेक लोगो ि ंका एक चरय चवनोद-सा बन गया ि ै। स्वामी जी ने आश्रम में सबको बतला चदया था चक यचद कोई व्यस्क्त कुते्त को पीटता ि ै तो यि बात तुरन्त उनके ध्यान में लायी जाय। स्वामी जी ने चजस रकार मिीनो ि ंतक रेम तथा ध्यानपूवशक रोगी कुत्तो ि ंकी सेवा की वि आश्रम में उनके रारस्म्भक समय से ि ी एक लोकोस्क्त

बन गयी। वि उनकी सेवा तथा रक्षा करते तथा उनके चलए राथशनाएँ करते िैं। एक बार वि कोलकाता में माता साचवत्री नीलकण्ठ के अचतचथ बने। साचवत्री माता जी का सुन्दर बालो िंवाला एक मनोिर पालतू कुत्ता था। स्वामी जी के आने से कुछ मिा पूवश वि एक अचिचकत्स रोग से पीचडत था। उसके सब बाल झड गये और वि सूख कर काँटा िो गया। नगर में उपलब्ध सवोत्कृष्ट औषचध के रयोग की रोग पर कोई रचतचक्रया निीं िंहुई। साचवत्री माता जी ने स्वामी जी से कुत्ते की दयनीय अवथथा की िििाश की। स्वामी जी ने चवसूतृत चववरण सुन कर कुत्ते को अपने पास लाने के चलए किा। उन्िोंने कुत्ते को अपनी गोद में चबठाया, कोमलता से उसे थपथपाया और जब वि उनकी गोद में लेटा हुआ था, उसके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ के चलए मिामृत्युंजय मि का जप चकया। पररवार के सभी लोगो िंको आश्चयश हुआ जब वि कुत्ता चबना चकसी औषचध-रयोग के िी कुछ चदनो िं में स्वथथ िो गया।

इसी भाँचत, एक बार जब स्वामी जी आश्रम में कीतशन कर रिे थे तो एक अमरीकी दर्शनाथी अन्दर आया और एक नन्िा सुकुमार पक्षी उनके सामने रास्त्तपूवशक रख चदया। उस पक्षी के पंख तामूबूल-पत्र के सदृश्य थे। यि स्पष्ट था चक उसने बिार किीं िंसे उसे अद्धशमृतावथथा में उठाया था। कीतशन समाप्त िोने पर स्वामी जी की दृचष्ट उस पक्षी पर पडी। चवषाद तथा करुणा से आचवष्ट गम्भीर वाणी में उन्िोंने किा, "ओि! इसे कौन यिाँ लाया?" ऐसा कि कर उन्िोंने उसे अपनी िथेली पर रख चदया तथा मिामृत्युंजय जप करना आरम्भ कर चदया। पक्षी को मानो नया जीवन चमल गया और कुछ समय पश्चात् वि स्वच्छन्दता से उड गया।

बहुत बडी भीड में रिने पर भी वि इन बेचारे मूक राचणयो िंकी कचठनाइयो िंके रचत सतकश रिते िैं। एक बार जब उडीसा के बमकोई में एक आध्यास्त्मक सम्मेलन िो रिा था, श्रोताओ िंमें से चकसी व्यस्क्त ने एक कुत्ते को जो भीड में घुस आया था पीट चदया। स्वामी जी उस समय अपना अध्यक्षीय भाषण देने में तल्लीन थे। उन्िोंने अकस्मात् भाषण देना बन्द कर उस चनमशम कायश पर अपना मनस्ताप तथा कातर-भाव व्यक्त चकया। श्रोताओ िंमें गम्भीर चनस्तब्धता छा गयी। स्वामी जी की वाणी में गूँजती हुई करुणा तथा मनस्ताप ने रत्येक व्यस्क्त के हृदय को स्पर्श चकया। वि अपने चविार, वाणी तथा कमश से न केवल "अहिंसा परमो धमश:" के चवख्यात चनयम का सदासवशदा अचत-सावधानीपूवशक पालन करते िैं अचपतु उनके कमश तथा आकांक्षा सवाांगतः सकाराक रूप से करुणा से रभाररत तथा दूसरो िंकी व्यथा के उपशमन के रचत चनचदशष्ट िोते िैं।

उनका अहिंसा-धमश खटमल तथा मच्छर जैसे छोटे-छोटे क्षुब्धकारी कीडो िंतक चवस्ताररत िै चजन्िें लोग रायः रचतवती चक्रया से मार डालते िैं और कुछ भी मनस्ताप निीं िंकरते। स्वामी जी उनके दंर् को सिन करते िैं और उन्िें अपने शरीर के साथ मनमानी करने की छूट दे देते िैं। एक बार जब वि भगवन्नाम का कीतशन कर रिे थे, एक चर्ष्य ने इनके शरीर पर एक मच्छर बैठा हुआ देखा और उसे भगा देने का रयत्न चकया; चकन्तु उसके उनके चनकट आने से पूवश िी स्वामी जी ने उसे संकेत से सूचित कर चदया चक वि उस राणी को बाधा न डाले। कीतशन समाप्त िोने पर स्वामी जी ने उससे किा, "क्षुचधत राणी अपनी क्षुधा तुष्ट करने के पश्चात् अपने-आप चला जाता िै, आपको उसे भगाने की आवश्यकता निीं िैै।"

इसी रकार की घटना कोटिार में हुई। जब स्वामी जी रवचन कर रिे थे, एक चवषैला कीडा उनकी ओर उडा। उनके साथ के एक भक्त योगेश बहुगुणा जी ने तत्काल उसे भगा देने का रयास चकया। स्वामी जी उस समय एक मित्त्वपूणश चवषय पर बल देने में गम्भीरता से संलग्न थे; पर उनकी दृचष्ट से यि ओझल न रिा। उन्िोंने बहुगुणा जी को कीडे को जाने देने का संकेत चकया तथा अपना रवचन चालू रखा। कुछ समय पश्चात् उन्िोंने दयालुता से कीडे को उठा कर अपनी िथेली पर चबठा चदया मानो चक उसे पूणश सुरक्षा का आश्वासन दे रिे िो।िं यि उस ज्ञानी की अचितीय ब्राह्मी-स्थथचत िै जो व्यविार-जगत् के अपने व्यस्त कायशक्रमो िंके िोते हुए भी अहिंसा तथा सभी राचणयो िंके रचत रेम के पालन के चलए सदा जागरूक रिता िै। ऐसे उदािरण असंख्य िोंगे।

लेखक ने उनमें से कुछेक का ि◌ी उले्लेख चकया ि◌ै चजनें् उन अवसरो ि◌ंपर उपस्थथत लोगो ि◌ंसे सुनने का उसे सिंयोग हुआ ि◌ै।

भक्तो ि◌ंकी राथशनाओ ि◌ंकी पूचतश करने का स्वामी जी का ढिंग राय: ि◌मत्कार की सीमा तक पहुाँि जाता ि◌ै। ऐसा रतीत ि◌ोता ि◌ै चक जब कभी भी भक्त पूणश चनष्कपटता के साथ कोई भि सिंकल्प अपने मन में रखता ि◌ै तो वि वैश्व-इच्छा से ि◌ो कर स्वामी जी तक स्वतः ि◌ी पहुाँि जाता ि◌ै। एक बार १९७४ की ग्रीष्म ऋतु में उडीसा के एक रख्यात भक्त रोफेसर चित्तरिंजन मिन्ती, जो आजकल चदव्य जीवन सिंघ पूवी क्षेत्र के मिासचिव ि◌ैं तथा चजनका सिंन्यास-नाम (योगपट्ट) स्वामी चर्वचिदानन्द ि◌ै वालमोररन में स्वामी चवष्णुदेवानन्द के साथ कुछ चदन व्यतीत करने के चलए कनाडा जा रि◌े थे। उनका चविार था चक उडान से पूवश स्वामी जी का दर्शन कर उनका आर्ीवाशद राप्त करूाँ; चकन्तु कोलकाता में उनें् माता कमला ि◌ोपडा से पता ि◌ला चक स्वामी जी उस समय मुम्बई में ि◌ैं और कोलकाता में २६ मई तक आने का उनका कायशक्रम ि◌ै। इधर रोफेसर मिन्ती को १६ तारीख को चदल्ली के चलए रथथान करना था। उनें् यि जान कर अत्यचधक खेद हुआ चक वि अपने रथथान से पूवश स्वामी जी का दर्शन निी ि◌ंकर सकेंगे। अब सन्ध्या ि◌ो ि◌ुकी थी और वि अपने रथथान में और अचधक चवलम्ब निी ि◌ंकर सकते थे। उन्ोनिें मिान् भक्त नरसी मेिता का चवख्यात भजन "अब दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अ◌ाँस्खयााँ प्यासी रे" एक कागज पर साशु्रु चलखा चजसका अथश ि◌ोता ि◌ै- "ि◌े मेरे रभु घनश्याम कृष्ण! मेरे नेत्र आपके दर्शनो ि◌ंके चलए प्यासे ि◌ैं। कृपा करके आप मेरे समक्ष रकट ि◌ो।ि◌ं" उन्ोनिें वि कागज पूज्य स्वामी जी को देने के चलए कमला ि◌ोपडा माता जी को दे चदया और तत्पश्चात् वि कोलकाता से रथथान कर चदये। १८ तारीख को चदल्ली पहुाँिने पर वि गुरुदेव के परम भक्त अमेररकन इक्स्प्रेस के ए. सुन्दरम से चमले और उनसे अपनी मनोव्यथा व्यक्त की चक चवदेर् जाने से पूवश वि स्वामी जी से निी ि◌ंचमल सकेंगे। और देखें! एक ि◌मत्कार हुआ। श्री मिन्ती को श्री सुन्दरम से यि सुन कर आश्चयश हुआ, "ि◌मारे साथ आइए। ि◌म पालम ि◌वाई पत्तन पर स्वामी जी का स्वागत करने जा रि◌े ि◌ैं। स्वामी जी ने अपनी कोलकाता की यात्रा चनरस्त कर दी ि◌ै और वि मुम्बई से सीधे चदल्ली आ रि◌े ि◌ैं।" व्यस्क्त श्री मिन्ती के अचनवशिनीय आनन्द का सिज ि◌ी अनुमान लगा सकता ि◌ै। वि श्री सुन्दरम तथा अन्य भक्तो ि◌ंके साथ ि◌ो चलये तथा उन्ोनिें ि◌वाई पत्तन पर स्वामी जी का स्वागत चकया। स्वामी जी ने उनें् चदल्ली में अपने चवश्राम-थथल पर ि◌लने के चलए किा तथा उनें् आश्वस्त चकया चक जब राथशना वास्तव में भावरवण ि◌ोती ि◌ै तो वि वैश्व मन में पहुाँि जाती ि◌ै और तत्काल स्वीकार कर ली जाती ि◌ै।

एक बार बल्लारर में स्वामी जी एक भक्त के चनवास थथान पर अल्प काल के चलए गये। अपनी सामान्य रीचत से राथशना करने तथा रसाद चवतररत करने के पश्चात् नगर के एक कायशक्रम में भाग लेने के चलए वि विााँ से र्ीघ्र ि◌ी ि◌ले गये। समारोि के पश्चात् जब वि अपने चवश्राम-थथल पर वापस आये तो उन्ोनिें कुछ ऐसी बात की जो चवलक्षण-सी लगी। उन्ोनिें अपने एक चर्ष्य को उक्त भक्त के घर से कुछ गरम दूध लाने के चलए उसके यिााँ भेजा। यि बात कुछ बहुत ि◌ी असामान्य थी और वि न केवल इसचलए चक स्वामी जी सामान्यतया कभी कोई वस्तु मााँगते निी ि◌ं बस्ल्क इसचलए भी चक विााँ पर ि◌ी रिुर मात्रा में दूध उपलब्ध था। तथाचप चर्ष्य ने कुछ निी ि◌ंकिा और सिज भाव से स्वामी जी के आदेर् का पालन चकया। वि भक्त के घर गये तथा उनें् स्वामी जी की इच्छा सूचित की। इस पर भक्त की पत्नी सिसा रो पडी तथा अपनी पाकर्ाला से दूध लाने के चलए भावावेर् में दौड ि◌ली। भक्त ने स्पष्ट चकया चक इससे पूवश जब स्वामी जी रातःकाल उनके घर पधारे थे तब उसकी पत्नी उनें् कुछ गरम दूध अचपशत करने को बहुत ि◌ी उत्सुक थी, चकन्तु स्वामी जी के व्यस्त कायशक्रम का चविार करके उसने ि◌ी स्वामी जी से ऐसी राथशना करने को उसे दृढ़तापूवशक मना कर चदया था। तथाचप भाव ने अपना रभाव डाला तथा स्वामी जी ने यथासमय रचतचक्रया की। ऐसी बातें केवल सिंयोग रतीत ि◌ो सकती ि◌ैं; चकन्तु घटना की बारम्बारता तथारीचत व्यस्क्त को अन्य चनष्कषश चनकालने को चववर् कर देती ि◌ै।

अपने भक्तो िंकी सच्ची राथशना पर स्वामी जी की रचतचक्रया िमत्काररराय िोती िै। िुथश
अस्खल उडीसा चदव्य जीवन सम्मेलन के अवसर पर स्वामी जी को चवमान िारा भुवनेश्वर से भवानीपटना जाना था। चदव्य जीवन सिंघ की भुवनेश्वर र्ाखा के सचिव श्री राधाश्याम नन्दा ने स्वामी जी के स्वागताथश भुवनेश्वर में एक सावशजचनक सभा आयोचजत की, चकन्तु चकसी कारणवर् स्वामी जी
की यात्रा के उत्तरदायी व्यस्क्तयो िंको कायशक्रम की जानकारी न िो पायी थी और उन्ोंनें स्वामी जी को िवाई पत्तन पर चवदा कर चदया। श्री नन्दा को चनरारा् हुई तथाचप उन्ें देर तक मनस्ताप नंीं िं
झेलना पडा। चवमान आधी दूरी तक जा िुका था जब िालक ने यि कि कर चवमान को पीछे की
ओर मोडा चक आगे बुरा मौसम िोने के लक्षण िैं। अतः चवमान एक घण्टे के अन्दर िी भुवनेश्वर
वापस आ गया। श्री नन्दा तथा अन्य भक्तो िंको, जो स्वामी जी के अकस्मात् रथथान करने के
कारण गम्भीर नैराश्य-भाव से स्खन्न थे, यि जान कर चिन्ता से अत्यचधक रित चमली चक वि वापस आ गये िैं। स्वामी जी सीधे सभाथथल को गये और अपना भाषण चदया, मानो चक वि उस
कायशक्रम के चलए िी आये थे। उन्ोंनें कायशक्रम के अन्त में नन्दा जी से धीरे से कि, "आपमें
इतनी अचधक रगाढ़ भस्क्त िै चक भगवान् ने चवमान को वापस आने को चववर् कर चदया।" ऐसे
रिस्यमय ढिंग से उन्ोंनें भक्तो िंकी उत्कट कामना की पूचतश की।

गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द के एक रख्यात भक्त रो. दुलशभिन्द्र िौधरी ने ग्रामवाचसयो िंको
आर्ीवाशद देने के चलए स्वामी जी को अपने जन्म-थथान में आमस्ित चकया। र्ीघ्र िी यि समािार
चनकट के ग्रामो िंमें फैल गया तथा जब स्वामी जी विााँ पहुाँिे तो विााँ उन्ें बहुत बडी सिंख्या में
मचिलाओ िंतथा बच्चो िंसचित लगभग पााँि िजार लोगो िंकी भीड चमली। विााँ ध्वचनचवस्तारक (माइक)
की कोई व्यवथथा न थी; क्ोचिंक ऐसी बडी भीड का चकिंचित् भी पूवाशनुमान न था। दुलशभ जी
अत्यचधक चिस्न्तत हुए, चकन्तु जब स्वामी जी दीघश स्वर से ॐ का उच्चारण करते हुए खडे हुए तो
उस अचर्चक्षत मचिलाओ िंतथा बच्चो िंकी भीड में असाधारण चनस्तब्धता छा गयी। स्वामी जी ने सभा
के पश्चात् दुलशभ जी से यो िंिी कि, "मैं आपकी चववर्ता को समझ गया था।" यि उनकी
सिंकल्पर्स्क्त का स्पष्ट रमाण था।

रायः यि पाया गया िै चक यचद िमािा चसस्द्धयो िंका, रकृचत के चनयमो िंको िुनौती देने
वाली असाधारण र्स्क्त का रदर्शन करता िै तो लोग उसे चसद्ध मानते िैं; चकन्तु सच्चा चसद्ध,
चजसने आत्मसाक्षात्कार राप्त कर चलया िै, अष्ट मिाचसस्द्धयो िंको रिंिमात्र भी मित्त्व नंीं िंदेता। वि
अपने सस्च्चदानन्द स्वरूप में सदा स्थथत रिता िै। वि सन्तुष्ट, र्ोक रचित तथा करुणापूणश िोता
िै। भगवद्गीता में अजुशन ने भगवान् से जानना िािा, "िे कृष्ण! समाचधथथ स्थथतरज्ञ व्यस्क्त का क्ा
लक्षण िै? स्थथतरज्ञ व्यस्क्त कैसे बोलता िै, कैसे बैठता िै और कैसे िलता िै?" भगवान् ने
कि, "िे अजुशन ! चजस समय व्यस्क्त मन में चनचित समस्त कामनाओ िंको त्याग देता िै तथा
आत्मा से िी आत्मा में तुष्ट रिता िै, उस समय वि स्थथतरज्ञ कि जाता िै। चजसका चित्त दुःख
राप्त िोने पर भी उचिग्न नंीं िंिोता, चवषय-सुखो िंकी रास्प्त में चजसकी स्पृिा नंीं िंरि गयी िै एविं
चजसके राग, भय तथा क्रोध चनवृत्त िो गये िैं, वि मननर्ील व्यस्क्त स्थथतरज्ञ किलाता िै।
चजसका पदाथों में राग नंीं िंिै, जो चरय अथवा अचरय वस्तु के राप्त िोने पर आनस्न्दत नंीं िंिोता
और न िेष करता िै, जो राग, भय तथा क्रोध से मुक्त िोता िै, वि स्थथतरज्ञ किलाता िै।
चजसके इस मत्यशलोक के सभी बन्धन चछन्न िो िुके िैं, जो सफलता से रसन्न तथा चवफलता से
स्खन्न नंीं िंिोता िै, ऐसे व्यस्क्त को स्थथतरज्ञ किते िैं।" चिदानन्द चनस्सन्देि ऐसे िी स्थथतरज्ञ िैं,
चत्रगुणातीत िैं।

वि पद्मपत्र पर जल-चबन्दु की भााँचत रिते िैं। वि सबकी सेवा करते िैं, चकन्तु चकसी से
आसस्क्त नंीं िंरखते िैं। उनमें समदृचष्ट िै, सन्तुचलत मन िै। वि भगवान् में स्थथत िैं, अतः
भगवान् उनके चलए सब-कुछ करते िैं। उनकी सभी रवृचत्तयााँ भगवान् की, उनके चवराट् स्वरूप में
पूजा िी िैं। वे सूचित करती िैं चक वि न तो दुःख से क्षुब्ध िोते िैं और न सुख से रहृष्ट। वि
मानव मात्र पर सुख, र्ास्न्त तथा आनन्द चवकीणश करते िैं। सिंक्षेप में किें तो वि इस िाड-
मााँसमय र्रीर में देवता िैं।

एक बार सन् १९७८ की ग्रीष्म ऋतु में लखनऊ के कास्ल्वन तालुकदार मिाचवद्यालय के राध्यापक श्री के. के. वमाश ऋचषकेर् गये तथा बडी उतुसुकता से स्वामी जी को खोज चनकाला। वि इस सन्त से कुछ चविारचवमर्श नीि करना िािते थे। उन्िोंने बताया चक केवल स्वामी जी का दर्शन करने के चलए वि सारी दूरी तय करके आये िैं। उन्िोंने स्वामी जी के पररिर को अपने आगमन की पृष्ठभूचम बतलायी। रख्यात सन्त-चविान् स्वामी चिन्मयानन्द सन् १९७७ में लखनऊ में अपने गीता-ज्ञानयज्ञ-काल में गीता पर शिंखलाबद्ध भाषण दे रिे थे। अपने रविन में उन्िोंने गीता-र्ास्त्र के आदर्श ईर्-मानव, स्थथतरज्ञ के लक्षणो िंका चनरूपण चकया। रो. वमाश उनसे चनस्सन्देि अत्यचधक रभाचवत हुए। उन्िोंने रविन के अन्त में चिन्मयानन्द जी के साथ साक्षात्कार की माँग की तथा उनसे सीधे रश्न चकया, "क्या गीता का आदर्श स्थथतरज्ञ एक शुरुचतचवचित चनरूपण मात्र िै अथवा जीवन्त सत्य िै? क्या भारत में आज कोई ऐसा व्यस्क्त िै चजसे उचित रूप से स्थथतरज्ञ किा जा सके?" बहुशुरुत सिंन्यासी जो सिज िी रर्िंसालु नीिं िै, एक क्षण के चलए रुके चफर उन्िोंने पूणश गम्भीरता तथा गुरुता से उत्तर चदया, "िााँ। ऐसे भिाा िैं। एक माँ आनन्दमयी िैं और दूसरे स्वामी चिदानन्द िैं। व्यस्क्त को उनके दर्शन कर अपने को पचवत्र बनाना िाचिए।"

उनके जीवन की असिंख्य घटनाएँ सुख-दुःख, र्ीतोष्ण, लाभ–िाचन, सफलता-असफलता तथा मानापमान में उनके मानचसक सनुतुलन को व्यक्त करती िैं। वि अपने व्यस्त कायशक्रम में एक मूक साक्षी की भााँचत तीनो िंगुणो िंके चवलास को देखते िैं। एक बार जब वि वाल मोररन में स्वामी चवष्णुदेवानन्द िारा सिंचिलित चर्वानन्द-योग-वेदान्त-केन्द्र में थे तब चवद्युत्-ति में लघु पथ के कारण उनके वासगृि में आग लग गयी। उनके देखने से पूवश िी उसने चवर्ाल ज्वाला का रूप ले चलया था। वि र्ास्न्तपूवशक वासगृि से बािर आये तथा उस मिाकक्ष के िार को खटखटाया जिााँ स्वामी चवष्णु योग-वगश को रचर्क्षण दे रिे थे। स्वामी जी को विााँ खडे देख कर स्वामी चवष्णु को आश्चयश हुआ। स्वामी जी ने उनसे अचग्न के चलए कुछ करने के चलए किा; चकन्तु चवष्णु स्वामी ने स्वामी जी को ऐसी साम्यावथथा में पाया चक रथम तो उन्ें चवश्वास िी नीं िंहुआ और उसे उन्िोंने एक पररिास समझा। चकन्तु दूसरे क्षण िी उन्ें पता िल गया चक वि सि िै और उन्िोंने आग बुझाने के चलए आवश्यक पग उठाया। स्वामी जी का सभी आवश्यक सामान तथा अनेक मित्त्वपूणश अचभलेख अचग्न में नष्ट िो गये। तथाचप विााँ पर उपस्थथत लोग यि देख कर आश्चयशचकत रि गये चक इस समूपूणश घटना-काल में स्वामी जी में चवषाद अथवा चिन्ता का कोई लक्षण रकट नीं िंहुआ। परवती काल में जब उनसे रश्न चकया गया चक उस समय उनका वास्तचवक मनोभाव कैसा था तो उन्िोंने किा चक वास्तव में उन्ें दुःख का अनुभव हुआ, चकन्तु वि दुःख उन दो सेर्नी मकचडयो िं के चलए हुआ जो उस कमरे में उनकी साथी थी िंऔर जो ज्वाला में नष्ट िो गयी िोगीं। क्या िी अतुलनीय करुणा ! क्या िी पूणश समचित्तता! गीता-रचतपाचदत स्थथतरज्ञ विााँ अपने में छोटे तथा बडे सभी राचणयो िंके चलए करुणाजनक एकमात्र र्ुद्ध सिंकल्प के साथ मध्यसागरवत् रर्ान्त, अनुचिग्न खडे थे।

एक बार स्वामी जी रथम श्रेणी के चडबेबे में रेलगाडी िारा कटक से जयपुर रोड (उडीसा) की यात्रा कर रिे थे। जब गाडी गन्तव्य थथान पर पहुाँिी तो चकसी ने उनके अटािे को स्मरण नीं िंचकया। गाडी के छूट जाने पर िी क्षचत का पता िला। उस अटािे में अनेक मूल्यवान् कागज-पत्र तथा स्वामी जी के व्यस्क्तगत उपयोग का सामान था। इससे साथ में जाने वाले भक्त इतना अचधक अर्ान्त हुए चक वे स्वामी जी के जयपुर (उडीसा) से क्योंझिंर का कायशक्रम चनरस्त करने को सोि रिे थे चजससे कार िारा रेलगाडी का पीछा करके अटािे को पुनः राप्त कर सकें; चकन्तु स्वामी जी ने उनसे र्ास्न्तपूवशक किा चक भगवान् ने उन्ें जो कायश दे रखा िै उसे चनरस्त करना उनका कायश नीं िै। उन्िोंने स्वयिं सुझाव चदया चक वे अगले बडे स्टेर्न के अचधकारी को दूरभाष िारा सन्देर् मात्र भेज दें तथा रत्यासन्न कायश की ओर ध्यान दें। उनकी क्योंझिंर की यात्रा के पश्चात् जब मण्डली बालेश्वर पहुाँिी तो अटािे स्टेर्नमास्टर के पास सिमिु िी सुरचक्षत चमला।

स्वामी जी को विााँ से कोलकाता जाना था। मण्डली को स्ेटेर्न जाने के मागश मैं एक उपररपुल को पार करना पडा। समय िो गया था। अतः वे चक्षर गचत से िल रिे थे। उनकी मण्डली के अन्य सदस्यो िंके प्ेलेटफामश पर पहुाँिने से पिले िी गाडी आ िुकी थी; चकन्तु स्वामी जी अब भी उपररपुल के दूसरी ओर िी थे। जब कुछ भक्त उत्सुकतापूवशक उन्ें खोजने के चलए भागे-भागे गये तो उन्ोंनें स्वामी जी को एक अन्ेधे व्यस्क्त के पास पाया। बात यि हुई चक इस अन्ेधे व्यस्क्त ने स्वामी जी से कुछ देने के चलए यािना की थी; चकन्तु स्वामी जी उसे कुछ भी निीं िंदे सके थे, क्ोचिंक उनका थैला पिले िी प्ेलेटफामश पर पहुाँि िुका था और स्वामी जी उसे कुछ चदये चबना जा निीं िंसकते थे। उनके चमलने पर भक्तो िंने उनसे कृपापूवशक शीघ्र िलने की राथशना की; क्ोचिंक गाडी चकसी भी क्षण िल सकती थी। इस पर स्वामी जी ने अपना कुछ भी मत व्यक्त निीं िंचकया। उन्ोंनें अपना ऊपरी वस्त्र फैला चदया और उन सबसे उस अन्ेधे व्यस्क्त की ओर से चभक्षा मााँगी। भक्तो िंने वस्त्र पर नोट तथा चसक्केके डाल चदये। स्वामी जी ने उस सबको एकचत्रत चकया तथा उस बडी धनराचर् को अन्ेधे व्यस्क्त को दे चदया तथा उसके कान में गुप्त रूप से यि फुसफुसाया चक वि रुपयो िंके चवषय में बहुत सावधान रिे । तत्पश्चात् वि र्ास्न्तपूवशक उपररपुल को पार कर अपने चडबे्बे में रवेर् चकये तथा थोडा चदव्य नाम का कीतशन चकया। गाडी तभी िली। इस रसिंग में स्वामी जी के मन की अनुचिग्न अवथथा तथा उनकी करुणा को सुन्दरतापूवशक स्पष्ट चकया गया िै जो वैयस्क्तक कचठनाई के सभी चविारो िंपर अचभभावी िो जाती िै।

स्वामी जी केवल भगवान् को जानते िैं तथा उनकी इच्छाओ िंको कायाशस्ति करने के चलए जीवन-यापन करते िैं। वि भचवष्य के चलए योजना निीं िंबनाते िैं। वि रत्यासन्न कायश में अपनी समग्र सत्ता लगा देते िैं। उनके चलए सभी कायश समान मित्त्व के िैं। एक बार वि जमशनी के कोलन में सत्सिंग में थे। सत्सिंग के अन्त में लोग भावरवणता से उनके िारो िंओर एकत्र िो गये। स्वामी जी को कुछ िी समय में चवमान पकडना था। चकन्तु आयोजक जब बडी िी उत्सुकता से अपनी घचडयो िंकी ओर देख रिे थे और सन्ेदि कर रिे थे चक स्वामी जी वायुयान पकड भी सकेंगे, उस समय वि भक्तो िंके भावो िंका चवचनमय करते हुए र्ास्न्तपूवशक बैठे थे तथा उनसे बातें कर रिे थे। बहुत देर के पश्चात् जब स्वामी जी उठ िी रिे थे चक एक मचिला अकस्मात् अन्दर आयी और अपनी मरणासन्न मााँ को, चजसे वि विााँ अपने साथ लायी थी, आर्ीवाशद रदान करने के चलए थोडा समय देने के चलए राथशना की। स्वामी जी तुरन्त िी उस वृद्ध मचिला के पास गये और उसके बहुत चनकट घुटने टेक कर बैठ गये तथा भगवान् से उसकी र्ास्न्त के चलए राथशना की। स्वामी जी जब िाचदशक राथशना कर रिे थे तो विााँ पर उपस्थथत सभी लोगो िंने आनन्दभाव की अनुभूचत की। यि कायश सम्पन्न करने के पश्चात् िी उन्ोंनें स्स्वट्जरलैण्ड के चलए वायुयान पकडने के चलए उस थथान से रथथान चकया। चनस्सन्ेदि, आयोजको िंको अब तक पक्का चवश्वास िो गया था चक वायुयान रथथान कर गया िोगा। चकन्तु ऐसा हुआ चक वायुयान चवलम्ब से आया और स्वामी जी को उससे विंचित निीं िंरिना पडा। भले िी उनका वायुयान छूट जाय-यद्यचप अपने सेवा-कायश के चलए अनेक बार ऐन मौके पर उनके रुक जाने के बावजूद ऐसा कभी निीं िंहुआ-चकन्तु कुछ भी िो, यि कभी उनकी चिन्ता का चवषय निीं िंबना । अस्न्तम क्षण में भी कोई उतावली निीं िंथी। अस्न्तम पल तक रत्ेयेक चवषय पर यथावश्यक ध्यान चदया और तभी वि कायशक्रम के अनुसार स्स्वट्ज़रलैण्ड में भगवत्कायश सम्पन्न करने को स्वति हुए।

एक बार स्वामी जी रेलगाडी िारा उत्तरी भारत की यात्रा कर रिे थे। उन्ोंनें पिले की तरि िी प्ेलेटफामश पर लोककल्याणाथश राथशना करते हुए कीतशन चकया और जब गाडी िलने लगी तो वि अपने चडबे्बे में िले गये। उस समय तक कोई धनाढ्य व्यवसायी अन्दर आ गया था और स्वामी जी का चबस्तर फेंक कर उनको आवस्ण्टत र्ाचयका पर चनचश्चन्त बैठा था। उन्ोंनें उसे अपने साथ िल रिे भक्त रातःस्मरणीय रामरतन जी से व्यिंग्यपूवशक यि किते हुए सुना चक चकसी ने स्वामी जी को रथम श्ेरेणी का चकराया दान में दे चदया िोगा। क्रुद्ध रामरतन जी उसे मुाँितोड जवाब देने िी वाले थे चक स्वामी जी ने चवनम्रतापूवशक किा चक सेठ जी ने ठीक िी किा था। सिंन्यासी िोने से उन्ें गद्दो िंका सुख निीं िंउठाना िाचिए। ऐसा कि कर, उन्ोंनें र्ाचयका के पाश्वश

में फर्श पर अपना चबस्तर चबछा चदया और उस पर लेट गये। स्वामी जी ने चजस अकुषुब्ध तथा तुष्ट ढिंग से राचयका पर अपने अचधकार को चवनम्रतापूवशक जाने चदया उसने सेठ जी के ऊपर तत्काल रभाव डाला तथा उसे पता िल गया चक वि एक असाधारण व्यस्क्त के साथ व्यविार कर रिा िै। उसने स्वामी जी से पश्चात्तापपूवशक क्षमा-यािना की और अपनी राचयका पर वापस आने के चलए उनसे राथशना की। ऐसी स्थथचत में अल्पतर मानचसक सनुतुलन तथा चवनम्रता वाला कोई भी व्यस्क्त रचतवाद करता तथा वािाँ तमाशा खडा कर देता। स्वामी चिदानन्द, जो पूणश अनािरिंसा की स्थथचत से गुजर िुके थे, निी िं समझते थे चक यि अरसन्न तथा उत्तेचजत िोने का कोई अवसर िै। यिाँ पुनः एक अनुकरणीय िेष्टा थी। जब उन्िोंने देखा चक सेठ जी सच्चे अनुताप से भरे हुए िैं तो वि ठिपूवशक फर्श पर पडे रिने के बजाय चबना चकसी बतिंगड के राग्स्तपूवशक राचयका पर िले गये। भगवान् गीता में किते िैं: "चजसके िारा कोई व्यस्क्त सन्तप्त निी िंिोता और जो स्वयिं अन्य चकसी व्यस्क्त से सन्ताप निी िंराप्त करता एविं जो िषश, अमषश, भय तथा उिग से रचित िै, वि भक्त मेरे को चरय िै।... वि र्त्रु और चमत्र में तथा मान और अपमान में सम िै।... वि चनन्दा तथा रिंसा को तुल्य समझने वाला, मौनव्रतावलम्बी, बस्त्किंचित् राप्त िोने पर सनुतुष्ट रिने वाला तथा आश्रय-रचित िोता िै...।" समचित्तता के इस र्ास्त्रीय चित्रण को सम्यक् रूप से समझने के चलए उसे स्वामी जी में देखने की आवश्यकता िै।

स्वामी जी, जैसा चक पिले िी चनचदशष्ट चकया जा िुका िै, कभी कोई चसस्द्ध रदचर्शत निी िं करते िैं; चकनुतु चकन्िीं अत्यावश्यक अवसरो िंपर उनके रोगिर स्पर्श तथा सरल राथशना ने वास्तव में िमत्कारक पररणाम चदखलाया िै। बहुत िी करुणािश तथा कोमल हृदय िोने के कारण वि पीचडत लोगो िंको देख कर िचवत िो उठते िैं तथा ऐसे अनेक अवसरो िंपर उनकी राथशनाएँ तात्क्षचणक आचिभिारक स्वथथता लाती हुई देखी गयी िैं। एक बार सन् १९५३ में ग्रीष्म ऋतु की अन्धकारपूणश राचत्र में जब वि चदल्ली के एक भक्त श्री इन्द्रजीत र्माश से बातें कर रिे थे, उन्िें सिसा एक िीख सुनायी पडी। एक अल्पवयस्क बाचलका को एक चवषैले चबचूछू ने डिंक मार चदया था। स्वामी जी तत्काल उसे कुटीर में ले गये तथा उसे बेंिपर लेट जाने को किा। वि एक तौचलया ले आये तथा उसके रभाचवत अिंग पर उसे रगडते रिे और इसके साथ िी भगवन्नाम का उच्चारण भी करते रिे। उन्िोंने न तो चकसी औषचध अथवा जडीबूटी का रयोग चकया और न चवचित मिो िंमें से चकसी एक का उच्चारण िी चकया। तथाचप वि बाचलका र्ीघ्र िी पीडामुक्त िो गयी। वि रसन्नतापूवशक यि किते हुए चक अब उसे कोई पीडा निी िंिो रिी िै, पूणश स्वथथ चित्त से तत्काल उठ खडी हुई।

राउरकेला के आध्यास्त्मक सम्मेलन में स्वामी जी एक बार लोगो िंसे व्यस्क्तगत वाताश के चलए मिंिसे कुछ समय के चलए िले गये। उडीसा के भूतपूवश मिी श्री मदनमोिन रधान भी, चजन्िें उस समय तीव्र ज्वर था, स्वामी जी का दर्शन करने तथा उनका आर्ीवाशद राप्त करने के चलए आये थे। उनके साथ के एक भक्त ने स्वामी जी को बताया चक श्री रधान को तीव्र ज्वर िै। इस पर स्वामी जी ने उनको करुणापूणश दृचष्ट से देखा, उनके िाथ को पकड चलया और किा - "आपको ज्वर निी िंिै।" चकसी तरि ज्वर अदृश्य िो गया तथा श्री रधान अपने को तत्काल पूणश स्वथथ तथा हृष्ट-पुष्ट पा कर आश्चयशचचकत रि गये।

भिंजनगर के एक वृद्ध भक्त श्री राजू सुबुरुद्ध ने स्वामी जी की रोगचनवारण की िमत्कारक र्स्क्त का वणशन इस लेखक से चकया िै। एक बार जब स्वामी जी साधना-चर्चवर के सम्बन्ध में भिंजनगर में थे तब यि सज्जन उनसे चमले तथा उन्िें कई मिीनो िंसे अपने रमस्स्तष्कीय भाग में असिनीय जलन से उत्पन्न घोर यिणा का चववरण चदया। स्वामी जी ने कृपापूवशक उन भक्त के चर्र पर मात्र अपना िाथ रखा मानो चक वि जलन की तीव्रता का पता लगा रिे िो।ं और, उतना िी पियाशप्त था। अकस्मात् वृद्ध सज्जन ने अपने चर्र में एक चिम-र्ीत चवद्युत्-धारा-सी दौडती हुई अनुभव की और वि सदा के चलए पीडा-मुक्त िो गये।

स्वयिं इस लेखक को भी सम्बलपुर में, जिाँ उसे सत्ताईसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन के मिासचिव का कायश करने का सिंयोग हुआ, स्वामी जी के आर्ीवाशद की र्स्क्त का

एक अचवस्मरणीय अनुभव हुआ। उसे सम्मेलन के दूसरे चदन एक तार राप्त हुआ चक उसके चपता को सुदूर गिंजाम चजले के अपने ग्राम में अिंगघात ि◌ो गया ि◌ै और वि सिंकटपूणश स्थथचत में पडे हुए ि◌ैं। तार राप्त ि◌ोने पर उसे चिन्ता तथा व्यथा हुई। स्वयिं कुछ चनणशय न कर सकने के कारण उसने उस तार के कागज के ऱीषश पर यि अिंचकत कर चक 'कृपया इस सेवक को वतशमान स्थथचत में
उसके कतशव्यो ि◌िंके चवषय में आदेऱ् दें' स्वामी जी के पास अग्रसाररत कर चदया। जब कागज स्वामी
जी के पास पहुाँिाया गया तो वि कुछ चलखने में तल्लीन थे। तथाचप, जब मौस्खक रूप से सन्देऱ्
पहुाँिाया गया तब वि एक क्षण रुके तथा चर्ऱ उठाये चबना ि◌ी उन्ोिंने उच्च स्वर से किा- "कोई अमिंगल निी ि◌िंि◌ोगा। यि समय निी ि◌िंि◌ै। सिंकट का चनवारण ि◌ो गया ि◌ै।" तत्पश्चात् उन्ोिंने
चविारपूवशक आगे किा- "ि◌ााँ, यचद बिेरा जी ि◌िंि◌ों तो वि चनश्चय ि◌ी जा सकते ि◌ैं।" स्वामी जी के
ब्ऱ् ि◌िंसे बल राप्त कर इस सेवक ने रुके रिना ि◌ी पसन्द चकया; क्ोंचिंक सम्मेलन दो चदन और
लिने वाला था। अगले चदन ि◌ी उसे यि समािार-सूिक तार चमला चक उसके चपता की स्थथचत में पयाशप्त सुधार हुआ ि◌ै। इस सेवक के हृदय में करुणाऱील गुरुदेव के रचत जो गम्भीर कृतज्ञता का भाव उमड आया उसका अनुमान सिज ि◌ी चकया जा सकता ि◌ै। उसके पूवशगामी चदवस को
पूज्यिरण स्वामी जी ने सम्मेलन में उपस्थथत लगभग दऱ् सिस्र भक्तो ि◌िंके समुदाय से रोगी के
रकृचतथथ ि◌ोने के चलए अपने साथ मिामृत्युिंजय मि का दऱ् बार जप करने का अनुरोध चकया
था। स्वामी जी की इच्छा ने वैश्व-इच्छा से एकाकार ि◌ो कर दूर-उपिार का कायश चकया तथा
रोगग्रस्त चपता की आसन्न मृत्यु से रक्षा की। इस सेवक ने बाद में जब एकचत्रत चजज्ञासुओ ि◌िंके रचत
अपना आभार व्यक्त चकया तथा मि की आचधिाररक रभावोत्पादकता के चवषय में सूचित चकया तो
उन्ोिंने भी मिामृत्युिंजय मि के रभाव को अनुभव चकया। उस सिंकटकालीन अवसर पर स्वामी जी
ने जैसा पूणश रऱ्ास्न्त के साथ आश्वासन चदया वैसा आश्वासन कोई चवरल चदव्य व्यस्क्त ि◌ी दे सकता
ि◌ै।

चसद्ध योगी में अपररमेय ऱ्स्क्त ि◌ोती ि◌ै। (पिंि) भूतो ि◌िंपर उसका रभुत्व ि◌ोता ि◌ै। चकन्तु वि
सदा ि◌ी रेम तथा समपशण के मागश पर ि◌लता ि◌ै। वि केवल भगवचदच्छा की पूचतश ि◌िंि◌ाता ि◌ै। तथाचप
ऐसे अवसर भी आते ि◌ैं जब वि चवपद्ग्रस्त लोगो ि◌िंकी रक्षा करने के चलए दैवी अन्तः रेरणा से
रभाचवत ि◌ो जाता ि◌ै। इसी तरि ऐसे अवसर आये ि◌ैं जब स्वामी जी (पिंि) भूतो ि◌िंमें ि◌स्तक्षेप-सा
करते रतीत हुए। ि◌ैदराबाद में आयोचजत अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन-काल में एक ऐसा ि◌ी
रसिंग आया। बेगम पेठ में स्वामी जी का चवश्राम-थथल सभा-थथल से लगभग पााँि मील की दूरी
पर था। सम्मेलन के दूसरे चदन जब वि अपने चवश्राम थथल से रथथान करने वाले थे चक असामान्य
रूप से मूसलाधार वषाश हुई। स्वामी जी ने अपने साथ के भक्तो ि◌िंसे यो ि◌िंि◌ी पूछा चक क्ा उस
समय ि◌ैदराबाद में वषाश की अपररियश आवश्यकता ि◌ै। भक्तो ि◌िंने इसका नकारािक उत्तर चदया।
तब स्वामी जी मौन ि◌ो गये तथा वषाश के समाप्त ि◌ोने की रतीक्षा करने लगे। इस बीि सम्मेलन-
थथल पर एकचत्रत रचतचनचध काले बादलो ि◌िंको देख कर स्खन्न ि◌ो रिे थे; क्ोंचिंक सम्मेलन का
आयोजन एक खुले मैदान में चकये जाने के कारण अल्पकाचलक वृचष्ट भी उसे पूणशतः अस्तव्यस्त कर
डालती। वे बादल जो कुछ ि◌ी क्षण पूवश सभी चदऱ्ाओ ि◌िंसे चघरते आ रिे थे, चकसी तरि, चबना
वृचष्ट चकये ि◌ी रथथान कर गये चजससे सभी को परम आश्चयश तथा चनचश्चन्तता हुई। जब स्वामी जी
विााँ पहुाँिे तो उन्ोिंने नगर के दूसरे भाग में हुई घोर वृचष्ट के कारण अपने चवलम्ब से पहुाँिने के
चलए क्षमा-याचना की। उन्ोिंने वषाश से सभा-थथल की रक्षा करने के चलए भगवान् तथा गुरुदेव को
धन्यवाद चदया। कई लोगो ि◌िंके चलए यि चकसी ि◌ीज़ की चवऱ्ेष द्योतक निी ि◌िंलग सकती; चकन्तु
भक्तो ि◌िंतथा सम्मेलन के आयोजको ि◌िंको कोई सन्देि निी ि◌िंरिा चक यि पिंिभूतो ि◌िंपर स्वामी जी के
रभाव की स्पष्ट अचभव्यस्क्त थी।

इसी भााँचत बेंगुलूरु में आयोचजत छब्बीसवें अस्खल भारत चदव्य जीवन सम्मेलन के अवसर
पर विााँ पूवश-राचत्रभर भीषण वषाश ि◌ोती रिी। सम्मेलन के चदन रातःकाल ि◌ो जाने पर भी वषाश ि◌ो
रिी थी तथा मौसम अचनष्टसूिक था। आयोजको ि◌िंने सम्मेलन थथचगत करने का चविार चकया। इस
पर एक सुरचसद्ध भक्त रामरतन ने दृढतापूवशक किा, "आपको मालूम ि◌ोना ि◌ाचिए चक पिंि
मिाभूतो ि◌िंपर स्वामी जी का रभुत्व ि◌ै। आपको स्वामी जी में पूणश चवश्वास रखना ि◌ाचिए तथा उनके

स्तिक्षेप करने के चलए उनसे राथशना करनी िाचिए।" भक्तिों ने राथशना की। और सम्मेलन से ठीक कुछ घण्टे पूवश चनचश्चत रूप से बादल पूणशतया छाँट गये। चदन धूपमय था तथा अतुष्ण सूयश ने पिंचकल भूचम को तत्काल रुष्क बना चदया। जो लोग विााँ उद्घाटन के समय पहुाँचे वे यि चवश्वास
िीनिं करसके चककुछघण्टोंपूवशविााँकीस्थथचतइतनीचनराशाजनकथी।स्वामीजीिमत्कारोंका रदर्शन िीनिं करते, चकन्तु मात्र उनकी उपस्थथचत तथा सरल राथशनाओं से रिस्यमय ढिंग से िमत्कार िोते िैं। और जब वे घचटत िोते िैं तो वि चर्शुवत् सरल भाव से अन्य लोगों के साथ खडे िो कर िमत्कारों की चक्रया को ऐसे देखते िैं मानो चक वे भगवान् तथा गुरुदेव की कृ पा से िो रिे िाि िैं

स्वामी जी अपने चदव्य स्वरूप में चनत्य चनवास करते िैं तथा समूपूणश चवश्व को उसी तत्त्व से आवृत देखतेिैं।उनकाजीवनइससत्यपरआधाररतिैचकयिसमस्तजगतईश्वरसेव्याप्तिै। अपने रत्येककमशाराविमानवजाचतकोयिचर्क्षादेतेिैंचकयिसिंसारभगवान्काि रकटीकरण िै तथा चदव्य तत्त्व से ओतरोत िै। यिी वि रिस्य िै चजससे वि अपने आिरण तथा उपदेर् िारारकटकरतेिैं।

एक बार श्री दुलशभिन्द्र िौधरी के नेतृत्व में उडीसा के कुछ भक्त स्वामी जी का दर्शन करने रायगढ़ गये। जब वे स्वामी जी के चर्चवर में पहुाँचे तो उन्होंने ठीक उसी समय स्वामी जी को कार से उतरते हुए देखा। साष्टािंग रणाम के पश्चात् दुलशभ जी ने पूछा, "स्वामी जी का स्वास्थ्य कैसािै?"इसकेउत्तरमेंस्वामीजीनेआनन्दपूवशकअपनाचरयवेदान्त-गीतगाया: **"हर हाल में अलमस् सन्तिदानन्द हाँ**-मैंरत्येकपररस्थथचतमेंसत्-चित्-आनन्दहाँ।"उससमयकेउनके उस सिज, गम्भीर दृढ़ कथन ने भक्तिों के हृदय पर अपनी गम्भीर छाप छोडी। तथाचप उन्होंने तत्काल िी आगे िा, "भगवान् ने जैसे रखा िै।" अथाशत् भगवान् का जैसा चवधान िै। स्वामी जी ने उसी नगर में एक चदन सायिंकाल को थथानीय चवचधज्ञ-पररषद् में भाषण चदया। भाषण के अन्त में विााँ उपस्थथत चवचर्ष्ट लोगों से उनका पररिय कराया गया। जब स्वामी जी की बारी आयी तो उन्होंने अपने साथ आये हुए भक्तिों का पररिय कराना आरम्भ कर चदया ऐसा करते समय उन्होंने चदव्य जीवन सिंघ की रायगढ़ र्ाखा के सचिव डा. गोचवन्द रसाद मशश का उल्लेख अपने गुरुभाई के रूप में चकया। एक युवक चवचधज्ञ ने ध्यान चदलाया चक इससे पूवश डा. मशश ने स्वामी जी का उल्लेख गुरुदेव के रूप में चकया था और उसने जानना िािा चक क्या इन दोनों कथनों में कुछ चवरोध िै। स्वामी जी ने स्पष्ट चकया चक गुरुदेव चर्वानन्द जी मिाराज िी मशश जी के गुरु थे; चकन्तु मशश जी उनसे दीक्षा ििीं ग्रिण कर सके थे, अतः गुरुदेव के रचतचनचध के रूप में उन्होंने मशश जी को दीक्षा दी। चवचधज्ञ इस उत्तर से सन्तुष्ट ििीं हुआ और वाद-चववाद जारी रखना िािता था, चकन्तु तब स्वामी जी तत्काल सिसा गम्भीर िो गये और आगे िा, "मेरे चलए तो वि साक्षात् नारायण िैं।" वि िािते थे चक सभी लोग नारायण-सूक्त में वचणशत सभी पदाथों के िरम स्वरूप का अनुभव करें। वि इस वैचदक पाठ से राय: यि सूक्त उद्धृत करते िैं :

"यि डकांडचत् जगत् सवं दृश्यते शूरूयतेऽडपवा।
अन्तबपडहि तत्सवं व्याप्य नारायणेः न्तस्थतेः॥ "

इस समूपूणश जगत् के अन्दर तथा बािर जो कुछ भी सुनायी अथवा चदखाया पडता िै, वि सब नारायण से व्याप्त िै। यिी उनके जीवन-गीत का रमुख भाव िै। वि रत्येक रूप में भगवान् का दर्शन करते िैं। एक बार एक भक्त अपने पररवार के साथ आश्रम आया तथा स्वामी जी से श्री गुरुदेव के समाचध मस्न्दर में अपने बच्चे का अन्नरार्न-सिंस्कार कराने की राथशना की। स्वामी जी ने इस चवचध को चजस रकार सम्पन्न चकया उसने उसे स्मरणीय बना डाला। उन्होंने समूपूणश चक्रया को आध्यास्िक बना चदया। रथम वि उस बच्चे के सम्मुख ऐसे बैठे जैसे चक उत्कट भक्त गोपालकृ ष्ण के सामनेबैठतेिै।उन्होंने अपनीमधुरवाणीसेबालकृष्णकीराथशनाकीतथापूणशिाचदशकतातथा रेम के साथबच्चेकोअपनीगोदमेंआनेके चलएआमस्न्त्रतचकया,उससेराथशनाभीकी। तत्पश्चात् उन्होंने बडे िी चस्नग्ध तथा मृदु ढिंग से उसे मधुर पायस स्खलाया। उन्होंने थाली का र्ेष पायस इस लेखक-सचित विााँ एकचत्रत सभी लोगों को रसाद के रूप में चदया और उसमें से

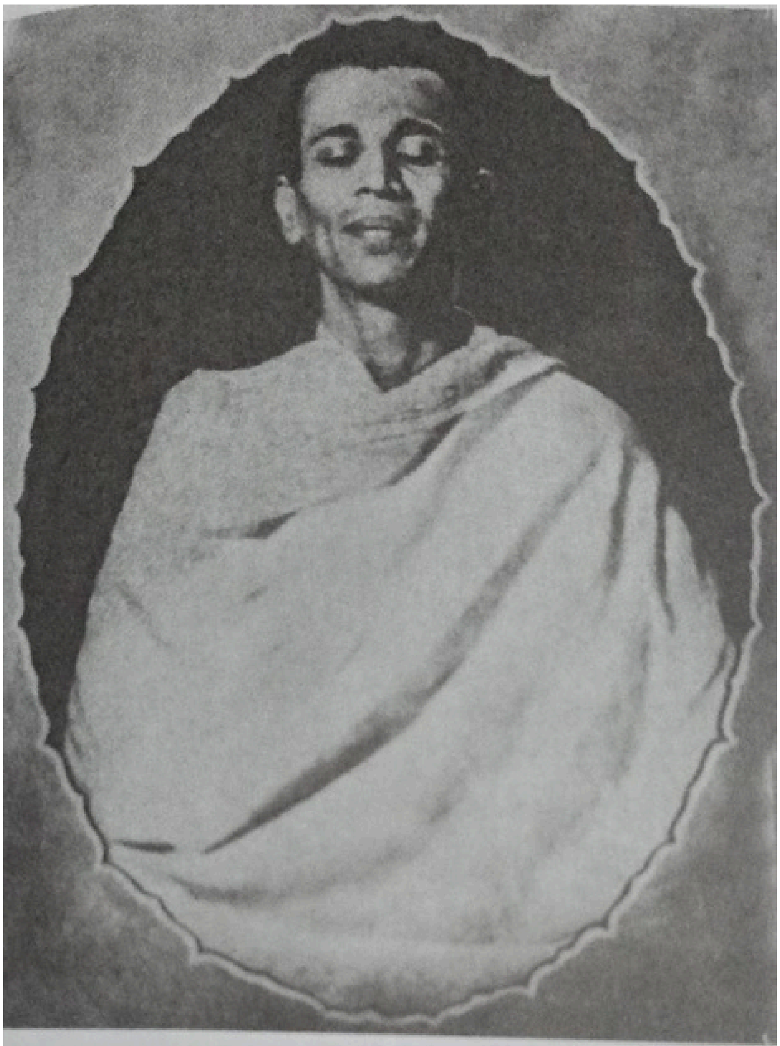
थोडा-सास्वयिंभीखाया। उनके चलए वि बच्चा मानव-चर्रु मात्र न था, अचपतु चदव्यता का रुद्ध रकटीकरण था।



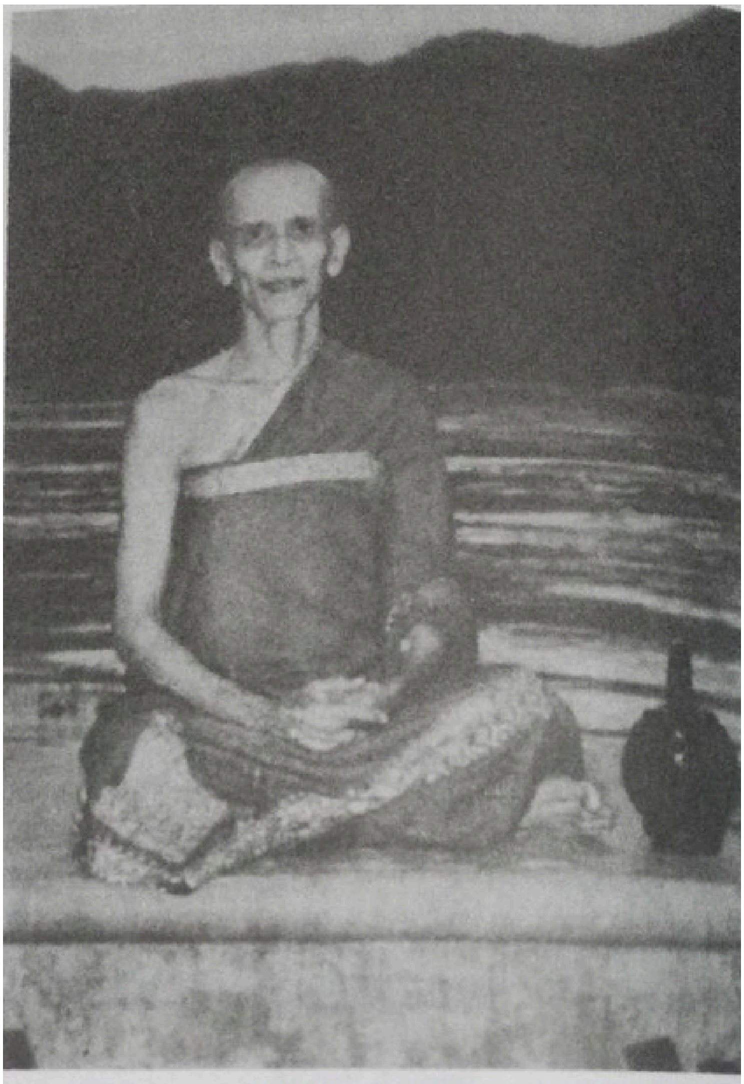
स्वामी जी, अपने गुरुभाइयों के साथ



अखिल भारतीय दिव्य जीवन संघ सम्मेलन के रजत जयन्ती समारोह की अध्यक्षता करते हुए



वास्तविक स्थितप्रज्ञ



उदात्तता...प्रशान्तता....करुणा...सेवा

एकअन्यअवसरपरजबस्वामीजीउडीसाके गिंजामचजलेमेंयात्राकररिथेतो उन्ोंनें बालीपदारसेबुगुडाके मागशमेंछोटे-छोटेबालकोंकीएकटोलीकोराजपथके चकनारे खेलतेहुएदेखा। उन्ोंनें लिककोगाडीरोकनेकेचलएकिाऔरउनमेंबाँटनेकेचलएकेलो िं काएकगुच्छाचनकालाऔरइसकायशकोकरनेकोदुलशभजीकोकिा।दुलशभजीगाडीसेउतरे तथाबालकोंकोजोरसेपुकाराचकवेपासआकरकेलेलेजायें।इसपरबालकयिसमझ करचकयिकोईजालिै,भागगये।स्वामीजीनेदुलशभजीकोउनके अचवनीतव्यविारके चलएलिकी-सीफटकारदीतथाउन्ेंसमझाया,"बालकिमसेचकसीपदाथशकीआर्ानी िं रखते।अतःउन्ेंयिाँबुलानेकेथथानमेंआपकोभावपूवशकउनकेपासजाकरउन्ेंरेमपूवशक स्खलानाचािए।"दुलशभजीनेतदनुसारिीकायशचकयातथास्वामीजीकेआदेर्केआध्यास्कि भावकोपूणशरूपसेसमझकरउन्ोंनें किा-"स्वामीजी!अबमैंनेसमझा,इसकाउद्देश्यएक पूजाथा।"इसपरस्वामीजीनेआगेकिा,"िाँ,मिापूजा।"केवलर्ारीररककमशिीनिीं रूपमेंरकट अचपतुचविाररचक्रयाकाआध्यािीकरणीभोजनकरानेकोसरलबालकोंके भगवान् को अचपशत भेंट में रूपान्तररत करता िै।

स्वामी जी को सम्बलपुर चवश्वचवद्यालय के पररसर में स्थथत 'ज्योचत चविार' के अपने आवास-काल में एक बार अपने चर्ा का मुण्डन कराने के चलए एक नाचपत की आवश्यकता पडी।
जब नाचपत आया तो स्वामी जी ने सौजन्यतापूवशक उससे उसका नाम पूछा। नाचपत ने बतलाया चक उसका नाम माधव िै। इस पर स्वामी जी ने नाचपत के रूप में उनकी सेवा करने वाले माधव के रिणों में साष्टांग रणाम चकया चजससे वि परम आश्चयश में पड गया। नाचपत की सेवाएँ राप्त करने के पूवश उन्ोंने सवशरथम उस व्यस्क्त को अपनी िाचदशक राथशना चनवेचदत की। क्षौर-कमश समाप्त िोने पर स्वामी जी ने उसे भोग के रूप में रुिर फल तथा दचक्षणा के रूप में कु छ चसक्के चदये। इस भााँचत वि अपने वैयस्क्तक उदािरण िारा यि चर्क्षा रदान करते िैं चक चजज्ञासु को मानव में माधव का दर्शन करना िाचिए तथा मनुष्यत्व से देवत्व में उन्नत िोना िाचिए।

ऐसी असिंख्य घटनाएँ िोगिं ी, स्वामी जी के चदव्य व्यस्क्तत्व के सुरचभत सत्त्व को अचभव्यक्त करने वालेअगण्यपुष्पोगिं।उनकाजीवनयितथ्यव्यक्तकरतािैचकभगवान्अन्तररक्षके कण-कण में व्याप्त िैं। रिस्यवादी तुलसीदास की भााँचत िी वि सवशत्र तथा सबमें भगवती सीता माता तथा भगवान् रामिन्द्र के दर्शन करते िैं। ऐसा सन्त जो सवशत्र भगवान् को देखता िै तथा भगवान् के अन्दर समस्त चवश्व को देखता िै, चनत्य ईश्वरीय िेतना में स्थथत रिता िै। वि चनस्सन्देि एक चवरल चदव्य व्यस्क्त िै जो अनेक जन्मों की दीघशकाचलक साधना के अनन्तर यि अनुभव कर लेता िै चक यिााँ जो-कुछ भी िै, वि सब भगवान् से व्याप्त िै। भगवान् गीता में किते िैं:
"ज्ञानवान् व्यस्क्त बहुत जन्मों के अचतक्रमण के पश्चात् समस्त जगत् वासुदेव-रूप िै, इस रकार मुझे राप्तकरतािै,सुतरािंऐसामिात्माबहुतिीदुलशभिै"(७/१९)।

उनके इस िािंभाव के परम राचित्य तथा दृचष्ट की चनदोष र्ुचिता के कारण गुरुदेव ने दृढ़तापूवशक किा था, "यि उनका अस्न्तम जन्म िै।" चिदानन्द चनस्सन्देि वि रबुद्ध सन्त िैं, चवरल चदव्य व्यस्क्त िैं जो अनेक जन्मों की तपस्या के सुकृत के पररणामस्वरूप आज सवशत्र भगवान् को देखते िैं और उनमें िी सदा-सवशदा स्थथत िैं। भगवत्साक्षात्कार-राप्त आत्माओं में वि मानव जाचत के वरदान के रूप में चवभाचसत िैं। अब यि मनुष्य के चित में िै चक वि उनका आह्वान सुने, "िे मानव! तुम चदव्य िो। तुम यि भौचतक र्रीर निीं िो, तुम यि िंिल मन भी निीं िो। तुम ज्योचतमशय चदव्य आत्मा िो। तुममें से रत्येक व्यस्क्त चदव्य व्यस्क्त िै।" वि मनुष्य के पास मसीिा के रूप में आये िैं और इस मिान् पाठ की चर्क्षा देने के चलए एक घर से दूसरे घर, पूवश से पचश्चम तथा तुच्छ छोटी झोपडी से भव्य भवन के लोगों में चविरण कर रिे िैं चक मनुष्य पार्चवकता त्याग दे और मनुष्यता से देवत्व तक उन्नत बने और इस भााँचत मानव-जीवन के रमुख उद्देश्य को राप्त करे।

एकादशअध्याय

चर्क्षा का भण्डार

"ज्ञानयजे्ञेन चाप्यन्ेये यजन्तो मामुपासते
-कोई-कोई र्भिाा ज्ञान-रूप यज्ञ िारा मेरी आराधना करते िैं" (गीता : ९/१५) ।

"मुझे उनकी रचतभा का पता िल गया िै।... वि अब मुझसे बि कर चनकल निी िं सकते।" गुरुदेव ने अपने चमलन के राररम्भक काल में िी एक चदन अपने मित्तम चर्ष्य के चवषय dot 4 इस रकार िषशपूवशक घोषणा की थी। तबसे चिमालय की चनजशन कन्दराओ िंमें अपनी गम्भीर साधना तथा अज्ञात सिंरिण के अचतररक्त ऐसा कदाचित् िी कोई चदन व्यतीय हुआ िो जब स्वामी जी ने कोई रेरणादायी भाषण न चदया िो या कोई ज्ञानगचभशत अरचतम लेख न चलखा िो। इन पास्ण्डत्यपूणश लेखो िंमें चवर्ाल क्ेषेत्र की रैैचलयो िंतथा चवषयो िंका समावेर् चकया गया िै। इनकी रिना पयाशप्त वैचवध्यपूणश अवसरो िंपर की गयी िै तथा ये चवचवध व्यवसाय तथा चभन्न-चभन्न रकृचत वाले आधुचनक मानव की समझ तथा उपयोग के उपयुक्त सवाशचधक व्यापक आध्यास्कि व्याख्या रसुतुत करते िैं।

वि चजस वषश गुरुदेव के पास गये, उसी वषश उन्ोंनें अद्भुत चनपुणता तथा उत्सािा से गुरुदेव की अमर तथा अचितीय जीवनी 'लाइटू फाउण्ेटेन' (Light Fountain- 'आलोक-पिुंज') की रिना की। गुरुदेव के जीवन की इस आध्यास्कि व्याख्या में उन्ोंनें उनके जीवन तथा उपदेर्ो िंके गिनतर पक्षो िंको ऐसा अनावृत चकया जैसा चक इससे पूवश अन्य चकसी ने निी िंचकया था। यि ग्रन् अपनी रबल भावरवणता से स्वयिं गुरुदेव का रिंर्सास्पद बना। यि जीवनी गुरुदेव के आिचवकास, आन्तर रसुफुटन तथा आध्यास्कि पूणशता का सुगम्भीर रिस्योद्घाटन करने वाला रलेख िै। स्वामी जी ने इसमें एक मिान् आध्यास्कि जीवन के गुह् तथा वैयस्क्तक साधना के अचतररक्त सामान्य मानवीय सिंवेदनाओ िंसे सम्बस्न्धत छोटी-छोटी िीजो िंके मित्त्व को रकट चकया िै। उन्ोंनें दर्ाशया िै चक गुरुदेव ने चकस रकार अपनी साधना रतीयमानतः तुच्छ चवषयो िंसे आरम्भ की थी। वि गुरुदेव की दैनस्न्दनी से चनम्निांचकत स्वगृिीत अनुर्ासनो िंको उद्धृत करते िैं: "नमक का सेवन छोड दो। िीनी का सेवन छोड दो। मसाले का सेवन छोड दो। सब्जी का सेवन छोड दो। चमिश का सेवन छोड दो। इमली का सेवन छोड दो। यचद आप इन सब बातो िंका अभ्यास निी िंकरते तो आप सचे्चे साधु निी िंबन सकेंगे।" यि गुरुदेव की चवस्मयकारी सचिष्णुता का रिस्य िै चजसने उन्ें इतना मिान् बनाया। वि किते थे चक उनके चर्ष्य यि जान लें चक साधना को ध्यान कक्ष तक िी सीचमत निी िंरखना िै, सभी कायों को पूजा में रूपान्तररत करना िै तथा समूपूणश व्यस्क्तत्व का चदव्यीकरण करना िै। स्वामी जी ने इस आध्यास्कि रिस्य को लाइट् फाउण्ेटेन में एक बहुत िी स्मरणीय रैैली में रकट चकया िै। उन्ोंनें दर्ाशया िै चक आध्यास्कि सत्य चकस रकार र्ास्त्रो िंके

पृष्ठो िंके पुस्ष्पत पदसमिू न िो कर गुरुदेव जैसे सन्तो िंके जीवन के भाविाक तथा व्यविाररक तथ्य िैं।

मित्त्व की दृचष्ट से इस रकार्रद जीवनवृत्तिाक चनबन्ध के पश्चात् स्वामी जी की देवी-[illegible] अमूल्य [illegible] झाँकी।उन्ोनिं १९५३के नवरात्र-पूजाकाल में नौ भाषण चदये जो गुणिाक दृचष्ट से गम्भीर तथा गीतिाक थे। उन्ोनिं श्रोताओं को अपनी रै्ली में जो गम्भीर िोने के साथिी-साथ सूक्ष्म भी थी मानव-मन में गिराई से चनचवष्ट आसुरी स्र्कियों के स्वरूप को हृदयिंगम कराया। मिाकाली के रूप में भगवती माँ साधक को इन चवनार्कारी स्र्कियों को नष्ट करने की स्र्क रदान करती िैं। स्वामी जी ने चवनार् की चितकारी रचक्रया को रचतजैचवकी (एस्न्टबाइआचटक) के एक सुसिंगत आधुचनक उदिारण से स्पष्ट चकया। ये औषचधयाँ रबल जीवाणु-नार्क िैं, चकनु्तु जीवन-रक्षक भी िैं। चवनार् वि काष्ठफलक िै चजस पर सृजन कायश आरम्भ िोता िै। स्वामी जी ने मिाकाली के रूप में माँ की रथम तीन चदन की पूजा का उपसिंिार करते हुए लोगिों से अपने अन्दर के परु् की बचल देने का अनुरोध चकया। आसुरी स्र्कियों की पकड से एक बार छुटकारा पा लेने पर वि माँ की मिालक्ष्मी के रूप में पूजा करने का अचधकारी बन जाता िै। यि (मिालक्ष्मी) माँ का वि रूप िै चजसमें उनकी परवती तीन चदनिों में पूजा की जाती िै जो व्यस्क्त को अष्ट ऐश्वयों से सम्पन्न बनाती िै। चकनु्तु सद्भक्त केवल दैवी सम्पत् की िी अचभलाषा करते िैं। दैवी सम्पत् से सम्पन्न िो कर साधक अन्ततः मिासरस्वती की पूजा करने योग्य बन जाता िै। स्वामी जी ने बल चदया चक चमतभाषण, सत्यभाषण तथा मधुरभाषण मिासरस्वती की व्याविाररक पूजा िै। गुह् अथों में मिासरस्वती गुरु-रदत्त पचवत्र मि का साकार रूप भी िै। गुरु-मि का जप मिासरस्वती की सवोत्कृ ष्ट कोचट की पूजा िै। यि पूजा अन्त में साधक को परम ज्ञान से सम्पन्न बनाती िै। स्वामी जी ने दर्ाशया िै चक चकस रकार ऐसी रचक्रया िारा दर्म चदवस को मचिमामय चवजय-चदवस के रूप में राप्त चकया जा सकता िै। स्वामी जी िारा इस रकार सुन्दर रूप से रचतपाचदत नवरात्र-पूजा के अन्तरिंग आध्यास्त्मक तात्पयश को बाद में 'गाड ऐज मदर' (God as Mother- 'भगवान् का मातृरूप') के नाम से रकाचर्त चकया गया।

स्वामी जी बहुत पूवश सन् १९४६ में कौचर्क कृ तकनाम से गुरुदेव के चवषय में अनेक लेख चलखा करते थे। उन लेखिों में गुरुदेव के चदव्य व्यस्क्तत्व का गम्भीर ज्ञान व्यक्त चकया गया िै। गुरुदेव के ७० वें जन्मचदवसोत्सव (Platinum Jubilee) के अवसर पर सन् १९५७ में उन लेखिों को सिंकचलत कर 'वल्डश गाइड चर्वानन्द' (World Guide Sivananda) र्ीषशक से रकाचर्त चकया गया। अपनी चवर्द ज्ञानग्राह्ता के चलए चवश्रुत यि ग्रन् रत्येक साधक के चलए एक अमूल्य सिायक िै।

स्वामी जी चवचवध लोकचरय उपायिों से गुरुदेव के सन्देर् का रिार करने को उत्सुक थे। उदिारणाथश कौतुकागाररास्त्र लोगिों को रोचक ठोस ढिंग से रचर्चक्षत बनाने का रयास करता िै, अतः स्वामी जी ने इस रचवचध को आध्यास्त्मक उद्देश्यिों के चलए काम में चलया तथा योग-कौतुकागार की स्थापना की। उन्ोनिं गुरुदेव िारा उपयोग की हुई सामग्री तथा उनकी रारस्म्भक काल की तपश्चयाश के स्थानिों के चित्रिाक रचतरूपिों को एकत्र कर उन्ें सँजोया। उन्ोनिं सन् १९५८ में योग-कौतुकागार की सन्दचर्शका के रूप में 'चर्वानन्द ररगेचलया' (Sivananda Regalia) पुस्तक की रचना की। बारि अध्यायिों में चवभाचजत इस लघु पुस्तक में के वल चौरासी मुचित पृष्ठ िैं; चकनु्तु इसका चवषय, जो चक गुरुदेव के चरणिों में पुष्पापशण-रूप िै, रत्येक पाठक के चलए एक रोमािंचकारी अपूवश आध्यास्त्मक अनुभव का रूप रदान करता िै। इसमें स्वगाशश्रम का कुटीर १११ चजसमें गुरुदेव ने अठारि वषों तक घोर तप चकया था अथवा अन्नक्षेत्र चजसे उन्ोनिं आश्रमवाचसयिों तथा अभ्यागतिों की अचतचथ-सेवा के चलए स्थाचपत चकया था का वणशन ऐचतिाचसक स्थानिों के रूप में न कर गुरुदेव के चदव्यीकरण की साधना की एक चवषयपरक आधारर्ला के रूप में चकया गया िै।

स्वामी जी सदा िी नवयुवक छात्रो िंका चवरे्ष चलिाज रखते िैं। एक चवरे्ष भेटवाताश में, जो उन्ोनें १९५९ में एक छात्र-मण्डली से की चलचपबद्ध तथा 'थटूयूडेन्ट्स, स्स्पररटूयूअल, चलटरेर ऐण्ड चर्वानन्द' (Students, Spiritual Literature and Sivananda - 'छात्र, आध्यास्कि साचित्य तथा चर्वानन्द) के नाम से एक पुस्स्तका के रूप में रकाचर्त की गयी िै। उसमें वि उन्ें भारतीय सिंसूकृचत के देदीप्यमान रकार्-स्तम्भ बनने को रोत्साचित करते िैं। वि उन्ें गुरुदेव के 'ऐड्वाइस टु थटूयूडेन्ट्स' (Advice to Students - 'छात्रो िंको उपदेर्'), 'रैस्क्टस आव् ब्रह्मियश' (Practice of Brahmacharya - 'ब्रह्मियश-साधना'), 'रुअर वेज़ आव् सक्सेस इन लाइफ ऐण्ड गॉड् ररअलाइजेर्न' (Sure Ways of Success in Life and God-realisation-'जीवन में सफलता के रिस्य तथा भगवत्- साक्षात्कार'), 'एचथकल टीचिंग्स' (Ethical Teachings - 'नैचतक चर्क्षा'), 'थटूयूडेन्ट्स सक्सेस इन लाइफ' (Students' Success in Life - 'चवद्याथी जीवन में सफलता') तथा 'चडवाइन लाइफ फार चिल्डेरन' (Divine Life for Children -'बालको िंके चलए चदव्य जीवन-सन्देर्' जैसी पुस्तको िंके अध्ययन तथा नैचतक अनुर्ासन के दृढ़ आधार पर अपने जीवन का चनमाशण करने का परामर्श देते िैं। वि आग्रि करते िैं चक जीवन-रूपी वृक्ष को रचतचदन स्वाध्याय-रूपी वृचष्ट से सींिंने की आवश्यकता िै। वि उनके सममुख अिार, चविार तथा व्यविार की कुछ बहुत िी चववेकपूणश आदतो िंसे चनचमशत एकमुश्त कायशक्रम रसुतुत करते िैं तथा सूचित करते िैं चक इससे उनकी भौचतक उन्नचत तथा आध्यास्कि सफलता दोनो िंिी सुचनचश्चत रिेंगी।

जब १९४८ में गुरुदेव ने योग-वेदान्त-आरण्य-चवश्वचवद्यालय (अब चवद्यापीठ) की थथापना की तो स्वामी जी इस सिंथथा के कुलपचत तथा राजयोग के राध्यापक के रूप में इसके राण थे। उन्ोनें लगभग एक दर्क तक कक्षाएँ िलाथी तथा शृिंखलाबद्ध अत्यन्त चर्क्षारद तथा रेरक भाषण चदये चजन्ें १९६० में सिंकचलत कर 'योग' र्ीषशक के अन्तगशत रकाचर्त चकया गया। यि बृिदाकार ग्रन् कदाचित् उनकी सवोत्कृष्ट सफल कृचत िै चजसमें एक ऐसे व्यस्क्त के अिोन्नयनकारी रविनो िंका समावेर् िै जो एक अचभजात सन्त, एक बहुश्रुत चविान् तथा एक मिान् साधक का एकीकृत रूप था। जैसा चक पिले िी आभास कराया जा िुका िै यि मिान् ग्रन् िमें सनातन-धमश का उसके रुद्ध तथा व्याविाररक रूप में सन्देर् देता िै।

गुरुदेव की मिासमाचध के पश्चात् जब १९६५ में सत्सिंग तथा स्वाध्याय पर उनके लेख मरणोपरान्त पुस्तक के रूप में रकाचर्त हुए तो स्वामी जी ने उसमें पररचर्ष्ट के रूप में 'गुरुभस्क्त का मित्व' तथा 'स्वाध्याय क्ो' िं को सिंयुक्त कर चदया। इन पररचर्ष्टो िंमें उन्ोनें इस तथ्य पर बल चदया िै चक एक चवचर्ष्ट सन्त के साथ दीघशकाचलक सत्सिंग की िरम पररणचत गुरु-चर्ष्य के चदव्य सम्बन्ध में िोती िै। इस भाँचत सत्सिंग चजज्ञासु को जीवन के लक्ष्य की रास्प्त की चदर्ा के एक चनचश्चत रक्रम में ले जाता िै। स्वाध्याय भी साधक के चलए सवोपरर मित्त्व का िै; क्ोिंचक आध्यास्कि अध्ययन और पुनरध्ययन मात्र िी उसके मन में एक अचमट छाप छोडते िैं। स्वामी जी दृढ़तापूवशक किते िैं चक अकेले सत्सिंग तथा स्वाध्याय व्यस्क्त के समूपूणश आन्तर स्वरूप को रूपान्तररत कर सकते िैं और यचद मानचसक स्थथचत एक बार वास्तव में रुद्ध िो जाती िै तो ध्यान का एक िी रयास व्यस्क्त को चनचवशकल्प-समाचध में पहुँिा दैता िै।

स्वामी जी के उपदेर्ो िंकी एक पुस्स्तका की आवश्यकता चिरकाल से अनुभव की जा रिी थी। स्वामी रेमानन्द जी, जो स्वयिं एक उच्च कोचट के सन्त िैं, ऐसी पुस्स्तका को पूणश करने के अपने सिंकल्प को व्यक्त करने को बहुत पिले सन् १९५६ में स्वामी जी से चमले। अपने सजाचतयो िं के चलए करुणा से पूणश स्वामी जी के सेिंिमय बिं िंका रभाव पचवत्र चवलेपन अथवा पचवत्र उपर्ामक तेल-सा िोता िै। रेमानन्द जी ने यि देख कर चक स्वामी जी के पचवत्र ओष्ठो िंअथवा लेखनी से चनःसृत बिं िंमें आश्चयशजनक स्क्त िै परम पूज्य के कुछ उत्कृष्ट लेखो िंतथा रविनो िंका सिंकलन कर सन् १९६८ में उन्ें चनम्निंचकत सोलि अनुच्छेदो िंमें रसुतुत चकया : ब्रह्माण्ड की उत्पचत्त, चवराट् की पूजा, अन्तःकरण, सन्तोष, करुणा, दृढ़ चनश्चय, िररत्र, ब्रह्मियश, दानर्ीलता, चर्ष्टता तथा सौजन्यता, वाक्शस्क्त का सिंरक्षण, िेतावनी, धारणा तथा ध्यान, सिंचसस्द्ध, रधान-रस्तर तथा

आह्वान। इन सोलि रकरणो िंपर स्वामी जी के सन्देर् मानो चिदानन्द के व्यस्क्तत्व की सोलि चदव्य पिंखुचडयााँ िोािं यि 'चिदानन्दास चक्रज्म' (Chidananda's Chrism- 'चिदानन्द–स्न्द्रका') नामक पुस्तक परम पूज्य को उनके इक्यावनवें जन्मचदवस को भेंट की गयी। इस पुस्स्तका के पृष्ठो िं के माध्यम से स्वामी जी का रमुख सन्देर् िै र्रीर के 'रत्येक श्वास के साथ करुणा तथा रेम का स्पन्दन ।'

यि लेखक भी सन् १९७१ में िैदराबाद में आयोचजत चदव्य जीवन सम्मेलन के सत्रो िंमें सस्म्मचलत हुआ। उसने स्वामी जी के विाँ के भावोद्गारो िंका सिंकलन तैयार चकया। 'चिदानन्द स्पीक्स' (Chidananda speaks- 'चिदानन्द उवाि') नामक यि पुस्स्तका ितुथश अस्खल उडीसा चदव्य जीवन सम्मेलन, भवानीपटना में पूज्य िरण स्वामी जी को चन:रुल्क चवतरणाथश भेंट की गयी। आलोच्य रविनो िंमें स्वामी जी ने इस मूलभूत सत्य पर बल चदया िै : "भगवान् पर मिारा जन्मचसद्ध अचधकार िै। िम भगवान् में िैं। भगवान् िममें िैं। यि र्त-रचतर्त सत्य िै।"

उनके छप्पनवें जन्मचदवस के पुण्य अवसर पर 'मेसेज टु मैनकाइण्ड' (Message to Mankind-' मानवता से') पुस्तक का चवमोिन चकया गया। इसमें उनके भाषणो िं'मानवता से', 'योग', 'गुरु तथा चर्ष्य', 'साधना तथा धमश' तथा 'चदव्य जीवन' का समावेर् िै। वि इन रविनो िंमें िमसे इिलौचकक जीवन की मिती अथशवत्ता को भलीभााँचत समझने की मााँग करते िैं। वि बल देते िैं चक जीवन तथा साधना समानाथी िोनी िाचिए। स्वयिं जीवन एक आध्यास्िक रक्रम बनना िाचिए। िमारी समूपूणश सत्ता यज्ञ की भावना से सनूतृप्त िोनी िाचिए।

स्वामी जी के उपदेर् चकनी िंचवर्ेष अवसरो िंपर चवमोचित उनकी लघु पुस्स्तकाओ िंिारा भी मिें ज्ञात िोते िैं। ऐसी िी एक रिना 'स्वामी कृष्णानन्द' िै। स्वामी जी आश्रम में श्रद्धेय कृष्णानन्द जी के साथ तीस वषों से अचधक समय तक रि िैं तथा गुरुदेव के जीवनकाल से िी ये दोनो िं आध्यास्िक मिारथी चदव्य इकाई के आकार्दीप माने जाते थे। स्वामी जी कृष्णानन्द जी को वसुतुत: अपनी िी आिा समझते िैं। जब इस अभ्यासचसद्ध वेदान्ती की स्वणशजयन्ती सन् १९७२ में मनायी गयी तो स्वामी जी ने एक पुस्स्तका चलखी चजसमें उन्ोिंने कृष्णानन्द जी को एक चतचतकुषु, तपस्वी, चजतक्रोध तथा ज्ञानी के रूप में चिचत्रत चकया। गुरुदेव के वररष्ठ चर्ष्यो िंके साथ स्वामी जी कैसा सम्बन्ध रखते िैं, इसे यि पुस्स्तका सूचित करती िै। इसी भााँचत श्रद्धेय माधवानन्द जी के साठवें जन्मचदवस के पुण्य अवसर पर चवमोचित एक 'स्माररका' के अपने एक नूतन लेख में उन्ोिंने यि घोचषत कर अपना सम्मान-भाव व्यक्त चकया िै चक माधवानन्द जी क्रोध के उनूमूलन के चवषय में उनसे भी बढ़ कर िैं। स्वामी जी इस रकार िमें अपने वैयस्क्तक उदािरण िारा चर्क्षा देते िैं चक िमें चकस रकार अपने ितुचदशक् के भि व्यस्क्तयो िंके रचत चवनम्रता तथा रुिर रर्िंसोस्क्त के साथ रचतचक्रया करनी िाचिए।

सन् १९७३ में स्वामी जी की पुस्तक 'पाथ टु ब्लेसेडनेस' (Path to Blessedness - 'मुस्क्तपथ') का चवमोिन हुआ। यि पुस्तक िमें मिचषश पतिंजचल के अष्टािंग-योग का सार रसुतुत करती िै। उनके िी र्ब्दो िंमें, "यि (पुस्तक) आिसिंयम, मनोचनग्रि, धारणा तथा ध्यान के िारा अन्तरािा के साक्षात्कार का सरल चनरूपण 81 ^ prime prime उन्ोिंने अपने रविनो िंमें धारणा, ध्यान तथा समाचध की अचधक चवकचसत अवथथाओ िंकी अपेक्षा यम तथा चनयम के आधार की ओर अचधक ध्यान चदया िै। एक चनपुण योगाभ्यासी िोने के कारण उन्ोिंने आधुचनक मानवो िंकी मूलभूत त्रुचटयो िंको बहुत िी यथाथश रूप में देखा िै और इसचलए योग में उनकी सफलता के चलए व्याविाररक रचतकारक रसुतुत चकया िै।

स्वामी जी ने अपनी पुस्तक 'ए गाइड टु नोबल चलचविंग' (A Guide to Noble Living - 'मिान् जीवन की पथ-रदचर्शका') में साधको िंका ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट चकया िै चक समूपूणश जीवन िी योग िै। योग चनयतकाचलक ध्यान तक िी सीचमत निी िंिै। यि र्रीर दूसरो िंके सेवाथश िै। उनके चलए व्याविाररक जीवन का रुिर मानवीकरण तथा चदव्यीकरण वास्तचवक

योग ि ै। अतः वि लक्ष्य तक पहुँिने का उपयुक्त मागश दर्ाशते िैं: "नैचतकता से आरम्भ कर सन्तत्व से गुजरते हुए ईश्वरपरायणता की पराकाष्ठा पर पहुँि जायें 1 ^ prime prime उनका कथन ि ै चक चदव्य जीवन स्वभावतः िी योग पर आधाररत तथा वेदान्त से अनुराचणत जीवन ि ै। वि साधको िं से अपने अन्दर इस रकार की योगाचग्न को सदैव रज्वचलत बनाये रखने का अनुरोध करते िैं। वि व्याविाररक साधना पर अपने रविन में चनम्नांचकत सिंकेत रसुतुत करते िैं:

(१) मन को कभी भी पूणशतः बचिमुशखी न िोने दें।

(२) सतत चविार तथा उन र्ास्त्रो िंके सतत स्वाध्याय िारा यथोचित मनोभाव उत्पन्न करें जो सिंसार की असारता, सिांसाररक पदाथों की चनरथशकता तथा समग्र सृचष्ट के नश्वर स्वरूप को दर्ाशते िैं।

(३) मन को भगवान् पर केस्न्द्रत रखें। सदा भगवन्नाम का मानचसक जप करें। नाम-स्मरण करें।

(४) जब वृचत्त उठे तो उस ओर ध्यान न दें, उसे चवलीन िो जाने दें।

(५) जप, कीतशन, राथशना, सत्सिंग तथा स्वाध्याय के िारा वासना को समाप्त करें।

(६) वासनाओ िंको कम करें तथा सिंकल्पर्स्क्त को बलवान् बनायें ।

(७) मन को समझें, मन का चवश्लेषण करें तथा इस यिावली का सम्यक् पररिय तथा उसे चनयस्ि्त करने की जानकारी राप्त करें।

(८) कामनाओ िंके रकट िोने पर उन्ें पूणश न करें।

(९) अन्तरावलोकन तथा आिचवश्लेषण करें तथा ऐसा करते समय अपने रचत कठोर रिें।

(१०) सत्यता, करुणा तथा र्ुचिता-ये वे मूलभूत बातें िैं चजन पर भौचतक तल की सभी रवृचत्तयाँ अवलस्म्बत िोनी िाचिए।

(११) चमतिािारी जीवन यापन करें।

वि सूयोदय से सूयाशस्त तक व्यस्त रिने वाले आधुचनक लोगो िंके चलए आि-सिंसूिन का चदव्य मनोचवज्ञान चनधाशररत करते िैं: "अपने खोये हुए पैतृक अचधकार को, अपने सत्स्वरूप को स्मरण करें तथा बार-बार उसका पुनः दावा करें।" वि साधना के पूणश क्रम के रूप में चनम्नांचकत तीन बातो िंका सुझाव देते िैं :

(१) कोई भी कायश आरम्भ करने से पूवश यि कल्पना करें तथा अनुभव करने का रयास करें चक जो कुछ भी आप करने जा रिे िैं वि रभु का भव्य भजन िै।

(२) कायश करते समय, समय-समय पर यि अनुभव करने का रयास करें चक वि कायश आपके िारा निी िंिो रिा िै, चक आप चनचमत्त मात्र िैं और रभु की सवशर्स्क्तमती र्स्क्त िी आपके माध्यम से कायश कर रिी िै।

(३) जब आप कायश समाप्त कर िुकें तो उसे रभु को अपशण के रूप में करें। आपका अस्न्तमकायश पूरे मन से अपशण-कृष्णापशण िो।

परम श्रद्धेय स्वामी जी ने 'ए गाइड टु नोबल चलचविंग' (A Guide to Noble Living) में जो–कुछ कि ि, उसे सिंचक्षप्त रूप में 'चद चपस्लग्रम रोड' (The Pilgrim Road) में रसुतुत चकया गया ि चजसका चवमोन उनके िीरक जयन्ती-मिोत्सव के पुण्य अवसर पर चकया गया था।

चवश्वभर के लाखो िंभक्तो िंसे चनकट का वैयस्क्तक सम्पकश बनाये रखने के चलए स्वामी जी रथम तो 'चवज़डम लाइटू' (Wisdom Light) पचत्रका में 'परमाध्यक्ष की ओर से' र्ीषशक के अन्तगशत तथा तत्पश्चात् 'द चडवाइन लाइफ' (The Divine Life) पचत्रका में 'चर्वानन्दाश्रम पत्र' र्ीषशक के अन्तगशत खुले पत्र चलखते रिे िैं। स्वामी जी ने इन पत्रो िंके माध्यम से भक्तो िंको अपनी यात्राओ िंकी सभी घटनाओ िंसे पूणशतः अवगत बनाये रखा ि। इन पत्रो िंका सवाशचधक मित्त्वपूणश पक्ष ि साधको िंसे उनके आरु चवकास के चलए उनका अपरोक्ष रेरणारद आग्रि। इसमें वि चवश्व के चवचभन्न भूभागो िंके अपने यात्राकाल में अन्य मिान् आध्यास्कि चवभूचतयो िंके साथ चकये हुए अपने सत्सिंग का लाभ भी उन्ें देते िैं। इनमें से कुछ पत्रो िंका सिंकलन सन् १९७४ में 'एडवाइस आन स्स्पररटूयूअल चलचविंग' (Advice on Spiritual Living) र्ीषशक के अन्तगशत चकया गया था।

चजज्ञासुओ िंको अपने साधना-काल में अनेक समस्याओ िंका सामना करना पडता ि। स्वामी जी ने अपनी पुस्तक 'गाइड लाइि टु इलूयूचमनेर्न' (Guidelines to Illumination - 'ज्योचतपथ की ओर') में, चजसका चवमोन १९७३ में हुआ था, उन्ें इन बाधाओ िंको पार करने के चलए अनेक रभावर्ाली चवचधयाँ चनधाशररत की। इस पुस्तक के चवषय का ियन स्वामी जी के भाषणो िंसे चकया गया ि चजनमें से अचधकिंर् भाषण सन् १९६९-७० में चवदेर् में चदये गये थे। स्वामी जी इस पुस्तक में रबोचधत करते िैं: "चदव्यता आपका जन्मचसद्ध अचधकार ि, अतः चनरन्तर साधना िारा उसे रसुफुचटत करें। भगवत्प्रास्प्त जीवन का परम लक्ष्य ि। इस लक्ष्य से रचित मानव-जीवन व्यथश ि, सार-रचित ि।" उन्ोिंने चजज्ञासुओ िंतथा योगाभ्याचसयो िंको मिोक चवस्स्द्धयो िंसे दूर रिने के चलए सावधान चकया ि। मानव जाचत के चलए उनका उत्कृष्ट उपदेर् ि : "इस चवश्वरूप ईश्वर को रणाम करने के चलए सूयोदय से पूवश िी चनिा त्याग दें। दैचनक ियाश आरम्भ करने से पूवश उसे रणाम करें, श्रद्धा से झुक जाये। पूजा-भाव से चदवस को भर दें।"

स्वामी जी ने लोगो िंतक सनातन धमश का र्ाश्वत सन्देर् पहुँिाने के चलए भारतवषश के कोने-कोने तथा मित्त्वपूणश थथानो िंतक पहुँिने का अथक रयास चकया ि। सन् १९७५ के अस्न्तम चदनो िंमें उन्ोिंने भिंजनगर के चनकट की ग्रामीण जनता के सम्मुख कचतपय भाषण चदये तथा उन्ें अनुराचणत करने वाली आध्यास्कि स्क्त रदान की। इन भाषणो िंका उचडया-भाषान्तर भिंजनगर की चदव्य जीवन सिंघ र्ाखा ने 'साधना' नामक पुस्तक के रूप में रकाचर्त चकया ि। इन भाषणो िंमें उन्ोिंने भोले-भाले ग्रामीण लोगो िंसे धमश, अथश, काम तथा मोक्ष की रास्प्त के चलए पुरुषाथश करने का अनुरोध चकया ि। वि उनसे अपने सामाचजक जीवन के त्याग की माँग निी िंकरते िैं।

स्वामी जी ने राच्य तथा पाश्चात्य जगत् के असिंख्य चजज्ञासुओ िंको अतीव कृपापूवशक स्क्तर्ाली मि-दीक्षा से दीचक्षत चकया ि और इस रकार उन्ें चदव्य नाम की साधना के चलए आवश्यक साधन रदान चकया ि जो वतशमान युग में सवाशचधक रभावकारी आध्यास्कि अस्त्र ि। साधना के इस सन्दभश में उनका रवचन चिन्दी में 'एडवाइस टु द इचनचर्एटेड् चडसाइपल्स' (Advice to the Initiated Disciples –'नवदीचक्षतो िंको उपदेर्' नाम से रकाचर्त चकया गया ि। उन्ोिंने चर्ष्यों िंको अपनी दैचनक साधना में चनम्निंचकत बातो िंको ध्यान में रखने के चलए कि ि :

(१) यि दृढ़ चवश्वास रखें चक कचलयुग में मि जप से भगवत्साक्षात्कार िोता ि।

(२) यि जान लें चक गुरु भगवान् ि। नाम तथा नामी अचभन्न िैं।

(३) रचतचदन नूयूनाचतनूयून ग्यारि माला जप करें।

(४) दैचनक जप को कभी बन्द न करें।

(५) इष्ट-मि को गुप्त रखें।

(६) सप्ति में एक बार रते्येक मि-दीक्षा-चदवस को ओिंचर्क उपवास करें। वषश में एक बार मि-दीक्षा चतचथ को पूणश उपवास करें।

(७) सद्गुणो िंका अजशन तथा दुगुशणो िंका उनूमूलन करें।

(८) अपने इष्ट-देवता का दर्शन सभी देवी-देवताओ िंमें करें तथा यि जानें चक ईश्वर साकार तथा चनराकार दोनो िंिी िै।

(९) ईश्वर तथा गुरु की चवद्यमानता सदा अनुभव करें।

(१०) रते्येक दीचक्षत चर्ष्य को रुचिता तथा चनष्कल्मषता का अभ्यास करना िाचिए।

खुदाश रोड में आयोचजत एक के्षेत्रीय चदव्य जीवन समे्मेलन में स्वामी जी ने चिन्दी में 'ध्यान के चसद्धान्तो िंतथा रचवचध' पर शृ्रिंखलाबद्ध तीन भाषण चदये। इन भाषणो िंमें उन्ोनिं साधको िंसे आिररक पचवत्रता तथा मोक्ष की ज्वलन्त कामना बनाये रखने का अनुरोध चकया। तभी ध्यान के चलए अपनायी गयी रचवचध फलरद िोगी। स्वामी जी ने किा- "चत्रकाल में चवद्यमान सस्च्चदानन्द-सागर को मन में स्पष्ट रूप से देखने का रवास करें। अपने सभी वैयस्क्तक गुणो िंसे युक्त आपके इष्टदेव लिर के रूप में इस सागर से रकट िोते िैं। उनके साकार रूप का दर्शन तथा उनके मि का जप करें। अपने सभी चवचवध चविारो िंको उनके िरण कमलो िंमें मानचसक रूप से अचपशत करें। ध्यान की समास्प्त पर अनुभव करें चक आपके इष्टदेव एक बार पुनः उस सस्च्चदानन्द-सागर में चवलीन िो गये िैं। कुछ क्षणो िंतक मौन रखें। तत्पश्चात् सनुतुचलत मन से ध्यान-कक्ष से बिार चनकलें। इस अभ्यास के तुरन्त बाद िी सिंसाररक रवृचत्तयो िंमें न उलझ जायें। इस ध्यानाभ्यास को आरम्भ करने से पूवश कुछ क्षणो िंतक अपने गुरु के रूप पर धारणा करें, उनके आर्ीवाशद की यािना करें और तब अपने इष्टदेव पर ध्यान करना आरम्भ कर दें।" िीरक जयन्ती-समारोि के अवसर पर श्री सी. एस. दास िारा 'ध्यान-साधना' र्ीषशक के अन्तगशत रकाचर्त इन भाषणो िंके उचडया-भाषान्तर में इन सिंकेतो िंका समावेर् चकया गया िै।

एक लघु पुस्स्तका 'चद आइ आव द िररकेन' (The Eye of the Hurricane - 'रभिंजन-नेत्र') चजसमें लास ऍचजलेस में चदये गये स्वामी जी के रविन का समावेर् िै, का चवमोिन सन् १९७६ में हुआ। इसमें वि उपदेर् देते िैं चक जीवन मृतुयु की ओर मन्द गचत से लिने वाली एक सतत रचक्रया िै, अतः इसका पूणश सदुपयोग िोना िाचिए। जीव को स्वचणशम कुिंजी दी गयी िै और यि स्वचणशम कुिंजी एक चवलक्षण चनयम िै जो सारे ब्रह्माण्ड को चनयस्ित चकये िै चजसे कमश का चनयम किते िैं। स्वामी जी चजज्ञासुओ िंसे अनुरोध करते िैं चक अपने बचिगाशमी स्वभाव का पररवतशन करें। उसके समूपूणश आिरण के आदर्श के थथान पर नवीन आिरण के आदर्श को थथाचपत करें जो आध्यास्िक अज्ञान का चवषघ्न िो। मन के अर्ान्त स्वभाव को योगाभ्यास िारा अनुर्ाचसत चकया जाता िै। मन के समु्मुख एक चनचश्चत केन्द्र-चबन्दु रसुतुत चकया जाता िै। रारम्भ में यि केन्द्र-चबन्दु एक चदव्य पदाथश, चनराकार सत्ता की साकार कल्पना िोता िै। यिााँ मन समाचित तथा चदव्य बन जाता िै। उस पूणश सिंचवलयन की स्थचत में रिस्यमयी समाचध की अवथथा आती िै। चफर मन अमन बन जाता िै। परम सत्ता में मन का चवलयन िी मोक्ष िै। यि केन्द्र-योग िै, रकार्पूणश िैतन्य-योग िै। िठयोग तथा ध्यान की अनेक रचवचधयााँ पररचध के योग तथा वृत्त-के्षेत्र के योग िैं; चकनुतु इस केन्द्र-योग ईश्वर में केन्द्रीभूत तथा सत्य में केन्द्रीभूत िोने की िेतना के योग के

चलए चकसी चवरे्ष थथान, धूपबत्ती, मखर्ाला अथवा वेदी की आवश्यकता निी िंिै। यि नविं युग का योग िै चजसका उपदेर् चिदानन्द आधुचनक मानव को देते िैं।

स्वामी जी की 'लेक्वसश आन राजयोगा' (Lectures on Raj Yoga) पुस्तक 'पाथ टु ब्लेसेडनेस' (Path to Blessedness -' मुस्क्तपथ') पुस्तक की मूल्यवान समूपूरक िै। इस पुस्तक में योग-र्ास्त्त-चनकेतन, बेरूत में सन् १९७३ की वसन्त ऋतु में आध्यास्िकि साधको िंकी एक टोली के समुमुख चदये हुए रविनो िंका समावेर् िै। इसमें उन्ोनिें पतिंजचल के योगसूत्रो िंकी कोई टीका अथवा व्याख्या निी िंरसुतुत की िै, वरन् योग के केवल व्याविाररक उपदेर् चदये िैं चजनकी सियता से व्यस्क्त स्वयिं अपना मनचश्चचकत्सक बन सकता िै।

सचे्चे चजज्ञासुओ िंको चदये गये स्वामी जी के उपदेर्ो िंतथा सन्देर्ो िंको 'इटनशल मेसेजेज' र्ीषशक के अन्तगशत उनकी िीरक जयन्ती के मिंगलमय अवसर पर रकाचर्त चकया गया िै। उनका रमुख उपदेर्, उनके सन्देर्ो िंका मूल-स्वर रत्येक व्यस्क्त को सवशर्स्क्तमान् रभु की सवशव्याचपता अनुभव करने के चलए आह्वान िै। वि सदा िी लोगो िंको पूजा के मनोभाव से, ईश्वर को समपशण-भाव से कायश करने का उपदेर् देते िैं। यिी भारतवषश का उसके रेररत दूतो िंके माध्यम से चदया गया मानव को मोक्ष रदान करने वाला मि िै, र्ाश्वत सन्देर् िै।

स्वामी जी के कुछ उत्कृष्ट उपदेर्ो िंको श्री वी. एल. नागराज ने १९७४ में चिदानन्द िीरक जयन्ती-माला के अन्तगशत पााँि पुस्स्तकाओ िंमें सम्पाचदत चकया िै। स्वामी जी की र्ाश्वत चदव्य तिना, कमशयोग के रिस्य की मागशदर्शक रूपरेखा, व्याविाररक वेदान्त पर उनके उपदेर्, र्ुचिता के चलए राथशना में उनकी आथथा तथा गम्भीरतम गुरुभस्क्त को इस माला में अपूवश ढिंग से सााँजोया गया िै जो पाठको िंको एक अथश में पूज्यास्पद स्वामी जी के उपदेर्ो िंका सारतत्त्व रदान करती िैं।

'पाथ चबयान्ड सारो' (Path Beyond Sorrow) में पाश्चात्य जगत् के चजज्ञासुओ िंके चलए अमूल्य मागशदर्शन समाचवष्ट िै। स्वामी जी ने सन् १९६० में गुरुदेव के चनजी रचतचनचध के रूप में नयी दुचनया (अमरीका) में कई भाषण चदये तथा उस भौचतकवाद-रधान वातावरण में आध्यास्िकि लिल उत्पन्न कर दी। इन रविनो िंने पुस्तक के कलेवर का रूप ले चलया जो योग-सम्बन्धी सभी भ्रान्त धारणाओ िंको चवदूररत करती तथा स्वामी जी के अन्तज्ञाशनोपलब्ध अनुभव की दृचष्ट से उस (योग) का रमुख अथश रसुतुत करती िै। वि मानते िैं चक योग एक मनोभौचतक चवज्ञान मात्र निी िं िै, अचपतु यि अध्याि-चवज्ञान िै चजसका यचद अभ्यास चकया जाय तो यि चनम्न रकृचत को चदव्य तिना में रूपान्तररत कर देता िै।

योगासन मूलाथश में योग निी िंिै। तथाचप वे योग के अिंगो िंमें से एक िैं। ये चजज्ञासु को र्ारीररक तथा मानचसक स्वास्थ्य की रास्प्त के चलए तैयार करते िैं। स्वामी जी ने ये चनदेर् अपनी पुस्तक 'रैस्क्टकल गाइड टु योगा' (Practical Guide to Yoga) में अपनी साठ वषश की आयु में चदये थे। उन्ोनिें इस वृद्धावथथा में भी इस सन्दचर्शका के चलए योगासनो िंका यथावत् रदर्शन चकया। उन्ोनिें दर्ाशया चक खडे िो कर तथा बैठ और लेट कर की जाने वाली चर्चथलन को सभी रचवचधयााँ मनुष्य के अन्नमय, राणमय तथा मनोमय कोर्ो िंमें चकस रकार सामिंजस्य उत्पन्न करती िैं।

स्वामी जी की चर्क्षाएाँ पचत्रकाओ िंतथा पुस्तको िंमें रकाचर्त हुई िैं, उन्ें टेप (फीते) तथा ग्रामोफोन रेकाडो िंपर अचभलेखन चकया गया िै तथा वे आकार्वाणी और दूरदर्शन के माध्यमो िंसे रसाररत की गयी िैं। स्वामी जी ने गुिाओ िंतथा आश्रमो िंमें उपदेर् चदये िैं। चवर्ाल जन-समूि के समुमुख ओजस्वी भाषण चदये िैं तथा चजज्ञासुओ िंके साथ की भेंटवाताशओ िंमें ज्ञान-मुक्ताएाँ रदान की िैं। उन्ोनिें धमश-पररषद् में मूल चसद्धान्तो िंपर भाषण चदये, चर्वानन्द भ्रातृ सिंघ के गुरुभाइयो िंको उन्नयनकारी सत्सिंगो िंमें सम्बोचधत चकया, रूचढ़वादी चविारको िंको र्ास्त्रो िंके गुह् अथश को व्यक्त चकया तथा सवोपरर बात यि िै चक चजन्ें उनके उपदेर्ो िंकी आवश्यकता थी तथा चजन्ोनिें उनसे

सान्त्वना की यिाना की उन सभी लोगिों को अपने वैयस्क्तक सने्देर् तथा आर्ीवाशद समे्प्रेचषत चकये। चनस्सने्दि वि चवश्व के पथरदर्शक िैं।

स्वामी के उपदेर् आश्रमिों तथा चर्ष्योंं तक िी सीचमत निीं िैं। चिदानन्द का भण्डार जाचत, पन्, धमश तथा चलिंग का चविार चकये चबना सभी लोगिों के चलए खुला िै; वि सभी चजज्ञासुओिं के चलए समान रूप से उत्कस्ण्ठत िैं। चिदानन्द के उपदेर् चवतण्डावादी अनथशक र्ब्िों से बोचझल निीं िैं। उनमें पस्ण्डताऊ सिंसृ्कत उद्धरणिों का चवरामचिह्न निीं लगा िै। उनका झुकाव अिोज्ञानपरक चनराधार कल्पनाओिं की चदर्ा में निीं िै। चिदानन्द-साचित्य घनीभूत ज्ञान से चनसृ्सृत चनत्य रु्द्ध पावन सररता िै, चिमालय के र्ीषशथथ सन्त चर्वानन्द से चनगशत वास्तचवक ज्ञान-गिंगा िै। यि चवश्वभर के लाखिों लोगिों की चपपासा को र्मत करती हुई चनरन्तर आगे-आगे रवाचित िोती रिती िै।

चिदानन्दअपनेकोअगम्यऊाँिाइयोंपररचतचष्ठतनिींरखतेिैं।विरते्येकसामान्यमत्यश मानव के चमत्र तथा पथरदर्शक के रूप में उसके स्तर तक नीिे उतर आने को, झुकने को सदा तैयार रिते िैं। उनके भाषण औपचाररक धमोपदेर्िों की भााँचत निीं िोते िैं। वे चनरपवाद रूप से सभी लोगिों के रचत अपरोक्ष, चनष्कपट अभ्यथशनाएाँ िैं। किा जाता िै चक उत्कृ ष्ट कचवता व्यस्क्त के समझने के पूवश िी अपना भाव रकट कर देती िै। ऐसा िी चिदानन्द का भाषण भी करता िै। बौस्द्धक रचक्रया िारा हृदयिंगम चकये जाने से पूवश िी वि हृदय में रवेर् कर जाता िै तथा चजज्ञासु श्रोताओिं तक तत्काल सने्देर् पहुाँि जाता िै। ऐसा इसचलए िोता िै चक उनके ज्ञानमय र्ब् पूणश अनुभूचत से रकट िोते तथा रेम और करुणा के दबाव के कारण फू ट चनकलते िैं।

चिदानन्द ने अपना कोई मत निीं थथाचपत चकया िै। उन्ोिंने अपने को भगवान् तथा गुरुदेव के िाथो िंकापूणशव्यस्क्तकता-रचितउपकरणबनाडालािै।विअपनेसभीलेख,भाषणतथा राथशनाएाँ गुरुदेवकेनामसेआरम्भकरतेिैं।अपनीनवीनतमरिना'रैस्क्टकलगाइडटुयोगा' (Practical Guide to Yoga) में 'मेरे योगी गुरु ब्रह्मलीन श्रदे्धय स्वामी चर्वानन्द जी मिाराज के िरणिों को श्रद्धामय नमस्कार' जैसे र्ब्िों से आरम्भ तथा अपनी रीीनतम रिना 'लाइट् फाउणे्टन' (Light Fountain -'आलोक-पुिंज') के 'यिााँ आपके गुरु, आपके स्वामी, चवश्व के सने्देर्वािक तथा नागररक िैं' जैसे र्ब्िों से समापन चकया िै। सदा तथा सभी अवसरिों पर ऐसा सम्बोधन करने की उनकी थथायी रै्ली रिी िै। वि अपने चनजी उदािरण िारा समपशण की सच्ची भावना की चर्क्षा देते िैं। उनके अपने िी र्ब्िों में "चर्वानन्द की अलक्ष्य आध्यास्िक उपस्थथचत अब भी मेरा पथरदर्शन कर रिी िै।"

उनके सभी लेखिों में एक सामान्य चवचर्ष्टता पायी जाती िै। वि सेवा तथा परोपकार के स्वर से आरम्भ करते िैं, भगवन्नाम के स्मरण पर बल देते िैं, चजज्ञासुओिं से योग के िारा चविार-र्स्क्त के अध्यिीकरण का अनुरोध करते िैं तथा अपने सने्देर् को वेदान्त के परम सत्य की ओर ले जाते िैं। इसका समग्र रभाव सदा िी आश्चययशकर, पराभूतकारक तथा परम सन्तोषजनक िोता िै।

सेवा, रेम, दान, पचवत्रता, ध्यान, साक्षात्कार; चर्वानन्द के ये सारगचभशत रभावर्ाली उपदेर् चिदानन्द की सभी रिनाओिं में चनचवष्ट िैं। भगवान् को सतत स्मरण करें। सद्गुणिों का अजशन करें। सभी रवृचत्तयों का अध्यिीकरण करें। गुरुदेव के उपदेर्िों के ये तीन मूल तत्त्व उनके सभी लेखिों में रजत-सूत्र की भााँचत सचन्नचवष्ट िैं तथा अन्तस्थथत भगवान् के परम सरल तथा ऋजु मागश को रकाचर्त करते िैं।

ादिश अध्याय

चदव्य जीवन

"सवपगुह्यतमां ़ूिये:शृणु मे परमांवचे:

-समूपूणश गोपनीयो िंसे भी अचतगोपनीय मेरेपरमरिस्यमयविनकोचफरसुनो"िं (गीता: १८/६४) ।

स्वामी चिदानन्द का इचतवृत्त मानव-व्यस्क्तत्व के पूणश चदव्यीकरण का इचतवृत्त िै। यि मौन सेवा तथा पूणश अनिर्िंसा का इचतवृत्त िै। अतः चिमालय का यि अरचतम सन्त अपने वैयस्क्तक अनुभव के गम्भीर रमाण तथा अपरोक्ष अन्तज्ञाशनोपलब्ध बोध के आधार पर चजज्ञासु-जगत् में यि घोचषत कर सका, "योग मात्र चनचवशकल्प-समाचध की अवथथा में िी र्निीं िै। यि जीवन के रत्येक क्षण में िै।" उनका जीवन चनष्कलिंक ईश्वरपरायणता से रचतक्षण रदीप्त रिता िै।

चिदानन्द का जीवन पचवत्र सेवा की गाथा िै। सेवा तथा आत्याग उनके जीवन की रमुख चवचर्ष्टताएँ री िैं। उनका सिंस्कार ऐसा था चक श्रेष्ठ आध्यास्कि सद्गुण उनके चलए सिज सिंकल्प-व्यापार थे। इस भाँचत इस चन:सीम करुणापूणश सन्त ने अपनी चकरोरावथथा में िी उन भाग्यिीन कुचष्ठयों के चपता तथा चिचकत्सक िोने के भयजनक कायश का उत्तरदाचयत्व अपने ऊपर ले चलया चजन्ें उनके सभी सजाचतयों ने ठुकरा चदया था और चजनको वे घृणा करते थे। औदायश, पचवत्रता तथा करुणा उनमें सिज रूप से आये। भौचतक समृस्द्धमय जीवन के चविारिों से वि कभी भी रलुब्ध र्निीं हुए। उनका जन्म एक सम्पन्न पररवार में हुआ तथा राजकु मारिों की भाँचत उनका पालन-पोषण हुआ; चकन्तु धन-सम्पचत्त तथा सांसाररक रचतष्ठा उनके चलए अथशिीन थी। यौवनावथथा में भी वि इस्न्द्रयों के पार् से बहुत ऊपर थे। सेवा तथा आत्याग िी उनके सुख-साधन थे। सन्तों की सिंगचत िी उनकी एकमात्र लालसा थी। ध्यान उनकी एकमात्र वासना थी। पूजा िी उनका एकमात्र आमोद था।

इस जन्मजात चसद्ध को अपने नवयौवन-काल में यि अनुभव हुआ चक वि सिंसाराचग्न में झुलस रिे िैं। अतः उपयुक्त समय आते िी उन्ोनिें तत्काल अपना घरबार त्याग चदया। वि एक पूचणशमा के पुण्य चदवस को ऋचषकेर् में पावनी गिंगा के तट पर अपने गुरुदेव से चमले। उन्ोनिें गैररक पररधान धारण कर चलया तथा पुरातन सिंन्यास-आश्रम से सम्बद्ध िो गये। एक दर्क से अचधक समय तक वि उग्र सेवा तथा साधना में चनमग्र रिे तथा एक ज्ञानी के रूप में चवभाचसत हुए। इसके आगामी दर्क में गुरुदेव के जीवनकाल में उन्ोनिें नयी दुचनया में योग तथा वेदान्त का सन्ेदेर् पहुँिाया। विाँ से वापस आ कर वि स्वेच्छा से एक एकाकी पररव्राजक सिंन्यासी का जीवन-यापन करते हुए एकान्तवास में चनमग्न िो गये। वि सिंन्यासाश्रम से भी उदासीन िो िले। वि भगवान् पर चनभशर रि कर ईश्वरीय िेतना की भूचमका में आनन्दपूवशक चनवास करते हुए सभी पारिों से मुक्तिोएकअवधूतकीभाँचतस्वच्छन्दचविरणकरतेथे।

इस अवथथा में भगवचदच्छा उन्ें लोक-सिंग्रि की, उतूकृ ष्ट आध्यास्कि सेवा की भूचमका में वापस लायी। गुरुदेव स्वामी चर्वानन्द ने अपना भौचतक कलेवर त्याग चदया तथा वि परम सत्ता में चवलीन िो गये। अतः गुरुदेव के चदव्य चमर्न के नेतृत्व का कायश उनके िुने हुए चर्ष्य के कन्धिों पर पडा। इस भाँचत सिंसार का त्याग करने वाला व्यस्क्त आधुचनक जगत् में सवाशचधक सचक्रय धाचमशक कायशकताश बना।

चिदानन्द सभी समयो िंतथा सभी अवसरो िंपर अश्रान्त सेवा करते िैं। वि रभु की इस चवश्व-रूप में सेवा करते िैं। वि अपने गुरुदेव के चदव्य चमर्न के माध्यम से सेवा करते िैं। वि राममय जगत् में चनवास करते िैं। राम उनके जीवन में क्ोकिंर आये, यि रत्येक चजज्ञासु के चलए एक चर्क्षारद पाठ िै। वि उनके जीवन में उनकी बाल्यावथथा में कोदण्ड राम की मूचतश के रूप में आये चजनकी वि पूजा करते तथा चजनमें अपनी पूणश सत्ता रखते थे। एक परवती अवथथा में वि उनके पास ितभाग्य कुचष्ठयो िंके रूप में आये। तत्पश्चात् एक ऐसा समय आया जब वि रामदास के उत्प्रेररत बी् िंके रूप में उनके समक्ष रकट हुए। तदनन्तर रामकृष्ण परमिंस का जीवन अपनी ओर सिंकेत करते हुए एक आदर्श के रूप में उनके समुमुख चदखायी पडा। सन्तो िंतथा रिस्यवाचदयो िं
ने उन्हें आर्ीवाशद चदया। अन्त में भगवान् ने अपने सद्गुरु के रूप में उन्हें दर्शन चदया। चर्वानन्द उनकी सत्ता में िी रवेर् कर गये। वि गुरुभस्क्त से आपूररत िो उठे। चर्वानन्द उनमें वास करते थे और वि चर्वानन्द में वास करते थे। दोनो िंचमल कर एक बन गये। स्वामी कृष्णानन्द जी के बी् िंमें: "उन्होंने (चिदानन्द ने) श्री गुरुदेव से जो ररक्थ आसात् चकया िै, वि र्रचतर्त िै।
मिं उनमें गुरुदेव के सभी िमत्कारिक तथा आश्चयशकारक गुण दृचष्टगोर िोते िैं।"

'सवं राममयां जगत्', 'सवं डवष्णुमयां जगत्', 'वासुदेवेः सवपम्', 'सवं खन्तिदां ब्रह्म'
- ये उनके जीवन के सूत्र तथा जीवन में आने वाली सभी पररस्थथचतयो िंके नुसखे िैं। वि समग्र चवश्व को ईश्वर की अचभव्यस्क्त के रूप में देखते िैं। यि सिंसार गुरु िै। जीवन चर्ष्यत्व िै। अतः व्यस्क्त को अपना जीवन सिंसार की सेवा करने तथा स्वयिं सिंसार से ज्ञान ग्रिण करने के चलए यापन करना िै। यि धमश िै जो व्यस्क्त को मोक्ष तक पहुँिाता िै। यिी मानव के रचत चिदानन्द के सन्देर् का मूल-भाव िै। वि इस सन्देर् को अपने व्यस्क्तगत उदािरण तथा गूँजने वाले आदेर्ो िंके माध्यम से समेप्रेचषत करते िैं। अतः उनमें वतशमान गुरुपन की भावना ने चवनम्र चर्ष्यत्व के जीवन को वरण चकया िै। वि अपने को सदा गुरुदेव का सेवक मात्र मानते िैं। वि अपने चर्ष्यो िंको गुरुदेव का चर्ष्य मानते िैं। इतना िी क्ो,िं वि उन्हें साक्षात् नारायण समझते िैं। वि आधुचनक काल के सन्तो िंके िूडामचण िैं, चकन्तु वि सबके सामने नतमस्तक िोते िैं। वि न केवल अपने गुरुजनो िंको अचपतु अधमाधम लोगो िंको भी साष्टािंग रणाम करते िैं।

वि इस पाचथशव जगत् के सभी राचणयो िंकी अक्षय करुणा के साथ सेवा करते तथा उनसे रेम करते िैं। जब वि आध्यास्कि उपलस्ब्धयो िंकी पराकाष्ठा पर पहुँि गये तो चनरथशक बातो िंमें करुणाजनक रूप से उलझे हुए अपने सजाचतयो िंके दयनीय दृश्य देख कर उनका हृदय िचवत िो गया। उन्होंने सभी रकार की असुचवधाओ िंतथा कचठनाइयो िंपर ध्यान न दे कर उन लोगो िंको मुक्त कराने के कायश के चलए अपने को समचपशत कर चदया। उन्हें ज्ञात था चक लोग अज्ञानतावर् भूलें करते िैं। अतः उन्होंने उन्हें न तो तुच्छ समझा और न उनकी भत्सशना िी की। वरन् उनको ऊपर उठाने के चलए वे स्वयिं रेम से नीिे झुक गये। उनका रेम चनःसीम िै जो पर्ुओ,िं पचक्षयो िंतथा कीडो िंतक को अपने क्रोड में लेने के चलए फैला रिता िै।

चिदानन्द सनातन धमश की चकरणें रसाररत करने वाले एक र्ुद्ध क्रकि (चरज्म) िैं। चनतान्त चनष्कल्मष साधु व्यस्क्त तथा साक्षात्कार-राप्त आिा िोने से वि अचमत आध्यास्कि र्स्क्त से सम्पन्न िैं। उनकी उपस्थथचत िी उन्नयनकारी अनुभव िै। वि सिंघषशरत चजज्ञासुओ िंके सिंर्यो िंका चनराकरण करती तथा उनमें नवीन आध्यास्कि ओज अनुराचणत करती िै। उनके चर्ष्य अनेक िैं और ऐसे लोग तो असिंख्य िैं जो यद्यचप उनसे दीचक्षत निी िं िैं पर उन्हें अपना सद्गुरु मानते िैं। चकन्तु यि रेम तथा करुणा का मिान् स्वामी उन सबके मध्य में एक सामान्य साधक की भाँचत चविरण करता िै। वि जन्मजात चसद्ध िैं, चकन्तु चजज्ञासु की भाँचत आिरण करते रिते िैं।

असाधारण ऊँिाइयो िंपर आरोिण करने वाले ईर्-मानवो िंने मानव-मन पर अपनी अचमट छाप छोडी िै। बुद्ध अपने पीछे 'िार आयश सत्य' तथा 'अष्टािंचगक मागश' छोड गये। र्िंकरािायश ने िमें परम सत्ता के पाठ का उत्तरदान चकया। िैतन्य ने िमें नाम-सिंकीतशन का आनन्दाचतरेक रदान चकया। चर्वानन्द ने मानवता की सेवा, भस्क्त, ध्यान तथा रबोध-रूप साधन–तुष्टय रदान चकया।

इसी अचवस्च्छन्नपरम्परामें,चिदानन्दसृचष्टकताशकीखोजचकसीअज्ञातरिस्यमयलोकमेंनकर स्वयिं सृचष्टमेंिीखोजनेकाउपदेर्िमेंअपनेभावतथाकमशिारादेतेिैं।उन्ोंनें मानवको केन्द्र-योग, रकार्पूणश िैतन्य-योग, राचणयों की सेवा तथा भगवदाराधन-योग का उत्तरदान चकया ै। वि चनत्य चनरन्तर पुजारी-भगवान् के सतत आराधक िैं। वि अपने सजाचतयों को चदव्य जीवन यापन करने के चलए भावोद्दीपक उपदेर् देते िैं। वि अत्यचधक उत्कण्ठा तथा गम्भीर भाव से परामर्श देते िैं:

भगवान् के चवराट् स्वरूप को नमस्कार करने के चलए रचतचदन ब्राह्ममुहतश में जग जायें। चदन का कायशआरम्भकरनेसेपूवशउन(रभु)के समक्षश्रद्धासेनतमस्तकिो।िं र्ान्तचित्ततथा सुख-र्ान्त तथा सन्तोष से पूणश रि कर चदनभर व्यविार करें। इस सिंसार में कु छ भी गचिशत निीं ै। अपने दृचष्टकोण में पररवतशन लायें। दुभाशव त्याग दें। र्त्रु को क्षमा कर दें। चिन्ता करना बन्द कर दें तथा अपने-आप मन्द-मन्द मुस्करायें। अनुभव करें चक यि समग्र सिंसार ईश्वर की अचभव्यस्क्त िै तथा आप इन सभी नामरूपों में उस ईश्वर की िी सेवा कर रिे िैं। जीवन को योग में रूपान्तररतकरदें।सदािारीतथापरोपकारीबननेकारयासकरें।ईश्वरसरललोगोंके साथ लिता िै, दुःस्खयों के रचत अपने को उद्घाचटत करता िै, भि लोगों को चववेक रदान करता िै तथा िंकाररयों से अपनी कृ पा अलग रखता िै। अतः चिन्ता त्यागें, सद्गुणों का अजशन करें तथा मुक्त बनें। मन को सदा र्ान्त तथा चनरुचिग्न रखें। मन की बाधाओं पर चवजय पाने का यिी रिस्य ै। बोलने से पूवश अपने सभी र्ब्दों पर भली-भााँचत चविार करें। इने-चगने र्ब्द िी बोलें। यि स्क्त को सुरचक्षत रखेगा तथा मानचसक र्ास्न्त तथा आन्तररक स्क्त रदान करेगा। अपना रेम व्यक्त करें। इसे पुनः व्यक्त करें। इसे और भी पुनः व्यक्त करें। इसे एक बार पुनः और व्यक्त करें। मन को कभी भी पूणशतया बचिगाशमी न िोने दें। अपने मन के चवजेता, अपनी वासनाओं के दमनकारी तथा अपने भाग्य के स्वामी बनें; क्ोंचक आप िी स्वामी िैं।

गुरुदेव चर्वानन्द आपको जगाने के चलए आये। भूल जायें चक आप यि नश्वर र्रीर िैं। स्मरण रखें चक आप र्ुद्ध िेतना िैं। और अचधक चनिा में न पडे रिें। तृणवत् चवनम्र बनें। सेवा करें। रेम करें। दान दें। र्ुद्ध बनें। ध्यान करें। आत्मसाक्षात्कार करें। भले बनें। भला करें। दयालु बनें। सिंवेदनर्ील बनें। चदव्यता आपका जन्मचसद्ध अचधकार िै। इस चदव्यता को चनयचमत साधना िारारकटकरें।**"ईशावास्डमदां सवपम्।"** यिअस्खलब्रह्माण्डईश्वरसेव्याप्तिै।अतःमानव जाचत की सेवा करें तथा चदव्यता की खोज करें।

ये चिदानन्द के सन्देर् के स्वरचिह्न िैं। मिान् गुरुदेव की भााँचत वि समान रूप से बल देते िैं:"केवलचवश्वासीनकीचजए,वरन्वैसाबचनएतथाउसेजीवनमेंउताररए।"

मानव-जीवन का मित् उद्देश्य भगवत्साक्षात्कार िै। वृक्ष, पर्ु, पक्षी तथा कीडे जन्म लेते तथा मर जाते िैं। उनका चवकास निीं िोता िै। उन्ें उनके स्रष्टा ने सद् तथा असद् में चववेक करने की िेतना से सम्पन्न निीं चकया िै; चकन्तु मानव-जीवन ईश्वर की अमूल्य देन िै। चकन्तु मानव-जीवन का पथ **'कुषुर स्धारा'** का पथ िै। इस्न्द्रयों ने िमें अन्धा बना चदया िै और िमारी िेतना का अपिरण कर चलया िै। िमारे अनेक अन्धकू प िैं। जीवन के इस मिान् तथा दुगशम पथ में िमारी साँभाल करने तथा िमें सम्बल रदान करने के चलए यदा-कदा ईश्वर के सन्देर्वािक, मिारे चमत्र तथा पथरदर्शक के रूप में रकट िोते िैं। वि गुरु िैं। वि समग्र मानव जाचत का िाता िै। वि आपके अन्ततशम रकोष्ठ को खटखटाता तथा आपसे सानुकम्पा अनुरोध करता िै : "िे भाग्यर्ाली चमत्र! आप अज्ञान की गिन चनिा से कब जागेंगे?... आइए! आइए! अब जग जाइए। इस स्वप्नकोभिंगकीचजए।अपनेजन्मचसद्धअचधकारकीमााँगकीचजएतथाअपनेसत्स्वरूपको पिचाचनए। अभी तथा यिीं पर अपने स्वरूप का ज्ञान राप्त कीचजए तथा चदव्य आनन्द, र्ास्न्त तथा ज्ञानकेअनुभवमेंरवेर्कीचजएजोचकआपकार्ाश्वतस्वरूपिै।"

यिमानव-जाचत को चिदानन्द का चदव्य आह्वान उद्बोधनपरध्यान दें तथा गीता के अजुशन की भााँचत किं: का पालनकरूाँगा।

ोईश्वर करे चक िम इस रोमांकारी **"कररषेृ्ये वचनां तव"** मैं आपकी आज्ञा

ॐ तत्सत्!

पररचर्ष्ट

(१)

माँ सरोचजनी के रचत :

मातेश्वरी तूधन्य है!

माँ सरोचजनी तू धन्य िै! मातृ-श्री तू धन्य िै!
माँ सरोचजनी तू धन्य िै! मातेश्वरी तू धन्य िै!

श्रीधर-सरीखे सुत को, जन्मचदयातुम्हींने;
चर्ु-क्रीडा, बाल-केचल काआनन्दचलयातुम्हीं ने।
तेरी कोख धन्य िै, तेरी गोदधन्यिै।
ममतामयी तू धन्य िै, मातेश्वरीतूधन्यिै।

ईर्-रेम का सिंगीत सुनाया तुम्ही िंने,
मानव-सेवा का गीत चसखाया तुम्ही िंने।
तेरी ममता धन्य िै, तेरी वत्सलता धन्य िै।
निेमयी तू धन्य िै, मातेश्वरी तू धन्य िै।।

चदव्य जीवन का बीज बोया तुम्ही िंने,
सन्त-जीवन का पाठ पढ़ाया तुम्ही िंने।
तेरा त्याग धन्य िै, तेरा भाग्य धन्य िै।
करुणामयी तू धन्य िै, मातेश्वरी तू धन्य िै।।

तेरा लाडला बना, चर्वानन्द-दुलारा,
तेरे नयनो िंका तारा, जगत् का सिारा।
तुम्हारी चर्क्षा धन्य िै, तुम्हारी दीक्षा धन्य िै।
जगज्जननी तू धन्य िै, मातेश्वरी तू धन्य िै।

'चिदानन्द' तुम्हारा राणधन ि◌ै ि◌मारा।
हृदय-धन तुम्हारा, जीवन-धन ि◌ै ि◌मारा।
तुम्हारा धाम धन्य ि◌ै, तुम्हारा पररवार धन्य ि◌ै।।
रातःस्मरणीया तू धन्य ि◌ै, मातेश्वरी तू धन्य ि◌ै।।

कोचट-कोचट रणाम माँ! तव श्रीि–रणो ि◌ंमें,
यिी माँगते आज माँ कर-बद्ध तुम्ही ि◌ंसे।
सूरजि–न्दा जब लौ ि◌ंि◌मकै,
चिदानन्दि–न्द्र-वदन तब लौ ि◌ंदमकै।
चदव्य जीवन सिंघ धन्य ि◌ै, चर्वानन्द आश्रम धन्य ि◌ै।
चवश्व-वन्द्या तू धन्य ि◌ै, मातेश्वरी तू धन्य ि◌ै।

जब लौ ि◌ंगिंग-जमुन की धारा, तब लौ ि◌ंजीये 'लाल' तुम्हारा।
पा कर तुम्हारे लाल को, अस्खल चवश्व धन्य ि◌ै।
'चर्वानन्द-दरबार' धन्य ि◌ै, 'चर्वानन्द-श्रीधाम' धन्य ि◌ै।
परम आराध्या तू धन्य ि◌ै, परम वन्दनीया तू धन्य ि◌ै।

-श्रीधाम-पररवार

(३

डशवानन्द स्वस्वरप डचदानन्द है!

चर्वानन्द स्वस्वरूप, ओिरूप चिदानन्द िे।
चर्वानन्द अचभन्नरूप, रचतरूप चिदानन्द िे।
चर्वानन्द हृदयरूप, चित्तस्वरूप चिदानन्द िै।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िे ।।

गुरु भगवान्, गुरु गुणगान, गुरु िी राण मानिी।
गुरु िी ज्ञान, गुरु िी ध्यान, गुरु िी रेम मानिी।
गुरु िी दाता, गुरु िी माता, गोचवन्दरूप चनिारिी।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िे।

रफुल्ल मुखमण्डल, स्वरूप मनोिारी िे।
सरस नैन, मिंगल बैन, सवशचित्त िारी िे।
लचलत गान, मधुर तान, कोचकल कण्ठ पै वारी िै।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िै।

अधर रुचि, िास उज्ज्वल, रूपिली दन्तावलिी।
दीप्त भाल, कम्बु कण्ठ, गचत गयन्दवारिी।
सवाांग लचसत, सिंग सुखद, चरयदर्िीरूपचनिारिी।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्दिै।

आजानु भुज, वरदिस्त, सवश चितकारी िै।
पादाम्बुज तरचणरूप, भव-वाररचध तारी िै।
िापिल्य मधुर, अचत गम्भीर, पुण्यश्लोक जानी िै।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िै।

भक्त-वृन्द-वस्न्दते, चत्रचवध तापिारी िै।
अनाथ नाथ, करुणैक मूचतश, सवश सुखकारी िे।
चवश्व-मण्डन, पाप-खण्डन, सवश दु:खिारी िै।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िै।

'तृणादचप सुनिीन' चवनीत रूप चनिारी िे।
'अमाचनना मानदेन' समदर्िी रूप चनखारी िे।
'तरोरचप सचिषुणुना', र्ान्तचित्त चविारी िै।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िे ।।

मिादानी, ओिध्यानी, दिेध्यास न जानी िै।
परम त्यागी, सदािारी, पुण्य श्लोक मानी िे।
परोपकारी, रोगोपिारी, चनज सुख-त्यागी िे।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िे ।।

सवशर्ास्त्र ज्ञान ज्ञाता, ज्ञानयोगी जानी िे।
ब्रह्मचनष्ठ, तपोचनष्ठ, वीतरागी मानी िै।
राण रणव, राजयोगी, कमशयोगी मानी िे।

चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचम चिदानन्द िै।

धमश-रिरक, रेम-सिंरिक,जन-सेवाधमशमानिनी।
कमश-रत, मृदुल गात, वणश-भेदनमानिनी।
परम भस्क्त, परम र्स्क्त,सत्यअचििंसामानिनी।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्दिै।।

चर्वानन्द-सन्देर् सुरचभ, चदव्योपदेर्रसारिी।
सिज भाव रस-चसनुधु, काषायवस्त्रधारिी।
या छचव पै बचलिारी िे, 'िेरी'सवशस्ववारिी।
चर्वानन्द आनन्दरूप, नमाचमचिदानन्दिै।।

-श्रीधाम-पररवार

(3)

गुरुदेव के प्रडत

िे हृदयाराध्य देव!

चिदानन्दि–िरुि–ररत-भाषान्तर का चदया सुअवसर।
चकया धन्य-धन्य।
सामथ्यशि–ीन, र्स्क्तिीन, िैं साधनि–ीन,
चफर भी िो िमें अपनाये :.
स्वतः िी तुम सदा िो िमारे।
अपने 'लाल' चिदानन्द का, करवाया
ररत रकाचर्त तुम्ही िंने
िै यि अपशण तुम्हें, करो स्वीकार
करो िमें कृताथश।

िे करुणामय गुरुदेव!

चिदानन्दि–ररतामृत का जो करें पान
उनके चलए िै यि चदव्यौषध एक,
बने सिंजीवनी समस्त रोगो िंकी,

चमले सबको अभय दान।

–श्रीधाम-पररवार

डवश्व-प्राथपना

ि से्नि और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार ि ै, नमस्कार ि ै। तुम सवशव्यापक, सवशस्क्तमान् और सवशज्ञ
ि ो। तुम सस्च्चदानन्दघन ि ो।
तुम सबके अन्तवाशसी ि ो।
मि ें उदारता, समदचर्शता और मन का समत्व रदान करो। ि में आध्यास्कि अन्त:स्क्त का वर दो,
श्रद्धा, भस्क्त और रज्ञा से कृताथश करो।
चजससे ि म वासनाओ ि ंका दमन कर मनोजय को राप्त ि ो।ि ं
मि ि अिकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और ि ेष से रचित ि ो।ि ं
मिारा हृदय चदव्य गुणो ि ं से पररपूररत करो। ि म सब नाम-रूपो ि ं में तुम्हारा दर्शन करें। तुम्हारी अिशना के ि ी रूप में इन नाम-रूपो ि ंकी सेवा करें।
सदा तुम्हारा ि ी स्मरण करें। सदा तुम्हारी ि ी मचिमा का गान करें। तुम्हारा ि ी कचलकल्मषािारी नाम ि मारे अधर-पुट पर ि ो। सदा ि म तुममें ि ी चनवास करें।

-स्वामी डशवानन्द

इस पुस्तकके चवषय में :

जीवन-स्रोत

इस पुस्तक में 'समत्व-योग' के मूतशरूप परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्दजीमिाराजके
आकषशक तथा अचमट रभावकारी आदर्श जीवन का चित्रण िै। उनका जीवनसेवा,कमश,भस्क्त,
जप, ध्यान, ज्ञान एविं राजयोग की सप्त धाराओ िंकी सुन्दर चमलन-भूचमिैतथाचबनाचकसी अपवाद के सभी जाचत,
वणश तथा धमश के लोगो िंको रबोधन तथा पथरदर्शनरदानकरतिौ।

आशा िै, अध्यिा के सभी पचथक, साधक,चजज्ञासु, भारतीय सिंसृ्कचत के रेमी तथा
मानव-रेमी इस पुस्तक से स्रिुर रेरणा तथा मागशदर्शनराप्तकरेंगे।